

मरीचा प्रिलेजायेवा

लेनिन कथा

६११

प्रगति प्रकाशन
मास्को

МАРИЯ ПРИЛЕЖАЕВА
ЖИЗНЬ ЛЕНИНА
(в сокращении автора)
на языке хинди

हिंदी अनुवाद • प्रगति प्रकाशन • १९७४



लेनिन भाषन करते हुए। चित्रकार—अ० गेरासिमोव

अनुक्रम - टम बजरा

भूमिका के बदले	७
खुशी	११
सरदियो की शाम	१२
गरमियो का दिन	१४
स्टीमर पर	१६
स्कूली विद्यार्थी	१८
आशुवा	२०
पिना	२३
पहली माच	२५
सिम्ब्रीस्क मे विदा	२८
काजान की सभा	२९
भविष्य का निर्धारण	३१
नेवा के पार	३४
पहली पुस्तक	३६
चार परचे	३७
'मिनोगा'	३९

हमारा आंदोलन दबाया नहीं जा सक्ता

वाङ न० १६३

हरा लैम्प

व्नादीमिर इत्यीच आपस एव प्राथना है

तनाशी

बीमार बानयव के महा

रिहाई

चिगारी जा ज्वाला बनगी

लेनिन

बाल्योविक

दमनचक्र

सागर म लाल थडा

गुप्त मुलाकाते

फिर प्रवास म

भा से मलाकात

लोजूमो गाव म

लडाई का विरोध

वापसी

रस्स्तानाथा सडक

सत्ता सोवियता को

बनकम्भ

इजन न० २६३ का फायरमैत

पुलिस दारोगा के यहा शरण

एक गुप्तबास श्रीर

॥	पूववेला मे	१२१
१	स्मोल्नी मे	१२३
०	क्रान्ति की शुरुआत	१२७
१	शोत प्रासाद पर कब्जा	१३०
१	पहली आज़ाप्ति	१३३
१	खमोवाला सफेद हाल	१३५
११	वे ऐसे रहते थे	१३८
१	नही जानते तो सीखेंगे	१४१
५	कडुआ सबक	१४४
११	मास्को, मास्को	१४७
६	क्रान्ति के वदम	१५०
३१	गावो देहातो मे	१५२
	हमला	१५५
३	नीचताभरा हमला	१५६
३	सकट के साल	१६३
६	सोकोलिनकी की वारदात	१६५
६४	मित्र बिछोह	१६६
६६	“मै, मेहनतकश जनता का बेटा	१७२
१००	सरकारी सपत्ति	१७५
००३	“आषा खुशी का दिवस मई का ”	१७७
१०७	कोम्सोमोल	१८१
१११	सपने, जो सिफ सपने ही नहीं थे	१८४
११४	१६२१ का भयानक साल	१८८
११	नयी आधिब नीति	१६२

बर्फ या समीत

प्रवाशस्तम्भ

उये साल से पहली शाम

हमेशा सघष भ

१९२३ की शरद

जीवन से लगाव

पडे हा जाओ साथियो !

चरी फलन लगी

अन्तर्राष्ट्रीय अग्रगण्य भूमिका के बदले

तीसरे दशक की बात है। मैं दो साल तक पेरेयास्लाव ज़िले के एक छोटे से गाव के स्कूल में अध्यापिका थी। समीप ही नदी के ऊचे तट पर गोर्की गाव था। उसमें उद्योगपति गानशिन की एक छोटी सी वाठी थी। यहाँ १८९४ में लेनिन की पुस्तक “‘जनता के मित्र’ क्या है और वे सामाजिक-जनवादियों के विरुद्ध कैसे लड़ते हैं” छपी थी।

इस बारे में मुझे एक पुराने स्थानीय अध्यापक ने बताया। उसने १८९४ में चौबीसवर्षीय व्लादीमिर इल्यीच को, जो उन दिनों गोर्की आये हुए थे, देखा था।

अध्यापक ने बताया “यहाँ हम भोजवशा से घिरी पगडडी पर टहला करते थे। और यहाँ, बेंच पर व्लादीमिर इल्यीच अपने विद्यार्थी साथी गानशिन के साथ बैठने थे, जो पुस्तकें भी छापता था ”

इस पुस्तक में खास बात क्या थी? सब कुछ। विशेषकर अंतिम निष्कर्ष, जो एक तरह की भविष्यवाणी थी। व्ला० इ० लेनिन ने लिखा था “ रूसी मजदूर सभी जनवादी सत्त्वों का नेतृत्व करते हुए तानाशाही को उलट देगा और (सभी देशों के सहकार के साथ) रूसी सहकार को खुले राजनीतिक संघर्ष के सीधे रास्ते से विजयी कम्युनिस्ट शक्ति की ओर ले जायेगा। ”

यह मेरे युवाकाल का पहला असाधारण, अति प्रभावपूर्ण अनुभव था।

मैंने बहुत समय तक युवा व्लादीमिर इल्यीच के जीवन और कायकलाप से संबंधित तथ्यों, सामग्रियों और परिस्थितियों का अध्ययन किया। मेरी पहली पुस्तक—“प्रारंभ”—इस बारे में थी कि युवा लेनिन ने पीटसबग

मे 'मजदूर वग की मुक्ति के लिए सघष करनेवाली लीग" की स्थापना वस की जो आगे चलकर रसी सामाजिक-जनवादी पार्टी और फिर रसा कम्युनिस्ट पार्टी (बोरोविक) बनी। निश्चय ही, जारशाही सरकार यह सटन नहीं कर सकती थी कि उसकी नाक के नीचे ही लेनिन और उन साथी जार और पूजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध सघष चलायें। लेनिन और उनने बहुत स मित्रा को गिरफ्तार किया गया, जेला म ठूगा गया और दूर साइबेरिया मे निर्वासित किया गया।

म वहा गयी, जहा लेनिन न निर्वासन के लगभग तीन वष रिताप थे। शूशेस्कोय गाव शूश के तट पर, महान साइबेरियाइ नदी यनिमर्दे से कुछ ही दूर बसा हुआ है। क्षितिज व पास सायान की भव्य हिमाच्छादित पर्वतशृखला दिखायी देती है। म उन सभी रास्तो और पगडडिया पर चली, जिनपर कभी ब्लादीमिर इत्यीच के पाव पडे थे। मने उनकी शूशेस्कोय म लिपी हुई सभी कितायें और लेख पडे और स्तब्ध रह गयी। निर्वासन म ब्लादीमिर इत्यीच ने कितना अधिक, कितना बिराट राम किया था! पार्टी की स्थापना की योजना उहोने वहा तयार की थी। और इसके लिए सबसे पहले अवध पार्टी समाचारपत्र का निवालन का प्रवध करना जरूरी था।

मने ब्लादीमिर इत्यीच के शूशेस्कोये निर्वासन के बारे म एक पुस्तक लिपी। मगर सारी निवासन अवधि व बारे मे नहीं। मैं इसे 'असाधारण वष' नाम दिया। इसमे निर्वासन के केवल एक वष का वणन था। किन्तु वैंसा वष! धर्म, सजन, चिंतन और योजनाआ की दृष्टि से किसी को भी विस्मय म डालनेवाला! और बहुत सुखी भी। क्योंकि उनके साथ उनकी मगेतर नादेज्जा कोन्स्तातीनोना श्रूस्वाया भी आकर रहने लगी थी। वह भी सातिकारी और सरकार द्वारा निर्वासित थी। और आकपक, शाखीन और बुद्धिमती कितनी थी!

उस पुस्तक मे मैंने इही सब बातो के बारे मे लिखा था।

सातिकारी कायकतापा, विचारो और भावनाआ की उदात्तता ने मुझे इतना मोहित कर लिया कि म उनकी तरफ से आखें नहीं मूद सकती थी।

और तब मैंने एक और पुस्तक लिपी। इस बारे म कि निर्वासन के बाद लेनिन ने विख्यात "ईस्का" के प्रकाशन की तयारिया कसे की। इस पुस्तक का नाम था "शाति के तीन सप्ताह"। ब्लादीमिर इत्यीच प्रवास

से पहले नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना से मिलने ऊफा गये थे। वह उन दिना वहा अपने निर्वासन की शेष अवधि बिता रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच क्या विश्राम खोज रहे थे? या शांति? नहीं। “शांति, चन हमे केवल सपना मे ही मिलता है ” काम, काम, सदा काम। पार्टी के लिए, जनता के लिए, आति के लिए। हमेशा और हर जगह। निष्क्रिय बैठना व्लादीमिर इल्यीच का स्वभाव नहीं था

इस तरह मैंने अपनी मुख्य पुस्तक “लेनिन क्या” लिखने से पहले युवा व्लादीमिर इल्यीच के बारे मे तीन पुस्तके लिखी।

“लेनिन क्या” को लिखने से पहले मैं कई बार अनिश्चय का शिकार बनी, घबड़ायी कि इस महान विभूति की जीवन क्या के साथ मैं पूरा पाय कर पाऊंगी कि नहीं, मुयम इतनी सामध्य है या नहीं।

मुझे अपने मित्रो-सपादको, वज्ञानिको, पार्टी नेताओ की सलाहो से बडी सहायता मिली। मैं साथियो के सहारे का अनुभव किया और जो सबसे मुख्य बात है, मैं जानती थी कि पाठको को लेनिन के जीवन के बारे मे सरल शैली मे और निष्ठा के साथ लिखी गयी पुस्तक की बहुत जरूरत है। इस तरह वतमान पुस्तक प्रकाश मे आयी।

मरीया प्रिलेजायेवा
फरवरी, १९७१

खुशी

वोल्गा के तट पर बसे शात सिम्बीस्क के ऊपर आसमान भरहियो के कलरव से गूज रहा था। शहर के पास नदी की धार एकाएक मुड़ गई थी। जमी हुई बर्फ कुछ समय पहले बह गई थी। वोल्गा में जहाज जा रहा था।

“मफेद जहाज सफेद जहाज, तू किस देश जा रहा है?”

सिम्बीस्क में बसत आ गया था।

सड़का और बागों में चिड़िया चहचहा रही थी। हवा भोजवक्षों की टहनियों से खेल रही थी। चारों तरफ चहलपहल थी, खुशी थी।

उल्यानोवों के घर में भी खुशी मनायी जा रही थी। वह नदी तट से थोड़ी ही दूरी पर था। उसकी खिड़कियां गरम धूप में चमक रही थीं। नदी की तरफ से जहाजों के भोपुओं की आवाजें आ रही थीं।

मा पालन के ऊपर झुकी। उसमें नवजात शिशु सोया हुआ था। मा का वात्सल्य उमड़ आया, वह सोचने लगी “मेरा लाल बड़ा होकर क्या बनगा? कसा होगा इसका भविष्य?”

तभी पिता इत्या निकोलायेविच कमरे में दाखिल हुए।

“माशेवा! कैसी हो, मेरी माशा!” उन्होंने पूछा।

पिता के पीछे पीछे बड़े बच्चे—अयूता और साशा—भी कमरे में आ गये थे। काली आंखों और घुघुराले बालोंवाली अयूता छह साल की थी और साशा चार साल का। कौतूहल भरी निगाहों से देखते हुए वे पालने के करीब आये।

“तुम्हारे भाई हुआ है, बच्चों!” इत्या निकोलायेविच ने उन्हें बताया।

“घर, कितना छोटा है!” अयूता अपना आराम छिना न गरी।
 बाई बात रही, बड़ा होकर तुम्हारे जैमा हो जायगा,” गिता न
 जवान गिया।

‘और ताम क्या रग्या है?’ अपने नहे भाई को देखने के लिए पत्रों
 न बल पडे हात हुए साशा न पूछा।

बोलाचा ताम रगेंगे,’ मा बाली।

इस तरह २२ अप्रैल, १८७० का बाग्या ली क तट पर बम गिम्बान्त
 शहर म एा तये मातब, ब्लादीमिर उत्त्वानोव, का जम हुआ, जिम प्रागे
 चलकर महान तेनिा बनना था।

सरदियो की शामें

साल बीतन गय और बालोदा भी बड़ा हाता गया। उन घाठ मात
 पूरे हो चर थे। अब पालन म मयागा लेटी थी। हा, बोनाज क भा
 ओल्या और भीत्या भी हुए थे। अयूता, माशा, बालाचा, भान्या, भीत्या,
 मयाशा और पिता और मा—परिवार कितना बड़ गया था।

अयूता और साशा स्कूल जात थे। बोलोदा अभी तैयारिया ही कर रहा
 था। उसे गणित और सही-मही लिखना-पढ़ना गिधान के लिए घर पर
 ही ट्यूटर लगाया हुआ था। नभी-नभी मा भी पढ़ाती थी। वह बहुत सी,
 तरह-तरह की दिलचस्प कहानिया जानती थी—गरम और ठडे देश; के बारे
 मे, सेट बर्नाड कुत्ते के बारे म, जिसने आल्प्स पहाडी म एव भटके हुए
 राही को बचाया था, रम पर नपोलियन के हमले और बोरोदिना की
 लडाई के बारे म

सरदियो की शामा को बच्चे को मा जो कहानिया सुनाती थी, उन
 सबको गिनाता भी सभव नही। बोलोदा को ये शाम, जमे हुए पाले क
 डिजाइनो से ढकी खिडकिया, मा की आवाज और पने पलटने की हल्की
 सरसराहट बहुत पसद थी।

और जब सरदिया अपने यौवन पर होती थी, तो नववय से पहले
 की शाम और भी मजेदार लगती। मेज पर रग बिरगे कागजो का ढेर
 लगा होता और बच्चे उनसे तरह-तरह की डिवियाए, झालरें और अजीर
 बनाते।

इल्या निकोलायेविच अपने कमरे मे काम कर रहे होत। मा खान के कमरे का दरवाजा बसकर बंद कर देती, ताकि बच्चा का शोरशराबा पिता के कमरे तक न पहुंचे।

गुलाबी, नीले, सुनहरे और पीले छल्ला से बनी कागज की जजीरे बच्चा के हाथा म सरसराती और बल खाती। अब थाड़ी ही दर म नववप वक्ष की बक्तिया जगमगान लगेंगी।

चलो, नववप वृक्ष देखने चले, " बोलोद्या न कहा।

" हा, हा, चले। " ओल्या तुरत तैयार हो गई।

नहा मील्या भी कुर्सी से कूदकर खडा हो गया।

और म भी। "

सब एक दूसरे का हाथ पकड लो, " अनूता न कहा।

अधेरा हॉल रहस्यमय और जाडुई सा लग रहा था। खिडकिया पर बन पाले के डिजाइनो के बीच से चाद दिखायी दे रहा था और फश पर चादनी के सफेद धब्बे पडे थे। नववप वक्ष एकाकी खडा अपनी पजे की तरह फली टहनिया से बिगोजई महक बिखेर रहा था।

' चलो, सारे घर का चक्कर लगायें, " बोलाद्या न फिर सुझाया।

सभी न मालूम क्या, एकाएक खामोश हो गये। आज घर कुछ नया सा, असाधारण सा लग रहा था। पर वह सचमुच नया था, क्याकि उल्यानोव परिवार कुछ ही दिन हुए उसम आकर रहने लगा था। छाटे से गलियारे मे परदे के पीछे यह मा का कमरा था। उसम आलमारी पर रखा लैम्प भद भद रोशनी बिखेर रहा था। पालने मे मयाशा सोयी थी। बच्चे दबे कदम उसके पास से गुजर गये।

आगे व सकरे जीने से होते हुए बिचले तल्ले पर पहुंचे, जहा उनके अपन कमरे थे। यहा चाद और भी तेजी से चमक रहा था। खिडकियो के कान्चा पर बने बर्फ के फूल छतिवन के पत्तो जैस लग रहे थे।

बच्चा ने एक दूसरे का हाथ छोडे बिना बिचले तल्ले का चक्कर लगाया और उसी सकरे जीने से नीचे उतर आये।

तभी पिता के कमरे का दरवाजा खुला।

" तो यहा है हमारी फौज। " खुशी से आगे लपककर नीचे दुबने हुए उहोने बच्चा को अपनी बाहो मे ले लिया।

लेकिन उहाने देखा कि बच्चे किसी सोच मे डूबे हुए हैं। बसकर एक

दूमर का हाथ पराए हुए है। कन्या तिरालापविष तना जाता थ कि कानाडा
 र कदन पर बचा मार पर का पतार लगात का येन येन रू ह।

फिर भी माता कुछ भापा हुए उरान मार म कता

‘ वग हमशा इमी तरह तिमिलार रहना, मर प्यार बच्चा !’

गरमियों का दिन

गरमिया का मौसम बस शान्तार, गुणवत्ता हाता है। गिम्बोन्त म
 गरमिया म काफी गरमी पडती थी और हवा भी शुष्क हाती थी। मवा
 स बाग सहलहा उठन थ। गिम्बोन्त म बाग बहुत थ।

उत्थानोवा क घर क पिछवाड म भी एक बाग था। वह था ता छाया
 ही, पर उमम क्या-क्या नहा था। पापलरा स ढरी पगन्धी, एतम बसा
 क कुज, जिनक नीर तज म तज गरमी म भी मग टडा रहता थी,
 और अनामिया क बचे-बड पड फूला म इम तरह मद हुए कि उनका नाम
 ही पोत बन पड गया था।

सुबह के मान बजे थ। छिडवी स छनरर तपिय पर पडनवाली तिरण
 की चमक और गरमी स वालोद्या की आगें खुल गई और क्षण भर बा
 ही वह परा पर छडा था। व्यायाम के बाद हाथ मुह धाकर वह हवा की सा
 तेजी स बाग म निकल गया—सब क पड की तरफ, ताकि रात म झपे
 हुए सबा का दूसरे भाई-बहता स पहले ही बटोर स और बाद म सबका
 खिलाय। वालाद्या का इसम एक विशप प्रवार का आनंद मिलता था।

उत्थानोवा के घर म बस भी मभी काफी तडके उठ जाते थे। हुए
 स पानी लाकर फूला को सीचन का काम साशा और वालोद्या क जिम्मे
 था। अगर शाम को भूल गये हाते थे, ता सुत्रह को अवश्य ही साचना
 पडता था।

बाद मे सब नाश्त के लिए खाने के कमरे म इकट्ठा होते। मा याद
 दिलाती कि आज किस भापा का दिन है, यानी नाश्ते के समय किस भापा
 म बातचीत करनी है—फासीसी, जमन या कोई और।

बेशक हर रोज रूसी मे बोलना अधिक आसान होता, पर मा समझती
 थी कि बच्चा को विदेशी भापाए भी आनी चाहिये।

नाश्ते के बाद क्या करोगे?’ ओल्या न वालोद्या से पूछा।

“वही, जा माशा।”

और साशा हमेशा की तरह बिताय लेकर पढा बठ गया। वह गभीर बितानें पढना था, उसे रसायनशास्त्र, प्रवृत्तिविज्ञान पसंद थे। यहा तब कि ग्रहाते व एव बनेने म उत्तन अपनी प्रयोगशाला और जन्तुशाला भी बना रखी थी, जिसम साहो पत्ता के बीच कुछ न कुछ कुरन्ती और गिलहरी पिजडे म इधर-उधर बूदती फादती रहती थी।

गरमिया म बितनी खुली छूट होती है। चाहो तो मनपसंद बिताय लवर बाग के किसी छायादार वान म बठ जाओ और फिर दीन-दुनिया की मुघ भी नही रहगी। दिन व खान तब धाग म मिफ चिडिया वा चहचहाना ही सुनाई देता था। हा, कभी कभी घर स मा के सिनाई मशीन चलान की आवाज भी सुनायी दे जाती थी वह हर समय बच्चा के लिए कोई न कोई चीज मीती रहती थी। बेटिया को भी उहान सिनाई मिया दी थी।

दिन व खान के बाद जब और पढन वा मन न होना, तो ओल्या बोलोचा से कहती

‘आओ, खेल चले।’

“काली छडी वा खेल खेलेगे। ‘काली छडी आई, कही भी न पार्द। जिमके पोटे मिलेगी, उसी पर पडेगी।’”

और जब ग्रहाते स धूप चली जाती, सभी आबिट के मैदान म इकट्टे हा जाते। खेल म नियमा वा कटाई से पालन किया जाता। बालोचा और पिता सबसे जोशीले खिलाडी थे। व ही सबसे ज्यादा हुसोड भी थे। सार खेल भर ठहावे लगाते रहते थे।

इम बीच सूरज ढलन वा हो जाता और पिता वा आदेश सुनाई देता
“बच्चो, नहान का समय हो गया है।”

सभी स्वियागा मे नहाने के लिए चल पडते। यह पाम ही म बहनेवाला छोटा सा, शात नाला था, जिसके दोना तटा पर पड उगे हुए थे। हर कोई दौडकर पानी म बूद पडता और फीवारे की तरह पानी के छीटे उडने लगत। आकाश म सूर्यास्त की अरणाली अभी छापी हुई थी कि दूर क्षितिज के ऊपर पहला तारा टिमटिमाने लग गया।

नहाने के बाद बोलोचा और साशा सबसे अलग, आगे आगे जा रहे थे।
“साशा, क्या सोच रहे हो?”

“गदर मुछ। वरु तारा दय रह हा, त? यह वहा म आया? घन्ता पर जीवन कम शरु हुआ? हमारे जीवन का या हमारा उद्देश्य क्या है?”

बालोचा मुनता रहा। उसने विचार भी दौटा लगे। “सचमुच, हमारा जीवन का, हमारा, क्या उद्देश्य है? जीना, सोचना, पूछना, जानना, कुछ करना, यह गदर नितना दिनचर्या है। साशा वृद्धिमान है और मुन भा उती जैसा बनना है।”

स्टीमर पर

घाट पर दो डेराला स्टीमर खडा था। बँबिना की चिडकिया धूर म चमक रही थी। पालिश किये हुए पीतल के हथके सोन की तरफ जगमगा रहे थे। कप्तान भापू मुह के पास नामर जम्हरी आदेश द रहा था।

गिता न टिकटा का एन बार फिर दया गभी टोक ता ह। फिर सामान का गिना। हर किसी क हाथ म एन न एन टोकरी या बडल था। स्टीमर न दो बार लवो और तीमरी बार छाटी गोटी दी। चक्क धूमन लगे, चप्पुआ क नीचे पानी सगरान नगा। स्टीमर सिम्बीस्व स बाजान मे त्रिए खाना हो गया था।

बाजान स कोबूशिकनो गाव तर चालीग बस्ट का रास्ता घाटा पर तय करता होगा।

सिम्बीस्व पीछे छूट गया। उसकी लाल छने देर तर दीखती रही, पर ज्यो ही नदी का भांड आया, सब एकाएक नजर से ओझल हो गया।

स्टीमर क साथ-साथ चिडकियो का झुण्ड भी बाना को फाडती आवाजे करता उड रहा था।

बालोचा ने उन के लिए रोटी के कुछ टुकडे फेंके और इजनरूम की तरफ चल पडा। ताबे के पुजों और तेल से चमकता और तनाव के कारण थरता हुआ स्टीमइजन घडघडाता चल रहा था। सयोजी दण्ड बिना रने चल रहे थे और बाल्वा से सीटी छोडते हुए भाप निकल रही थी। भट्टी क सामने कमर तक नगा और कोयले और ग्रीज की कालिख से सना हुआ फायरमन काम कर रहा था। उसकी पीठ पर पसीने की धारे बह रही थी।

चप्पुआ से पानी को काटते हुए स्टीमर बोलगा म बहाव की उल्टी दिशा मे बडे जा रहा था। डेक पर मुसाफिर टहल रहे थे और किनारो के सुन्दर

दश्या का मजा ले रहे थे। पिता शतरज की विसात हाथ में लिये हुए कैबिन से बाहर निकले। शतरज के मोहरे बहुत ही खूबसूरत थे और उन्हें उहाने खुद ही बनाया था और सभी मोहरे अलग अलग तरह के थे।

“क्या, हो जाये एक एक बाजी,” पिता ने बोलोद्या को ललकारा।

पिता उससे बराबरी के दर्जे पर खेलते थे, हालांकि उम्र समय उसे सिर्फ दसवा साल चल रहा था। वैसे यह भी कोई कम न था, क्योंकि शीघ्र ही, अगस्त में, उसे स्कूल में दाखिले के लिए परीक्षा देनी थी। और तब “अलविदा, मौज मस्ती।”

“हुजूर, शह बचाइये।”

बोलोद्या ने फुर्ती से घोड़े को चलाकर शह बचा ली।

“बड़े चालाक हो। ठीक है, तो हम यह प्यादा चलत हैं।”

“आपके प्यादे से तो हम बच ही जायेंगे, पर अब जरा आप ”

हवा बोलोद्या के हल्की ललाई लिये गहरे वादामी रंग के बालों से खेल रही थी। बोल्गा में सूरज की परछाई से आँखें चुधिया जाती थी।

“इज्जरूम में कितनी गर्मी है।” माथे पर बल डालते हुए बोलोद्या ने याद किया। “और फिर हर कहीं तेल की बू। फायरमैन पसीने से नहाता रहता है। किसी तरह इसकी मेहनत को आसान नहीं बनाया जा सकता?”

पिता चुप रहे, पर साशा, जो अब तक उनके पास आ चुका था, बंधे उचकाता हुआ बोला

“स्टीमर के मालिक को इससे कोई मतलब नहीं कि फायरमैन को कितनी कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।”

“पर यह तो अयाय है।” बोलोद्या चिल्ला पड़ा।

“दुनिया में तुमने याय कहा देखा है?”

दोना बेटों ने पिता की ओर देखा।

“पापा, हम जानते हैं कि आप याय के पक्ष में हैं।” साशा ने उत्तेजित स्वर में कहा।

स्टीमर ने भारी सी सीटी दी और उसकी गूँज सारी बोल्गा पर फैल गई। सामने से दूसरा स्टीमर आ रहा था, उसी को देखकर यह सीटी दी गई थी। नदी में जबदस्त उथल पुथल सी मच गई और बड़ी बड़ी लहर किनारा से टकराने लगी।

स्कूली विद्यार्थी

आगिरकार अगमन (१८७६) का वट दिन भी आ गया, जय बानावा पहली वक्षा म प्रवेश क लिए परीक्षा देन स्कूल पहुँचा। स्कूल की दामबिना, पत्थर की इमारत शहर के बन्दर म, बाला तट स थोड़ी ही दूरी पर स्थित थी। यही बालावा का अगते आठ माल तक पडना था।

लेकिन पहले प्रवेश परीक्षा पान करनी थी। परीक्षा लनवाले अध्यापक स्कूली की मुद्रा बनाय हुए मञ्ज क पीछे बैठे हुए थे। प्रवेशाधिया का एव एव करके बुलाया गया। जब बोलोद्या की बारी आयी, तो वह निर्भीकता के साथ ब्लैकबोर्ड के सामन जा खडा हुआ। अध्यापक सवाल पूछन गन और वह घडल्ले स उनके जवाब दता गया। बाद म गणित का सवाल पिया गया, तो उसे भी तुरत हल कर दिया।

बालोद्या को सभी विषया मे उत्तम अक् मिले।

घर लौटन पर सभी भाई-बहता ने उस घेर निया और बधाइया दन लगे। मा ने उस चमकीले बटनावाली स्कूल की पोशाक पहनाकर दखी। कल से वह पहली वक्षा म जायगा। मा खिडकी की ओर देखन लगा। अब घर म स्कूल जानेवाले तीन बच्चे हो गये थे अयूता, साशा और बोलोद्या। समय को गुजरते और बच्चा को बढ़ते भला देर ही क्या लगती है।

शाम को उल्यानोवा के घर म खाने के कमरे में सफेद लम्पशेडवाली बत्ती के उजाले म सभी बच्चे कल के पाठ की तैयारी करने जमा हुए। पाचवर्षीय मोत्या का तो कोई पाठ था नहीं, इसलिए वह बडी लगन स कागज पर धूआ उगलती चिमनीवाला और बोलगा की ऊँची-ऊँची लहरा पर तैरता जहाज बनाने मे व्यस्त था। बोलोद्या ने अपना काम जल्दी ही खत्म कर लिया आखिर पहली वक्षा के विद्यार्थी को पहले ही दिन कोई ज्यादा काम तो दिया नहीं जाता। अब आगे क्या करे? वह कागज का टिड्डा बनाने मे जुट गया। जब वह तैयार हो गया, तो दौडकर आया से धागा माग लाया और बाधकर "फुदक" जा कहा, तो टिड्डा अयूता के सामने था।

"बोलोद्या, फिर लगा तू शरारत करने?"

धागा खिचा, टिड्डा गायब हो गया। पर क्षण भर बाद ही वह साशा की कापी पर बैठा था।

जब तक किसी न उस पकड नहीं लिया, सबके सब हसते रहे।

“खामोशी से बैठ !” अयूता ने बोलोद्या को डाटा।

पर बोलोद्या था कि खामोशी से बैठ ही नहीं सकता था। अब और क्या मजाक किया जाये ?

“मीत्या, ऐ मीत्या, देख बकरा आ रहा है, सीगोवाला, दाढीवाला !”

और बोलोद्या सीगोवाला बकरा बना हुआ धीरे धीरे, सीधे मीत्या की तरफ बढ़ने लगा। मीत्या कलाबाजी खाता हुआ और खिलखिलाकर हसता हुआ मेज के नीचे जा छिपा। तभी दरवाजे पर पिता दिखायी दिया।

“बोलोद्या, मेरे कमरे में आओ।”

बोलोद्या का शरारती का जोश अभी ठंडा नहीं हुआ था, फिर भी वह पिता के पीछे-पीछे उनके कमरे में दाखिल हुआ। कमरे में एक किताबों की आल्मारी थी, एक बड़ी सी लिखने की मेज थी और दूसरी तरफ दीवार के पास एक गोल मेज और मेहमानों के बैठने के लिए सोफा रखे थे।

“यही बैठ रहो।” पिता ने आदेश दिया।

और वह फिर अपने काम में लग गये। छुटपन से ही बोलोद्या के मन में पिता के कमरे के लिए बड़ा आदर था। पिता बहुत काम करते थे। वे प्रायः दौरा पर जाते थे और सरदी हो या गरमी, सूखा हो या बरसात, सैकड़ों कोस चलकर देहाती स्कूलों का निरीक्षण करते थे। सिम्बीस्क प्रान्त में शायद ही कोई स्कूल हो, जिसके अध्यापकों की बोलोद्या के पिता ने, जो स्कूल इन्स्पेक्टर थे, मदद न की हो। और घर लौटने पर रिपोर्टें तैयार करनी पड़ती थी, अध्यापन-योजनाएँ बनानी होती थी, अध्यापनशास्त्र के बारे में लेख, टिप्पणियाँ, आदि लिखने होते थे।

‘चलो आज का काम खत्म हो गया,’ कागजों को सभालकर फाइल में बद करते हुए पिता बोले। “काम खत्म हो गया, तो मौज करो। पर इसका यह मतलब नहीं कि दूसरों के काम में बाधा डालो,” पिता ने प्यार से बोलोद्या को चेतावनी दी। “और अब बताओ, आज तुमने स्कूल में क्या किया।”

बोलोद्या ने बतला दिया। सब कुछ ठीक था।

हॉल से मद-मद सगीत सुनायी दिया।

वे भी चुपके से हॉल में घुसे। हल्का अधेरस छाया हुआ था। पियानो पर रखे शमादाना में मौमवर्तियाँ जल रही थीं। मा पियानो बजा रही थी। सगीत इतना मधुर और उजला था, जैसे कि गरमियों का धूपखिला दिन हो। बोलोद्या और पिता एक कोने में बैठ गये और देर तक सगीत सुनते रहे।

बोलोचा जत्र छोटी बधाआ म ही था, पिता डरत थ कि वह मन्न करना सीख पायगा या नही, चूकि वह इतना लायक था कि हर नया चार को आमानी स सीख लता था। बाद म पिता को विश्वास हा गया कि बोलोचा उटवर मेहनत करना जानता है। जानता भी कम न, घर म हर काई मेहनत का इतना आदर जो करता था।

साशा स्कूल की पढाई घटमार पीटसबग विश्वविद्यालय म भरता हो गया था। उसवे खाना हाा से पहले दोना भाइ एक रोज वनल्स गव थे। सिम्बीस्व म बोल्गा क यडे, ऊचे बिनारे का इसी नाम स पुकारत थ और दोना भाइया को यह जगह बहुत पसद थी। यहां से आसमान और नदी का विस्तृत दृश्य दिखायी दता था।

तुम्ह आदमी म सबसे ज्यादा अच्छा क्या लगता है?" उस रोज बोलोचा ने पूछा था।

मेहनत, पान आर ईमानदारी," साशा न जबाब दिया था और फिर कुछ सोचकर जोडा था, "मैं समझता हू कि हमारे पिता ऐस हा आदमी ह।"

आज बोलोचा को साशा के ये शब्द बार-बार याद आ रहे थे। पिता देहाती स्कूला के दोरे पर हुए थे और अब तक उह लौट आना चाहिय था।

बोलोचा बिचले तल्ले पर अपने छोटे से कमरे म बैठा पढ रहा था। पास ही साशा का बैसा ही छोटा सा, पर खाली कमरा था। पिछले तीन साल से वह पीटसबग विश्वविद्यालय मे पढ रहा था। अयूता भी वही, पीटसबग म, महिला कॉलेज म पढ रही थी। बोलोचा को उनकी, खास तौर से साशा की बहुत याद आती थी।

"काफी हो गया यादो म खोमे रहते। अभी पढाई भी करनी है," बोलोचा न अपने आप से कहा।

जब कल का पाठ तैयार हो गया, तो बोलोचा ने बचपन के दिनों की तरह सभी किताब कापिया को सभालकर थले म रख दिया। फिर वह सारी शाम दूसरी किताबें पढता रहा।

स्कूल के अध्यापक नही जानते थे कि वह दोत्रोल्युबोव, पीसरेव, बेलीस्की और गेल्सॅन की किताबे पढता है। इनसे उसे वह-वह बात मालूम

होती थी, जो स्कूल में कभी नहीं पढायी जाती थी। इन्होंने उसका समाज में कदम-कदम पर होनेवाले अत्याय से साक्षात्कार कराया।

वोलोद्या ने किताब से नजर हटाकर घड़ी की ओर देखा। 'उफ, मैं कितनी देर से पढ रहा हूँ! जरा जाकर मा को देख आऊ।' और वह नीचे खाने के कमरे की तरफ दौड़ पड़ा।

मा अकेली नहीं थी। पिता के दोस्त और सहकर्मी इवान याकोव्लेविच याकोव्लेव यो ही थोड़ी देर बैठने के लिए आ गये थे। वह जाति से चुवाश थे और चुवाश स्कूला के इन्स्पेक्टर के पद पर काम करते थे। इवान याकोव्लेव जारशाही सरकार द्वारा उत्पीडित अपनी अल्पसंख्यक जाति के हिता की रक्षा के लिए सदा लड़ते रहते थे।

वोलोद्या ने उन्हें कहते सुना

"हमारे इल्या निकोलायेविच की बड़ाई इसमें है कि वह अपने अफसरो की तनिक भी चापलूसी नहीं करते। उल्टे, जहाँ तक होना है जनता की भलाई की ही सोचते हैं। मिसाल के लिए हम चुवाशों और मोदविनों के लिए ही उन्होंने कितना किया है, कितने स्कूल खुलवाये हैं।"

मा बोली

"न मालूम क्या, वह अभी तक नहीं लौटे हैं। मुझे चिन्ता होने लगी है।"

पास के हॉल से सगीत की हल्की आवाज आयी। ओल्या पियानो पर चायकोव्स्की की रचना बजा रही थी। सभी चुप हो सगीत सुनने लगे।

तभी घटिया बजती सुनायी दी। उनकी आवाज लगातार नजदीक आती जा रही थी। वोलोद्या उछल पड़ा। मा भी बटके से उठ खड़ी हुई। उनका चेहरा एकाएक खिल उठा।

"वोलोद्या, बच्चो, पापा आ गये हैं।"

सचमुच, फाटक के पास आकर घटियों का बजना रुक गया। सरकारी कोर्ट के ऊपर भेड की खाल का भारी ओवरकोट डाले इल्या निकोनायेविच ने घर में प्रवेश किया। उनकी दाढ़ी पर बर्फ के छोटे जम गये थे।

सपने पिता को बपड़े उतारने में मदद दी। कोई जाकर घर पर पहनने की जाकेट और जूते ले आया। भोज पर खाना परासा गया। पिता को बिठाया गया, खाना खिलाया गया। स्नेह की इस बाढ़ में उनका दिल छू लिया। वह गरमाये हुए बैठे अचकचाकर अपनी दाढ़ी पर हाथ फेर रहे थे

"आह, इतने तूफानी और ठंडे मौसम में सफर करने के बाद घर में कितना अच्छा लगता है।"

जब स्वागत का जोश कुछ शान्त हो गया और पिता ब ठ गाना गा लानी जाती रही, तो बोलोद्या को लगा कि वह बहुत थक हुए है और कुछ दुखी भी है। ऐसा ही ग्रहगाग इवान माकोव्नेविच को भा हुआ। क्या कुछ अप्रिय घटा है, इत्या निकोलायविच ?”

इत्या निकोलायविच ने चौड़े, ऊँचे माथे पर कठवी याद के मारे बस पड़ गया।

‘जरा सोचिय, दूर, गुनसान स्तेपी में छाटा सा गाव है। उनका बीचबीच स्कूल है। हर तरफ से हवाआ के थपड़े खाता हुआ। स्कूल में अध्यापिका का छाटा सा कमरा है, जिसमें अखबार और किताबें तो रखा दूर, लकड़ी तक नहीं है। आप साच सकते हैं कि सरदिया में स्कूल का गरमान के लिए लकड़िया भी जमा करने नहीं रखी गईं। और सब इसलिए कि अध्यापिका गाव के धनी मुखिया के सामने झुकी नहीं। बेचारी की जान में आपन भर दी है। दो शब्द सहानुभूति के कहनवाला भी कोई नहीं है।”

“पापा, पर आपन तो उसका पक्ष लिया।” बोलोद्या बोला।

हा लिया तो। पर मैं वहाँ क्या तक रह सकता था? मेरे बाप वह फिर अकेली रह गई है। मुखिया ने सारे गाव को अपनी मुट्ठी में कर रखा है। किसानों के पाग कोई अधिकार है नहीं। जमीन भी बाँटा सी है और जो है, सब जमींदारों और अमीरों की है। गरीबों को आधा सरदिया बगर रोटी के काटनी पड़ती है।’

इत्या निकोलायेविच कमरे में टहलने लगे। उनका दम घुट रहा था, इसलिए उन्होंने कालर के बटन खोल लिए। उनकी आँखा में उदासी सी छापी हुई थी।

‘मेरे प्रिय, तुम थक गये हो। कुछ आराम कर लो,” मरया अलेक्साद्रोव्ना ने चिन्तातुर स्वर में कहा।

‘मुझे कुछ नहीं हुआ है, माथेका। मैं अभी काफी मजबूत हूँ, माँ बलूत की तरह। इत्या निकोलायेविच ने विनोद किया। “और मेरे चारों तरफ नष्टे बलूत बढ़ रहे हैं।”

उन्होंने बोलोद्या को बाँहा में ले लिया। वह सीधा खड़ा हो गया। पिता की तरह उसकी गाल की हड्डियाँ भी थोड़ी सी उभरी हुई थी और माथा भी उही की तरह चौड़ा था। पिता के स्नेह ने उसका मन छू लिया। पर स्वभाव से शर्मिला होने के कारण वह जवाब में हल्के से मुस्करा कर ही रह गया।

पिता

शीतकालीन छट्टिया खत्म होने को आ रही थी। जल्दी ही आया पीटसबग लौट जायेगी। वह छुट्टियो में घर आयी थी, पर साशा नहीं आ पाया था, क्योंकि आने-जाने पर बहुत खच होता था।

पीटसबग में घर की कमी महसूस करने के कारण आया को घर में छोटी से छोटी चीज भी बेहद प्यारी देती थी खाने के कमरे और हॉल में रखे फूलों के गमले, प्यारा सा पियानो, जिसे अब मा के अलावा बहन ओल्या भी बड़ी दक्षता के साथ बजाती थी

सारी छुट्टियो भर बोलोचा वहन के साथ साथ रहा।

वे बत्ती जलाये बिना हाल के एक कोने में सोफे पर बैठ जाते। कभी-कभी ओल्या भी पास बैठकर अयूता से पीटसबग के किस्से सुनती।

“वह समय कब आयेगा जब हम भी पीटसबग पढ़ने जायेंगे?” बोलाचा और ओल्या सोचते।

उस दिन, यानी १२ जनवरी, १८८६ को भी वे हमेशा की तरह हाल में बैठे बतिया रहे थे।

“बच्चों, चाय का समय हो गया है।” तभी मा की आवाज सुनायी दी।

बच्चे खाने के कमरे की ओर जाने के लिए खड़े हुए। पास ही पिता का कमरा था, इसलिए वे बचपन की आदत के अनुसार दबे पाव उसकी बगल से गजरे।

पिता अपने काम में बहुत व्यस्त थे। सालाना रिपोर्ट की तैयारी के लिये उन्हें सुनह से शाम तक मेहनत करनी पडी थी। दूसरे इस्पक्टर और अध्यापक आकर दिन भर उनके साथ कायशमा की पूति और विद्याधियो की प्रगति के बारे में विचार विमश करते रहे थे।

अधखले किवाडा के बीच से बोलोचा को पिता की चुकी हुई पीठ दिखाई दी। वह मुट्टी पर कनपटी टिकाये मेज के पास बठे थे। “पापा अपने पर तनिव भी रहम नहीं करते,” बोलोचा ने सोचा।

किन्तु घाने के कमरे में वातावरण इतना सुखद और गरम था और मेज पर रखे गमोवार में पानी सिंसियाते हुए खोल रहा था कि चिन्ता आशका के सभी वादल छट चले और मन में फिर उल्लाम की लहर दौड

गई। एन वार फिर गभी आया और साशा के विद्यार्थी जीवन के वा-
म वात करने लगे। और इमने वारे म भी कि साशा शायद वैज्ञानिक बनगा-
उममे वैज्ञानिक के सभी लक्षण और गुण थे—और ओल्या हो सक्ता है
कि एन सफ्त सगीतन होगी। अभी से वह पियाना बितना शान्तर बदाता
है और साथ ही बितती मेहनती और लगनी भी है। मा बड़ी चाय का
गिलास पिता को उनके कमरे म देवर समोवार के पास बठी बच्चा की
वात सुनती हुई कुछ बुन रही थी। कुछ देर बाद पिता अपने कमरे स निकल
और दहलीज पर खबर देर तक सवका टकटकी लगाय दपते रहे। फिर
बिना कुछ कहे कमरे म वापस लौट गय।

पापा आज कुछ बदले-बदले लगते ह," बोलोद्या के मन म टाम
सी उठी।

चलू, जरा पापा को देखू," एकाएक मरीया अलेक्साद्रोव्ना ने तप
किया और सलाइया अलग रखर तेजी से उनके कमरे की तरफ चल पनी।
बच्चा। आया, बोलाया।" उनकी वातर चीख सुनायी दी।

पिता एक तरफ को लुढ़के हुए सोफे पर पडे थे। उनकी आँखें बुया
बुझी सी थी और सारा बदन बुरी तरह काप रहा था।

तुरत किसी को डाक्टर को बुलाने भेजा गया। हडबडी मच गयी।
किसी की रलाई और भयाकुल फुनफुमाहट सुनायी दी।

घटे भर बाद बच्चा के ऊपर से पिता का साया उठ गया।

ताबूत को हाल मे रखा गया। तीन दिन तक मा उसके पास से नहीं
हटी। वह मानो जड हो गई थी। लडकिया रो रही थी। आसुआ से
बोलोद्या का गला रूढ़ हो गया था। मगर उसने अपने आपको सभाल लिया।
'पापा, प्यारे पापा, तुम क्या सचमुच नहीं रहे? तुम्हारे बिना हम कसे
जियेगे?'

असख्य लोग इल्या निकोलायेविच से अन्तिम विदा लेने आये। उनम
अध्यापक भी थे, विद्यार्थी भी और मित तथा साथी भी। बोलोद्या जानता
था कि पिता जनता के लिए महत्वपूर्ण और लाभदायक काम कर रहे ह,
मगर यह वह अब जाकर ही समझ पाया कि उहाने लोग की बितनी
भलाई की है।

जिस रोज इल्या निकोलायेविच को दफनाया गया, उस रोज बहुत
ठंड थी और धूप निकली हुई थी। पाले की मखमल से ढके पेड जडवत

खड़े थे। लाल बुलफिचे आसपास की हर चीज़ से बेखबर इस टहनी से उस टहनी पर फुदक रही थी, जिससे टहनिया हिल उठती और उनसे स्पहली धूल चडने लगती। ताबूत का लोग उठाय हुए थे और सबसे आगे-आगे इल्या निकोलायेविच के शिष्य श्रद्धाजलि-मालाए लिये जा रहे थे।

“अलविदा, पापा!” रूढ़ बठ से बोलोद्या ने पिता से अंतिम विदा ली।

पहली मार्च

पिता जब जीवित थे, उही दिना एक बार इवान याकालेविच याकोव्नेव एक नौजवान चुवाश को, जिसका नाम ओखोत्निकोव था, बोलोद्या से मिलाने लाये थे। ओखोत्निकोव माध्यमिक शिक्षा पूरी नहीं कर पाया था।

“इसे आगे पढाना है,” इवान याकोव्नेविच ने कहा था। “चुवाशा को पढ़े लिखे लोगो की बहुत जरूरत है।”

बोलोद्या ओखोत्निकोव को मुफ्त पढाने के लिए तयार हो गया। बाद में जब इल्या निकोलायेविच न रहे, तो बोलोद्या और भी मन लगाकर उसे पढाने लगा। मानो इम तरह पिता की याद को ताजा रखना चाहता हो। वह जानता था कि पिता चुवाश स्कूला की कितनी चिंता करते थे कितनी मदद करते थे।

“महान आदमी थे। जीवन भर लोगो का कितना भला किया।” इल्या निकोलायेविच की याद करते हुए ओखोत्निकोव कहा करता था।

अब बोलोद्या प्राय सोचने लगा था कि जनता की भलाई के लिए कैसे रहा जाये। यह ठीक है कि वह किसान ने बेटे ओखोत्निकोव को पढाता है। पर आगे? बोलोद्या महसूस करन लगा कि जनता के असली हितैपी, रक्षक नातिवारी लोग ह। लेकिन वह ठीक ठीक नहीं जानता था कि नातिवारी सघप कैसे किया जाये। उसे स्कूलो के कठोर और निमम तौर-तरीके पसंद नहीं थे। उसे भगवान में भी विश्वास नहीं था, इसलिए उसने गले से आस भी उतार फेंका था। वह समाज में अनायास के बालबाले के बारे में बहुत सोचता। वह खेता था कि धनी लोग निठल्ले बैठे रहते हैं और गरीब दिन रात कमरतोड़ मेहनत करने के बाद भी ज्या के त्या गरीब

वने रहते हैं। क्या यह 'याय' है? उसे जार से भी नफरत हा गई थी। जार निरकुश था। पर उसके विरुद्ध कैसे लडा जाय?

वहा, पीटसवग म, साशा भी क्या इस बारे मे सोचता है? या वर राजनीति से अलग रहकर सिफ विज्ञान को ही समर्पित है। वोलोद्या का इस बारे म कोई ज्ञान नही था। पीटसवग मे जो १ माच, १८८७ का घटा था, वोलोद्या मा और यहा तक कि आया के लिए भी, जिसम साशा बहुत घुला मिला था और पीटसवग मे प्राय मिलता रहता था, मवथा अप्रत्याशित और स्वच्छ आकाश मे बिजली के गरजने जमा था।

स्कूल मे पढाई का अतिम घटा चल रहा था। सब कुछ सामाय था। लकिन स्कूल के बाहर एक आदमी खडा वालोद्या का इन्तजार कर रहा था

'वेरा वसीत्येव्ना ने तुरत आने का कहा है।'

वेरा वसीत्येव्ना कश्कादामोवा ने, जो इल्या निकोलायेविच की पुरान साथी थी, कापते हाथो से वालोद्या की ओर पत्र बढाया।

वह पीटसवग से आया था और उसमे लिखा था १ माच का कुछ विद्याथिया न जार अलेक्सान्द्र तृतीय को मारने का असफल प्रयास किया। सभी विद्यार्थी गिरफ्तार कर लिये गये ह और उनमे अलेक्सान्द्र उल्यानाव भी है।

पत्र पढ लेने के बाद दर तक वोलोद्या अवाक् खडा रहा। साशा! भाई! दुबला, लबा, बडी बडी सांच मे घोषी आखोवाला, होनहार, बुद्धिमान साशा! और आया भी गिरफ्तार हो गई है।

पिता की मृत्यु को साल भर से कुछ ही ऊपर हुआ था। मा अभी भी शोक के कपडा मे थी। फिर भी वह न रायी, न हतोत्साह ही हुई। हा, चेहरे पर एकाएक झुरिया और उभर आयी। वाली पोशाक म वह इतनी गभीर, इतनी शोक म डूबी नगनी कि वोतोद्या का दिल कराह उठता। मा ने सबका बताया कि घर म क्या करना है और कस रहना है और खुद उसी दिन पीटसवग क लिए रवाना हो गयी।

अब घर म वोतोद्या ही सबसे बडा था। सबसे छाटी मयाशा को सिफ नोवा माल चल रहा था।

'वोलोद्या कोई खेन खेल, मयाशा अनुरोध करती। "न जान क्या तुम आज हम भी नहा रहे हा।'

वोलोद्या न चाहते हुए भी बहन के साथ खेलने को तो तैयार हो जाता, पर हसी तब भी नहीं लौटती। “साशा, मेरे प्यारे भाई, अब तुम्हारा क्या होगा?”

मई का महीना आ गया। स्कूल में परीक्षाएँ शुरू हो गईं। वोलोद्या और ओल्या, दोनों ही पास हो गये। दोनों ही गुमगुम, जड़ हालत में परीक्षा देने आये थे। मगर परीक्षक उनके जवाबों से चकित रह गये— भाई और बहन, दोनों ने बहुत बढ़िया जवाब दिये थे। बहुत बढ़िया और तब तक अखबारा में छप चुका था कि सावजनिक स्कूला के भूतपूर्व इन्स्पेक्टर के बेटे अलेक्सांद्र उल्यानोव को

वोलोद्या परीक्षा देने जा रहा था। सिम्बीस्क की सड़के चिड़ियों की बसतकालीन चटचहाहट से गुज रही थी। सब कुछ हमेशा जैसा था, जीवन, गति और कोलाहल से भरपूर।

तभी उसे लैम्प के खम्भे के पास लोग की भीड़ दिखायी दी। खम्भे पर कोई कागज चिपका हुआ था और लोग पढ़ रहे थे। उनमें पिता का एक साथी भी था। वोलोद्या को देखते ही वह मुडकर तेज कदमों से वहाँ से चला गया। लोग भी तितर-बितर हो गये। खम्भे के पास पहुँचकर वोलोद्या न भी कागज पर लिखी हुई सूचना पढ़ी। उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया। ज़ार की हत्या के प्रयास के अपराध में पाँच विद्यार्थियों को फाँसी दे दी गई थी। और उनमें साशा भी था।

फाँसी की सूचनाएँ सारे शहर में टगी हुई थीं।

वोलोद्या जब स्कूल के हॉल में पहुँचा, तो वहाँ पूरी खामोशी, भयावह खामोशी छापी हुई थी। उसने ज्यामिति और त्रिकोणमिति के सवाल सबसे पहले हल कर लिए। बापी अध्यापक को देकर वह बाहर निकल बेनत्स की ओर चल पड़ा। वसन्तकाल की पानी से भरपूर वोल्गा कास्पियन सागर की ओर बढी जा रही थी। एक छोटा सा जहाज बड़े से बजरे को पीछे लिये जा रहा था। चारा और नीरवता थी, मनाटा था। क्या किया है उन्होंने साशा के साथ!

हफ्ते भर बाद मा भी पीटसवग से लौट आयी। वालाद्या न दखता कि उनके बाल पूरी तरह गफे हो गये हैं और वह बहुत बूटी नगन लगी हैं।

सिम्बीस्क से विदा

सिम्बीस्क म अब सभी जान पहचानवाला ने उल्यानोव परिवार स मुह माड लिया। मरीया अलेक्साद्रोव्ना जब सडक से गुजरती, तो मिलनवात फतरावर सडक के दूरी धार हो लेत, ताकि फासीयाफ्ता बेटे की मा स दो बातें न करनी पड़े।

मगर मा गव से सिर ऊचा किय अपने रास्ते चलती रहती। वह न कभी रोती, न साशा का जिक्र ही करती। “मा बहुत दृढ़ और गर्वीला है,” बोलाद्या बड़ी श्रद्धा से उनके बारे म सोचता।

वालाद्या ने स्कूल की पढाई पूरी कर ली थी। अध्यापका के बीच इस वार मे बहम हुई थी कि प्राणदड पाये हुए आदमी के भाई को स्वणपत्रक दिया जाना चाहिय कि नहीं। किन्तु वालोद्या ने फाइनल की सभा परीक्षाआ मे इतने बढ़िया अरक पाये थे कि उहे स्वणपदक देना ही पडा।

“बोलोद्या को विश्वविद्यालय मे भग्नी होना चाहिये,” मा ने इवान याकोव्लेविच के सामने अपन मन की बात कही। “पर सवाल यह है कि उमे पीटसवग विश्वविद्यालय म लेने को तैयार हाने?”

“नहीं लेगे। इसकी कोशिश करना भी बेकार है।”

पिता के मृत्यु के बाद परिवार को तरह-तरह की कठिनाइयो का सामना करना पडा था। बच्चे पढ रहे थे और कमानेवाला कोई नहीं था। मा को पिता की पेंशन मिलती थी, पर वह परिवार के भरण-पोषण के लिए भी मुश्किल से पूरी पड पाती थी।

अतत यह तय किया गया कि सिम्बीस्क छोड दिया जाये। “हम अपन इस प्रिय घर को, जिसका हर कोना विगत के सुखी दिनों की याद दिलाता है, इस बाग को, जिसका हर पेड अपनी जान की तरह प्यारा है, और सभी मित्रो और परिचितो को, जो अब पराय बन गये हैं, छाडकर अयल चलें जायेंगे।”

पर नहीं सभी पराये नहीं बने थे। पिता के अनन्य साथी इवान याकोव्लेविच पराय नहीं बने थे। बोलोद्या का विद्यार्थी ओखोत्निकोव पराय नहीं बना था। वरा वसीत्यना भी परायी नहीं बनी थी उल्टे वह दुख की घडी मे मा के और निकट ही आ गई थी।

सिम्बीस्क के अखबार म एक दिन एक विज्ञापन निकला ‘भवान,

जिसके साथ बाग भी है, पियानो और फर्नीचर बिकाऊ हैं।—उल्यानोवा, मास्को सड़क।”

मवान म खरीदारों का ताता लग गया। लाग आते, कमर दखते, चीजा को छूकर, उलट-फुलटकर जाचते। मा पर वे सिर से पैर तक नजर डालत और फुमफुमाने लगते। मा पीली पडी, चेहरे पर कठोरता का भाव लिये और अपने सफेद बाला पर काला लेसदार रुमाल छोड़े दरवाजे पर खडी रहती। वोलोद्या की इच्छा होती कि दौडकर मा के पास जाकर उन सब विद्वेषपूर्ण और टटालती निगाहा से उह बचाये, उनकी रक्षा करे।

रह रहकर उसे साशा भी याद आता। “साशा, तुम्हें जार से नफरत थी। तुमने उसे मारना चाहा। तुम सोचते थे कि तब सब कुछ बदल जायेगा, लोग बेहतर रहने लगेंगे। लेकिन ६ साल पहले, १ मार्च, १८८१ को इसी तरह जार अलेक्सांद्र द्वितीय भी तो मारा गया था। उससे क्या लागा का जीवन सुधर गया? तबिक भी नहीं। अलेक्सांद्र द्वितीय की जगह पर अलेक्सांद्र ततीय आ गया। लोगो की हालत ज्या की त्या बनी रही। तो इसका मतलब है कि सघप का तरीका बदलना होगा।”

इस तरह वह सोचा करता।

और इस बीच नय-नये खरीदार आते रहते। वे भी चीजा को छूते, उलटते पलटते और पसंद आने पर गाडी पर लादकर ले जाते।

सिर्फ पियानो को ही किसी ने नहीं खरीदा।

वोलोद्या ने उसके ठंडे ऊपरी हिस्से पर हाथ फेरा। “हमारा सारा बचपन और सुखी दिन तुम्ही से जुड़े हुए थे।”

परिवार पियानो को भी अपने साथ काजान ले गया।

काजान की सभा

जब वोलाद्या उल्यानोव काजान विश्वविद्यालय में भरती हुआ था, तो उसे आशा थी कि यहा का वातावरण सिम्बीस्क के स्कूल से वही असकीण, स्वच्छद होगा। पर कहा! विद्यार्थियों की हर हरकत, हर बात पर नजर रखी जाती थी। वही कोई जार और सरकार के विरुद्ध, विश्वविद्यालय के अधिकारियों के विरुद्ध या इन्स्पेक्टर पोतापोव के विरुद्ध

ता कुछ नहीं कह रहा है? इन्स्पेक्टर पोतापोव बहुत ही बेहदा भारी भरकम और भावशून्य निगाहावाला आदमी था, जिसमें दया-महानुभूति रचमात्र भी नहीं थी। उसका आदमी आरर उगे विद्याधिया की हर हरकत की रिपोर्ट द जाते। वह दोपिया की सूची बनाता और बड़ी बेरहमी व साथ उन्हें विश्वविद्यालय से निष्कासित कर देता। घास तौर से शरीर विद्याधिया को। गरीबा का वैभ भी विश्वविद्यालय में पढ़ना त्नादिन कठिन होता जा रहा था फीस कई गुना बढ़ा दी गई थी।

वाज्ञान विश्वविद्यालय का वानावरण जेल की तरह मनहूस और बोझिल था। उन दिना जैसे तो सारा रूस ही जेल सा बना हुआ था।

४ दिसम्बर, १८८७ की बात है। अचानक में मास्का व विद्यार्थी दगा की खबर छपी थी। फलत वाज्ञान के विद्याधिया के बीच भी यह गुप्त अपील प्रचारित होने लगी अपन अधिकारा के लिए खड़े होना! सघष करो।”

दिन में बारह बजे यह आह्वान सुनायी दिया
 “विद्याधियो! हाल में सभा होगी।”

सभी तरफ से उमड़ते हुए विद्यार्थी दूसरी मजिल पर हाल में इकट्ठे होने लगे। सबसे पहले पहुँचनेवाला में बोलोद्या उल्यानोव भी था।

साधियो।” सभा के अध्यक्ष ने विद्याधिया की भीड़ को पुकारते हुए कहा, हम शपथ खाते हैं कि एक-दूसरे का साथ देंगे, अपने अधिकारा की रक्षा करेंगे। हम स्वतन्त्रता और याय की भाग करते हैं।”

तभी हॉल में दडियल और भारी भरकम पोतापोव ने प्रवेश किया।
 ‘सज्जनों! मैं कानून के नाम पर आप लोगों से सुरत तितर बितर हो जान की माग करता हूँ।”

“निकल जाओ! मुर्दाबाद।” भीड़ चिल्लायी।

इन्स्पेक्टर डरकर भाग गया।

इसके बाद रेक्टर आया। विद्यार्थी खामोश हो गये। रेक्टर को मागपत्र थमाया गया।

‘रूस में रहना दूभर हो गया है। विद्याधियो का जीवन दूभर हो गया है,’ उसमें कहा गया था।

विद्याधियो, शांत हो जाओ,” नौजवानों की उत्तेजित भावनाओं

को शांत करने का और कोई उपाय न देखकर रेक्टर उन्हें समझाने-बुझाने लगा।

“तो इसका मतलब है कि आप हमारी मांगों से सहमत नहीं हैं?” विद्यार्थी फिर उफन पड़े— “साधियों, विरोध के तौर पर हम विश्वविद्यालय छोड़ते हैं। अपने विद्यार्थी-कांड लौटा दो।”

विद्यार्थी रेक्टर के कार्यालय में जाकर अपने-अपने कांड लौटाने लगे। कांडों का ढेर बढ़ने लगा। दस बीस तीस नियानवे

कांड लौटानेवालों में वोलोद्या उल्यानोव भी था। उसी दिन शाम तक उसे विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया।

उस रात उसे गिरफ्तार भी कर लिया गया और कुछ दिन बाद विश्वविद्यालय से निष्कासित व्लादीमिर उल्यानोव निर्वासन दण्ड पाकर पुलिस की देखरेख में कोकूश्किनो गांव जा रहा था।

भविष्य का निर्धारण

कोकूश्किनो में सरदियों में कड़ाके की ठंड पड़ती थी। बर्फानी तूफान प्रायः आते थे। घर के अंदर भी हवा से बचने का कोई उपाय नहीं था। रातों में चिमनी के अंदर हवा साय-साय करती रहती थी। जीवन बहुत ही एकाकी और उदासी से भरा था।

सारी सरदियों भर वोलोद्या पढ़ता रहा। चेर्नीशेव्स्की उसके प्रिय लेखक बन गये। वह उनकी आतिशक्ति से अत्यन्त प्रभावित था। चेर्नीशेव्स्की से उसे मालूम हुआ कि रूसी समाज का वास्तविक ढांचा क्या है। सारी सत्ता जार, नौकरशाहों, उद्योगपतियों और जमींदारों के हाथ में थी। किसानों और मजदूरों के लिए जीवन जैसे-सैसे काटना भी दूमर था। चेर्नीशेव्स्की ने उसका रूसी जीवन की विषमताओं से परिचय कराया और सघप के लिए, आति के लिए प्रेरित किया। कितने अमूल्य पृष्ठ थे वे! वोलोद्या ने उन सरदियों में उन्हें न जाने कितनी बार पढ़ा होगा और हर बार वे कुछ न कुछ नया कहते थे।

अब वोलोद्या बहुत सोचता था। जीवन के बारे में उसके अपने सपने, अपनी योजनाएँ थीं। जीवन का लक्ष्य भी स्पष्ट हो गया था। और यह था आतिकारी सघप, जार और अमीरों के खिलाफ सघप, आम लोगों के सुख

और आजादी के लिए सघष। अब वह अपना सारा जीवन उसी सघष को अर्पित कर देना चाहता था।

क्रांतिकारी सघष—यही जीवन का एकमात्र, मुख्य तक्ष्य था। किन्तु जीवन-निर्वाह के लिए आजीविका का साधन भी तो चाहिये। और इसके लिए विश्वविद्यालय की पढाई खत्म करना, डिग्री पाना जहरी था।

वसत मे वोलोद्या ने काजान विश्वविद्यालय को प्राथनापत्र भेजा। मगर वह स्वीकार नहीं हुआ।

मरमिया के अत मे मरीया अलेक्साद्रोव्ना न शिक्षा मन्त्रालय के नाम एक प्राथनापत्र भेजा। यह भी मजूर नहीं हुआ।

वोलोद्या ने मन्त्रालय से एक बार फिर प्राथना करने का फसला किया। मगर इस बार भी असफलता ही हाथ लगी।

अब इसके अलावा और कोई चारा नहीं था कि घर पर बैठकर ही विश्वविद्यालय के पूरे कोस की तैयारी की जाये। भूतपूर्व विद्यार्थी व्लादीमिर उत्यानोव ने विधि सकाय के चार साल के कोस का डेढ साल मे खद ही अध्ययन किया और परीक्षा दने के लिए पीटसबग रवाना हो गया।

प्रश्न बहुत कठिन थे। सफेद बालावाले बूढे प्रोफेसरो ने उत्तरा को ध्यान से सुना। हल्के से उभरे गाला और दमकती तथा थाडी सी भिची आखोवाला नौजवान विषय को भली भाति जानता था। प्रोफेसरा ने आपन म विचार विमश किया। सबकी यही राय निकली कि उत्यानोव समूच विश्वविद्यालय मे सबसे अधिक अक पाने का अधिकारी है।

व्लादीमिर उत्यानाव अपनी सफलता पर अत्यंत हर्षित था। वह पीटसबग को बहुत कम जानता था और प्राय खाली समय मे बहन ओल्या के साथ नन्क्वी भाग पर टहलने, शहर की सैर करने जाया करता था। ओल्या पीटसबग मे ही महिला कालेज मे पढती थी।

परीक्षाया के बाद वह ओल्या से मिलने के लिए चल पडा। अपनी खुशी उसके साथ भी वाटना चाहता था। इतनी मेहनत बेकार ही नहीं की थी। शीघ्र ही वह पूरी तरह पीटसबग आ जायगा, अपना सबसे महत्वपूर्ण काम—क्रांतिकारी सघष—शुरू करेगा।

जब वह बहन के यहा पहुचा, तो वह तज बुखार से जलती हुई सनिपात की हालत मे विस्तर पर पडी तडप रही थी। उसके बाल बिखरे

हुए और आठ सूखे हुए थे। वह हर समय कुछ न कुछ पकड़ने की काशिश कर रही थी और उसके हाठ कुछ बुलबुदा रह थे।

मा ! मा ! मुझे उचाओ !”

व्लादीमिर इल्यीच न उसका हाथ अपने हाथों में लिया। मगर वह भाई का पहचान न सकी और झटककर अलग हो गई। वह तुरंत उसे अस्पताल ले गया और साथ ही मा का तार भी कर दिया।

मरीया अलेक्सांद्रोव्ना के पीटसवग पहुंचते पहुंचते आल्या की हालत बिल्कुल ही बिगड़ गई। ८ मई १८६१ का उसका प्राणपखे उड़ गया। चार माल पहले आज के ही दिन माशा को फासी दी गई थी।

ताबूत के पीछे-पीछे व्लादीमिर इल्यीच मा को थामे हुए चल रहा था। मा का चेहरा पीला, निष्प्रभ, आठ जोर से भींचे हुए और आंखें सूनी सूनी तथा अश्रुहीन थीं।

ब्रग्राह म एक और, ताजा टीला पैदा हो गया। आल्या की सहलिया न ब्र का फूला से ढक दिया।

आल्या की दफनान के बाद व्लादीमिर इल्यीच मा के साथ समारा लौट आया। उन दिनों उत्यानोव परिवार इसी नगर में रहता था।

समारा में रिताए हुए माल व्लादीमिर इल्यीच का जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण था। वही उसने विश्वविद्यालय की परीक्षा की तयारी की थी और वही माक्स की विचारधारा का निकट से और गहरे तौर पर अध्ययन किया था।

महान जर्मन विद्वान और आतंकी काल माक्स विश्वप्रसिद्ध पुस्तक 'पूजी' के लेखक और 'कम्युनिस्ट मनिफेस्टो' का सहलेखक थे। कम्युनिस्ट मनिफेस्टो उन्होंने फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ मिलकर लिखा था। माक्स ने सिद्ध किया था कि अतन्त मजदूर वर्ग पूजीपतियों पर विजय पा लेगा और सत्ता अपने हाथ में लेकर धरती पर एक नया, कम्युनिस्ट समाज की स्थापना करेगा। व्लादीमिर इल्यीच इससे बहुत प्रभावित हुआ था। माक्स के विचारों ने उसके हृदय तथा मस्तिष्क, दाना का उद्वेलित किया था। अब उसके समक्ष भविष्य का रास्ता पूरी तरह स्पष्ट था। रास्ता चुन लिया गया था और वह भी हमेशा के लिए।

माक्स की विचारधारा का अनुसरण करनेवाले माक्सवादी कहलाते थे। इस तरह अब व्लादीमिर इल्यीच भी माक्सवादी था। वह समारा की

माकमवाणी मडला की गतिविधिया म हिम्मा लन और माग व विचार का प्रचार प्रसार करन गगा। बेजब उग समय पुनिग व चगुन म पन म वचन व निए माकम व विचार का प्रचार गुप्त रूप स हा किया जा मवना था।

परीभाभा व वाट द्वादीमिर इत्योच न ममारा म वकालत गुरु व और अनव वाग विमाना और गरीज नागा की आर म पग्बी की।

वह काम आर अध्ययन म डूना रहता। मगर उमरी हार्दिक आकाशा थी कि ममारा छाडकर किगी बडे आद्योगिन नगर, ग्राम तीर स पीटसवग म जाकर रहने गगे। वह पीटसवग कभी वा चना भी गया होता, पर ना वा अकेली कम छाज जाय। मा आल्या की याद म वटून उदाम रहता था। द्वादीमिर इत्योच अपन चिन्ता और स्नह म भरपूर व्यवहार ने मा वा दिल बहलाय रखन की भरमक काशिश करता।

आखिरकार १८९२ की शरद म उल्यानोवा न ममारा छाड ही गिा। मोत्या व विश्वविद्यालय म भग्नी हान वा समय आ गया था। मरोवा अलेक्साद्राव्ना मोत्या और मयाशा व माथ मास्का म आकर रहन लगे।

आना इत्योनिच्ना वा विवाह हा गया था। उसवा पति माक तिमोफ्येविच यलिजारोव विद्यार्थी कान म पीटसवग मे माशा वा सहपाठ था। तभी स आना इत्योनिच्ना व साथ उसको दोस्ती थी, जो दुखा और कष्टा व दौर म और भी गात्री होती गई। आना माक और उल्यानोव परिवार व लोग एव माथ रहत थे। इसलिए मास्को मे भा सभी माथ रहन लगे।

किन्तु शक्ति और क्रातिकारी उत्साह मे भरपूर द्वादीमिर इत्योच ता पीटसवग म रहना चाहता था। इसलिए वह अकेला ही बहा गया।

नेवा के पार

मध्या वा समय था। पीटसवग की मडका पर वक्तिया वा धुधला उजाला था। इक्के दुक्के राहगीर तेज कदमा से अपन घरा की ओर जा रहे थे।

लादीमिर इत्योच घोडाट्राम म बँडे थे। घोडाट्राम थरथराती पटरिया पर हिचकोले खाती चली जा रही थी। खिडकिया पाले से ढक गई थीं

और कुछ दिखायी नहीं दे रहा था कि कहा जा रहा है। जाना बहुत दूर था। नेवा के पार, मजदूरों की वस्ती में।

घोड़ाट्राम में व्लादीमिर इत्योच के पीछे पीछे काले चश्मावाला एक नाटा सा आदमी भी ट्राम पर चढ़ा था। व्लादीमिर इत्योच ने स्टाप पर खड़े हुए उस दृष्टि लिया था। वह अपने चेहरे के आगे अखवार किये हुए खड़ा था, माना, पढ़ रहा हो, जबकि अमल में उसकी नजर व्लादीमिर इत्योच पर थी, जिसे वह यह समझते देर न लगी कि वह पुलिस का भेदिया है।

व्लादीमिर इत्योच बाहर निकलने के दरवाजे के विल्कुल पास जाकर बस गया और कालर उठाकर सोचने लगे कि उससे पीछा कैसे छुड़ाया जाये। उन्होंने वहाना किया कि सो रहा हूँ, जबकि असल में काच पर साम फूक-फूककर बर्फ पिघलाने की कोशिश कर रहे थे, ताकि जिस जगह पर उतरना है वह छूट न जाये। वह एक ऐसा स्टाप जानत थे, जहाँ भेदिय को धामा दिया जा सकता था। आधा के काना से वह जमे हुए पानी में बने छाले से छेद से रास्ता दखते जा रहे थे। अब थोड़ा ही दूर रह गया था। अगले स्टाप पर उतरना है। ट्राम रुक गई।

“है कोई उतरनेवाला ?” कण्डक्टर ने पूछा।

सब चुप रहे। व्लादीमिर इत्योच भी चुप रहे।

घोटे चल दिये और तभी एकाएक व्लादीमिर इत्योच अपनी जगह से उछले और ट्रामगाड़ी में बूढ़ पड़े। और फिर सिर पर पाव रखकर सीधे सामने के अहाते की ओर, जो दूसरी तरफ किसी गली में खुलता था, भागे। पीछे में हडबडी में घटी वजाये जाने की आवाज सुनायी दी।

घोड़ाट्राम रुक गई। मगर तब तक व्लादीमिर इत्योच अहाते तक पहुँच उसके फाटक में घुस चुके थे। भेदिया भी ट्राम से बूढ़ा, पर देर हो चुकी थी। उसने इधर देखा, उधर दखा। कहीं कोई नहीं था।

व्लादीमिर इत्योच अहाते के दूसरी तरफ गली में निकल निश्चित होकर अपने लक्ष्य की ओर चल दिये।

मडली की बैठक नेवा पार के इलाके में मकेनिकल फैक्टरी के फिटर इवान वावुशिकन के घर में हो रही थी। नेवा के पार बहुत में बारखाने और फ़ैक्टोरिया थी। सुबह अभी झुटपुटा ही होता था कि उनके भापू गजने लगते। मजदूर मुह अंधेरे ही काम के लिए चले पड़ते और रात में

पर घर लौटते। मूरज कभी दग्धन का न मिलना। किन्तु अधिकांगूा जीवन था। पर हमशा ता ऐम नहा रहा जा गवता था।

मजदूर पुलिस म छिपकर फिटर वावुशिनन के घर म दबट्टे हात आर अपनी स्थिति पर निचार करते।

इम शाम व वहा वठे निरोलाई पत्राविच की प्रतीशा कर रू थ, जिह उनक मामन भापण करना था। निवालार्ड पत्राविच और काई नहा, स्वय व्लादीमिर इल्यीच ही थ।

मगर वह मजदूर मटली म क्याकर आय ?

इमलिए कि वह मजदूरा का माक्स के विचारा, मिद्धता व बार म वताना चाहते थे। माक्स न कहा था मजदूर ही वह शक्ति है, जा ममाज का पुननिमाण करन म समथ ह। अगर मजदूर चाहेंगे और फस्टग मानिसा आर जार के विरुद्ध खडे हा सकेंगे, ता काई भी उह नहा युवा सकता। इमका मतलब ह कि मजदूरा का मगटिन करना है, लश्य तय करना है और उसकी आर वढना ह। मजदूरा का लश्य एक ही हा सकता है। वह ह सत्ता अपन हाथा म लेना महनतवशा का राज्य स्थापित करना।

यह सबसे शानदार राज्य हागा, जिसम भाग ममाज याम पर आधाति हागा। और माक्स न इसे कम्युनिस्ट समाज कहा था।

पहली पुस्तक

इम बीच पीटसबग मे नवा पार की इवान वावुशिनन का मडली के अलावा मजदूरो की दूसरी भी कई माक्सवादी मटलिया स्थापित हो चुकी थी। पीटमजग आन के पीछे व्लादीमिर इल्यीच का मुख्य उद्देश्य आतिकारी माक्सवादियो के साथ सपक स्थापित करना था।

“साथियो व्लादीमिर इल्यीच न कहा, ‘हम माक्स के विचारा का सभी मजदूरो के बीच प्रचार करना है। हम मजदूरा के साथ एकवच होना है, और जाति की तैयारी करनी ह।

इस तरह आतिकारी सघ की स्थापना हुइ, जिसे वाद म मजदूर वग की मुक्ति के लिए सघष करनवाली लीग कहा जान लगा। पहले सघष

लोग' बवल पीटमग मे ही थी, वाद म उसे दूमरे शहरा म भी स्थापित किया गया।

किन्तु व्लादीमिर इल्यीच का काम इन मडलिया का नेतत्व करना ही नहीं था। दिन म, शाम का और यहा तक कि कभी-कभी रात गय भी वह लिखते रहत थे। वह जा कितान लिख रहे थे, वह पूजीपतिया के लिए वेहद खतरनाक थी। वह मजदूरा को बताती थी कि पूजी की मत्ता के खिलाफ मही और मगटित ढग स मघप कैसे किया जाय।

शीघ्र ही व्लादीमिर इल्यीच की पुस्तक पूरी हो जायेगी और माकमवादी माथी उसे गुप्त रूप से छापकर मजदूर मडलिया के बीच वाट देंगे।

रात काफी हो गई थी। मामन के घर की बत्तिया बुन चुकी थी। व्लादीमिर इल्यीच ने कनम रखी और खडे होकर तीन डग भर। कमरा छोटा सा ही था, पर उह चहलकदमी करना पमद था।

'रास्ता एक ही ह। रुमी मजदूर विजयी कम्युनिस्ट क्राति की ओर ने जानवाल खुले राजनीतिक सघप के इस सीधे रास्ते स चलेगे, यही वह इस समय सोच रह थे और यही उहान पुस्तक म भी लिखा था। उनकी पुस्तक रुसी मजदूर का विजयी कम्युनिस्ट क्राति के लिए आह्वान करती थी। अभी तक कभी किसी ने रुमी मजदूर का ऐमा साहमिक आह्वान नहीं किया था।

उस समय व्लादीमिर इल्यीच की अवस्था निफ चौबीस साल की थी। वह अभी बिल्कुल युवा थे। मगर जानते बहुत थे और उनका दढ विश्वास था कि रुसी मजदूर क्राति करके रहगे।

चार परचे

पुलिस घर घर जाकर विद्रोह करनेवाता को पकड रही थी और हाथ पीठ क पीछे बाधकर थान ले जा रही थी।

“मालिक का गोदाम तोडा था? तोडा था। चलो जेल म।”

“मनेजर के दफतर को आग लगायी थी? चलो जेल म।

वायुश्चिनन प्रतीक्षा कर रहा था कि जल्दी ही उमकी भी वारी आयेगी।

रात गय किमी के जोर से और ठहर ठहरकर दरवाजा खटखटान की आवाज आयी।

यह व्लादीमिर इत्यीच थे। पाले से आपादमस्तक सफ़्त। यहाँ तक कि भाहा पर भी वफ की धूल जम गई थी। आवरवाट उतारकर ठं स जम हाथा को मलत हुए आर साथ ही कमर में चहूनकदमी करत हए वह पूछन लगे

हा, तो बतादय, कस शुत् हुआ ? मजदूरा का क्या भुगतना पडा ?

बाबुशिकन व्लादीमिर इत्यीच क मामन अपना भारा तिन उडानकर रख देना चाहते थे। कल कारखान में हुए विद्राह, गादाम क ताडे जान और मैनजर के दफ्तर का आग लगाय जान की याद स्मति में अभी ताडी थी। गानाम ताडन और दफ्तर को आग लगाने के लिए ही ता आज पुलिम मजदूरा को गिरफ्तार कर रही थी।

नही, चेतनाशील मजदूरा को दगे उत्पाता क जरिय सघप नहा करना चाहिय, व्लादीमिर इत्यीच न कहा। ' इस बारे में परचा निकानना होगा। '

और दोना मज के पाम बठ गय और दवी आवाज में विचार विमश करन लगे कि परचे में क्या लिखना है, कि सघप की घडी आ गयी है और खुद अपने अलावा और कोई मजदूरा को इस गलामी से मुक्ति नहा दिलायेगा। मगर सघप दगे फमादा के जरिय नही, बल्कि सगठित तरीक से करना है।

रात काफी हो गई थी। बाबुशिकन लनिन की तेजी से चलती कतम को देख रह थे। अचानक मिर मज से टकराते-टकराते वच गया

नही, कोई बात नही। बस या ही !'

' या ही या ऊघने लगे थे व्लादीमिर इत्यीच हम पड। ' बेहतर हागा कि सो जाइये। सुवह भार में काम पर जाना हागा। '

बाबुशिकन न कुठ नही कहा आर मो गय। व्लादीमिर इत्यीच परब की नकल करने लगे। नकल साफ-साफ और बडे अक्षरा में करनी था, ताकि मजदूर आसानी से पड सके। एक के बाद एक करके उहान चार परच लिख डाले।

तमी अचानक फँकटरी का भापू वजन लगा, जिसकी आवाज मार आकाश सारी बस्ती में गूजती हुई बाबुशिकन के घर की वफ से दबी खिडकी से भी टकरायी।

नवा पार की सारी बस्ती जग गयी।

“वाबुश्विन, उठने का समय हा गया है,” व्लादीमिर इल्यीच ने जगाते हुए कहा।

वाबुश्विन चौंकर बैठ गये और आखे मलन लगे कि कही व्लादीमिर इल्यीच का सपने मे तो नही देख रहे हैं। मगर फिर मेज पर पडे चार परचा पर नज़र पडी, तो रात की सब वाते याद हा आयी।

‘इह मजदूरो के बीच वाटना है,’ व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। ‘अफसोस है कि और नही लिख सका।’

वे घर से निकल पडे। आकाश म धूमिल, नीले तारे अभी भी टिमटिमा रहे थे। चिमनियो स धूए के सफेद बादल उठ रहे थ। मडक पर मजदूरा की काली छायाए दौंड रही थी। व्लादीमिर इल्यीच और वाबुश्विन जाकर उनके बीच खो गये।

वाबुश्विन ने जेब से परचे निकाल और चुपके से जान-पहचान के मजदूरा को द दिया। वे पटन के बाद दूमरे मजदूरा का दे देगे।

“हमारा पहला आंदोलन परचा है। सफलता की कामना करता हू, वाबुश्विन, व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

“मिनोगा”

“मिनोगा” (मोरीना) एक पतली, लवी मछली का नाम ह। न जान क्या नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना थ्रूस्वाया जैसी आकषक युवती को यह अजीब सा छपनाम द दिया गया था। वसे भी “सघप लीग” के सदस्या का प्राय ऐसे निराले नाम द दिये जाते थे। उदाहरण के लिए, ग्लेब क्रजिजानोव्की का “सूसलिक” (वनमूस) कहा जाता था, हालाकि दाना के बीच कोई साम्य नही था। जहा तक व्लादीमिर इल्यीच का सवाल था, तो मव उह स्तरीक” (बुढऊ) कहकर पुकारत थे, जो उनके दिमाग और शिक्षा को देखते हुए सही भा था।

नवबर के महीने की वात है। अलेक्साद्रिस्की पाक के सब पड साताकलाज की कहानी की तरह बफ से पूरी तरह ढक चुने थे। “मिनागा”, यानी नादेज्दा कोस्तातीनोव्ना पब्लिक लाइब्रेरी के सामने पाक म धीर-धीरे टहल रही थी। वह छोटा फर का कोट और फर की टोपी पहने हुई थी। छाटे से दस्तान के अदर वह एक कापी पकडे हुई थी, जिसम मजदूरा

ती जानत व धार व लगी लगी मूनाण रज था रि पढ़ने रामर गड हा ताय। य मूनाण परत व त्रिण चान्दिय था।

व्वादीमिर इन्वीन ता वावुशिनन व माथ पहना परना निग प्री उमका तार तिन इसर तिय हूण मान भर हा गया था। धव पाठमवग वा मघप योग मरदा की मग्ग म परत तिरावती थी प्री उर्दें पुन रूप म गावरास्टाउन ररर मार पत्र म वाटी थी।

आगिरकार व व्वादीमिर इन्वीन, सा ही गय। वर पीनर नात्रेरी म वावर निरन रू थ। उर्दें रेखा ही नात्रेरी वाव्नालोनात्रा मन्त्री प्राप्पत ता तर्फ भागा। वहा य मिन प्रीर नीर नया का तर्क चन पडे। व्वादीमिर इन्वीन व उगरी वाट अपनी वाट म व ला था।

नात्रेरी म वापी राम तिया क्या?' नात्रेरी वाव्नालोनात्रा न पूछा प्रीर वापी का उनकी आम्नीन म घुमड तिया।

हा वापी काम तिया व व्वादीमिर इन्वीन न वापी का प्रीर अदर ठुमन हूण जयात्र तिया। मभी मूनाण मही ह ? हा।

धयवाद !

नात्रेरी वाव्नालोनात्रा न टट स गुनारी पडे अपन चहर का व्वादीमिर इत्योच की तर्फ भाडा। उनकी आग्ने चमर रही था। व्वादीमिर इत्योच वा इस सीधी-भापी प्रीर गभीर तडती का माथ तिनता अच्छा लगता था। उमम पहरी मुलाकात पीठमवग आन के तुरत वाट हूई थी। मगर क्या तभी? व्वादीमिर इत्योच का जगा कि वह उमम हमशा से परिचिन ह। वह अपन मन की जगत उम बताना पमर करत थ। वह भी खुशा-खुशा प्रीर बडे उल्माह म उनकी मन्त्र करती थी। जगा के एक स विचार एक मा लक्ष्य प्रीर एक मा ध्यय था।

एकाएक नादेज्दा वाव्नालोनात्रा न महसूस तिया कि व्वादीमिर इत्योच न मावधान सा कराते हुए उमका हाथ दवा तिया है। एक बहन ही नागवार विस्म का आदमी, जिमने अपन कोट के कालर उठा रखे थ, उनका पीछा कर रहा था।

व्वादीमिर इत्योच ने तुरत वातचीत का विषय बदल दिया प्रीर जोर जार से डधर उधर की वात करन लगे। जस कि यही, कि सुना है कि

लिंगोव्का मे एक दुकान है, जिसमे मरदिया की टापिया बहुत मस्ती विक रही ह

भेदिया उनका पीछा करता जा रहा था।

‘अच्छा हा कि हम अलग हो जायें,’ व्लादीमिर इल्यीच फुमफुमाये। दोनो ने एक दूसरे से विदा ली। व्लादीमिर इल्यीच वा आगे जो भी सडक मिली, उसी तरफ चल पडे। भेदिया भी उही के पीछे पीछे। कुछ मिनट तक व्लादीमिर इल्यीच तेज कदमा से आगे बढ़ते रहे और फिर एकाएक पाम ही की किसी गली म मुड गये। भेदिया इसे न दख पाया और सडक पर ही आगे निकल गया। व्लादीमिर इल्यीच न गली म अपन का किमी रईम के मकान के सामन खडा पाया। दरवाजे के शीशे के पीछे दरवान की कुर्सी खाली पडी थी। वह तुरत उमम घुसे, कुर्सी पर बठे और भेज पर से अखवार उठाकर चेहरे के सामन कर लिया।

भेदिया भागा भागा गली मे आया। “कहा गया वह आदमी, जिमका पीछा कर रहा था? जमीन म घुम गया है क्या?” भेदिया हैरान था। उस खाली हाथ ही वापस लौट जाना पडा।

उमकी सूरत इतनी दयनीय थी कि न चाहत हुए भी व्लादीमिर इल्यीच ठहाका लगाकर हस पडे। अब वहा ज्यादा देर बैठना ठीक न था, क्योंकि दरवान किसी भी ममय आ सकता था। व्लादीमिर इल्यीच न आस्तोन के अदर वापी वा टटोला। वह मही मलामत थी। खतरा टल चुका था। अब जैम भी हो, जल्दी से जल्दी घर पहुचना और वाम म लग जाना है।

हमारा आन्दोलन दबाया नहीं जा सकता

८ दिमबर, १८६५ का नादेज्दा ब्रूस्वाया के घर म मधप लीग” की बैठक थी। लीग न गरवानूनी अखवार “खाचेय देलो” (मजदूर ध्यय) निवालने का फमला किया था। बठक म पहले अब के लिए एकत्र सामग्री पर विचार होना था। सभी मुख्य लख, जाशीले और निर्मात्र नेष, व्लादीमिर इल्यीच ने लिखे थ।

यह तय किया गया कि अखवार का किमी गुप्त छापाखान म छापा जाय। फिनलण्ड की खाडी के तट पर, पीटमवग के वाह्याचन म एक ऐमा छापाखाना था।

सारी सामग्री अनातोली वानेयत्र का दे दी गयी। यह २३ वर्षीय विद्यार्थी तनमन से श्रातिकारी काय का अभित था। व्लादीमिर इत्येच मवम उत्तरदायित्वपूर्ण काम उसी को सौपा करते थे। वल वानेयेव लखा का छापाखाने म ले जायगा और शीघ्र ही मजदूरा के हाथा म उनका पहना अखवार हागा।

बैठक काफी देर स खत्म हुई। सभी अपन अपने घरा को चल थि।

व्लादीमिर इत्येच वही बठे रह। वह नादज्दा वान्मनान्तीनाव्ना के साथ वाते कर रहे थे। मगर बातें थी कि खत्म ही नहीं हाती थी। साधिया की चचा चलती, ता व्लादीमिर इत्येच हर किसी म कोई न कोई विशपना खोज लेत और उसकी तारीफ के पुल बाध देत। वह सोगा से प्यार करते थ। चर्चा मजदूरो की भी चनी। कमी उनम जान पिपामा है, वावुस्मिन का ही ल। कितन योग्य और प्रतिभावान है

‘अच्छा, नाद्या, अब चलूगा,’ व्लादीमिर इत्येच न आखिरकार बहा। ‘वल फिर आऊगा।’

सडके मुनसान थी। इक्की-दुक्की बतिया ही जल रही थी। उन धूमिल उजाले म भी तार साफ-भाफ दिखायी दे रहे थे। व्लादीमिर इत्याव घोडाट्राम से पब्लिक लाइब्रेरी तक पहुंचे। यहा भी नीरवता थी। वह अनेन थे। बफ क बोय से अलेक्सान्द्रिन्स्की उद्यान के लिण्डन बक्षो की टहनिया थुक गई थी। सभी कोई टहनी टूटी और उसस सूखी बफ हवा म बिखर गई। व्लादीमिर इत्येच इस समय अत्यंत प्रसन्न मुद्रा मे थे।

कुछ ममय पहल उहाने गारोखावाया सडक पर एक मकान म कमरा किराये पर लिया था। भेदिय प्राय उनका पीछा करते थे, इसलिए सावधाना के लिए प्राय पता बदलते रहना पडता था।

घर पहुंचने पर वह दबे पाव अपन कमरे म घुस, ताकि मालकिन जाग न जाय। अभी सोने की इच्छा नहीं थी। सोचा कि क्यो न कुछ पत्र लिया जाये। व्लादीमिर इत्येच न अपनी अगली किताब के लिए सामग्री चनी और पढाई म इतने डूब गय कि समय का भी ख्याल न रहा। घडी पर देखा तो दो बजने वाले थे।

‘अब सोना चाहिय,’ उहोन मन ही मन कहा पर फिर पत्रन मे मशगूल हो गये।

दो बजे किसी ने घटी बजायी।

व्लादीमिर इल्यीच एकाएक कुछ समय न पाय और आश्चय के मारे वान लगाकर सुनने लगे।

सबस पहले दरबान घुसा, जा चमड़े का कोट और एप्रन पहन था। उसके पीछे-पीछे बिना कोई आवाज किये सिविल वर्दी म दो आदमी व्लादीमिर इल्यीच के कमरे म दाखिल हुए। उनके पीछे पुलिस का अफसर था।

“गिरफ्तारी का वारंट है।”

सिविल वर्दीवाल आदमी कमरे की तलाशी लेन लगे। किताबा को उलटा-पलटा, बिस्तर उठाकर देखा, अगीठी और अगीठी की चिमनी म पाका।

व्लादीमिर इल्यीच बिना कुछ कह दीवार के पाम खडे रहे।

वह अपने साथिया क वारे म सोच रहे थे। वे क्या हैं? गिरफ्तार वह अकेले हुए हैं या साथी भी? और नाचा? क्या हमारा आदालन खत्म हा गया ह? 'नहीं, हम खत्म नहीं हो सकत,' व्लादीमिर इल्यीच ने सोचा। हमारा आदोलन दबाया नहीं जा सकता। हम नहीं टागे, तो दूसरे सैकड़ा हजारों मजदूर उठ खटे हागे, रूस का मारा मजदूर तबका उठ खडा होगा।'

वार्ड न० १६३

छत के नीचे सकरा सा जालीदार बराखा। दीवार के पास लोहे की तुटवा भेज और नोहे की ही कुर्सी। वान म फश पर बिखरी हुई किताबें। जेल म पढ़ने की मनाही नहीं थी। वन्हें और नाचा व्लादीमिर इल्यीच को जूरत की किताबें ला देती थी। उस रात नाचा को गिरफ्तार नहीं किया गया था। वहने और मा व्लादीमिर इल्यीच की गिरफ्तारी की खबर पाते ही मास्को से आ गयी थी।

आज बहस्पतिवार था मुलाकात का दिन। व्लादीमिर इल्यीच न किताबा को बिनार रख दिया और दीवार की तरफ पीठ करके भेज के पाम खडे हो गय। दरवाजे म छोटा सा छेद था, जिससे बाडर ममय-ममय पर अदर बाक लेता था। पीठ मे छेद का ढक कर व्लादीमिर इल्यीच न राटी के टुकडे को गोल किया और उमम अगुली से गड्ढा सा बनाया। यह दवान थी। स्याही का काम दूध करता था। उहाने किताब उठायी और

दूधिया म्याही ने पकिनया के बीच तिखन लगे। शब्द लिखते ही दूध सूख जाता था और कुछ भी दिखायी नहीं पड़ता था। आज वह किताब का वापस ले देगे। घर पर नाचा या वहन पठ का लैम्प पर गरमाएगी और धीरे धीरे शब्द उभरने लग जायेगे। इस तरह मारा पत्र पढा जा सकता। पर हम बार वह पत्र नहीं, बल्कि परचा लिख रहे थे।

८ दिमजर की उम रात को उनके अलावा "सघप लीग" व १६० सदस्य और भी गिरफ्तार किये गये थे। मगर इसमें लीग खत्म नही हो गयी। उसकी प्रेरणा पर हडताल और धरन जारी थे। व्लादीमिर इल्यीच हडतालिया के लिए परच लिख रहे थे।

दरवाजे पर चाभिया का गुच्छा झनझनाने और ताला खोलन की आवाज सुनायी दी। दरवाजा खुला। वाडर अंदर आया। व्लादीमिर इल्यीच ने तुरत रोटी की दवान को उठाकर निगन लिया।

वाडर ने पाम आकर इधर उधर चाका और कुछ भी सदहजनक न पाकर कोठरी से बाहर निकल गया। व्लादीमिर इल्यीच ने दूसरी दवान बनायी और आगे लिखन लगे।

घंटे भर बाद चाभिया का गुच्छा फिर झनझनाया। उल्यानोव का मगेतर मिनन के लिय आयी थी। नादेज्दा कान्स्तातीनोव्ना दोहरी जाली के उस पार खडी थी। हाथ मिलाता संभव नहीं था केवल सिर हिलाकर और मुस्कराकर ही अभिवादन किया जा सकता था। नादेज्दा कान्स्तातीनोव्ना मुस्करायी हालाकि व्लादीमिर इल्यीच को सीखचा के पीछे देखकर उनका दिल रोने को ही आया था। बड़े बहादुर ह! हीमला तनिक भी नहीं छोते!

नादेज्दा कान्स्तातीनोव्ना ने मा आर बहनो को ओर से भी अभिवादन कहा और बताया कि वे सब मकुशल ह, उन्हें मद करत ह और प्यार करते ह।

बाद में पाम की बात पर आय। मगर काम की बात कैसे करे आर सीखचा की दोहरी दीवार के बीच सिपाही घूम रहा हो और हर शब्द का सुन रहा हो?

आज लाइब्रेरी की किताबें वहना का भेज दी हैं व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। और मयाशा की किताब भी। ये शब्द कहते हुए उन्होंने नादेज्दा कान्स्तातीनोव्ना का ध्यान से बहुत ध्यान से देखा।

“उन्होंने मयाशा पर विशेष जार दिया है,” नादेज्दा को स्तातीनाब्ना न मन ही मन गौर किया “इसका क्या मतलब है? अर हा, ममय गई! इसका मतलब है कि उमम काई पत्र या परचा हागा।”

ब्लादीमिर इल्यीच आगे भी परेलिया बुझाते रह।

‘मेरे बाड का नवर जानती हा?’

“क्या नही? जानती हू। एक सौ तिरानवे।”

‘उहनि यह क्या पूछा है? या ही ता नही पूछा हागा। अहा, समझ म आया। १६३ पण्ट पर परचा लिखा हागा, नादेज्दा कान्स्तातीनाब्ना न फिर मन ही मन अनुमान लगाया।

वे सिपाही की आखा म आसानी से धूल थाव रहे थे।

मिपाही न दीवार घडी की ओर दखा।

‘ममय पूरा हा गया ह।’

घटा कितनी जल्दी बीत गया था! दाना म स काई भी जुदा नही हाना चाहता था। दाना एकाएक उदात्त हा गय।

‘ठीक ह, वालोद्या। ता अगली मुलाकात तक। और दखना बहुत उन्म मत होना।”

ब्लादीमिर इल्यीच का वापस काठरी की तरफ से गय। वह चलत चलत भी पीछे देख रहे थे। जब तक वह नजरा से आझल न हो गय, नादेज्दा कान्स्तान्तीनाब्ना वहा खडी उह दखती रही।

ताले म चाबी घूमी और व्लादीमिर इल्यीच फिर अपनी काठरी म य। वह अभी अभी खत्म हुई मुलाकात के वारे मे ही साज रहे थे। कल्पना की आखा से उहनि देखा कि नाद्या जेल क फाटक से बाहर निकल गई ह और अब शायद ग्रीष्म उद्यान की तरफ जा रही ह।

व्लादीमिर इल्यीच काठरी क अघेरे न देर तक चहलचदमी करते रहे और बडे स्नह से नादेज्दा कान्स्तातीनाब्ना के वारे म सोचते रहे।

हरा लैम्प

व्लादीमिर इल्यीच को सुदूर शूशेस्काय गाव म निवासन की सजा भुगतते हुए पूरा एक माल हो गया था। इससे पहले चौन्ह महीन उहोन जेल म काटे थे। निवामन के लगभग दो साल अभी बाकी थे।

उम दिन, यानी ७ मई, १८६८ को पहली बार अपनी नित्यचर्या का ताड़कर व्लादीमिर इल्यीच "रुम म पूजीवाद का विकास" लिखन नहा बठे। यह किनाव इस वारे म थी कि कम रुस के दहाता और शहरा म जमींदारा आर पूजीपतिशा की ताकत बढती जा रही है और पूजी के जए नल पिमती हुइ आम जनता का जीवन उत्तरात्तर दरिद्र और दूमर हाता जा रहा है।

दोपहर के भोजन के बाद एक स्थानीय गरीब किमान सोसीपातिच न, जा दुबला-पतला, फुर्तीला और मिर पर कनटोप और बदन पर फग पुराना कोट पहने हुए था, खिटकी खटखटायी। उनके कंधे पर बढूक लटकी हुई थी।

व्लादीमिर इल्यीच, बतखा क शिबार का नही चलेगे क्या?"

व्लादीमिर इल्यीच चित्ताग्रस्त थे। पीटसबग से नापेज्दा कोन्स्तातीनोना का अब तक पहुंच जाना चाहिय था। माधिया के कुछ बाद नापेज्दा कान्स्तान्तीनोना का भी आतिवारी कार्यों के लिए पीटसबग म जल म बैठना पडा था। आर अब जेल के बाद निवासन की सजा हो गई था। उमन कोशिश की थी कि उम भी शूशेस्कोय भेजा जाय, जहा व्लादीमिर इल्यीच सजा काट रह थे। इसकी अनुमति मिल गई थी और वह चल भा पडी थी। पर शूशेन्काय पहुंचन म न जाने क्या इतनी देर लगा रही है

अपनी व्याकुलता का दवान के लिए व्लादीमिर इल्यीच ने खूटी से बढूक उतारी आर घर म निक्ल पडे।

"हा जत भी ठीक ही पहन ह, ' सासीपातिच न दाद दी।

जगली उत्तया क शिबार क लिए दलदला म चलने के लिए व्लादीमिर इल्यीच के जूत मचमुच बहत उपयुक्त थे। घुटना स भी ऊचे। वे पेरावा चील की तरफ चल पडे, जो काई दम बस्ट की दूरी पर थी। वहा बतखें बतनी थी कि चील क किनारा पर पच ही पख बिखरे दिखायी देते थे।

दिन सुहावना था। धूप भी अधिक तज नही थी। घास सूरज का उजली किरणा स चमक रही थी। हरे मदान इतन ताजे लग रह थे कि जैम किमी न उह घा दिया हो। दूर 'क्षितिज पर नीले आकाश की पष्ठभूमि म यफ ने ढक, आखा का चकाचौध करनेवाले ऊचे सायान पहा" फन थे।

रकिय, चील आ गद ह। अब देखिय निशाना न चूकियगा, व्लादीमिर

इल्यीच ! पहला निशाना चूकना अच्छा नहीं माना जाता, ' शिकार की जगह पर पहुंचन पर सामीपातिच ने चेतावनी दी।

व्लादीमिर इल्यीच बंदूक हाथ में लेकर छड़े हो गये। बंदूक लिय खड़े रहना और जगती पक्षिया की चहचहाहट, सीटिया और ठुन ठुन की सुनना कितना आनंदकर है !

थील के किनारे उगे घन मरकटा के बीच कोई चीज मगमरायी। व्लादीमिर इल्यीच सवाई दम एक कदम की दूरी पर ही एक बड़ी मो गहरे भूय रंग की जगली वस्तु निकली और अपन भारी पखा का फडफडाती उड गई। उहान गोली दागी। पर हुआ कुछ नहीं।

वह विचारा में इतना खोय हुए थे कि घाटा दवान में देर हो गई।

'उफफ, व्लादीमिर इल्यीच, आप भी कमाल करत है, मोमीपातिच नाराज हा उठा।

अपशकुन क वाकजूद आगे शिकार अच्छा ही रहा। उहान कई वस्तुओं मारी। फिर अलाव जलाकर धूए में काली पडी केनली में चाय बनायी।

सामीपातिच अच्छे मूड में आकर व्लादीमिर इल्यीच का रात वही कितान के त्रिण उत्साहित करन गया। उसने बहुत कहा, मगर व्लादीमिर इल्यीच का कोई पूवानुभूति घर बुना रही थी।

अधेरा हा गया था। अहाता में गाये दुही जा रही थी, वाल्टिया में दूध की धार झनझना रही थी।

"व्लादीमिर इल्यीच, देखिय, आपके घर में उजाला है।" सामीपातिच ने कहा।

उजाला व्लादीमिर इल्यीच ने भी देख लिया था। गली के छोर पर उनके घर की दो खिडकिया में उजाला था। हरा उजाला। व्लादीमिर इल्यीच के मन में खुशी की लहर दौड गयी।

बरामद में सदी पोशाक पहने दुबली पतली नादेज्दा कोस्तातीनोव्ना रेलिंग का पकड़े हुए खड़ी थी। व्लादीमिर इल्यीच बरामद की तरफ दौड पडे।

"नमस्ते, नाद्या !"

"दोलोचा !"

"यहा आना यहा आना, दिखाना तो यहा तुम कैसे हा गय हो। कमरे क अंदर से नाद्या की मा मैलिजावेता वसीर्यव्ना का हृषित स्वर

मुनायी लिया। घर पर मगेतर आयी ह और य घुमकड महाशय गिनार पर निवल हुए है।

कमर म हर शेड क नीचे लैम्प जल रहा था।

तुम्हारे लिए लायी ह। हरा उजाला आया का चुभना नही,' नाएजा कोस्तातीनोव्ना बानी।

वह उम मास्को से आयी थी। न्य दिन की रेनयात्रा म, फिर स्पीग पर और बाद म बकान घाती घाडागाठी पर, वह उस बहुत सभान रहा की। उह डर या कि शूशम्बाय तक मही मलामत नही पहुचा पायेगी पर पहुचा दिया था।

व्लादीमिर इल्यीच, आपसे एक प्रार्थना है

नादेजा कान्स्तातीनोव्ना भी अत्र शूशेम्बाय आ गयी थी। व मव एक परिवार की तरह रहन लगे। शूश नदी के किनार पर वन एक नव मकान म फनेट किराय पर ल लिया गया था।

नव घर म व्लादीमिर इल्यीच के काम करन के त्रिए एक कमरा अत्र कर दिया गया। उनम किताबा की आनमारी थी, और लिखन पढन क लिए एक रलिगदार ऊची डेस्क जिम पर हरे शेडवाला लैम्प रखा था। सरदिया म शूशेम्कोय म लाग जल्दी ही सो जात थे, मगर व्लादीमिर इल्यीच के कमर म हरी बत्ती दर तक जलती रहती

व्लादीमिर इल्यीच खडे होकर लिखना पढन करत थे। रूम म पूजीवाद का विकास ' लगभग सारी खडे-खडे ही लिखी गई थी। व्लादीमिर इल्यीच बहुत काम करत व। शूशेम्कोय म रहत हुए उहान उपरोक्त किताब और कई लख लिखे और अग्रेजी स कुछ माहित्य का अनुवाद किया। नाएजा कोस्तातीनोना उनकी बहुत मदद करती था, हालाकि वह खुद भी उन दिन स्त्री मजदूरा के बारे म एक पुस्तिका लिख रही थी। उह मजदूर जीवन का अच्छा नान था।

दोना साथ साथ काम और आराम करत थे। कभी कभी वे साथ साथ शूश के किनार क जगल या दूर यनिसेई की तरफ टहलन निकल जात। दोनो नौजवान थे एक दूसर को चाहत थे और खश थ।

दोपहर का समय था। येलिजावेता वसील्येव्ना ने दरवाजा खटपटाया और बताया कि कोई मिलने आया है। व्लादीमिर इल्यीच लियन म व्यस्त थे और काम का अधूरा नहीं छोड़ना चाहत थे। पर अगर कोई गरीब किसान सलाह मागने के लिए आता था, तो वह सब काम छोड़ देते थे। येलिजावेता वसील्येव्ना न किसान को अदर आने के लिए कहा। उसका चेहरा रसाहीन और थुरीदार था, हालांकि उम्र अभी कोई ज्यादा नहीं थी। किसान न देवप्रतिमा की खोज म कान म नजर डाली, पर वहां कुछ न पाकर खिडकी की ओर मुह करके ही अपन सीने पर सलीब बनाया।

बैठिये," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

किसान लाल रुमाल मे बधी मटकी की पैरा के पास रखकर व्लादीमिर इल्यीच द्वारा दिखायी गई कुर्सी पर बैठ गया।

'व्लादीमिर इल्यीच, मैं बड़ी मुसीबत म हू। कुछ सलाह दीजिये।'

वह देर तक बताता रहा कि कौन है, वहां से आया है और क्या मुसीबत उसपर टूट पडी है। हुआ यह था कि उसकी एक लडकी थी, जिसे उसन मजबूरी के कारण बीस रुबल पगार पर साल भर के लिए एक जमींदार के यहां काम करने भेजा था। लडकी अभी ग्यारह महीने ही काम कर पायी थी कि घर पर मा बीमार पड गई। इतनी बीमार कि हिलडुल भी नहीं सकती थी। घर म छोटे भाई-बहना की पूरी पलटन थी। लडकी को काम छोड़कर उनकी दखभाल के लिए घर लौटना पडा। मगर जमींदार न उसकी पगार देने से इकार कर दिया। वहां कि पूरे साल काम नहीं किया है।

"तो क्या वह बेकार ही इन ग्यारह महीना तक कमर तोडती रही है?" किसान ने निराशा भरे स्वर मे कहा। 'क्या मामले को या ही रहने दें?'

"नहीं, या ही तो नहीं रहने देना चाहिये," व्लादीमिर इल्यीच ने दृढता के साथ जवाब दिया और गुस्से मे भरकर तजी से कमरे म चहलकदमी करने लगे।

"सुनिये, हम ऐसा करते हैं हम इलाकाई हाकिमो के नाम एक अर्जी लिखकर 'याय की भाग करणे और जमींदार का मुकदमे की धमकी दगे,' व्लादीमिर इल्यीच ने कहा

फिर डेस्क के पाम रुके, क्षण भर सोचने रहे और आधे घंटे बाद

अर्जी तैयार थी। वह काफी जोरदार शब्दों में लिखी गई थी। व्लादीमिर इत्येच ने किसान को विस्तार से बताया कि अर्जी किसे देनी है और का कहना है।

‘याय आपके पक्ष में है,’ व्लादीमिर इत्येच ने हौसला बढ़ाया। ‘हिम्मत न हारे। अगर पहली अर्जी मजूर नहीं होगी, तो फिर आना। हम और ऊपर के हाकिमों को लिखेंगे और न्याय पाकर रहेंगे।’

किमान ने टोपी को हाथा के बीच मसलते हुए व्लादीमिर इत्येच का धन्यवाद दिया और लाल रुमाल में बंधी मटकी बढ़ाते हुए नादेज़ा कोस्तातीनोव्ना से कहा

‘मालकिन, मैं और तो क्या द सकता हूँ, पर यह थोड़ा सा मक्खन ही कबूल कर लीजिय।’

‘अरे रे, आप क्या बात करत है।’ नादेज़ा कोस्तातीनोव्ना बोली।

‘नहीं, नहीं, मक्खन हमें नहीं चाहिये,’ व्लादीमिर इत्येच ने भी कहा।

किसान हैरान था कि ये लोग उससे कुछ लेने से इन्कार क्यों कर रहे हैं। आखिर अर्जी तो व्लादीमिर इत्येच ने ही तो लिखी थी। कितने अजब लाग ह।

किसान अपने दिल में राजनीतिक निर्वासन की मज्जा पाये हुए उल्यानोव की शुभ स्मृति का सजोये चला गया। शूशेन्स्कोय में निर्वासन के काल में व्लादीमिर इत्येच न न मालूम कितने किसानों के हृदयों में अपनी शुभ स्मृति छोड़ी होगी।

तलाशी

पिछले साल पहली मई का दिन व्लादीमिर इत्येच ने अकल ही मनाया था। मगर इस बार नादेज़ा कोस्तातीनोव्ना उनके साथ थी और उन्होंने फमला किया कि पहली मई का आतिवारिया के ढग से मनायेंगे।

सुबह का नाश्ता किया, त्योहार के दिन के कपड़े पहनकर तैयार हो गये। तभी देखा कि दरवाजे पर उन्ही की तरह के राजनीतिक निर्वासित पालिश आतिवारी प्रोमीन्स्की पड़े ह। शानदार सूट और टाई पहने हुए।

‘पहली मई मूवारक हा।’

मभी एक अय राजनीतिक निर्वागित फिनिश ओस्वर एगयग के घर की ओर चल पडे।

उम साल वगन्न कुछ दर से शुरू हुआ था। शूश नदी में हिमखण्ड अभी भी तैर रहे थे। व आपस में टकराते, तजी से आगे बढ़ने और यनिसेई में जा मिलते। उनकी सरसराहट नदी तट पर भी साफ साफ सुनायी दे रही थी। हवा में कुछ ठंडक अवश्य थी, मगर दिन खूब धूपीला और हलमित करनेवाला था। मभी उल्लास और उमंग से भरपूर थे।

एगयग के यहा पहुंचकर बेंच पर बैठकर मभी गान लगे

आया खुशी का दिवस मई का,
दुखा की छाया दूर हटे।
गीत हमारा जग-जग गूजे
हडताला का दौर चले।

एक गीत खत्म हुआ, ता दूसरा गाने लगे।

बाद में सभी मैदान में घूमने निकले। नीले आकाश तले, गाव से दूर 'वाशाव्यावा' गीत गूजन लगा

छाये हुए हैं अनिष्ट के बादल,
दबा रही है शोषण की शक्ति।
तडेंगे हम करके एक आकाश-पाताल,
कसी बनेगी हमारी नियति ?

दिन कितना अच्छा कटा था। रात को व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना देर तक न सो सके। बस बातें करते रहे और सपने बुनते रहे कभी ऐसा समय भी आयेगा, जब स्वतंत्र रुम में मजदूर और अय लोग लाल कडे हाथ में लिए हुए बेरोक टोक पहली मई का उत्सव मनायेंगे ?

अगले दिन देखा कि दूर सड़क पर धूल उड़ रही है, घोडा की टापें सुनायी दे रही हैं। पुलिस के सिपाही शूशेस्काये आ रहे थे। घोडागाडी व्लादीमिर इल्यीच के घर के सामन आकर रकी। उससे दो किरिचधारी सिपाही कूदे। पीछे की सीट से उनका नाटा सा, भारी भरकम अफसर उतरा।

'तलाशी लो।' अफसर चिल्लाया और सीधे व्लादीमिर इल्यीच के कमरे में कित्वावा की आलमारी की ओर लपका।

आनमारी म अर्बुध साहित्य, पत्र और कुछ रसायन थे, जिनमें व्यादीमिर इत्योच गुप्त पत्र निखन थे। अगर वह मय सिपाहिया के हाथ नग गया, तो निर्वामिन की मज्जा और बड जायगी। हा मकना ह कि बई माल और।

अगर आपकी मज्जों है, ता से मकन हैं, व्यादीमिर इत्योच न आलमारी के पाम कुर्मी रखत हुए कहा। “कहा से शुरू करें?”

पूछन क साय-साय उन्हाने ऊपरी खान की तरफ इतारा भी किया। नाटा अफसर जिने सिपाहों दाना और स घाम हुए थे, हाफन हुए कुर्मी पर चड गया और ऊपर क खान मे तलाशी लन लगा। मगर कितारें बटन ज्यादा थी।

कोई आघ घटे तक कितारों के पल्ल उलटन-पलटन के बाद अफसर वेहद थक गया और सिपाहिया स तलाशी जारी रखन को कह खुद बड गया। उसकी आँखें चकराने लगी थी। कोई इतन मारे पल्ल पलटकर ता देखे। पुलिस अफसर को तो कितारों के इतने बडे डेर का देखना भी अच्छा नहीं लग रहा था। तलाशी बहुत धीरे-धीरे चल रही थी।

आखिरकार सबसे निचले खान की वारी भी आ गयी। उल्यानोवा का भाग्य सकट म था।

एकाएक नादज्दा कान्स्तान्तीनोव्ना ने आगे बडकर मुस्कराते हुए कहा ‘यहा मेरी स्कूली कितारें हैं। आप जानते ही हैं कि मैं अध्यापिका हूँ।’

“रहने दो!” अफसर ने हुकम दिया।

वह खाना खाना और एक-दो पेग चादका पीना चाहता था। वह बहुत थक गया था।

तलाशी खत्म हो गयी। निचले खान को किसी ने नहीं देखा। उसमें अर्बुध साहित्य, रसायन, आदि थे।

पुलिस चली गई।

येलिजावेता वसील्येव्ना कमरे मे दाखिल हुई। अब तक वह पास के कमरे म बैठी घबराहट के मारे सिगरेट पर सिगरेट पीती जा रही थी।

बला टल गई? फुमफुमाते हुए उन्हाने पूछा।

‘टल गई!’ व्यादीमिर इत्योच हस दिये और साइबेरियाई अदाब म डा ‘मगर

बीमार वानेयेव के यहा

ढाकिया हफने मे दो बार ढाक पहुचा जाता था।

पत्र रिश्तेदारा और साथिया से मिलते थे। इस इलाके म कोई डेढ सी बस्ट के दायरे म "सघप लीग" के बहुत से सदस्य निर्वासन की सजा काट रहे थे। कुठ साथी और दूर, बल्कि बहुत दूर सबसे गये-गुजरे, बारहा मास बफ से ढबे इलाका मे भेजे गये थे।

एक बार व्लादीमिर इल्यीच को घर से, आना इल्यीनिच्ना का एक पैकेट मिला। वह गोपनीय था, यह के उस पर बने पहचान निशान से जान गये। तो इसका मतलब है कि कोई महत्वपूर्ण चीज होगी। और ऐसा ही निकला भी। गुप्त लिखावट म लिखे कागजो को डेवलप किया तो पाया कि एक लेख है।

व्लादीमिर इल्यीच उसे पढने लगे। उनकी भौंटा मे बल पड गये। उह आना इल्यीनिच्ना का भेजा हुआ लेख पसद नही आया था। बहन ने उसे एक अरूसी शीपक दिया था "त्रेडो", जिसका रूसी मे मतलब होता था विश्वास, दृष्टिकोण।

आना इल्यीनिच्ना न लिखा था कि कुछ लोग का दल माक्सवाद के विरुद्ध प्रचार करने लगा है। दल छोटा ही है, पर काफी सक्रिय है। उसका कहना है कि मजदूरा को राजनीति स कोई मतलब नही। उहे क्रांति नही चाहिये। उह बस एक ही चीज चाहिये वेतनवृद्धि। और इसके लिए मालिका और उद्योगपतिया के साथ शांतिपूर्ण सबध जरूरी है।

ऐसे दृष्टिकोणो को "अथवाद" कहा जाता था।

"क्या किया जाये?" व्लादीमिर इल्यीच सोचने लगे। "ये लोग तो मजदूरा को आतिकारी उद्देश्या से दूर हटा रहे हैं।"

व्लादीमिर इल्यीच अपने मन की बात को जोर से बोल भी रहे थे। नादेज्दा कोस्तातीनोव्ना उनकी इस आदत से परिचित थी। इसलिए वह कुछ न बोली। अभी वह कोई न कोई हल ढूढ लेगे।

और सचमुच, कुछ देर टहलन और सोचने के बाद हल ही मिल गया

"साधियो को बुलाकर 'त्रेडो' पर विचार विमश करेगे। विराधपत्र लिखेंगे और गुप्त रूप से कारखाना फँवटरिया मे भेजेंगे।"

और तुरत वह नादेज्दा कोस्तातीनाव्ना के साथ अपने सभी निर्वाणि साथिया को पत्र लिखने बैठे, ताकि व किसी न किसी बहाने अधिकांश स अनुमति लेकर मीटिंग म शामिल हा। मगर मीटिंग कहा हा? शूशन्कां सबसे ठीक जगह थी, पर व्लादीमिर इल्यीच ने येरमाकोव्काये गाव क चुना, जो शूशेस्काये से साठ वस्ट की दूरी पर था। वहा व्लादीमिर इल्यीच के एक अनय साथी अनाताली वानयेव सजा बाट रहे थे। जेल म उन तपेदिक की बीमारी हो गई थी। उसने उह अदर ही अदर इतना खोखल कर दिया था कि उन वह विस्तर से उठ भी नहीं सकते थे।

यही कारण था कि व्लादीमिर इल्यीच ने मीटिंग के लिए येरमाकोव्काये को चुना।

वानेयेव सफेद बिस्तर पर लेटे थे। मगर खुद बिस्तर से भी सपर और कमजोर थे। बडी-बडी आखें बुखार से दहन रही थी। मगर वह खश थे, सुखी थे कि सबके साझे ध्येय मे हाथ बटाया था। कितनी अत्य्य इच्छा थी अभी और जीन, काम करने और लोगा का भला करने की।

'फेडो" पर बहम हुई। विरोधपत्र लिखा गया। सीध्र ही उस दश के सभी शहरा की मजदूर मडलियो म पढा जायेगा

' माथियो, अथवादियो' को मत सुनो। हमारे मामन एव ही रास्ता है - क्राति!"

व्लादीमिर इल्यीच मीटिंग के बाद वानेयेव के बिस्तर के पास बठ गये। वानेयेव थक गये थे। माथे पर पसीन की ठडी बूदें चलक आयी थी। आखें मानो गड्ढा मे खो गयी थी।

बेचारे वानेयेव! जारशाही जेलो और निवासन म कितना कष्ट भोगा है! व्लादीमिर इल्यीच ने उनके दुबले पडे हाथ को सहलाया, बाते की, आगे की याजनाआं के बारे म बताया। जटदी ही निर्वासन की अवधि पूरा हो जायगी। व्लादीमिर इल्यीच ने बताया कि मजदूरों का माक्सवादी पार्टी बनायेंगे, अपना सबहारा समाचारपत्र निकालेंगे और जारशाही के खिलाफ जूचत रहेंगे।

वानेयेव अत्यन्त उत्सुकता और प्रशंसामिथित भाव से उह सुन रहे थे। बाहर अगस्त की शाम का अघेरा बढने लगा था। कही दूर स अकाडियन की दिल म कसक पैदा करनेवाली आवाज आ रही थी। और वानेयेव बुखार के कारण सूखे हुए हांठा से फुसफुसा रह थे

“घन्यवाद, व्नादीमिर। तुमन मुचे फिर जिंदा कर दिया है। मुझे विश्वास है ”

यह वानपेव के जीवन की अन्तिम मुग्धी शाम थी।

तीन हफ्ते भी नहीं बीत हागे, कि व्नादीमिर इल्यीच और नाटेज्दा कोन्स्तान्तीनाब्ना का पुत्र परमानोव्नाय अना पडा। मगर इस बार अनातोली वानपेव की अत्यष्टि के लिए।

“अनविदा, अनानाती,” ताबूत के निरुट गडे होकर व्नादीमिर इल्यीच न बहा। “हम यचन दते हैं कि त्रानि के ध्यय व प्रति सत्ता वफादार रहेंगे।”

वफ के पहने-गहले षण हवा म उड रहे थ। मृत अनानातोली व चेहरे पर गिरकर भी के गल नहीं रहे थ।

व्नादीमिर इल्यीच न वत्र के लिए साहे की पट्टी आडर बरायी। उस पर लिया था “अनानातोली अलेक्साद्राविच वानपेव। राजनीतिव निर्वामित। अक्म्ब्या २७ वष। निधन-८ मितबर, १८६६।”

रिहाई

घर मे कुछ असामान्य सा घट रहा था। कमरा मे जहा-तहा वकमे, गठरिया, किताबा के बडन विखरे पडे थे। सारी सुव्यवस्था गडबडा गयी थी। घर के वामबाज मे येलिजावेता वसील्येब्ना का साथ देनेवाली पाशा की नीली आखा स लगातार आसू बहे जा रहे थे उल्यानोव साइबेरिया से वापस जा रह थे। उनकी निर्वागन अवधि पूरी हो गई थी।

२६ जनवरी का भोर होने से पहले, जब अभी शूशेन्कोये के घरों की खिडकियो मे अघेरा था, चिमनिया से धूम्रा नहीं उठने लगा था और वस्ती के छोर पर उपाकाल से पहले का कुहासे स ढका आवाश धरती को छूने के लिए प्रयत्नशील था, दो स्लेजगाडिया पोच के सामने आकर रुक गयी। पाशा पल्लू से आसू पोछती हुई इधर उधर दौड रही थी। व्नादीमिर इल्यीच सामान और किताबें गाडिया मे लादने लगे। दूसरों ने भी मदद की।

“अब कुछ क्षण के लिए बैठ जाओ। सफर से पहले बैठना जरूर चाहिये,” येलिजावेता वसील्येब्ना बोली।

पेल्मेनिया ! खास तौर से लबे सफर म, जब ताजी हवा मे जीभर सास ली जा सक्ती हो और चुभती ठड गालो को झुलस रही हो, उनका अभाव बहुत खटकता था। अफसोस कि भूल गये !

मिनूसिन्स्क् शहर काफी दूर था। वहा से अचीन्स्क् रेलवे स्टेशन तक कोई तीन सौ वस्ट और तय करने थे। सफर रात दिन जारी रहा। मौसम अच्छा था। दिन म प्रचुर धूप होती थी। आकाश निरभ्र था। मोतियाई पाले से ढके पेडा और आखो को चवाचौघ करती बफ की भरमार थी। राते उजली थी। आकाश के निस्सीम विस्तार म चाद का विशाल गोला कही-बही दिखायी देनेवाले तारा के बीच जहाज की तरह तैरता लगता था।

पाचवे दिन भोर के समय भूतपूर्व राजनीतिक निर्वासित अचीन्स्क पहुचे। स्टेशन की घटी बजी। गाडी के आने का समय हो गया था।

भारी फुफकारे छोडते, बालिख और तेल से काले पडे इजन ने यात्री डिब्बो को प्लेटफाम पर ला खडा किया। गाडी यहा एक ही मिनट रकती थी। तभी खाना होन की घटी भी बज गयी। निर्वासन से वापसी का सपना पूरा हो गया। अब आगे नया जीवन था।

चिगारी, जो ज्वाला बनेगी

साइबेरिया की गहराइया म
मान औ धैय की जम्रत अपार,
व्यथ न जायेगे दुखद सघप
और आपके उदात्त विचार।

ये पक्तिया कवि पुशकिन ने नेरचिन्स्क, साइबेरिया, मे निर्वासित दिसवरवादियो को लिखी थी। इसके उत्तर मे कवि दिसवरवादी ओदोयेव्स्की ने उहे लिखा

न होगा व्यथ हमारा सघप अथव
उठेगी बभी चिगारी से लपट !

व्लादीमिर इल्यीच ने अखवार को ' ईम्ना ' (चिगारी) नाम दन का फमला किया।

शुशेखाय म रतने हुए ही उठाने उगरी पूरी यात्रा तयार कर ली थी। अब उग कायमपन बना था। गाइरेगिया म लौटकर आगामि इल्पीत फ्लोर म रहन लगे। भाने ही। गान्गा बोन्गालीनाना का निर्माण अवधि अभी गत्म नहीं हुई थी, इगलिय यह बारी समय क निर् उफा म ही रत गया। फ्लोर म आदीमिर इल्पीच ने "इम्फा" निकालन के लिए तैयारिया शुरू की। यह निर्मित गटरा की मात्रा करने। "इम्फा" म काम करने के लिए साधिया का इच्छन। अग्रवार के लिए सेय लिखनवाता का इच्छन था। फिर ऐम आन्मिया की तयार भी जरूरी थी, जो अग्रवार का गुप्त रूप म बिनरण करने। "इम्फा" का काम तरीके से दुखाना और स्टाला पर नहीं बेचा जा सकता था। और अग्रर कोई ऐसा करता, ता उसे तुरत जेल हो सकती थी। अग्रवार निकालन क लिए पगा का भी जरूरत थी।

जमीन आममान एक करके चार महीन म आदीमिर इल्पीच न "इम्फा" की तयारी पूरी कर ही ली।

पर एक सवाल अभी बारी था। अग्रवार का छापा कहा जाये? हम म रहत हुए भला कोई जार के खिलाफ, जमीनरा और उद्योगपनिमा क खिलाफ, पुलिस के अफसरों के खिलाफ अग्रवार छापने के लिए तयार होता?

आदीमिर इल्पीच को इस बारे म भी काफी सोचना पडा।

उहाने साधिया से परामश किया। अन्त म यह तय हुआ कि उत विदेश म छापा जाय। बेशक वहा भी ऐसा अग्रवार पूणतया गुप्त रूप से ही निकाला जा सकता था। पर वहा रूसी पुलिस के भेदिये इतन अधिक नहीं थे।

आदीमिर इल्पीच ने जैसे-तैसे डाक्टरी सर्टिफिकेट का इतजाम किया और इलाज के बहाने विदेश खाना हा गये। इससे पहले वह नादेज्ज कोस्तान्तीनोव्ना से भी मिल आये, जिनका निर्वासन नौ महीन बाद खत्म हाता था। अब वह बतन स दूर जा रहे थे। क्या बहुत अरस के लिए? जसे कि बाद म पता चला, बहुत अरस के लिए।

तय सडको, नुकीली छतोवाले मकाना और प्राटेस्टेण्ट गिरजावाल जमन शहर लाइपज़िग मे बहुत अधिक बल-बारखाने और उनसे भी अधिक छापेखाने और हर तरह की किताना की दुकानें थी। वहा कोई पतीस साल

की उम्र का गेमन रोज़ नाम का एक जमन रहता था। शहर के बाहर एक छोटे से गांव में उसका छापाखाना था। उसका मशीन के नाम पर गिफ एन ही—हालांकि काफी बड़ी—छपाई मशीन थी और वह भी बहुत पुरानी। उम्र पर मजदूरा का पेंशन बंद था, तरह-तरह के पोस्टर और पम्प-अप छाप जाते थे।

गेमन रोज़ सामाजिक-जनवादी था। एक दिन लाइपज़िग के सामाजिक-जनवादिया ने उसे बताया कि रूस से एक मार्क्सवादी आया है। रूसी मार्क्सवादी अपना शक्तिशाली अग्रसार निवालेना चाहते हैं और यह तय किया गया है कि उम्रका पहला अंक लाइपज़िग में छपे।

“तो रूसी साथिया की मदद करनी चाहिए,” लाइपज़िग के सामाजिक जनवादिया ने गेमन रोज़ से कहा।

लाइपज़िग आनेवाला रूसी साथी और कोई नहीं, व्लादीमिर इत्योच ही थे। उन्होंने शहर के छोर पर एक कमरा किराये पर लिया। वह हमेशा मुंह अंधेरे ही उठ जाते थे, जब हर वही निश्चिन्ता होती थी। यहाँ तक कि फ्लोरिया के भापू भी नहीं बजते थे। कमरा बहुत ठंडा था। दिसम्बर का महीना चल रहा था।

व्लादीमिर इत्योच ने स्प्रिट के लैंप पर पानी उवाला, टिन के मग में चाय बनाकर गरम-गरम पी और हमेशा की तरह घर से निकल पड़े। जाना दूर था। गेमन रोज़ के छापाखाने तक। यही कोई पांच छह किलोमीटर का रास्ता होगा। घोड़ाट्राम वहाँ नहीं जाती थी, इसलिए पैदल ही जाना होता था। रास्ते में पैदल या साइकिल पर सवार मजदूर और बाजार जानेवाले किसानों के ढेले मिलते थे। शहर की सीमा आ गयी। आगे वफ़ सड़के खेत थे। दूर, क्षितिज के पास जंगलों के काले साये खड़े थे। शहर के छोर पर वसी बस्तियों की बस्तियाँ जल रही थीं। गेमन रोज़ के छापाखाने की छिड़की से लालटेन का उजाला दिखायी दे रहा था।

गारा छापाखाना एक बड़े से कमरे में समायोजित था, जिसमें आधे हिस्से में पुरानी छपाई मशीन खड़ी थी। कमरे में दो कपोज़िग बक्स भी थे। लोहे की अंगीठी में लकड़ियाँ जलते हुए चटक रही थीं। लपटे कप-कपाती थीं, तो उनके साथ ही दीवारों पर पड़नेवाले साये भी काप जाते थे।

“आज महत्त्वपूर्ण दिन है,” गेमन रोज़ ने जमन में व्लादीमिर इत्योच से कहा।

व्यापीमिर इत्योच १ गिर त्रिनाकर मन्मति प्रवृत्त की। मन्मथ प्रान
 महत्त्वपूर्ण दिव था। प्रथ ता ता तीपारियां ही हानी रही था, पर प्रान
 कपाडीटर १ भारी स्नान उठाकर मनीन पर चढाया। गमन रात्र
 न हत्या घुमाया। मनीन पटपडायी। गिलेण्डर घूमा लगा और प्रान
 का पना मनीन स बाहर निरना। दग तरफ 'ईस्ना' का पटना प्र
 छानर सपार हुआ।

व्यापीमिर इत्योच १ एन प्रान उठाया। दग पडी की यह कच म प्रान
 विानी उताष्टा मे प्रतीभा कर गे थ।

'प्रान हमारे पाम प्राना, मन्मथरा का, त्रिनाकरी प्रानवार है। उ
 तला, हमारे प्रानवार, यत की तरफ। करा पदा जागृति और उभास
 प्राति क निण।

व्यापीमिर इत्योच १े सनका मुत्ताने हुए प्रानवार का नाम पदा
 ईस्ना।'

दायी तरफ ऊपर पोत म छा था
 'उठेगी कभी त्रिनाकरी म सपट।"

लेनिन

मुसाफिर गाडी बेनिग्मवग जा रही थी। तीमरे दर्जे के डिब्बे म एक
 कोने म गिडकी के पास एक नौजवान बठा था। वह म्यूनिक्र मे सवार
 हुआ था और तब से सारे रास्ते भर ऊपना रहा था। उसने परो के पाम
 एक काफी बडा सूटकेस रखा था।

गाडी बेनिग्मवग पहुच गई। यह पत्यर के किले, गिरजाधरा और
 लाल खपरैल की छतावाला पुराना शहर था। बाल्टिक सागर के टट पर
 होने के कारण यत्र बदरगाह भी था, जितम दसिया जहाज खडे थे। उनम
 से एक का नाम था "सेट मागरीता"। म्यूनिक्र स आये जमन ने इधर
 उधर ताका झाका और फिर बदरगाह की और न जाकर पास ही के एक
 बीयरखाने म घुस गया। बीयरखाने म भीड बहुत थी। चारा तरफ तबानू
 का भूरा, कडुआ धूआ छाया हुआ था। जमन एक खाली जगह पर बैठ
 गया और सूटकेस को उसने मेज के नीचे छिपका दिया। फिर बेयरे स
 सासेज मगाकर बीयर के साथ धीरे धीरे खाने लगा। इतन धीरे धीरे कि मानो

उसके पास फालतू वक्त बहुत हो। या हो सकता है कि वह किसी का इन्तज़ार कर रहा था? हाँ, उसे सचमुच 'सट मागरीता' के जहाज़ी का इतज़ार था। उससे मिलन के लिए ही वह म्यूनिख से आया था, हालाँकि उसे पहले कभी नहीं देखा था। जब भी कोई नया आदमी बीयरखाने में आता, म्यूनिख से आया हुआ जमन दाये हाथ से वाला का दायाँ कान की तरफ सहलाते हुए टक्करी लगाकर उसे देखता। इस तरफ किसी का ध्यान भी नहीं जा सकता था, क्योंकि वाला का महलाना कोई अस्वाभाविक बात नहीं थी। मगर यह एक इशारा था।

आखिरकार जहाज़ी आ ही गया। समुद्री हवा और धूप से उसका चेहरा ताबई हो गया था। दरवाज़े पर खड़े-खड़े उसने सभी लोगों पर नज़र डाली और बालों को सहलाते हुए आदमी को देखकर सीधे उसकी तरफ बढ़ चला। मेज़ के पास बैठकर उसने पैर से सूटकेस को टटोला और बोला "उफ़, कितनी भयंकर हवा है!"

"अगर अपने रास्ते की तरफ है, तो कोई बात नहीं," म्यूनिख से आये जमन ने जवाब दिया।

"ठीक ही पहचाना, भैया, अपने ही रास्ते की तरफ है।"

यह पहचान-वाक्य था। तुरत ही दोनों के बीच आत्मीयता पैदा हो गयी। दोनों का एक ही ध्येय था, जिसके खातिर वे यहाँ बीयरखाने में इकट्ठे हुए थे।

बातचीत जल्दी ही खत्म हो गयी और दोनों बीयरखाने से बाहर निकल आये। अब सूटकेस जमन के हाथ में नहीं, बल्कि जहाज़ी के हाथ में था। किसी ने इस बदलाव पर ध्यान नहीं दिया। आखिर किसी को इससे मतलब भी क्या था? दो साथी जा रहे हैं, बातें कर रहे हैं। चौराहे पर दाना अलग हो गये। म्यूनिख से आया जमन स्टेशन की ओर चल पड़ा और सूटकेस "सेट मागरीता" पर बाल्टिक सागर से हाते हुए स्वीडन की राजधानी स्टाकहोम की ओर।

रात में हवा और तेज़ हो गयी। लहरे आसमान छूने लगी। तूफान "सेट मागरीता" को कभी इधर तो कभी उधर फेंकने लगा। अघेरा ऐसा था कि हाथ को हाथ नहीं सूझता था।

जहाज़ छह घंटे देर से स्टाकहोम पहुँचा। फिनिश जहाज़ "सुप्रामी" शायद कभी का हेल्सिंगफोस के लिए रवाना हो चका होगा।

' गमय पर नहीं पहुँच पाया," जहाजी का अफसाना हा रहा था। अचानक उसे "सुप्रोमी" दिखायी दिया। वह स्टापहाम व बरसाना म घडा भाप छाड रहा था। शायद तूफान की वजह से उम भी लत जाना पडा था और अब लगर उडान की तयारिया कर रहा था।

आहिस्ता से आगे।' कप्तान ने आदेश दिया।

बचना व पीचे पानी घोरन लगा। जहाज चल पडा।

वाइस-कप्तान साहब।' भारी मूटनेग का घोरन हुए जहाज चिल्लाया वनिम्नग से आपकी पाची न पासल भेजा है।'

डोटन की वजह से जहाजी हाफ रहा था। मूटवग बहुत भारा था। उसे लगा कि उसकी सारी वाशिश बेवार हो गयी है, क्याकि "सुप्रोमी" तट से हट चुका था।

लेकिन नहीं वाशिश बेवार नहीं गयी। चमत्कार सा हुआ। कप्तान ने उसका चिल्लाना सुन लिया और

"आहिस्ता से पीछे।" 'सुप्रोमी" पर आदेश सुनायी दिया। 'स्टाप।'

वाइस-कप्तान साहब। जहाजी पूरे जार से चिल्लाया, "आपकी पाची न गरम स्वीटर भेजे है।"

घाट पर खडे सभी लाग टहाका लगाकर हस पडे। न जान क्या, सभी खुश थे कि 'सुप्रोमी" पासल लेन के लिए वापस लौट आया है। वाइस कप्तान ने मूटनेस लिया, हाथ हिलाकर जहाजी को धन्यवाद दिया और 'पासल' का अपने बैबिन म छिपा लिया।

मूटनेस की यात्रा जारी रही।

जब जहाज हेल्सिंगफोस पहुँचा, तो मूसलाधार बारिश हो रही था। वाइस-कप्तान ने बरसाती पहनी और मूटनेस उठाकर तेजी से घोडाट्राम के स्टाप की आर वड चला। पानी इतना अधिक बरस रहा था कि जैसे वाड ही आ गयी हो। ओह, कहीं बक्से म पानी न चला जाय। वाइस कप्तान ने इधर-उधर पाका, पर वह मजदूर कहीं नहीं दिखायी दिया, जिससे उसे स्टाप पर मिलना था। जहाज कुछ घटे देर से पहुँचा था। ऊपर से यह मूसलाधार बारिश। सडके सुनसान थी। कहीं वह पीटसबग का मजदूर इतजार करते-करते ऊब न गया हो। क्या किया जाये? सभी घाडाट्राम आती दिखायी दी पर वह मजदूर उसमे भी नहीं था। अचानक

वाइस-कप्तान ने देखा कि सामने के घर के फाटक से एक आदमी बाहर निकल इधर उधर देखते हुए उसकी ओर आ रहा है। यही वह मजदूर था, जिससे उसे मिलना था।

“कैसी बदकिस्मती है! खड़े पड़े अक्ड गया हूँ,” मजदूर बहबड़ाया।

“तूफान के कारण देर हो गयी। कब जायेंगे?”

“आज।”

“ठीक है। म अभी तार से सूचित कर दूंगा।”

मजदूर ने सहमति में सिर हिलाया और सूटकेस उठाकर घोडाट्राम पर चढ़ गया।

कुछ घंटे बाद सूटकेस रेलगाडी से पीटसबग जा रहा था।

गाडी खाली पड़े बसन्तकालीन खेता, वारिश से भीगे गावा और निजन दाचा* की बगल से गुजर रही थी। पीटसबग का मजदूर इन जगहा को भली भांति जानता था, इसलिए चुपचाप बैठा अखबार पढ रहा था और वेलोमोस्त्रोव स्टेशन की प्रतीक्षा कर रहा था।

वेलोमोस्त्रोव से रूस की सीमा शुरू होती थी। वहा हमेशा कस्टम चेकिंग होती थी।

कस्टम का आदमी बैगन में आया।

“कृपया अपने सूटकेस दिखाइये।”

पीटसबग के मजदूर ने बिना कोई जल्दबाजी दिखाये अपना सूटकेस खोला।

एक जोड़ी कपडे, पुराना चारखानेदार पट्टू और मिठाई का डिब्बा। बस। कस्टमवाले ने सूटकेस के किनारे ठक्ठकाए, पर सदेहजनक कुछ भी न मिला।

उसी दिन मजदूर पीटसबग में था और वसील्येव्स्की द्वीप पर एक पत्थर के मकान की सीढिया चढ़ रहा था। दूसरी मजिल पर दरवाजे पर तावे की प्लेट लगी थी “दाता का डाक्टर।”

आगन्तुक ने घटी बजायी। दो लबी और एक छोटी। इसका मतलब था कि डरने की कोई बात नहीं, अपना ही आदमी आया है।

दाता के डाक्टर ने दरवाजा खाला।

* दाचा—श्रीष्मकालीन बगला।—स०

“आइय, आपका ही इतजार था।”

श्रातिवारी गुप्त मलानाता के लिए यही एवत्र दृष्टा वरत थ।

डाक्टर क कमर म एक लडकी मजदूर का इन्तजार कर रहा था।

लाइय, उमन वहा और मजदूर क हाथ से सूटकेस ल लिया।
बेचारे न रास्ते म क्या-क्या नही घंता था। तूफान, बारिश, वरुन
बेकिग

लडकी ने सूटकेस स चारखानदार पट्टू और दूमरी चीजें निवाता।
लकिन यह क्या? आगन्तुक न सफाई स सूटकेस का तला दवाया और
वह डक्कन की तरह खुल गया। सूटकेस म दो तले थे। निचल तले में
कसकर तह किये हुए अखबार रखे हुए थे। लडकी ने एक अखबार उठाया।
'ईस्त्रा'।

अच्छा ता यह है वह चीज, जिसे बेनिगसबग, स्टावहोम, हेल्मिंग
फोस से होते हुए इतनी महनत और इतन गुप्त रूप से म्पूनिध स पाटसबग
पहुचाया गया ह।

लडकी सूटकेस से 'ईस्त्रा' निवालकर अपने टोप के डब्बे म रखन
लगी। जब सब अखबार आ गये, तो उसन फीते से डब्बे को बाध दिया
और पीटसबग के छार पर सनिय मजदूर मडलियो को वाटन चल पडी।

वह 'ईस्त्रा' की एजेण्ट थी। 'ईस्त्रा' के गुप्त एजेण्ट रूस क मभो
वडे शहरो मे थे।

'ईस्त्रा' को गुप्त रूप से जहाजा से, रेलगाडियो से ले जाया जाता,
सीमा के इस पार पहुचाया जाता।

“ईस्त्रा” मजदूर और किसाना की आखें खोलता, उन्हें दिखाता
कि उनका वास्तविक जीवन क्या है।

“ईस्त्रा” उन्हें सिखाता “जारशाही के खिलाफ लडो! माकिना
के खिलाफ लडो।

“ईस्त्रा” उन्हें पार्टी की स्थापना के लिए, श्राति के लिए लतवारता।
शीघ्र ही रूस म 'ईस्त्रा' की प्रेरणा पर एक शक्तिशाली मजदूर
आंदोलन शुरू हो गया।

इस विराट आंदोलन के नेता, मागदशव और ईस्त्रा के मुद्द
सपादक ब्लादीमिर इत्यीव थे।



उल्यानोव परिवार। मरीया अलेक्साद्रोना, इल्या निकालायविच और उनका बच्चे आल्या, मरीया अलक्सान्द्र, दमीत्री आना और वनादीमिर।
मिम्बीम्ब, १८७६।

‘भ्रातृय, आपका ही इतजार था।’

क्रातिकारी गुप्त मन्त्रावाता वं विण यही एकर दृष्टा करत थ।

टाक्टर वं कमर म एक लडकी मजदूर का इन्तजार कर रही था।

लाश्य, उमन बहा और मजदूर व हाथ स मूटम त निष्ठा, वचार न रास्त म क्या-क्या नही शेना था। तूफान, चारिण, कल्प चरिण

लडकी न मूटवेस म चारखानगर पट्टू और दूमरी चीजें निराना। लकिन यह क्या? आगन्तुक न सफाई म मूटवेस का तला दगाया और वह डक्कन की तरह गुल गया। मूटवेस म दा तल थ। निचल तल में वसकर तह किये हुए अणवार रखे हुए थे। लडकी न एक अणवार उग्राया। ‘ईस्ना’।

अच्छा, ता यह है वह चीज, जिस बेनिगबग, स्टावहाम, हल्मिण फोस स होते हुए इतनी महनत और इतन गुप्त रूप स म्यूनिय स पीटसवा पहुचाया गया है।

लडकी मूटवेस स ‘ईस्ना’ निवातकर अपने टोप के डब्बे म रखन लगी। जब सब अखवार आ गय, तो उसन पीते से डब्बे का बाघ दिया और पीटसबग के छार पर सक्रिय मजदूर मडलिया को वाटने चल पडी।

वह ‘ईस्ना’ की एजेण्ट थी। ‘ईस्ना’ के गुप्त एजेण्ट रुम व समा बडे शहरो मे थे।

‘ईस्ना’ को गुप्त रूप से जहाजो से, रेलगाडिया से ले जाया जाता, सीमा के इस पार पहुचाया जाता।

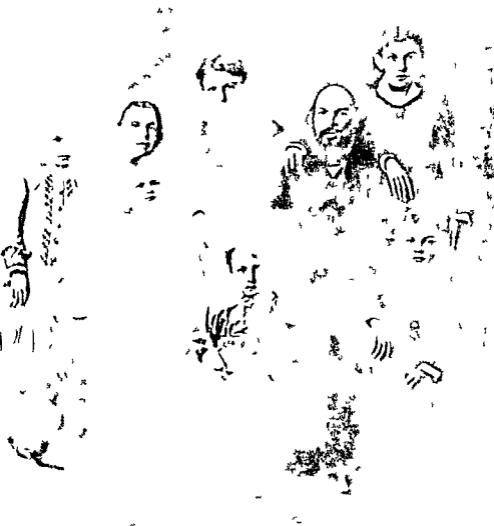
“ईस्ना” मजदूर और किसाना की आखे खोलता, उह दिघाता कि उनका वास्तविक जीवन क्या है।

“ईस्ना” उह सिखाता ‘जारशाही के खिलाफ लडो! मालिन के खिलाफ लडो!’

‘ईस्ना’ उह पार्टी की स्थापना के लिए क्राति के लिए ललकारता।

शीघ्र ही रुस म ‘ईस्ना’ की प्रेरणा पर एक शक्तिशाली मजदूर आंदोलन शुरु हा गया।

इस विराट आंदोलन के नेता, मागदशक और “ईस्ना” के मुख्य सपादक व्लादीमिर इत्यीच थे।

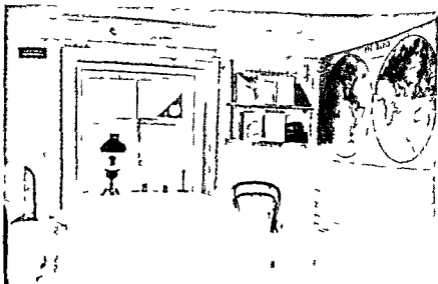


उल्यानोव परिवार। मरीया अलेक्साद्रोव्ना, इल्या निकोलायविच और उनके बच्चे आल्गा, मरीया, अलेक्साद्र, दमीत्री आना और व्लादीमिर। सिम्बीस्व, १८७६।



सिम्बीस्क म उल्यानावा का घर।

द्वानीमिर इल्यीच का कमरा।





प्ला० इ० लेनिन स्कूल समाप्ति के वष मे। सिम्बीस्क १८८७।



विशार ब्ला० इ० लेनिन । चितवार्-ब० प्रागेर ।

व्ला० इ० लनिन के बड़े भाई अलेक्सांद्र इल्यीच
उल्यानोव (१८६६-१८८७) ।





प्ला० इ० लेनिन काजान विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की सांस्कृतिक सभ
म। ४ दिसंबर १८८७। चित्रकार—आ० विश्वनाथ।



बना० इ० लेनिन । समारा, १८९१ ।



व्ला० इ० लनिन बाजार विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की नातिकारों सभा
में। ४ दिसंबर १९२७। चित्रकार—श्री० विशयाकोव।



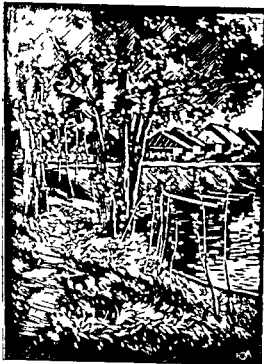
चक्रा० इ० ललित। ममारा, १८६१।





पहता परचा । चित्रकार--फ० गोलुव्कोव ।

चित्रकार—यू० माउयेव।
नादेज्दा कोस्तान्तीना
शूस्वाया १८६५

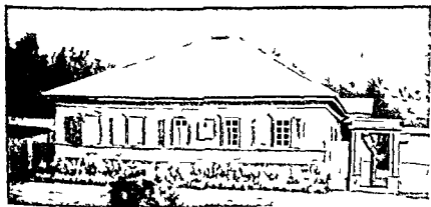


शूशेन्स्कोये । चित्रकार—
यू० माउयेव ।



शूशेन्स्कोये मे ब्ला० इ०
लेनिन का कमरा ।

शूशेन्स्कोये का वह घर,
जिसमे विवाह के बाद
ब्ला० इ० लेनिन सपरिवार
रहने लगे थे ।

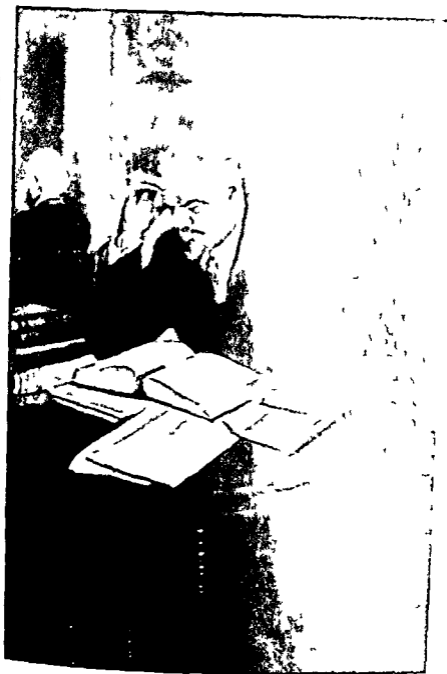


... (The text in this section is extremely faint and illegible due to low resolution and high contrast.)

ईस्क्रा का पहला अंक। १९००। इसका अग्रलेख—“हमारे आंदोलन के फौरी लक्ष्य”—व्ला० इ० लेनिन न लिखा था।

लाइपजिग का वह मकान जिसमें व्ला० इ० लेनिन की देखरेख में “ईस्क्रा” का पहला अंक छपा था।





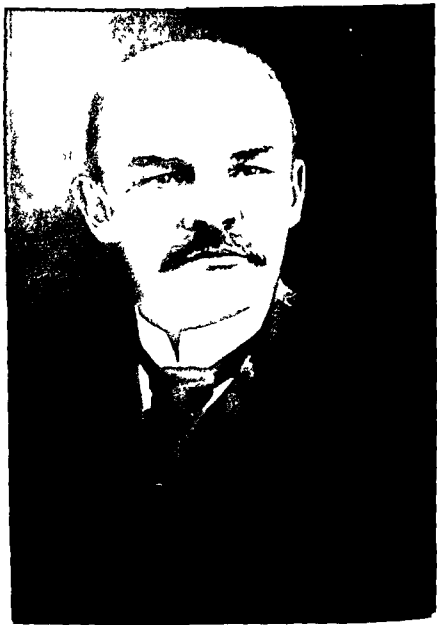
वर्लिन क पुस्तकालय म ब्ला० इ० लेनिन । चित्रकार-व० पेरल्मान ।

1A37b



१९०५ में मजदूरों द्वारा खड़ी की गयी बरिक्डे। चित्रकार-
ई० व्लादीमिरोव।





व्ला० इ० लेनिन । पेरिस, १९१० ।

व्लादीमिर इल्यीच का एक स मजदूरों को 'इस्त्रा' व एजेण्टा म बड़ी सभ्यता में पत्र, लेख, आदि मिनत व और लगभग मत्र कूट भाषा म लिखे होते थे। वह उन्हें "इस्त्रा" म छापा, मजदूरों व पत्रों व जवाब देने, "इस्त्रा" के लिए लेख तयार करवा और साथ ही सान्नीति और शक्तिवारी सभ्यों के बारे म किताने विषय।

नवंबर, १९०२ से व्लादीमिर इल्यीच अपना नया और किताना को सनिन नाम स छापने लगे।

यह महान नाम था, एक ऐसा नाम, जिसमें शांति ही सारी दुनिया परिचित होनवाली थी।

बोल्शेविक

पहाड़ों के देश स्विट्जरलण्ड म नीचे जेनेवा झील व तट पर एक घुबसूरत शहर है—जेनेवा। उजने वाटर, शीत स थोड़ी ही दूरी पर सगैरेन नाम की मजदूर वस्ती म एक छोटा-सा दामजिला मकान था। और मकानों की तरह उमकी छत भी चपरल की थी। खिडकिया नीचे रंग की थी और मकान व साथ एक छोटा-सा हराभरा बगीचा था था।

इस मकान म इल्यीच दम्पति, यानी व्लादीमिर इल्यीच और नादज्दा बोन्स्तान्नीनोव्ना रहते थे।

पहले व म्यूनिय म रहते थे। मगर वहां की पुनिस को "इस्त्रा" की गद्य लग जान की वजह म उन्हें वह शहर छोड़ना पडा और वे इंग्लंड की राजधानी लंदन आ गये। साल भर तक "इस्त्रा" लंदन से निबलता रहा। पर बाद म यहा रहना भी चतरनाव हा गया। "इस्त्रा" के लिए दूसरी जगह ढूढना जरूरी था। तब इल्यीच दम्पति जेनेवा की निबटवर्ती सगैरेन वस्ती म पहुचा।

"बहुत खूब!" मिनट भर म सार मकान का मुआयना करने के बाद व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। "बहुत खूब। जगह शांत है और यहा मैं चन स काम कर सकूंगा।"

मकान म नीचे काफी बड़ी रसाई थी और ऊपर दो छोटे, मगर काफी उजने कमरे थे।

व्लादीमिर इल्यीच के पास काम तो बहुत था, पर जिस शांति की उन्होंने कल्पना की थी, वह शीघ्र ही मिथ्या साबित हो गयी। बस्ता व निवासियों ने देखा कि रूसियों के यहाँ बहुत लोग आते हैं। जुलाई, १९०३ में तो आनेवालों का मानो ताता ही लग गया। आगन्तुक कभी अकेले आते तो कभी दो या तीन के दल में। यह पहचानना मुश्किल नहीं था कि वे स्थानीय नहीं हैं—स्थानीय निवासियों से उनका पहरावा भी अलग था और भाषा-बोली भी। वे रूसी बालते थे और रूसी जाति के थे। साफ लगता था कि वे जेनवा पहली बार आय हैं और यहाँ की हर चीज उनके लिए नयी है। उन्हें यहाँ का धूपखिला आकाश, उजले रंग की खिडकियाँ, और क्यारियों में खिले फूल, सब बेहद पसंद थे।

हो सकता है कि सेशेरोन के निवासियों को १९०३ की गरमियाँ में जेनवा में इतने अधिक रूसियों को देखकर आश्चर्य हुआ हो। मगर उनमें से कोई भी यह नहीं जानता था कि वे सब रूस के विभिन्न भागों से यहाँ पार्टी की दूसरी कांग्रेस में भाग लेने के लिए आये हैं।

कांग्रेस के लिये चुने गये लोग विभिन्न समस्याओं पर विचार विमर्श करने के लिए लेनिन के पास आते, उनकी राय पूछते। वे जानते थे कि कांग्रेस की तैयारी में सबसे अधिक योग्य व्लादीमिर इल्यीच ने दिया है। कांग्रेस की तैयारी के तौर पर व्लादीमिर इल्यीच ने "ईस्का" में बहुत सारे लेख लिखे थे, पार्टी के गठन के बारे में "क्या कर?" नामक एक शानदार किताब छपी थी और पार्टी का संविधान तथा जुलारू कार्यक्रम तैयार किया था। हम समाज का नया, बेहतर गठन चाहते हैं। हम नये, बेहतर समाज में न कोई अमीर होगा, न गरीब। सभी को समान रूप से काम करना होगा," लेनिन ने साधिया को समझाया।

लेनिन ने इन सब बातों के बारे में बहुत सोचा था। वास्तव में पार्टी कार्यक्रम की रूपरेखा उन्होंने अपने निर्वासन काल में ही तैयार कर ली थी। अब वह चाहते थे कि कांग्रेस में सभी मिलकर तय कर लें कि नया समाज के लिए सघन का सबसे सही और कारगर तरीका क्या है।

जेनवा में कांग्रेस में भाग लेनेवाले असेम्बल पहुंचे। वहाँ एक विशाल, धधेरे और अमुविधाजनक आटा-गोठाम में कांग्रेस का उद्घाटन हुआ। कांग्रेस के लिए गोठाम को साफ कर दिया गया था और खानकर ताजी दवा खान दी गई थी। एक किनारे पर सबकियाँ के तख्ता से मंच बनाया गया

था। बड़ी खिड़की पर तान कपड़ा टांगा हुआ था। प्रतिनिधियां न बैठने के लिए बेंच लगायीं गयीं थीं। प्रतिनिधि अपनी अपनी जगह पर बैठ गए। प्लखानोव मंच पर चढ़े। वह पहले सोमा मार्क्सवादी व ग्रीक वृद्ध बड़े विद्वान थे। लेनिन ने पहले ही वह मार्क्स के ज्ञानिगरी विचारों के साथ म कई किताबें लिख चुके थे। ग्रीकवागिकनापूण वातावरण में प्लखानोव ने कार्ग्रेम का उद्घाटन किया और अत्यंत प्रभावशाली भाषण दिया।

सभी ने साम राककर उठ मुना। व्यादीमिग ग्रीक ता कितन भावाकुल हो उठे थे। उनकी आंखें उल्लास में चमक रही थीं। पार्टी की पुनर्स्थापना और पार्टी कार्ग्रेम का मयना पर पर म अग्रन आ रहे थे। आखिरकार वह नाकार हा ही गया।

कार्ग्रेम की कारवाही गुन हूट ता तगमग पत्र ही दिन में मध्य भी छिड गया, क्योंकि वृद्ध प्रतिनिधि लेनिन द्वारा प्रस्तावित जुवाग कार्ग्रेम से महमत नहीं थे।

उन्हें वह बहुत नया और जाग्रिमपूण लगता था। नवीनता उन्हें आता थी। अत वे लेनिन से बहुत कान लगे। मा उनिन मने थे ओ अपन पस का उल्लानि इन जा ओ उपाट म मन्म किना कि अग्रिका प्रतिनिधि उनकी ताण हा गे। कार्ग्रेम में पार्टी के कार्यक्रम और मविधान पर विचार किया गया, केन्द्रीय उनिधि आ 'संस्था का मयात्मनय चुना गया। समय तामा नमी प्रना पर छिया। लेनिन ने कार्ग्रेम में एक रिपाट पा की, जो उनकी मन्मट और विधानासादन थी कि सभी प्रतिनिधियां न उसे अनाप्राण्य एसाप्रना के साथ मुना। कार्ग्रेम की मन्मनि बडक हूट आ लेनिन उनम एव मा बात बार बार। वह बोलेन थे जो जाडू कर लव थे। अग्रिका प्रतिनिधि उनिन न पते थे। उनिन उते बागविक (बुद्धविकारे) क्या जाने ग। विनिधि उनिन का विगाड किना, व मन्मविक (अग्रमन्विकारे) उड ल। बागविकों के विगाड, जो अग्रिकाविक लेनिन के सि लखडूट हू मन्मविक अग्रिकों मन्म से दूर हूड ल।

कार्ग्रेम पार्टी की, उल्लेख एक उ डल एक मन्मट हू ही थी। उल्लेख अग्रमन्मट के अग्रमन्मट हू उल्लेख मन्मट ही प्रमट लल ल गया थी। उ लखडूट कान, एव उल्लेख कि लखडूट ल ल है। अन्त में उल्लेख उनिन का उल्लेख उनिन का उल्लेख

बारिया की कांग्रेस हो रही है, इसलिए उसने उनके पीछे अपने भ्रान्ति की पूरी पल्टन लगा दी थी। छतरा पैदा हो रहा था। कांग्रेस को दूसरी जगह ले जाया गया। सभी लदन चले आय। यहाँ कांग्रेस की कायवाही जारी रही। जीत लेनिन की हुई। उनके निर्भोक् और जोशीले साथी-वोल्शेविक - उनके साथ थे।

लदन में प्रायः बारिश होती है। इस बार तो झिरझिरी इतनी दर तक जारी रही कि लदन की सड़के मानो छतरिया का सागर ही बन गयी। बीच-बीच में कभी इंग्लिश चैनल से आनेवाली हवा घने बादलों को उठा ले जाती, थोड़ी देर के लिए नीला आकाश चमक उठता, धूप खिल जाती, मगर फिर बहती बारिश।

ऐसे ही एक दिन कांग्रेस के बाद, जब सूरज थोड़ी सी देर के लिए चमककर फिर बादलों के पीछे छिप गया था, लेनिन ने कहा

‘साथियों! बीस साल पहले यहाँ लदन में काल माक्स का देहावसान हुआ था। आइये, हम भी महान माक्स की कब्र पर अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करने चलें।’

और सब साथ-साथ कब्रगाह की ओर चल पड़े। कब्रगाह लदन के उत्तरी भाग में एक ऊँचे टीले पर बने पार्क में स्थित थी। टीले से लदन का विहंगम दृश्य दिखायी देता था। कालिख से काली पड़ी इमारतें, काली छत और धूआ उगलती फैक्टरिया की चिमनियाँ।

माक्स की कब्र सफेद सगमरमर से बनी थी और चारों तरफ हरी हरी घास उगी हुई थी।

कब्र के शीप पर गुलाब की झाड़ी थी। फूलों की पखुडियाँ झुकी हुई थीं। मानो अपना शोक व्यक्त कर रही हों। हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। सड़क पर काली छतरियाँ लिये लोग आहिस्ता-आहिस्ता आ-जा रहे थे।

‘साथिया,’ लेनिन ने सिगरेट से टोपी उतारते हुए कहा, ‘महान माक्स हमारा गुरु थे। उनकी कब्र के पास खड़े होकर हम शपथ खाते हैं कि उनके विचारों के प्रति सदा निष्ठावान रहेंगे और कभी सचप से मुह नहीं मारेंगे। आगे, साथिया! सिर्फ आगे!’

दमनचक्र

पीटसबग मे पुतोलोव कारखाने के मालिका ने बेवजह तीन मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया। सिर्फ इसलिए कि फोरमैन उन्हें पसंद नहीं करता था। इस पर कारखाने में असंतोष की जबदस्त लहर दौड़ गयी।

“हमें कोई अधिकार नहीं है। हम अधिकार दो। हमारा खून चूसनेवाले फोरमैन मुर्दावाद।” मजदूरों ने माग की।

कारखाने में हड़ताल हो गयी। सभी मजदूरों ने काम करने से इन्कार कर दिया। कारखाना निष्क्रिय हो गया। दो और कारखाने भी ठप्प हो गये। अगले दिन और ३६० कारखाना और फक्टोरिया के मजदूर हड़ताल पर चले गये। मशीनें रुक गयीं। सारा पीटसबग जड़ हो गया। सब इन्तजार कर रहे थे कि आगे क्या होगा।

रविवार, ९ जनवरी, १९०५ को हज़ारा मजदूर सड़का पर निकल पड़े।

“चलो, ज़ार से न्याय मागें,” मजदूर कह रहे थे। “ज़ार हमारे पिता की तरह है। वह हमें भूखा नहीं मरने देगा।”

बोलशेविका ने समझाया वहां मत जाओ, ज़ार तुम्हें नहीं सुनेगा।

मजदूर बढ़ते रहे। यह सोचकर कि ज़ार नहीं जानता कि जनता की कसी दुदशा है और ज़्यादा ही जान जायेगा, त्याही हमारा पक्ष लेने लगेगा, इन बदमाश मालिकों और फोरमैन को सज़ा देगा। नहीं तो हमारा जीवन ही दूभर हो गया है।

मजदूर ज़ार के पास दरखास्त लेकर जा रहे थे। रविवार की सुबह को पीटसबग के कोने-कोने से मजदूरों के जलूस शीत प्रासाद की ओर बढ़ने लगे। सड़कों और स्क्वायर्स पर लोगों का ताता लगा हुआ था। भीड़ हाथा में दक्कनियाएँ और गिरजाघरों के चड़े लिये हुए थीं, जिन पर सुनहरी कशीटावारी चमक रही थी। जलूसा में औरत और बच्चे भी थे। सभी के मन में विश्वास था, आखा में अनुरोध था।

लेकिन यह क्या? चौराहों पर बढ़क हाथ म लिये सिपाहियों की टुकड़ियाँ खड़ी थीं। उनके आगे सफ़ेद दस्तान पहने अप्पनर खड़े थे।

यह वह समय था, जब मुद्दूर पूव म घमासान लड़ाई छिड़ी हुई थी। लगभग साल भर पहले जापान ने रूस पर आक्रमण किया था। रूसी जनरल

इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे। फलतः रूसी सेना दिन प्रतिदिन हाज़ा जा रही थी। हज़ारों सिपाही दूर, कहीं दूर मारे जा रहे थे।

और यहाँ, पीट्सबर्ग में, ज़ारशाही अधिकारियाँ न अपने हाँ निहत्थे मजदूरों के विरुद्ध सारी राजधानी में फौज खड़ी कर दी थी। क्या? किसलिए?

‘व्यवस्था बनाये रखने के लिए,’ माता मरियम की प्रतिमा हाथ में लिये एक मजदूर ने समझाया। “शायद भीड़ से डर गये हैं।”

स्क्वायर के पार पत्थर का बना विशाल शीत प्रासाद खड़ा था। उसकी सैकड़ों खिड़कियाँ मूकवत् देख रही थीं। प्रासाद के सामने मैदान में सफ़्त, अनरौंदी धक् पड़ी थी। भयावह चेहरोवाले सिपाहियों की घनी पंक्ति प्रासाद की रक्षा कर रही थी। भीड़ को देखकर अफसर ने हाथ उठाया। सभी सगिनें तन गयीं।

“भाइयों, सिपाहियों, डराओ नहीं!” मजदूर चिल्लाये। “हम अपने ही हैं। ज़ार से सिर्फ दरखास्त करने जा रहे हैं।”

‘ठहरो! आगे बढ़ना मना है!’ अफसर न चिल्लाते हुए आदेश दिया। मजदूर क्षण भर के लिए असमजस में पड़ गये। मगर पीछे की कतारों ने, जिन्होंने सिपाहियों को नहीं देखा था, आगे को धक्का दिया।

“हे प्रभु, ज़ार चिरायु हो!” सारा स्क्वायर गूँज उठा।

आगे की कतारों के मजदूर सफेद रूमाल फहराने लगे।

‘हम निहत्थे, शांतिप्रिय हैं! हम ज़ार के सामने दरखास्त पेश करना चाहते हैं!’ मजदूर चिल्लाये और धार्मिक झंडे, देवप्रतिमाएँ और सफेद रूमाल उठाये आगे बढ़ते रहे।

फायर!” अफसर ने आदेश दिया।

गोलियाँ सनसनायीं। भीड़ में से कोई बीस मजदूर घराशायी हो गये।

‘फायर!’ अफसर फिर चिल्लाया।

गोलियाँ फिर सनसनाए लगीं।

“फायर! फायर! फायर!”

स्क्वायर में भगदड़ मच गयी। लोग घरा के दरवाजों में छिपने के लिए भागे और मुर्दा हाँकर गिर पड़े। शीत प्रासाद के सामने का मैदान लाशाँ से ढक गया। तभी तलवार भाजते हुए घुड़सवार सैनिक भी आ गये।

“भाइयों! मारे गये!” भयावह भीड़ की चीख-गुवार से स्क्वायर गूँज उठा।

“लानत है। लानत है।”

“देख लिया अपने जार को?” गुस्से से एक युवा बोल्शेविक चिल्लाया।
“ये है तुम्हारा जार, जिसमे तुम्ह इतना विश्वास था। किस निमम जानवर
मे तुमने विश्वास किया था?”

मजदूर समझ गये। गोलिया जार ने ही चलवायी थी। जार के ऊपर
से जनता का विश्वास सदा-सदा के लिये उठ गया।

उस खूनी रविवार को पीटसबग मे एक हजार से अधिक मजदूर मारे
गये और पाच हजार घायल हुए।

शाम तक पीटसबग की सड़का पर लैम्पपोस्ट गिरा गिराकर बैरिकेड
खडे हो गये। मजदूरों ने जारशाही के खिलाफ जग का ऐलान कर
दिया।

जेनेवा के बाहरी छोर पर, आर्वा नदी के समीप कारुझ नाम की एक
सड़क थी। रूसी प्रवासी उसे कारुझका सड़क कहते थे। इस इलाके मे
अधिकांश आवादी उही की थी। यहा लेपेशीन्स्की दम्पति का एक भोजनालय
था। दोनो पति-पत्नी साइबेरियाई निर्वासन के दौरान व्लादीमिर इत्येच
के साथी रह चुके थे। लेपेशीन्स्की भोजनालय को सभी रूसी प्रवासी जानते
थे। पहली मजिल पर बड़ा सा कमरा और आम खिडकियो की जगह पर
दो प्रदर्शन खिडकिया। तख्तो की बनी लम्बी, साफ-सुधरी मेजें और एक
कोन में पियानो। यह भोजनालय ही नहीं, एक तरह से बोल्शेविका का
क्लब भी था। यहा लोग व्याख्यान सुनते, शतरज खेलते और राजनीतिक
चर्चा करते

पीटसबग के खूनी रविवार की खबर जेनेवा पहुंचते ही सभी प्रवासी
बिना किसी के बुलाये स्वतः लेपेशीन्स्की भोजनालय मे एकत्र हो गये। सब
खामोश थे, निस्तब्ध थे, गभीर थे। बोल्शेविक समझ गये कि रूस मे
व्यापक, अभूतपूर्व विद्रोह शुरू हो गया है।

“घर लौटना है, बतन लौटना है।” व्लादीमिर इत्येच सोच रहे थे।

कोई शोकातुर स्वर मे गाने लगा

तुम चढे बलिवेदी पर
सघप की

दूसरा न खड होकर उसका साथ दिया

नि स्वाय प्रेम की,
लोकस्नेह की।
तुमन किया
सबस्व यौछावर
जनता के मुख,
आजादी की खातिर।

बहुतो की आखा मे आसू थे।

'रूस मे क्राति हो रही है," भावविह्वल स्वर मे व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

क्राति! कितना जोशीला, कितना प्रिय था यह शब्द! उसी शाम लेनिन ने "व्येर्योद' (आगे बढ़ो) के लिए एक ललकार भरा लेख लिखा। यह बोल्शेविको का नया अखबार था। "ईस्का' पर मे शोविका का कजा हो गया था।

लेनिन ने लिखा "विद्रोह शुरू हो गया है। ताकत का जवाब ताकत देने लगी है। सबका पर लडाइया हो रही ह वैरिक्केड खडे हो रहे ह, गोलिया सनसना रही हैं, तोपे गडगडा रही हैं। खून की नदिया बह चली हैं, स्वाधीनता के लिए गह्युद्ध छिड गया है

क्राति जिंदावाद!

सबहारा विद्रोह जिंदावाद!'

सागर में लाल झंडा

गरमिया खत्म होने को आ रही थी। एक दिन जेनवा मे उल्यानोवा क घर की घटी बजी।

'बोलोछा, तुम्हे मिलने आये हैं," नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना ने एक अपरिचित नौजवान के लिए दरवाजा खालते हुए कहा।

नौजवान का चेहरा गोल और विशोरो की तरह भोला था और काली भौंहो के नीचे भूरी, उजली आखें उत्सुकता और किंचित आश्चय से देख रही थी।

“भादये, भाइय! आप से मिलकर हम बहुत खुशी हुई है,” नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने कहा और मन ही मन साचन लगी “कितना प्यारा नौजवान है! चेहरा बताना है कि निश्चल और नय है। जरूर हम से आया होगा।”

रूस में मजदूरा की हड़ताल, प्रदर्शन, बग़रह अभी जारी थे। बतन से बोल्शेविक व्नादीमिर इल्यीच से सलाह लेना प्रायः आया करते थे।

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के पीछे-पीछे नौजवान न लेनिन के कमरे में प्रवेश किया। मगर कमरे में पैर रखा से पहल दहलीज पर उसने सैनिका की तरह हल्के में अपनी छाती को तान लिया था।

“आप कहा से हैं?” व्नादीमिर इल्यीच ने मुस्कराते हुए पूछा।

“मैं युद्धपोत ‘पोत्योम्बिन’ का जहाजी अफानासी मात्यूशेवो हूँ,” आगन्तुक ने जवाब दिया।

व्नादीमिर इल्यीच ने तेजी से आगे बढ़कर बड़े उत्साह से उससे हाथ मिलाया।

“आतिथारी ‘पोत्योम्बिन’ के जहाजिया के नेता! नाचूशा, देखो तो कितने युवा हैं!”

आगे घटे बाद स्फिरिट के लैम्प पर तामचीनी की बेंतली खोल रही थी। मेज पर स्वादिष्ट रोटी और ताजा, पीला मक्खन रखा था।

“हां, तो प्रिय मात्यूशेवो, बताइये, आप क्या बताने जा रहे थे,” जब अतिथि चाय के साथ रोटी के कुछ टुकड़े खा चुका तो व्लादीमिर इल्यीच ने बेसत्री के साथ पूछा।

जहाजी अफानासी मात्यूशेवो अपने युद्धपोत “पोत्योम्बिन” की कहानी सुनाने लगा।

यह हाल ही में निमित और अत्यंत शक्तिशाली तोपा से लैस सबसे बड़ा जहाज था। उसमें सात सौ चालीस जहाजी काम करते थे। उस समय वह सेवास्तोपोल में लगर डाले हुए था।

रूस में हर जगह आति का ज्वार आया हुआ था। गावा में किसान जमींदारों के खिलाफ उठ खड़े हुए थे। रूसी जापानी युद्ध अभी खत्म नहीं हुआ था। जापानी जीत रहे थे और रूसिया को एक के बाद एक करारी

हार घानी पड़ रही थी। ल्यूमीन्सवी यात्री म हमारे जहाज की एन पूगे टुबडी नष्ट हो गयी थी। जारशाही मरवार सड़ी हुई और सक्कप्रस्त था। जनता जार निवोलाई द्वितीय से नफरत करती थी।

युद्धपोत 'पोल्योम्बिन' का कमांडर बहुत ही शूर और निर्यामी आत्मा था। उस डर था कि घटी प्राति की आग जहाज पर भी न पड़ जाये। इसलिए वह सैनिक अभ्यास के बहाने युद्धपोत को मवास्तोपोल से, मजदूर हडताला और प्रदर्शना से दूर समुद्र में ले गया।

खुले समुद्र की बात है। एक दिन सुबह घटी घजने पर सभी जहाज उठे। सबको उनका काम बांट दिया गया। जहाजिया के एक बड़े दल को डेक धोने का काम सौंपा गया।

अचानक वे पाते हैं कि ऊपरी डेक से असाह्य सी बू आ रही है। जहाजी ऊपर चढ़े, ता दयत है कि वहा छूटी पर गोशत लटका हुआ है और उसमें मोटे मोटे सफेद कीड़े रग रहे ह। कीड़े इतन अधिक थे कि लगता था कि गोशन छुद बछुद हरकत कर रहा है। यह दृश्य देखकर जहाजियों को उबकाई आन लगी।

“तो यह है हम खिलाने के लिए।”

‘हम कीड़े नहीं खायेंगे, खुद अफसर लोग खायें इह!’

कौन? अफसर? अरे उनके लिए तो अलग राशन है।”

दिन के खाने की घटी बजी। जहाजी खाने के हाल में इक्ठे हुए। रसोइय ने सूप परोसा, तो उसमें भी कीड़े तैर रहे थे।

‘हम नहीं खायेंगे।’

सारे हॉल में एक भयावह सी खामोशी छा गयी। रसोइये न डरकर अफसर को बुलाया। वह आते ही गालिया देने लगा, पर ज्यो ही जहाजियों के सफेद, कठोर चेहरो पर नजर पड़ी, तो एकाएक चुप हो कमांडर का बताने चल दिया। शीघ्र ही नगाडे की आवाज सुनायी दी। यह जनरल लाइन अप का संकेत था। जहाजी हडबडाते हुए ऊपरी डेक की ओर दौड़े और लाइन बाधकर खड़े हो गय। चारो तरफ नीला समुद्र था और उपर खुला, शुभ्र-आसमान। समुद्र में छोटी छोटी लहर उठ रही थी। उनमें डेलफिनो के झुण्ड खेल रहे थे।

‘तुम लोग बगावत करते हो।’ कमांडर चिल्लाया। ‘म तुम्ह दिखाता ह कि सैनिक पोत पर बगावत कैसे की जाती है। किसन उबसाया है?’

जहाजी चुप, बत की तरह खड़े रहे। मामने बढ़के ताने सतरिया की बतार थी।

“तिरपाल लाओ।” कमांडर ने आदेश दिया।

क्या मतलब था इसका? इसका मतलब था कि कमांडर ने बगावत उकसानेवालों को प्राणदण्ड देने का निश्चय कर लिया है। वह अगुली दिखाकर कहेगा “तुमने उकसाया था।” और बस।

तिरपाल लाकर डेक पर खोल दी गयी। अभी उससे जहाजिया को ढक देंगे। उसके नीचे होने का मतलब था प्राणदण्ड। बिना किसी सुनवाई के प्राणदण्ड!

सभी सकते में आ गये। मौत अब आयी, तब आयी बचाव कोई नहीं था। चारों तरफ नीला समुद्र था, गम धूप से आलोकित आममान था, निर्बाध हवा थी।

सहसा बतार में एक जहाजी आगे उछला

“भाइयो! कब तक सहगे? हथियार उठाओ, भाइयो।”

और सबसे आगे आगे शस्त्रागार की तरफ लपक पड़ा। यह अफानासी मात्यूशेको था। साथी उसे वैसे भी बहुत अशान्तस्वभाव कहा करते थे।

“जल्लाद कमांडर मुर्दाबाद!” मात्यूशेको चिल्लाया। “जार मुर्दाबाद! आजादी जिंदाबाद, साथियो!”

बतार टूट गयी। जहाजिया ने बढ़के उठा ली।

सोनियर अफमर ने बुर्जी के पीछे छिपकर पिस्तौल दागी। गोली जहाजियो के नेता, वोल्शेविक, अटल और साहसी साथी वाकूलिचूक को लगी। वह गिर गया।

‘अच्छा, तो यह बात है। लो, तुम भी लो।’ पागल की तरह चिल्लाते हुए मात्यूशेको ने अफसर का भी मौन के घाट उतार दिया।

सभी जहाजी गुस्से से चौखला उठे थे। उन्होंने कुछ और अफसरो को भी, खास तौर से जिनसे उह बहुत नफरत थी, गोली से उड़ा दिया और समुद्र में फेंक दिया। कमांडर जान बचाने के लिए छिप गया। किन्तु जहाजिया ने उमे भी खोजकर समुद्रापण कर दिया।

युद्धपोत “पोत्योम्किन” आजाद था। पर आगे क्या हो? जहाज का कमांडर कौन बने? जहाज आगे कहा जाये?

अफानासी मात्यूशेको के नेतृत्व में एक कमीशन नियुक्त किया गया

और यह फैसला हुआ कि ओदेस्सा की ओर बढ़ा जाये। मस्तूल पर अब चारशाही के झंडे की जगह अपना, क्रांतिकारी झंडा फहरा रहा था। यह १४ जून, १९०५ की घटना है।

लाल बड़ा फहराये हुए युद्धपोत "पोत्योम्किन" पूरी रफ्तार से ओदेस्सा की ओर बढ़ने लगा। लाल झंडा हवा में लहरा रहा था, प्रकाशस्तम्भ की तरह चमक रहा था, स्वाधीनता संघर्ष के लिए जहाज़िया का आह्वान और मागदशन कर रहा था।

जहाज ने जब ओदेस्सा में लगेर डाला, तो रात हो चुकी थी। उसका सचलाइटा ने अघेर को टटाला। चक्काचौध्र करनेवाले उजाले में काले सागर और नगर की नीरव मडका का चक्कर लगाया। तोपे ओदेस्सा की ओर तनी हुई थी। वहाँ मजदूरों की हड़तालें जारी थी। ऐसे में काश 'पोत्याम्किन' भी तुरत मजदूरों की सहायता में गोलाबारी शुरू कर दे। अभिजात लोगों और ऊँचे अधिकारियों के महला का मिट्टी में मिला दे। लेकिन जहाज़िया का नेता, बोलशेविक वाकूलिचूक तो अफसर की गोली से घायल होकर मर गया था। और शेष सभी इतने जवान और अनुभवहीन थे।

इस बीच पीटसबर्ग से चार ने सेवास्तोपोल आदेश भेज दिया था "बगावत तुरत दबा दी जाय।"

सेवास्तोपोल के सभी जहाज युद्धपोत 'पोत्योम्किन' की बगावत को दबाने के लिए ओदेस्सा की ओर चल पड़े।

चौथे दिन सुबह 'पोत्योम्किन' के सतरियों को क्षितिज पर मस्तूल और चिमनिया दिखायी दी। ये "पोत्याम्किन" को घेरे में लेने के लिए आ रहे तेरह जहाज थे।

एक के मुकाबले में तेरह।

'पोत्योम्किन' पर अलाम बज गया। जहाजी अपनी अपनी जगह पर लड़ाई के लिए तैयार हो गये।

युद्धपोत चुपचाप समुद्र की ओर बढ़ने लगा। मात्यूशेको के आदेश पर सिगनलमन ने सदेश भेजा 'पोत्योम्किन' की कमांड सभी जहाजों के तोपचियों से गोलियां न चलाने का अनुरोध करती है।'

और अचानक समुद्र 'पोत्योम्किन' को दबाने के लिये भेजे गये सभी तेरह जहाजों के जहाज़िया के 'हुर्रा' के उदघोष से गूँज उठा। एक जहाज

से सदेश भेजा गया "हम तुम्हारे साथ हैं।" और वह चिडिया की सी सहजता से "पोत्योम्किन" की ओर बढ़ चला।

समुद्र का विस्तार एक बार फिर "हुर्रा!" की आवाजों से गूँज गया।

टुकड़ी का कमांडर डर गया कि कहीं सबके सब बगावत न कर बैठें। उसने तत्काल टुकड़ी को सेवास्तोपोल वापस लौटने का आदेश दिया।

अब लाल झंडा फहराते हुए दो बागी जहाज ओदेस्सा के तटवर्ती समुद्र में खड़े थे। खड़े थे मगर ओदेस्सा पर कब्जा नहीं कर रहे थे। उन्हें किसी चीज का इन्तज़ार था। वे खुद नहीं तय कर पा रहे थे कि क्या करें।

तब तक "पोत्योम्किन" पर ईंधन और मीठे पानी का भण्डार खत्म होने को आ गया था। शीघ्र ही इन्जन रुक जायेगा। जहाजी उत्तेजित थे। वे जानते थे कि कुछ न कुछ करना चाहिये। पर कैसे ?

दूसरे जहाज का हौमला अल्पकालीन मिद्ध हुआ। उसके मस्तूल का लाल झंडा धीरे धीरे नीचे उतरने लगा।

"पोत्योम्किन" ने लगर उठाया और खुले समुद्र में निकल पड़ा।

इस बीच जेनेवा से लेनिन का दूत "पोत्योम्किन" के जहाजियों की सहायताथ रूस के लिये खाना ही चुका था। लेनिन ने जहाजियों को दबतापूर्वक और तेजी से काम करने और नगर को अपने कब्जे में लेने की सलाह दी थी।

लेनिन का दूत ओदेस्सा पहुँचा, तो उसे लाल झंडा कहीं नहीं दिखायी दिया। लाल झंडा दूर समुद्र में चला गया था।

युद्धपोत पर भीठा पानी बहुत कम रह गया था। तुरत कोई उपाय करना जरूरी था। "पोत्योम्किन" ने फेओदोसिया में पानी लेने की कोशिश की, मगर स्थानीय अधिकारियों ने इन्कार कर दिया

"हम बागिया को पानी नहीं देंगे।"

अजेय और बेघर लाल झंडा फिर समुद्र में निकल पड़ा। जहाजी चिंतित थे, उनका आत्मविश्वास जवाब दे रहा था। क्या किया जाये ?

ग्यारहवें दिन युद्धपोत "पोत्योम्किन" ने एक रूमानियाई बंदरगाह में, परायें घर में, परायें समुद्र में लगर डाला।

"पोत्योम्किन" के जहाजियों में और ताकत नहीं रह गयी थी। उनके पास न पानी था, न कोयला और न रोटी।

रुमानिया की सरकार ने कहा

“युद्धपोत हमें द दो, हम तुम्हें शरण देते हैं और निश्चित रही कि
आर के हाथ वापस नहीं सोंपेंगे।’

“पोत्योम्किन” पर जहाजियों की यह आखिरी रात थी। अलविदा,
स्वतंत्र “पोत्योम्किन”। ग्यारह दिन तक तुम्हारे कारण जनरल और अफसर,
आर और सभी सेठ कापते रहे। तुमने नाति का झंडा बुलद किया।
तुम्हारी कीर्ति अमर रहे।

गुप्त मुलाकातें

मास्को—पीटसवग एक्सप्रेस ट्रेन को छूटने में चार मिनट रह गये थे।
ज्यादातर मुसाफिर अपनी जगहों पर बैठ चुके थे। प्लेटफाम पर विना
करनेवाला की भीड़ थी। आखिरी डिब्बे के पास दो भेदिये खड़े थे।

“नहीं, अब नहीं आयेगा” गहरी सास लेते हुए एक ने कहा।

“अरे, देखना, आखिरी क्षण तक खरूर आ जायेगा,” दूसरे ने जवाब
दिया।

वे आधा तक झुके टोपो के नीचे से गौर से देखने लगे। प्लेटफाम
पर और मुसाफिर दिखायी दिये। एक, जो नाटा, गठीला और गोल
फ्रेमवाला नीला चश्मा पहने था, हाथों में सूटकेस और पीला सफरी बक्सा
लिये हुए था। उन दिनों फिनलैण्ड में ऐसे बक्सों का फशन था।
दूसरा मुसाफिर कुछ छैला किस्म का और चारखानेदार ओवरकोट पहने
था।

नीले चश्मेवाला मुसाफिर कुछ कह रहा था। भेदिय उसे सुन नहीं
पाये। भेदिये घबरा रह थे कि जिसका उन्हें इतखार था, वह अब तक
क्या नहीं आया है। और यह नीले चश्मेवाला कौन है? वह तो नहीं लगता,
पर क्या मालूम भेदिये नीले चश्मेवाले के पीछे-पीछे दौड़े।

लेबिन गाडी चल पडी थी। नीले चश्मेवाला वूदकर पायदान पर च
गया और छैला किस्म का आदमी वहीं रह गया। शायद अपने साथी को
छोड़न आया था।

‘नहीं ही पकड पाय,’ बड़े दुख से एक भेदिय ने कहा। “रिपो
ता मिली थी कि वह आज पीटसवग जा रहा है। पर महा उसकी छापा

तक नहीं दिखायी दी। ये रहा उसका फोटो। प्लेटफ़ॉर्म पर तो ऐसा कोई आदमी था नहीं।”

उसने जेब से फोटो निकाली। गाल की हड्डियाँ कुछ-कुछ उठी हुईं, माथा बहुत चौड़ा, भौंह बीच में उठी हुई और आँखें किनारा पर मिची और हसती हुईं सी। ऐसा था वह चेहरा, जो फोटो से झाँक रहा था।

“यह लेनिन उल्यानोव है। जेनेवा से रूस में मजदूर विद्रोहों में भाग लेने जा रहा है। हुकूम हुआ है कि ज़रूर पकड़ना है। कल फिर आयेगे,” भेदिये ने फोटो को वापस जेब में रखते हुए कहा।

इधर एक्सप्रेस गाड़ी ताराभरी रात में पेड़ों पर अपने कड़वे धए के छल्ले छोड़ती हुई भागी जा रही थी। पटरियाँ के दोनों ओर हिमाच्छादित नीरव और शान्त जंगल फैले थे।

सुबह पीटसवग में नीले चश्मेवाले न घोड़ागाड़ी ली और कुछ ही देर बाद वह राजधानी के लगभग केन्द्रीय इलाके में स्थित अपने घर में था। घर के नाम पर वहाँ एक छोटा सा कमरा ही था, जिसमें पतले से कबल से ढकी चारपाई, खिड़की के पास छाटी सी मेज़ और एक कुर्सी थी। उनमें बहुत समय से कोई नहीं रहता था।

उस आदमी ने चश्मा उतारा और सूटकेस में रख दिया। फिर पीले कबसे से बाग़ज निकाला और मेज़ के पास बैठकर लिखने लगा।

कोई घंटे भर बाद दरवाज़े पर हल्की सी आहट सुनायी दी। ताले में चाभी घूमी और नादेज़्दा कोन्स्तातीनोव्ना ने कमरे में प्रवेश किया। वह दस्ताने और फर की किनारियावाली टोपी पहने हुई थी।

व्लादीमिर इल्यीच झटके से उठ खड़े हुए।

“नाचशा, मेरी प्रिय।”

“मास्को में उन्होंने तुम्हारा पीछा किया?” चिन्तित स्वर में नादेज़्दा कोन्स्तातीनोव्ना ने पूछा।

‘अरे, कुछ न पूछो।’ व्लादीमिर इल्यीच व्यग्नपूर्वक मुस्कराये।

अपनी चिन्ता को छिपाते हुए नादेज़्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना सूटकेस से सामान निकालने लगी। नीला चश्मा? यह किसलिए?

“भेस बदलने के लिए,” व्लादीमिर इल्यीच ने जवाब दिया। “नाचूशा, जानती हो, इन नीले चश्मा की बदौलत ही मैं पुलिस की आँखों में धूल झाँक सका।”

म्मानिया की सरकार न बहा

“युद्धपोत हमें दे दो, हम तुम्हें शरण देते हैं और निश्चित रहेंगे कि
जार के हाथ वापस नहीं सौंपेंगे।”

‘पोत्योम्बिन’ पर जहाजिया की यह आखिरी रात थी। अलबिना,
स्वतंत्र ‘पोत्योम्बिन’। ग्यारह दिन तक तुम्हारे कारण जनरल और अफसर,
जार और सभी सेठ कापते रहे। तुमन शक्ति का शब्द बुलन्द किया।
तुम्हारी कीर्ति अमर रहे।

गुप्त मुलाकातें

मास्को—पीटसवग एक्सप्रेस ट्रेन का छूटने में चार मिनट रह गये थे।
ज्यादातर मुसाफिर अपनी जगहा पर बैठ चुके थे। प्लेटफाम पर बिना
करनेवाला की भीड़ थी। आखिरी डिब्बे के पाम दो भेदिये खड़े थे।

‘नहीं, अब नहीं आयेगा’ गहरी सास लेते हुए एक ने कहा।

अरे, देखना, आखिरी क्षण तक जरूर आ जायेगा,” दूसरे ने जवाब
दिया।

वे आखा तक झुके टोपो के नीचे में गौर में देखने लगे। प्लेटफाम
पर और मुसाफिर दिखायी दिये। एक, जो नाटा, गठीना और गोल
फ्रेमवाला नीला चश्मा पहने था, हाथों में सूटकेस और पीला सफरी बक्सा
लिये हुए था। उन दिनों फिनलैंड में ऐसे बक्सों का फशन था।
दूसरा मुसाफिर कुछ छला किस्म का और चारखानदार ओवरकोट पहने
था।

नीले चश्मेवाला मुसाफिर कुछ कह रहा था। भेदिये उसे सुन नहीं
पाये। भेदिये धबरा रहे थे कि जिसका उह इतज्जार था, वह अब तक
क्यों नहीं आया है। और यह नीले चश्मेवाला कौन है? वह तो नहीं लगता,
पर क्या मालूम भेदिये नीले चश्मेवाले के पीछे पीछे दौड़े।

लेकिन गाडी चल पडी थी। नीले चश्मेवाला कूदकर पामदान पर चढ़
गया और छैला किस्म का आदमी वही रह गया। शायद अपने साथी को
छोटने आया था।

“नहीं ही पकड़ पाये,” बड़े दुख से एक भेदिये ने कहा। “रिपोट
तो मिली थी कि वह आज पीटसवग जा रहा है। पर यहा उसकी छाया

तब नहीं दिखायी दी। ये रहा उसका फोटो। प्लेटफाम पर तो ऐसा कोई आदमी था नहीं।”

उसने जेब से फोटो निकाली। गाल की हड्डिया कुछ कुछ उठी हुई, माया बहुत चौड़ा, भौंह बीच में उठी हुई और आँखें किनारों पर भिची और हसती हुई सी। ऐसा था वह चेहरा, जो फोटो से याक रहा था।

“यह लेनिन-उल्यानोव है। जेनेवा से रूस में मजदूर विद्रोहों में भाग लेने जा रहा है। हुकूम हुआ है कि जरूर पकड़ना है। कल फिर आयेगे,” भेदिये ने फोटो को वापस जेब में रखते हुए कहा।

इधर एक्सप्रेस गाड़ी तारोभरी रात में पड़ा पर अपने बड़े घेरे के छले छाड़ती हुई भागी जा रही थी। पटरिया के दोनों ओर हिमाच्छादित नीरव और शांत जंगल फने थे।

सुबह पीटसवग में नीले चश्मेवाले ने घोड़ागाड़ी ली और कुछ ही देर बाद वह राजधानी के लगभग केन्द्रीय इलाके में स्थित अपने घर में था। घर के नाम पर वहाँ एक छोटा सा कमरा ही था, जिसमें पतले से कबल से ढकी चारपाई, पिडकी के पास छोटी सी मेज और एक कुर्सी थी। उसमें बहुत समय से कोई नहीं रहता था।

उस आदमी ने चश्मा उतारा और सूटकेस में रख दिया। फिर पीले बक्से से बागल निकाला और मेज के पास बैठकर लिखने लगा।

कोई घंटे भर बाद दरवाजे पर हल्की सी आहट सुनायी दी। ताले में चाभी घूमी और नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना ने कमरे में प्रवेश किया। वह दस्ताने और फर की किनारियोंवाली टोपी पहने हुई थी।

व्लादीमिर इल्यीच झटके से उठ खड़े हुए।

“नाचशा, मेरी प्रिय!”

“मास्को में उहाने तुम्हारा पीछा किया?” चिन्तित स्वर में नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने पूछा।

“अरे, कुछ न पूछो!” व्लादीमिर इल्यीच व्यग्यपूर्वक मुस्कराये।

अपनी चिंता का छिपाते हुए नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना सूटकेस से सामान निकालने लगी। नीला चश्मा? यह किसलिए?

“भेस बदलने के लिए,” व्लादीमिर इल्यीच न जवाब दिया। “नाचूशा, जानती हो, इन नीले चश्मों की बदौलत ही मैं पुलिस की आखा में धूल झाक सका।”

व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तातीनोना गैरकानूनी रूप से स्वदश लीटे थे और पीटसबग में दूसरो के नाम से बने पासपोर्टों पर रहते थे। उन्हें गुप्त रूप से मिलना पड़ता था और ये मुलाकाते भी बहुत छोटी और हड़बड़ी में होती थी।

इस समय व्लादीमिर इल्यीच मास्को की घटनाओं के बारे में बताने के लिए ब्रेताब थे। वह उही के बारे में साथिया से विचार विमर्श करने के लिए मास्को गये थे।

हुआ यह था कि अक्टूबर में मास्को रेलवे जंक्शन के मजदूर हड़ताल पर चले गये थे जिसके बाद एक-एक करके शहर के कल-कारखाना, परिवहन, बिजली तथा पानी सप्लाई व्यवस्था के मजदूरों ने भी हड़ताल की घोषणा कर दी। सारा मेहनतकश मास्को हड़ताल पर था। बाद में यह हड़ताल दूसरे शहरों में भी फैल गई। गावों में भी अशांति के लक्षण नजर आने लगे थे।

विद्रोह की इस व्यापक आग को बुझाने के लिए जार ने एक घोषणापत्र जारी किया, जिसमें मजदूरों को आजादी का वचन दिया गया था। मगर यह एक धाखा था। मजदूर जानते थे कि जार पर विश्वास नहीं किया जा सकता। उन्हें जनवरी महीने में पीटसबग में शीत प्रसाद के सामने हुआ हत्याकाण्ड भती भांति याद था।

७ दिसंबर, १९०५ को दिन में १२ बजे मास्को में फिर हड़ताल हाँ गयी। सरकार ने विद्रोही मजदूरों का दबाने के लिए फौज भेजी। मजदूरों ने इट का जवाब पत्थर से दिया और सारे मास्को में सड़कों और चौराहों पर, कारखानों और फैक्ट्रियों के सामने बैरिकेड खड़े हो गये।

विद्रोही मजदूरों का मुख्य केंद्र प्रेस्न्या का मजदूर इलाका था, जहाँ बहुत से कल-कारखाने थे। मजदूरों ने अपने प्रतिनिधियों की सोवियत गठित की और मजदूर सत्ता की स्थापना की घोषणा की।

जार सरकार ने इसके जवाब में पैदल, घुड़सवार, तोपखाना और कजाक टुकड़ियाँ मास्को भेजी। प्रेस्न्या पर तोपों से गोले बरसने लगे। मजदूरों के लकड़ी के घर और बैरक माचिस की डिवियाओं की तरह जलने लगीं।

लड़ाई दस दिन तक जारी रही। मजदूर और वात्सोविक बड़ी बोरता में लड़े। लेकिन जारशाही की तोपों ने उनके विद्रोह को निममता के माप मुचल दिया।

क्या मजदूरों को हथियारों का सहारा लेना चाहिये था ?

“नहीं,” मे श्रेविको ने कहा था।

कोई जरूरत नहीं थी, प्लेखानोव ने भी उनका समयन किया था।
रूस में क्रांति की आग भड़की हुई थी और प्लेखानोव दिनादिन
बाल्शेविका से दूर हटते जा रहे थे।

“विद्रोह की जरूरत थी,” लेनिन ने दबता के साथ कहा। “मजदूरों
को हथियारों का सहारा लेना चाहिये था। इससे उन्हें सघप की दीक्षा
मिली है।”

इस समय पीटसबर्ग के उस छोटे से कमरे में व्लादीमिर इल्यीच नादेज्दा
कोन्स्तातीनोव्ना को इन्हीं सब बातों के बारे में बताया जा रहा था। क्योंकि वह
पार्टी की केंद्रीय समिति की सेक्रेटरी थी, पार्टी मीटिंगों का आयोजन और
पार्टी की विभिन्न शाखाओं के बीच संपर्क स्थापित करने का भार उनके
जिम्मे था और फिर वह लेनिन की सबसे विश्वस्त सहायक भी थी।

उन्होंने अपने सबसे प्रिय साथी निकोलाई बाउमन को याद हो आयी।
यह याद बहुत कष्टदायी थी। “ईस्त्रा” की तैयारी में बाउमन ने लेनिन
के साथ सक्रिय भाग लिया था। वही उसे विदेश से रूस मगवाने का
इन्तजाम भी करते थे। एक दिन पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया और जेल में
बंद कर दिया। मगर वह वहाँ से भाग गये और फिर निघडक होकर पार्टी
के काम में जुट गये। मगर पुलिस के चंगुल से देर तक बचे नहीं रहे और
फिर जेल में बंद कर दिये गये।

अक्तूबर, १९०५ में बाउमन को रिहा कर दिया गया। मगर कुछ
दिन बाद एक मजदूर प्रदर्शन के समय किसी भाड़े के हत्यारे ने उनकी
हत्या कर दी।

निकोलाई बाउमन की, इस साहसी, उदात्त, निष्ठावान क्रांतिकारी,
बाल्शेविक वीर की शक्याता में मास्को के हजारों मजदूरों ने भाग लिया था

‘हमारी पार्टी की ताकत ऐसे ही लोगों में है,’ व्लादीमिर इल्यीच
ने कहा और खिडकी के पास आकर खड़े हो गये। नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना
भी उनके बगल में आकर खड़ी हो गयी।

“बोलोचा, देखो तो !”

खिडकी के सामने सड़क के दूसरी ओर एक चादमी पड़ा था। सिर
पर फर की टापी, गले में रंगविरंगा मफनर, देखने में पूणत सामान्य,

मगर कुछ अजीब से ढंग से एक ही जगह पर खड़ा हुआ। पास ही एक दूसरा आदमी फुटपाथ पर तेज बंदमा से टहल रहा था।

हम जगह बदलनी पड़ेगी, ' व्लादीमिर इत्येच बाल।

उहाने मेज पर से कुछ ही समय पहले लिखा हुआ लेख उठाकर नाउजेग कोस्तातीनोव्ना को थमाया। उहान चुपचाप उसे अपनी जैकेट के ग्रन् छिपा लिया। व्लादीमिर इत्येच ने पीली टोकरी को चारपाई के नीचे धकेल दिया।

ओह, किसी तरह यहा स बच निकले," नादज्दा कोस्तातीनोव्ना बुदबुदायी।

वह व्लादीमिर इत्येच की सुरक्षा के बारे में बहुत चिन्तित थी।

खतरा हर दिन, हर क्षण मड़राता रहता था। अगर पकड़े गये, तो हवालात ही जायगी और फिर जरूर हमेशा के लिए कालेपानी की सजा भुगतनी पड़ेगी।

लेकिन उहान अपनी चिंता, अपनी धबराहट का छिपाकर इतना ही कहा कि साथी एक जगह पर व्लादीमिर इत्येच का इनजार कर रहे हैं और वह यही बताने आयी है। यहा से जितना जल्दी हो, निकल जाना है, नहा ता दखा नहीं कैसे गुण्डे पीछ लगा रखे हैं

वे हाथ में हाथ डाले घर से निकले और बायीं तरफ न जाकर— वैसे उह जाना बायीं तरफ ही था—दूसरी दिशा में चल पड़े। व्लादीमिर इत्येच न बिनभ्रता सी प्रकट करते हुए कसट की बात छेड़ दी। कितना अच्छा है, अगर आज कसट सुनते चला जाये! नादज्दा कान्स्तातीनोव्ना सहमति में सिर हिला रही थी और आखा के काना में दखती जा रही था कि भेदिया का कही कोई शक तो नहीं हुआ है? मगर नहीं। एक जो रगबिरगा मफलर पहन हुए था, पहल की तरह ही अचल खड़ा था, और दूसरा अपने अधैयपूर्ण स्वभाव के कारण डधर-उधर दौड़ रहा था।

गाडीवाले!' सभी व्लादीमिर इत्येच न आग्राज दी।

उनके पास से गुजरती घाडागाडी भेनिया से कुछ ही बन्म की दूरी पर रुक गयी। व्लादीमिर इत्येच ने पहले अपनी मायी को बिठाया और फिर स्वयं भी बैठ गये।

'मानेवाया मडक' उहाने बिना कुछ सावममये गाडीवाले से कहा

और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना से दबी आवाज में जमन में बोले कितना अच्छा हो, अगर अभी ठंड बंद जाय और वर्षोंनी हवा चलन लगे। य मूख यहां जम जायेंगे।

व मादोवाया से पहले ही उतर गये और व्लादीमिर इल्यीच के पुरान परिचिन अहात से हान हुए वनीत्यव्स्की टापू की ओर चल पड़े। फिर भी चूँकि इसकी सभावना थी कि कोई उनका पीछा कर रहा होगा वे उमकी आखा में धूल पाकन के लिए देर तक बेमतलब इधर-उधर घूमते रहे। जनवरी का महीना था। पीटसवग में साल के इस समय जैसा कि आम तौर पर नहीं होता, धूप खूब खिली हुई थी। चारों तरफ मकेंद्र बर्फ चमक रही थी और ठंड गालों में चुभ रही थी।

“ओह, मन बर्फ की ऐसी सफेदी कब से नहीं देखी है।” व्लादीमिर इल्यीच ने मुग्ध स्वर में कहा।

“हां, हमारी रूसी भरदी है।” नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने जवाब दिया।

अप्रत्याशित रूप से इतनी देर तक एक दूसरे का साथ पान से दोना बहुत खुश थे।

शाम का ठीक नियत समय पर और इसकी भली भांति जाच करके कि कोई उनका पीछा नहीं कर रहा है, व्लादीमिर इल्यीच नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना द्वारा बताया हुई जगह की ओर चल पड़े। वहां पीटसवग के बोल्शेविक और अग्रणी मजदूर जमा हो चुके थे। बस लेनिन के ही पहुंचन की प्रतीक्षा थी।

फिर प्रवास में

दो साल तक मार स्म में मजदूर और विमान विद्रोहों की ज्वाला जलती रही। दो साल तक जारशाही अधिकारी रूस में आति का दवात रहे। असह्य लोग गिरफ्तार हुए, निर्वासित किये गये फामी पर चढाये गये

व्लादीमिर इल्यीच पीटसवग से थोड़ी ही दूर फिनलैण्ड में रहते थे। यहां से वह शैरकानूनी बोल्शेविक अखबार “प्रोलेटारी” (सवहारा) निकालते थे। पीटसवग के बोल्शेविक नेट्र के साथ उनका स्थायी संपर्क

मगर कुछ अजीब म ढंग से एक ही जगह पर खड़ा हुआ। पाम हा एक दूसरा आदमी फुटपाथ पर तेज कन्मा स टहल रहा था।

‘हम जगह बदलनी पड़ेगी,’ व्लादीमिर इत्यीच वान।

उहान मंज पर से कुछ ही समय पहले लिखा हुआ लेख उठाकर नाट्य कोस्तातीनोव्ना का धमाया। उहान चुपचाप उस अपनी जेबेट व अन्तर छिपा लिया। व्लादीमिर इत्यीच ने पीली टोकरी का चारपाई व नीचे धरन दिया।

‘ओह, किसी तरह यहा स बच निकल,” नादेज्दा कोस्तातीनोव्ना बुदबुदायी।

वह व्लादीमिर इत्यीच की सुरक्षा व वारे म बहुत चिन्तित थी।

खतरा हर दिन, हर क्षण मडराता रहता था। अगर पकडे गये, तो हवालात हो जायगी और फिर जरूर हमेशा के लिए कालेपानी की सजा भुगतनी पड़ेगी।

लेकिन उहाने अपनी चिन्ता, अपनी घबराहट को छिपाकर इतना ही कहा कि साथी एक जगह पर व्लादीमिर इत्यीच का इन्तजार कर रहे है और वह यही बताने आयी ह। यहा स जितना जल्दी हो, निकल जाना है नही ता देखा नही कसे गुण्डे पीछे लगा रखे है

वे हाथ म हाथ डाले घर स निकले और बायी तरफ न जाकर- वसे उह जाना बायी तरफ ही था- दूसरी दिशा म चल पडे। व्लादीमिर इत्यीच ने विनम्रता सी प्रकट करते हुए कसट की बात छेड दी। कितना अच्छा हो अगर आज कसट सुनन चला जाये। नादेज्दा कोस्तातीनोव्ना सहमति मे मिर हिला रही थी और आखा के कोना स देखती जा रही थी कि भेदियो को कही कोई शक तो नही हुआ है? मगर नही। एक, जो रगबिरगा मफलर पहने हुए था, पहले की तरह ही अचल खडा था, और दूसरा अपने अधयपूर्ण स्वभाव व कारण इधर उधर दौड रहा था।

गाडीवाले!’ तभी व्लादीमिर इत्यीच न आवाज दी।

उनके पास से गुजरती घाडागाडी भेदियो से कुछ ही कदम की दूरी पर रुक गयी। व्लादीमिर इत्यीच न पहले अपनी साथी को बिठाया और फिर स्वय भी बठ गये।

‘सादोवाया सडक। उहाने बिना कुछ सोचे समझे गाडीवाले से कहा

और नादेज्दा कोन्स्तातीनाव्ना से दमी आवाज में जमन में बोले "कितना अच्छा हो, अगर अभी ठंड बढ़ जाय और वर्षा भी हवा चलने लगे। य मूछ यहाँ जम जायेंगे।

व मादोवाया स पहल ही उनर गये और व्लादीमिर इल्यीच के पुराने परिचित अहाते से होने हुए वसील्यन्की टापू की ओर चल पडे। फिर भी चूकि इसकी सभावना थी कि काई उनका पीछा कर रहा होगा व उसकी आखा में धूल झाकन के लिए देर तक बेमतलब इधर-उधर घूमत रहे। जनवरी का महीना था। पीटसवग में साल के इस समय जैसा कि आम तौर पर नहीं होता, धूप खूब खिली हुई थी। चारों तरफ सफेद बर्फ चमक रही थी और ठंड गालों में चुभ रही थी।

"ओह, मैंने बर्फ की ऐसी सफेदी कब से नहीं देखी है।" व्लादीमिर इल्यीच न मुग्ध स्वर में बहा।

"हा, हमारी रूसी सरदी है।" नादेज्दा कोन्स्तातीनाव्ना ने जवाब दिया।

अप्रत्याशित रूप से इतनी देर तक एक दूसरे का साथ पान स दागो बहुत खुश थे।

शाम का ठीक नियत समय पर और इसकी भली भांति जाच करके कि काई उनका पीछा नहीं कर रहा है, व्लादीमिर इल्यीच नादेज्दा कोन्स्तातीनोना द्वारा बताया हुई जगह की ओर चल पडे। वहाँ पीटसवग के बाल्शेविक और अग्रणी मजदूर जमा हो चुके थे। वस लेनिन के ही पहुंचने की प्रतीक्षा थी।

फिर प्रवास में

दो साल तक सारे रूस में मजदूर और किसान विद्रोहों की ज्वाला जलती रही। दो साल तक जारशाही अधिकारी रूस में शांति का दवाने रहे। असत्य लोग गिरफ्तार हुए, निर्वासित किय गये, फासी पर चढाये गये।

व्लादीमिर इल्यीच पीटसवग से थोड़ी ही दूर फिनलण्ड में रहते थे। यहाँ से वह गरकानूनी बोल्शेविक अखबार 'प्रोलतारी' (सवहारा) निकालते थे। पीटसवग के बोल्शेविक केन्द्र के साथ उनका स्थायी संपर्क

बना हुआ था। नादेज़्जा कोन्स्तान्तीनोव्ना पार्टी के नाम पेनिन के मदेश लेजर जयन्तर पीएमएम जानी रहती थी।

एक दिन यह पीटसवग म लीटी, ता बहुत चिन्तित था। जार सरकार व्लादीमिर इल्यीच के पीछे हाथ धोकर पटी हुई थी। उसन सभी पुनिम स्टेशनना को आदण द दिया था कि जैम भी हो बोल्शेविकना के नया लनिन को फोजा जाये।

उन दिना फिनलेण्ड भी रसी जार के कच्चे म था।

बोल्शेविक केन्द्र न निणय लिया कि लेनिन को विदेश चला जाना चाहिये और "प्रोलेतारी" भी वही से निकाला जाये।

"अलविदा, मरे प्यार," नादेज़्जा कोन्स्तान्तीनोव्ना न लेनिन को बिना दी। "स्वीडन म मिलगे।"

तय यह हुआ था कि नादेज़्जा कोन्स्तान्तीनोव्ना स्टारहोम बाट म जायेंगी। अत व्लादीमिर इल्यीच अबले ही खाना हुए।

१९०७ का दिसबर महीना था। रलगाडी हेल्सिगफोस से फिनलैण्ड बदरगाह आबो जा रही थी।

विचारा मे खोय होने की वजह स व्लादीमिर इल्यीच की नजर कपाटमट के दरवाजे के शीशे से बाहर गलियारे म खडे आदमी पर देर से पडी।

मगर जय देखा, तो एकदम पहचान गय कि पुलिस का भेन्टिया है। व्लादीमिर इल्यीच अब तक उह पहचानना सीख गय थे। शायद आबो के स्टेशन पर पुलिस इतजार कर रही होगी। इसम शक नही कि भेन्टिये ने तार कर दिया होगा कि पछी आ रहा है।

क्या किया जाये? आबो से पहले का स्टेशन भी निकल गया था। गाडी व्लादीमिर इल्यीच को सीधे पुलिस के शिकजे मे लिये जा रही थी। व्लादीमिर इल्यीच ने दरवाजे की ओर देखा। भेदिया वहा नही था। शायद उसे विश्वास हो गया था कि शिकार अब बच कर कही नहा जा सकता, इसलिए वापस अपनी सीट पर चला गया था। बहुत सवटपूण स्थिति थी एक घटे बाद व्लादीमिर इल्यीच सीखचो के पीछे बढ हगे।

वह खडे हुए और अपना छोटा सा सूटकेस उठाकर आहिस्ता आहिस्ता डिब्बे के दरवाजे की ओर बडे। गलियारा सुनसान पडा था। उहाने धीरे से दरवाजा खाला। चेहरे पर बर्फीली हवा का थपेडा लगा। उफफ, गाडी कितनी तेज जा रही है! डिब्बा या हिचकोले खा रहा था कि सभलकर

खडे हा पाना भी मुश्किल था। व्लादीमिर इल्यीच ने कुछ मिनट इतजार किया। बूदने की हिम्मत नहीं हो पा रही थी। वह पहिया की तेज घड़घड़ाहट सुनते रहे। तभी ट्याल आया कि शायद मोड पर रफ्तार कम हो जाय। और सचमुच मोड आन पर गाडी की रफ्तार धीमी हो गयी। अब कुछ भी हा, दूसरा कार्ड चारा था नहीं। व्लादीमिर इल्यीच बूद पडे।

वह बफ के एक बडे से ढेर पर गिर। कालर और जूते व अदर बफ भर गयी, चेहरा भी बफ से सन गया। मगर हड्डिया सही सलामत थी। वह सही-सलामत थे, जिंदा थे। गाडी बफ के ढेर की बगल से घड़घड़ाती हुई नियल गयी। आखिरी डिब्बे की लाल बत्ती कुछ दर तक दिखायी देती रही, फिर आझल हा गयी। वही बहुत दूर जाकर गाडी की आवाज भी खा गयी। अब हर तरफ निस्वधता थी, बफ थी, रात थी और तारो स झिलमिल आसमान था।

व्लादीमिर इल्यीच बफ व ढेर से उठे, बपडा और चेहरे स बफ झाडी और रेलवे पटरी के किनार किनार पैदल ही आबो की तरफ चल पडे। कोइ बारह बस्ट का फासला तय करना था। और वह भी सरदिया की रात म। मगर पुलिस के चगुल से तो मुक्ति मिली। व्लादीमिर इल्यीच मन ही मन कल्पना करने लगे कि भेदिया वैसे डर से वापता और हडबडाता हुआ उह सभी डिब्बा मे खोज रहा होगा। और वह हस पडे "चूक गये, बेटा! देखना वैसे खबर ली जाती है तुम्हारी!"

अब किसी तरह आबो पहुचना और वहा स्वीडिश जहाज म बठना ही बाकी रह गया था और तब खतरा टल जायेगा।

मगर व्लादीमिर इल्यीच जहाज के लिए देर से पहुचे। और खतरा भी टला नहीं था। वह दायें, बायें, हर जगह मौजूद था। बदरगाह रसी पुलिस और उसने भेदियो से भरा पडा था। अब वहा खना नामुमकिन था। बोल्शेविक केद्र ने जिस फिनिश साथी को व्लादीमिर इल्यीच को आबो स स्टाकहोम भेजने का इतजाम सीपा था, उसने बताया कि शहर मे भी कन्म कदम पर पुलिस है। आबो से तुरत खाना होना जरूरी था।

फिनिश साथी ने व्लादीमिर इल्यीच को समद्र के चट्टानी तट पर एक मडुआरा बस्ती मे पहुचा दिया। यहा समुद्र मे सैकडो छोटे बडे टापू, प्रायद्वीप और खाडिया थी और यह सब साल के इस समय बफ से ढका हुआ था।

दा मछुप्रारे ब्लादीमिर इत्योच को मर टापू तर पट्टान के लिए तयार हो गये। रबीन्श जहाज इस चट्टानी टापू के निगारे कुछ दर के लिए गया था। हिमताटन पात बर्फ ताडकर जहाजा के लिए रास्ता बनात थे और यह टापू इगो रास्ते की बगल में था।

रात अंधेरी और तूफानी थी। रात में अचानक ताल त्रि लागत दग पाये। रिगी तो भी हरानी हा सकती थी त्रि य लाग एसा अधिपरातीय बर्फ पर पटा और क्या जा रह ह।

बर्फ कच्ची थी। उगम बहा-बही अगर पट गयी थी और कभी-कभी पानी भी दिग्रायी द जाता था। मछुप्रार जानत थे कि जिग रूसी वा ब जहाज तक पहुँचा रह ह बट जाग के विरुद्ध लड रहा है। फिनिश लोग जाग में उफरत करत थे। इमतिग अगर यह रूसी भी जाग के जिनाक है, ता वे उसक लिए सब कुछ करगे।

तीना आन्नी ग्रामाशी में और लवे लट्टा से रास्तन का टटालत हुए कदम कदम करके आगे बढ रहे थे। बर्फ के कण गाला में चुभ रहे थे। आगमान में अंधेरा गुप्त था। हवा तड हा गयी थी। ममुद्र से जहाजा के भापुप्रा की आवाजें आ रही थी।

'धयवाद इन मछुप्रारा का कि मुने ऐसी भयकर रात में रास्ता लिखाने को तयार हो गये। धयवाद, सापिया, ब्लादीमिर इत्योच सोच रहे थे।

वह नहीं जानते थे कि ऐसी रात में ऐसी रास्ते पर चलना कितना खतरनाक था। वह लट्टे से रास्ता टटालत हुए मछुप्रारा के पीछ पीछ चल रहे थे। अचानक बर्फ हिली और गोनी छूटने की सी आवाज के साथ उसमें, दरार पड गयी। बर्फ एक ओर को चुकी और परा के नीचे से खिमकने लगी। दरार से पानी ऊपर फटा। ब्लादीमिर इत्योच ने लट्टे से टटोला मगर वह पानी में गहरे और गहरे घुमता गया।

उह ठीक याद नहीं कि वहा से वह कैसे बच पाये। किसी ने उनकी तरफ हाथ बढ़ाया। जहान उसे पकडा और आगे कूदे।

मछुप्रारा ने फिनिश में कुछ बहत हुए ब्लादीमिर इत्योच की पीठ ठाकी। फिर जमत में कहा

"गेनोसे, गेनोसे साथी।

वे बेहद खुश थे कि इसी साथी जो जनता की तरफ से जार के विरुद्ध लड़ रहा है, बर्फ़ीले पानी में गिरते गिरते बच गया।

व्लादीमिर इल्यीच टापू तक पहुँच गए। स्वीडिश जहाज ने उन्हें उठाया और स्टावहोम पहुँचा दिया। वहाँ उन्होंने नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना की प्रतीक्षा की।

अब वे फिर जेनेवा में थे। फिर मातृभूमि से दूर पराये देश में।

क्रांतिकारी रूस के बाद व्लादीमिर इल्यीच जब अपनी वफादार मित्र और प्रिय जीवनसंगिनी नार्यूशा के साथ उस दिसंबर में जेनेवा पहुँचे, तो यह पुराना परिचित शहर उन्हें बहुत अनाकंपक लगा।

सरदिया थी, पर बर्फ नहीं थी। फुटपाथों पर ठंडी धूल उड़ती तेज और निमग्न हवा हर समय चलती रहती थी।

जेनवावासी घरों में बंद रहते थे। मंडके सुनसान थी। इस बार लेनिन ने जेनेवा में अपने का बहुत अकेला और पराया महसूस किया।

मा से मुलाकात

१९१० का साल था। व्लादीमिर इल्यीच लेनिन फिर स्वीडन की राजधानी स्टावहोम में थे। मगर रूस वाग़ के किमी खास, बहुत ही खास काम से यहाँ आये थे।

तेज़ कदमों से और मन ही मन अत्यन्त प्रसन्न वह स्टावहोम की शरदकालीन सड़का पर चले जा रहे थे।

उन्हें स्वीडिश लोक भवन में भाषण करना था और इस समय वह वही जा रहे थे। व्लादीमिर इल्यीच का पहले भी दमिया वार विभिन्न नगरों में मजदूरों और पार्टी सदस्यों के सामने भाषण देना पड़ा था। पर आज वह इतने खुश क्या थे? राह चलते वह स्नेहसिक्त नज़रों से पराये स्वीडिश जीवन को, टेढ़ी भेड़ी और तग गलियावाले शान और साफ़ मुँहरे स्टावहोम को देखते जा रहे थे। यह उनका पुराना परिचित शहर था। मगर आज उसे देखकर वह बार बार मुस्करा रहे थे।

तभी उन्हें फूल बेचती एक लड़की दिखायी दी। उमक परा के पाम लाल और पीले गुलाबों से भरी टोकरी रखी हुई थी।

'मुझे ये लाल गुलाब देना' धन्यवाद।

व्लादीमिर इल्यीच पूनो का गुलस्ता लिए भाषण देने जा रहे थे।

लोक भयन आ गया। आज महा एव कमरे में प्रवासी रंगी बालक विवा की सभा थी।

“लेनिन! लेनिन!” स्नेहपूर्ण उदगारा ने व्लादीमिर इल्यीच का स्वागत किया।

रूसी राजनीतिक प्रवासिया ने उन्हें घेर लिया, उनमें हाथ मिलाये। वे सब उन्हें उनकी किताबों और लेखा, बोल्शेविक समाचारपत्र “इस्त्रा”, “व्येसोद”, “नोवाया जीवन” और “प्रालेत्तारी” और पार्टी कांग्रेस से जानते थे।

उम छोटे से कमरे में पीछे की सीटों पर दो महिलाएँ बैठी थीं। एक बिल्कुल बूढ़ी थी। वह बूढ़े की पोशाक पहने थी और सफेद, बिल्कुल बर्फ से सफेद बालों पर लेशदार शाल आड़े हुए थी। उनके नाक-नक्श तब थे। कमरे में जब “लेनिन! लेनिन!” का उद्घोष हुआ, तो उसका चेहरा खुशी से खिल उठा।

दूसरी महिला नौजवान थी। उसकी आँखें बाली, गालों की हड्डियाँ कुछ उभरी हुईं और चेहरा तनिक गंभीर सा था। लेनिन के प्रवेश करते ही वह भी खिल उठी। व्लादीमिर इल्यीच ने पास आकर बूढ़ी महिला के घटना पर रस दिया।

“रूस से मेरी माँ और बहन मुझसे मिलने आयी हैं,” उन्होंने अपने इदगिद खड़े लोगों को बताया।

“बहुत अच्छा किया आपने आकर के” एक बोल्शेविक ने बूढ़ी महिला को संबोधित करते हुए कहा। “ऐसे बेटे पर आप गव कर सकती हैं।”

लेनिन ने छाटी सी मेज के पीछे खड़े होकर अपना भाषण शुरू किया। यह भाषण असामान्य था। पहली बार माँ उन्हें सुन रही थी। वह संबोधित कर रहे थे साथिया को, बोल्शेविकों को और अपनी माँ को। माँ, जो अपने बच्चों की मित्र थी। उनके सभी बच्चे क्रांतिकारी बने थे। वह उनसे जेल में जाकर मिलती थी, उनके लिए खाने पीने की चीजें, किताबें ले जाती थी। १८९५ में जब व्लादीमिर इल्यीच को जेल हुई थी, तो माँ पीटसबर्ग आयी थी। “माँ, मुझे याद है कि तब तुमने सीखने के पार से मुझे कैसे देखा था। तुम्हारे हाठ काप रहे थे पर फिर भी तुम मुस्कराती रही थी।”

व्लादीमिर इल्यीच ने अपने भाषण में पार्टी की स्थिति का, सभी गलत विचारों से सघप करने के तरीकों का जिक्र किया।

१९०५ की क्रांति असफल रही, पर हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिये। हमें साहसपूर्वक आगे बढ़ना है। हमारे सामने एक ही रास्ता है

व्लादीमिर इल्यीच ने क्रांतिकारी सघप के इस एकमात्र रास्ते के बारे में बताया।

भाषण के बाद सबने उन्हें घेर लिया। वह बड़ी मुश्किल से लोक भवन से बाहर निकल पाये।

शाम का समय था। घरों की खिड़कियों से नारंगी और नीला प्रकाश बाहर सड़कों पर पड़ रहा था। बदरगाह की तरफ से ठंडी बयार आ रही थी। कहीं सगीत गूज रहा था।

मा और मयाशा सड़क पर खड़ी व्लादीमिर इल्यीच का इंतजार कर रही थीं।

“मा, तुम्हें यहाँ देखकर मैं कितना खुश हूँ!” वह अपने उदगार छिपा न पाये।

वह जानना चाहते थे कि मा आज की सभा के बारे में क्या सोचती है। व्लादीमिर इल्यीच को अपना बचपन और उन सुखी दिनों का मा का रूप याद हो आया। मा सदा बहुत शांत, सयत और यायप्रिय थी। व्लादीमिर इल्यीच को एक भी ऐसा मौका याद नहीं, जब किसी बात पर मा से उनका मतभेद हुआ हो।

“बोलोद्या, जानते हो,” मा बोली, “मने तुम्हारी बहुत सी किताबें और लेख पढ़े हैं और तुम्हारे विचारों और लक्ष्यों की बहुत कद्र करती हूँ। मगर आज मुझे यह विश्वास भी हो गया कि लाग तुम्हें बहुत चाहते हैं।”

मरीया अलेक्सांद्रोव्ना और मयाशा दस दिन स्ट्रावहोम में रहीं। व्लादीमिर इल्यीच उन्हें मिलने पेरिस से आये थे। दस दिन कैसे पलक झपकते ही बीत गये।

रूसी जहाज स्ट्रावहोम से सुबह खाना होता था। पतखंड का मौसम आ गया था। आसमान में बादल घिरे थे। हवा पेड़ा से पत्ते उड़ा रही थी और खाड़ी में छोटी छोटी लहरें पैदा कर रही थीं। पानी में नीरामा

व्लादीमिर इल्यीच पूना या गुनदग्ता लिए भाषण देन जा रहे थे।
लोन भया आ गया। आज यहा एक कमरे म प्रवामी हमी बात
विया की सभा थी।

“लेनिन! लेनिन!” रोहपुण उदगारा ने व्लादीमिर इल्यीच का स्वागत
किया।

हमी राजनीतिक प्रवागिया ने उह घेर लिया, उनगे हाथ मिलाये।
वे सब उह उनकी कित्तावा और लेधा, बोल्शेविक समाचारपत्र “ईस्त्रा”,
“थ्येयॉन्”, “नोवाया जीरुन” और “प्रोलेतारी” और पार्टी काग्रेस स
जानते थे।

उम छोटे से कमरे मे पीछे की सीटा पर दो महिलाए बंठी था। एक
बिल्कुल बद्ध थी। वह बद्ध गले की पोशाक पहने थी और सफेद, बिल्कुल
बर्फ से सफेद वाला पर लेसदार शाल ओढे हुए थी। उनगे नाव-नवश तब
थे। कमरे मे जब “लेनिन! लेनिन!” का उदघोष हुआ, तो उसका
चेहरा खुशी से खिल उठा।

दूसरी महिला नौजवान थी। उसकी आँखें वाली, गाला की हड्डिया
कुछ उभरी हुई और चेहरा तनिक गभीर सा था। लेनिन के प्रवेश करते
ही वह भी खिल उठी। व्लादीमिर इल्यीच न पास आकर पूल बद्ध महिला
के घटनो पर रख दिये।

“रस से मेरी मा और बहन मुझसे मिलने आयी ह,” उन्हाने अपने
इदगिद खडे लोगो को बताया।

“बहुत अच्छा किया आपने आकर के ” एक बोल्शेविक ने बद्ध महिला
को संबोधित करते हुए कहा। “ऐसे बेटे पर आप गव कर सकती ह।”

लेनिन ने छोटी सी मेज के पीछे खडे होकर अपना भाषण शुरू किया।
यह भाषण असामाय था। पहली बार मा उन्हें सुन रही थी। वह संबोधित
कर रहे थे साथियो को, बोल्शेविको को और अपनी मा को। मा, जो
अपने बच्चो की मित्र थी। उनके सभी बच्चे क्रांतिकारी बने थे। वह उनसे
जेल म जाकर मिलती थी, उनके लिए खाने-पीने की चीजें, कित्ताबें ले
जाती थी। १८९५ म जब व्लादीमिर इल्यीच को जेल हुई थी, तो मा
पीट्सबर्ग आयी थी। “मा, मुझे याद है कि तब तुमने सीखचो के पार
से मुझे कैसे देखा था। तुम्हारे होठ बाप रहे थे, पर फिर भी तुम
मुस्कराती रही थी।”

व्लादीमिर इल्यीच ने अपने भाषण में पार्टी की स्थिति का, सभी प्रसन्न विचारों से सघप करने के तरीकों का जिक्र किया।

१९०५ की त्राति असफल रही, पर हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिये। हमें साहसपूर्वक आगे बढ़ना है। हमारे सामने एक ही रास्ता है

व्लादीमिर इल्यीच ने त्रातिकारी सघप के इस एकमात्र रास्ते के बारे में बताया।

भाषण के बाद सबने उन्हें घेर लिया। वह बड़ी मुश्किल से लोब भवन से बाहर निकल पाये।

शाम का समय था। घरों की खिड़कियों से नारंगी और नीला प्रकाश बाहर सड़कों पर पड़ रहा था। बदरगाह की तरफ से ठंडी बयार आ रही थी। कहीं सगीत गूज रहा था।

मा और मयाशा सड़क पर खड़ी व्लादीमिर इल्यीच का इंतजार कर रही थीं।

“मा, तुम्हें यहाँ देखकर मैं कितना खुश हूँ।” वह अपने उत्साह छिपा नहीं पाये।

वह जानना चाहते थे कि मा आज की सभा के बारे में क्या सोचती है। व्लादीमिर इल्यीच को अपना वचन और उन सुखी दिनों का मा का रूप याद हो आया। मा सदा बहुत शांत, सयत और यावप्रिय थीं। व्लादीमिर इल्यीच का एक भी ऐसा मौवा याद नहीं, जब किसी बात पर मा से उनका मतभेद हुआ हो।

“बोलोद्या, जानते हो,” मा बोली, “मैं तुम्हारी बहुत सी त्रिनावें और लेख पढ़े हैं और तुम्हारे विचारों और सत्या की बहुत कद्र करती हूँ। मगर आज मुझे यह विश्वास भी हो गया कि लग तुम्हें बहुत चाहते हैं।”

मरीया अलेक्सांद्रोवना और मयाशा दस दिन स्ट्रावहोम में रहीं। व्लादीमिर इल्यीच उन्हें मिलने परिसर से आये थे। दस दिन कम पलक क्षणक ही बीत गये।

रूसी अहाज स्ट्रावहोम से सुबह खाना खाता था। पतलक का भागम भा गया था। भागमान में बदल घिरे थे। हवा पटा स पत्ते उग रही थी और घाड़ी में छोटी छोटी लहरे पैदा कर रही थी। पानी में नीरामा

का शोर गूना हुआ था। वातावरण में एक तरह की वेनैनी और उन्मी थी।

बेटे का बार बार गले लगाने के बाद मा जब सीढ़ी चढ़कर जहाज पर पहुँची, तो व्लादीमिर इल्यीच का हृदय विदाई के दुःख से कराह उठा। मा बार बार मुड़कर रुमाल हिला रही थी। जहाज देर तक खड़ा रहा, पर व्लादीमिर इल्यीच उस पर चढ़ नहीं सकते थे। वह रुमी धरती था, उस पर रुसी मानून था। व्लादीमिर इल्यीच के उस पर पैर रखन की देर थी कि तुरत गिरफ्तार कर लिये जाते।

जहाज के भापू की आवाज देर तक छाटी के ऊपर गूजी। समुन्नी चिड़िया कानों को फाड़ती हुई चीखी। जहाज घाट को छोड़न लगा।

अलविदा, मा!"

व्लादीमिर इल्यीच ने मा को फिर कभी नहीं दखा

लोजूमो गाव में

१९११ का साल चल रहा था। उन दिना फ्रांस में हजारों रूसी नातिकारी प्रवामी रहते थे। व्लादीमिर इल्यीच भी पेरिस में रहत थे। बसंत के अंत में वह और नादेज्जा कोन्स्तातीनोव्ना पेरिस से कोई पन्द्रह एक किलोमीटर की दूरी पर बसे लाजूमो गाव चले आये। इरादा यह था कि सारी गरमिया यही बितायी जायें।

गाव के साथ साथ एक सड़क थी और राता को उस पर किसानों की गाड़िया के पड़पड़ाने का शोर मचा रहता था—किसान अपना माल बेचन के लिए पेरिस ले जा रहे होते थे।

लाजूमो में लगभग सभी मकान पत्थर के बने हुए और धूप से बुरी तरह काले पड़े हुए थे। गाव के पास ही स्थित छोटी सी चमड़ा फक्करी की चिमनी दिन रात धूआ उगलती रहती थी, जिसेसे यहाँ तक कि घास और पेड़ भी काले लगन लगे थे। मगर खेतों में फिर भी हरियाली दोख जानी थी। व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्जा कोन्स्तातीनोव्ना यहाँ आगम के लिए नहीं बल्कि काम के लिए आये थे।

अभी शुरुआत ही था कि व्लादीमिर इल्यीच जाग गये। गरमिया की उजली सुबह के बावजूद कमरे में अंधेरा और ठंडक थी।

तब तक नादेज्दा कोस्तान्तीनोव्ना ने नाश्ता तैयार कर दिया था।

'श्रीमान, आज देर तक सोय रह। इसके लिए आपको एक अक मिलेगा,' चटपट बिस्तर से उठते हुए व्लादीमिर इत्यीच ने अपने घ्रापसे कहा और हाथ मुह धोकर नादेज्दा कोस्तान्तीनोना की मदद का लपके।

अचानक व्लादीमिर इत्यीच के हाथ से शककरदानी फिसल गयी। मगर उहान बडी फुर्ना से उसे जमीन पर गिरन से पहले ही पकड लिया।

"कयो हू न असली वाजीगर?"

'हा, तीन अक तो मिल ही सकत ह," नादेज्दा वान्स्तान्तीनोव्ना न जवाव दिया।

उम साल फ्रास मे भयकर गरमी पड रही थी। सूरज सुग्रह से ही आग बरसा रहा था। दोगला शबरैला कुत्ता जीभ निकाले हाफता गली म चहारदीवारी की छाह मे लेटा हुआ था।

'क्या तुझे भी गरमी लग रही है?" व्लादीमिर इत्यीच ने कुत्ते को सहताया और फिर चमडा फन्टरी के मजदूर को नमस्ते की।

रविवार का दिन था। मजदूर अपने नसदार हाथा को घुटनो पर रखे चहारदीवारी की छाह मे बठा था। उसका चेहरा लवा, दुबला और बेहद थका हुआ था।

सडक से एक जगमगाती, स्प्रिगदार बग्धी गुजरी। उसम जालीदार छनरी के नीचे एक महिला और बच्चे बैठे हुए थे। मजदूर ने हडबडाकर खडे होत हुए सलाम किया। महिला न भी हल्के से सिर झुकाया।

'हमार मालिक की बीबी है,' चमडा मजदूर ने आदरपूण स्वर म कहा।

जी भर कर आराम ये ही लोग कर भक्ते ह," व्लादीमिर इत्यीच न ब्यग्य किया।

मजदूर कुछ क्षण चुप रहा, फिर विनम्रता से वाला

'भगवान ने अगर् अमीर और गरीब बनाये ह, तो इमका मतलब है कि ऐसा ही होना भी चाहिय।"

सडक के पार गिरजाघर की घटिया बजन लगी। रविवार की प्राथना का समय हो गया था। मजदूर ने अपनी छाती पर सलीब का चिह्न न बनाया और यह बुदबुदाता हुआ गिरजाघर की ओर चन पडा कि दुनिया भगवान न बनायी है, हम इसमे कोई दखल नही द सकत।

“श्रीमान्,” पडोसी के लडके ने व्लादीमिर इल्यीच से पूछा, “आप अपने स्कूल जा रहे हैं? आप क्या छुट्टी के दिन भी पढाते हैं?”

लेनिन का स्कूल, जो लोजूमो की सड़क के दूसरे छोर पर था, एक निराले तरह का स्कूल था। देखने में भी वह और स्कूलों की तरह नहा था। पहले यहाँ एक सराय हुआ करती थी। परिस्र जाते हुए डाकगाडिया यहाँ रुका करती थी। गाडीवान आराम करते थे, घोडों को दानापानी देते थे। मगर यह बहुत पहले की बात थी।

१९११ की वसन्त में व्लादीमिर इल्यीच ने स्कूल के लिए इस भत्तापूव सराय को किराये पर ले लिया। विद्याथियों ने खुद सारा कूडा करकट साफ किया, तख्ते ठोककर मेज बनायी और पडोसिया से भागकर कुछ पुरानी तिपाइया और कुसिया भी इकट्ठी की। इस तरह लेनिन का स्कूल काम करने लगा।

विद्यार्थी और कोई नहीं, बल्कि रूसी मजदूर थे। जारशाही पुलिस से छिपकर व रूस के विभिन्न नगरों से यहाँ आये थे। और उनके अध्यापक थे व्लादीमिर इल्यीच, नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना और कुछ दूसरे साथी।

जब व्लादीमिर इल्यीच स्कूल में पहुँचे, तो सभी विद्यार्थी अपनी अपनी जगह पर बठे थे। अध्यापक के कमरे में प्रवेश करते ही सब खडे हो गये। मगर हसी की बात यह थी कि सब नगे पैर थे। लोजूमो में गरमी इतनी असह्य थी कि जूता भी नहीं पहना जा सकता था।

ये सब जिज्ञासु और योग्य नौजवान थे। व्लादीमिर इल्यीच के व्याख्यान उन्हें बेहद पसंद थे।

“भगवान ने अगर अमीर और गरीब बनाय ह, तो इसका मतलब है कि ऐसा ही होना भी चाहिये,” व्लादीमिर इल्यीच न अप्रत्याशित ढंग से पाठ शुरू किया।

उनके होठा पर व्यग्य भरी मुस्कान थी और आँखें हस रही थी। विद्यार्थी आश्चय से मुह बाये बैठे थे।

“ऐसा मुझसे आज एक फासीसी चमडा मजदूर ने कहा,” कुछ देर रुककर व्लादीमिर इल्यीच ने स्पष्टीकरण दिया।

विद्याधिया में उत्तेजना फल गयी।

“अच्छा, तो यह बात है! जरूर कोई काहित होगा।”

“व्लादीमिर इल्यीच, आपका यह फ्रासीसी दकियानूस है। उसे यहाँ ले आइये, हम मुधार देगे।”

और एक विद्यार्थी न खडे हाकर कहा

“म भी चमडा मजदूर हू। पर मैं सोचता हू कि भगवान के कानून हमारे किसी काम के नही। जरूरत है अमीरो को गरदनिया देन और नये समाज का निर्माण करने की।”

“सही कहा,” आसपास सभी चिल्लाये।

विद्यार्थियो की ऐसी प्रतिक्रिया व्लादीमिर इल्यीच को अच्छी ही लगी।

“तो इसका मतलब है कि अमीरा और गरीबो का होना जरूरी नही है,” उन्होने विद्यार्थियो की बात दोहरायी और फिर बडी सहजता के साथ राजनीतिक अर्थशास्त्र के विषय पर आ गये। राजनीतिक अर्थशास्त्र वह विज्ञान है, जो सामाजिक उत्पादन के विकास का अध्ययन करता है।

व्लादीमिर इल्यीच मजदूरों को मार्क्सवाद की शिक्षा दे रहे थे। वह कह रहे थे कि मजदूर को शिक्षित, समझदार और जानकार होना चाहिये। उसे राजनीति की अच्छी पकड होनी चाहिये।

क्या उस फ्रासीसी चमडा मजदूर जैसा आदमी क्रांति के लिए लड सकता है, जो कदम-कदम पर भगवान की दुहाई देता हो और आगे कुछ न जानता हो? हमारे यहाँ रूस में भी ऐसे दकियानूस मजदूरों की कमी नही है। पिछडेपन से क्रांतिकारी सघप में कोई मदद नही मिल सकती।

“मजदूरों के लिए शिक्षा बहुत जरूरी है,” व्लादीमिर इल्यीच कहा करते थे।

इसीलिए उन्होने लाजूमो में पार्टी स्कूल खोला था। मजदूर उसमें चार महीने पढते और रूसी मजदूर वर्ग के लिए क्रांति में निष्ठा और चान का सदेश लेकर स्वदेश लौटते।

फ्रांस के उस साधारण और नगण्य से गाव—लाजूमो—को आज सारी दुनिया जानती है। और यह इसलिए कि वहाँ लेनिन ने पहला पार्टी स्कूल खोला था।

लडाई का विरोध

“आह मा! विषयाग नहा हाना नि निपत्ति टन गयी ह।”

नाट्यका वास्तान्तीनोव्ना ब्लादीमिर इत्यादि का स्थिती रहा। यह यहा थ। जल म नही बल्लि उनन गाथ। आग गनुशल। आपन टन गयी था।

‘यह सब दुस्वप्न था, अब भून जाओ,’ ब्लादीमिर इत्यादि न जवाब दिया। अरे, बाहर गया तो शरण म बन कितना छूबगुरत लगता है।”

व अब स्विट्जरलैण्ड की राजधानी बन म थ। पूरी तरह आजाद। कुछ ही समय पहले तक ब्लादीमिर इत्यादि सीधवा के पीछे बन थ। यह एक पालिश कमरे पोरानिन की घटना है।

अगस्त, १९१४ म पहला विश्वयुद्ध छिड गया था। पोरानिन उम समय आस्ट्रिया के अधिपति म था।

हजारा रूसी, जर्मन, फ्रांसीसी, अंग्रेज, आस्ट्रियाई और हंगरियाई औरता न ढाडे मारते हुए और शायद आगिरी वार अपन पतिया और बेटा को गले लगाया था। रूस के दहाता स गाडिया भर भरकर रगस्ट और हथियार मार्च पर भेजे गये थ।

लडाई क पहल ही दिना म पोरानिन म आस्ट्रियाई पुलिस ने लेनिन का गिरफ्तार कर लिया। इसलिए नि वह रूसी थ। फिर हमशा कुछ न कुछ लिखते और रूस भेजते रहत थे। यानी जासूस थे। इसका सबूत? सबूत की क्या जरूरत! पुलिस अगर बहती है कि जासूस है, तो जरूर होगा।

और इसकी सजा प्राणदण्ड हो सकती थी। नादेज्दा कोन्स्तातीनोना को कितने गहरे मानसिक सताप और हताशा से गुजरना पडा। दा हफ्ते तक ब्लादीमिर इत्यादि मौत के कमर पर खडे रहे थे। मगर कुछ ऐसे साथी मिल गये थे, जिनकी दौडधूप, प्रयत्नो के फलस्वरूप लेनिन का जेल से मुक्त करवाया जा सका।

पोरानिन से तटस्थ स्विट्जरलैण्ड की राजधानी बन के बल ही पहुँचे थे। स्विट्जरलैण्ड युद्ध म भाग नहीं ले रहा था। यहा जीवन सामान्य गति से बह रहा था। पति या पुत्र के बिछोह से रोती या छातिया पीटती माए यहा नहीं थी।

उन्होंने चटपट नाश्ता बिया, बतन समेटे और घर से निकल पडे। गिरजाधरा म प्राथनाए अभी चल रही थी, वन का आवाश घटाधरा म प्रातो सुमधुर ध्वनिया स गूज रहा था।

हमेशा की तरह इम बार भी व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोस्तान्तीनोव्ना वन म एक सपने छारवर्ती, छाटी और सफरी मडक पर ठहरे थे, जिसका नाम था डिस्टेलवग, यानी भटफटेया की मडक। गाफ है कि यह कोई सपन इलाका नहीं था।

कोई दम मिनट व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोस्तान्तीनोव्ना डिस्टेलवग पर चने हागे कि शहर का आखिरी मकान भी पीछे छूट गया। घागे जगल था, सितवर महीन का, साने की तरह जगमगाता और रग बिरगा। वह शहर के खत्म होने ही शुह हा जाता था और पहाडिया चोटिया, सबको ढके हुए था।

एनाएक व्लादीमिर इल्यीच रुक गये।

“नाचूशा, यही न?” उस जगह पर पगडडी छाटन के निशान को पहचानने हुए उहनि पूछा। यानी यहा पर पगडडी छोडकर चाई पार करनी थी। चाई पारकर वे कोई बीस कदम और चल और फिर हाथा से झाडी जो हटायी, तो सामन चाली मैदान दिखायी दिया। उमम बोट और बरसातिया रिछाय कुछ आदमी उठे हुए थे।

‘नमस्ते, साथियो!’ व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

पीछे एक टहनी टूटी। दवदार की शाखे हिली और झुरमुट के पीछे से टोकरी हाथ म लिय हुए एक और आदमी निकला। वन के लोग पिकनिक पर जाते हुए ऐसी टोकरिया म खाना ले जाया करते थे।

बल वन पहुचने पर व्लादीमिर इल्यीच ने एक परिचित हसी बोल्शेविक को खबर बर दी थी। उसन दूसरे को बताया, दूसरे न तीसरे को और इम तरह सबको खबर लग गयी थी कि अगली सुबह जगल मे मीटिंग है।

बोल्शेविक ठीक, नियत समय पर पहुच गये। सभी लेनिन को सुनने का उत्सुक थे।

रूसी जनता और दूसरे देशा की जनताओ पर लडाई का वज्र गिरा है,” व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। “मगर यह लडाई किसे चाहिय? पूजी-पतियो को। वे लडाई से मालामाल हो रहे ह, नयी नयी मडियो पर बन्जा करने के लिए ललक रहे ह, ताकि ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाया जा

गवे। सिपाहिया और मजदूरों को मातृभूमि की रक्षा के नाम पर धोखा दिया जा रहा है। यह अंगन में मातृभूमि की रक्षा नहीं, बल्कि पूजातिथि का मुनाफा की रक्षा है। हम सिपाहिया, मजदूरों और विमानों को समझाना है सभी देशों के सिपाहियों और मेहनतकशों, तुम्हारे हाथों में हथियार आ गया है। इन हथियारों का निशाना अंगन में और पूजातिथियों को बनाओ! प्राणियाँ! यह अत्यायुष सदाई रहम हो! तडाई के बिन्दु लड़ो!"

लेनिन ने ये बातें धन के समीपवर्ती अंगन में ही नहीं कही, बल्कि इनके बारे में लेख भी लिखे और उन्हें रूस के बाल्गेविका को भेजा।

और बाल्गेविका ने मोर्चे पर गुप्त रूप से उनका सिपाहिया और मजदूरों के बीच प्रचार किया।

सिपाही लेनिन के लेखों को पढ़ते थे और सोचते थे "सचमुच क्या बेहतर नहीं होगा कि हम इन बदूकों का मुंह अपने फँटरी मालिकों और जमींदारों की तरफ बंद करें, जार का तख्ता पलट दें और नये ढंग से रहने लें?"

वापसी

धन में लेनिन ने साम्राज्यवाद के बारे में एक किताब लिखी। इसमें उन्होंने बताया कि लुटेरू लडाइयों के बिना पूजातिथियों का काम क्या नहीं चल सकता। वे पराये मुल्कों पर कब्जा करते हैं, उन्हें उपनिवेश बनाते हैं, दूसरों का खून चूस चूसकर मोटे बनते हैं और चूँकि अपने लालच पर लगाम लगा पाना उनके लिए संभव नहीं होता, इसलिए वे सारी दुनिया को आपस में बांटने की, बड़े से बड़ा हिस्सा हथियाने की कोशिशें करते हैं। यह प्रक्रिया जितनी आगे जारी रहेगी, उतनी ही अधिक ऐसी लुटेरू लडाइयाँ होंगी, साम्राज्यवाद के अतंगत जनसाधारण की हालत उतनी ही बुरी होगी। किन्तु मजदूर वर्ग की चेतना और शक्ति भी बढ़ रही है, समाजवादी क्रांति की घड़ी नजदीक आती जा रही है।

ऐसी किताब लिखने के लिए सारी दुनिया के इतिहास, सारी दुनिया के लोगों के जीवन को जानना जरूरी था। व्लादीमिर इल्यीच को इस किताब की तैयारी के लिए बहुत अधिक अध्ययन करना पड़ा।

वन से व्लादीमिर इल्यीच और नादज़्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ज्यूरिख चले आये। शुरू में इरादा दो ही हफ्तें रहने का था, मगर काम की वजह से पूरे एक साल रहना पड़ा। ज्यूरिख में पुस्तकालय बहुत अच्छा था। फिर शहर भी कोई बुरा नहीं था। काफी बड़ा, चहल पहल भरा, बहुत से बल-कारवाने और बड़ी सभ्यता में मजदूर।

व्लादीमिर इल्यीच शाम तक पुस्तकालय में बैठे रहते। दिन में थोड़ी देर के लिए घर आते, भाजन करते और फिर वापस दौड़ पड़त।

पुस्तकालय को और जानवाली सक्री सड़क के किनारे चेस्टनट के ऊंचे ऊंचे पड़ खड़े थे। उस पूरे साल में शायद ही ऐसा कोई दिन रहा होगा, जब व्लादीमिर इल्यीच चार बार इन चेस्टनटों के नीचे में और टाउन हॉल, प्राचीन गिरजे और पुराने घरों की बगल से न गुज़रे ह।

यहां से थोड़ी ही दूरी पर ज्यूरिख झील थी। जब उसमें थुड़ लहर उठनी थी और गरजता हुआ पानी तट से टकराता था, तब उनके निकट जाना भी कठिन होता था। मगर बाद में जब लहर शांत हो जाती, पानी का नीला विस्तार धूप में चमकने लगता, तो झील का सौंदर्य देखते ही बनता था। व्लादीमिर इल्यीच स्विटजरलैंड की प्राकृतिक सुषमा पर मुग्ध थे। मगर मातृभूमि की याद भी उन्हें हर समय सालती रहती। ओह, उन दिनों वह हम की याद में कितना व्यथित रहते थे!

एक दिन दोपहर के भोजन के बाद व्लादीमिर इल्यीच पुस्तकालय लौटने को तैयार ही थे कि किसी ने जोर से दरवाजा खटखटाया। आगन्तुक एक प्रवासी था। वह इतना उत्तेजित था कि उससे जवाब की प्रतीक्षा भी न हो सकी और वह भड़भड़ाता हुआ सीधे कमरे में आ गया।

“आपने सुना? नहीं सुना? रूस में क्रांति हो गयी है!”

व्लादीमिर इल्यीच ने तुरंत टोपी उठायी। नादज़्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने चलते चलते काट पहना। तीनों कील की तरफ चल दिये। झील की चांदी धूप में चमक रही थी। सब से गरदने उठाये सफेद हंस पानी में तड़ रहे थे।

व्लादीमिर इल्यीच अखबार के स्टैंड की तरफ लपके। यहाँ, कील के किनारे स्टैंड पर हमेशा ताज़े अखबार टंगे होते थे।

व्लादीमिर इल्यीच व्यग्रता के साथ अखबारों में छपी खबरों का पढ़ने लगे “फरवरी, १९१७। हम में क्रांति।”

“प्राग्निगार हा ही गयी! व्लादीमिर इत्येक अपनी उत्तेजना छिन्न न पाय।

वह रूस से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित थे। उन्होंने वहाँ बढ़ते हुए प्रातिकारी सघन का नतूत्व किया था। वह जानते थे कि प्राति अथ निकट ही है। फिर भी मातृभूमि से अथ ममाचार न उन्हें अगामाय रूप से उत्तेजित कर डाला था।

नहीं रूस में कोई शक नहीं कि वहाँ, रूस में कोई बहुत ही महत्वपूर्ण घटना घट रही थी। अब जितना जल्दी हो घर लौटना था, वतन लौटना था। यहाँ और रचना ठीक नहीं। जस भी हो, तुरन्त रूस लौटना था। आखिरकार उनका साग जीवन, माग अम उसी का ता अर्पित रहा था, जो इस समय रूस में घट रहा था। लेकिन यहाँ से निकल कैसे?

व्लादीमिर इत्येक का चन जाता रहा, आखा में नींद जानी रही। वह दुबले पडन लगे।

अतत स्विस सायिया की दौडधूप और वाशिशा के बाद रूसी प्रवासी प्रातिकारिया का निगमन बीजा मिल ही गया।

गाडी दा घटे बाद रवाना होती थी। व्लादीमिर इत्येक अब पराय देश में एक क्षण भी और नहीं रचना चाहते थे। इन दो घटा में सामान बाधना था, पुस्तकालय की किताबें वापस करनी थी, मकान का किराया चुकता करना था। फिर भी सब काम पूरा ही गया। दा घटे बाद व अथूरिख से वन के लिए रवाना हो गय। वन से जमनी व लिए गाडी लनी थी। लनिन के साथ तीस अथ रूसी प्रवासी भी रूस लौट रह थ।

‘सहायता और शरण के लिए धन्यवाद।’ स्विट्जरलण्ड की घरती छोडते हुए व्लादीमिर इत्येक ने स्विस साथियो को आभार सदेश भेजा।

गाडी स्विटजरलैण्ड की आखा को चकाचौध करती झीलो और गव से सिर ऊचा उठाये खडे पहाडा को पीछे छाडती घडघडाती हुई आगे बढ़ी जा रही थी।

जमनी का इलाका भी पार हो गया। अब सामने बाल्टिक सागर का विक्षुब्ध विस्तार था। युद्ध का जमाना होने से समुद्र में जहा तहा सुरगें बिछी हुई थी। फिर भी जसे तसे वे एक मालवाही जहाज से स्वीडन पहुँचे

और वहा मे फिनलैण्ड। उपर, रास्ता कितना लम्गा और खतरनाक था। मगर अब शीघ्र ही पेत्रोग्राद * आ जायगा।

गाडी की छिडकी से पतले पतले तनावाले चीड और देवदार के वीन जगल दिखायी दे रह थे। सफेद बर्फ अभी पूरी तरह नही गली थी। काई * डेरा से ढके दलदला मे जहा तहा बाना पानी चमक रहा था।

“रात को जब पेत्रोग्राद पहुँचेंगे तो शायद सब माये हुए हागे ” नादेज्जा कोन्स्तान्तीनोव्ना वाली।

लैम्पपोस्टो वं धुधले उजाले म पत्थर का इमारता के बडे बडे आकार अस्पष्टता के साथ उभरन लगे। ये गोदाम टिपा आदि थे। गाडी की रफ्तार धीमी हुई। फिनलैण्ड रेलवे स्टेशन अब दूर नही था।

इजन ने रात की निम्नवधता का चीरते हुए सीटी दी। गाडी प्लेटफाम पर आकर रक गयी। इजन भारी आवाज करता हुआ भाप छोड रहा था लेकिन यह क्या ? यह मगीन किम निण ? प्लेटफाम पर मामई की धुन बज रही थी।

“सलामी देन के लिए मावधान।” आदेश मुनायी दिया।

प्लेटफाम लोगा स खचाखच भरा हुआ था। य पेत्रोग्राद वं मजदूर थ, नाल गाड सेना के सैनिक थे, आश्वत्त वं जहाजी व।

“सावधान।”

एकाएक पूण नि स्तवधता छा गयी। लाल गाड और जहाजी सलामी देन के लिए कतार बाधकर खडे हो गये।

लेनिन अपने डिब्बे के दरवाजे पर आय। वह आश्चयचकित थे।

“साथिया ”

“लेनिन जिंदावाद ! लडाई खतम हो ! नाति जिंदावाद !” जबाब म आममान मूज उठा।

प्लेटफाम के बाहर, रेलवे स्टेशन वं सामन के स्ववायर म भी हजारों कण्ठा ने इन नारो को दोहराया। स्ववायर म नागा का सागर उमडा हुआ था। पण्डलाइटा के उजाले म झडे आग की लपटा की तरह फहरा रहे थे।

* फरवरी, १९१७ की नाति के बाद म पीटसबग को पेत्रोग्राद बहा जान लगा। - स०

स्टेशन के बाहर एक बख्तरबंद गाड़ी खड़ी थी। उसरी तापें ग्रामाग थी। वह भी पार्टी और मजदूर वर्ग के नया नया स्वागत कर रहा था। मजदूरों और शनिवा न लेनिन का उम पर खड़ा बिया। असह्य मन्त्रीपूण हाथ उनकी तरफ बडे। असह्य आयें मुस्करायी।

लेनिन का इच्छा हुई कि उन सबको, युद्ध और बरवादी स मतन उन अपन सगा जैसे मजदूरों का गल लगा लें।

“साथियो,” लेनिन न कहा, “आपन शक्ति की है, जार का सत्ता उलटा है। मगर सत्ता पर पूजीपतियो न कब्जा कर लिया है। वे हम पर राज करना चाहते हैं। मगर हम चाहिये महानतकशा का राज। हम आठ घंटे का काम का दिन चाहत हैं। हम किमाना का जमीन, भूखा को रागी, दुनिया को शाति दना चाहते ह। हम ममाजवादी शक्ति चाहत ह।”

हुर्रा! लेनिन जिदावाद! भीड चिल्लायी। फिनलण्ड स्टेशन क सामने के स्क्वायर का समा ऐसा था कि उस समय माना रात न होकर खुशी भरी वसन्त की सुबह हा।

बख्तरबंद गाड़ी धूमधाम के साथ चल पडी। लेनिन हमेशा क लिए घर लौट आये थे।

रस्तान्नाया सडक

व्लादीमिर इल्यीच ने तकिय से सिर उठाया। साफ-सुधरा, मादा सा कमरा। छोटी सी लिखने की मेज। मज पर ताजे अखबार। खिडकी पर फूला का गमला। एक कान म गहरे लाल रंग की कशीदाकारीवाल रेशमी कवर मे ढकी हुई कुर्सी।

“यै कहा हू? सपना तो नही ह क्या?”

नही, यह सपना नही था। व्लादीमिर इल्यीच अपनी वहन आना इल्यीनिच्चा के घर म थे।

उह खुशिया स भरपूर कल के दिन और असामाय मुलाकाती की याद हो आयी। रेलवे स्टेशन स बख्तरबंद गाड़ी उह घले नतका कशोसिस्वाया के भूतपूर्व प्रानाट म ले आयी थी। अब वहा बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति और नगर समिति का मुख्यालय था।

बख्तरबंद गाड़ी धीरे धीरे चल रही थी।

रात काफी हो गयी थी, फिर भी बहुत से घरा म उजाला था। सड़का पर लोगो की भीड थी।

“लेनिन!” लोग चिल्ला रहे थे।

बख्तरबद गाडी बार-बार रक जाती थी। लेनिन लोगो का सरल और स्पष्ट भाषा म समाजवादी त्राति व त्रार म मजदूरा की अपनी त्राति के बारे म वतान की कोशिश करते। उनर हृदय मे जाशीने शब्दा का ज्वार उठा हुआ था।

नेवा और पेत्रोपाव्लोस्व किले स कुछ ही दूरी पर स्थित कशेमिन्स्काया प्रासाद लोगो से घिरा हुआ था।

“लेनिन बाहर आयेँ! लेनिन चद शब्द कह! भीड चिल्ला रही थी।

लेनिन ने कई बार वाल्कनी पर आकर जनता का संबोधित किया। अगर रात का समय न होना, तो वाल्कनी से पेत्रोपाव्लोस्व की सुनहरी मीनार और भारी, अभेद्य दीवार अवश्य दिखायी देती। इन दीवारा के पीछे, किले की कूआ जैसी अघेरी सीलन भरी और ठडी कोठरिया म रूस के कितन होनहार लोग कालकवलित हुए थे। मगर अब इस मनहूस किले से कोई भय नहीं था, कोई खतरा नहीं था।

“पुराना अब वापस नहीं लौटेगा,” लेनिन ने लोगो से कहा था। आगे बढ़ो, साथिया! समाजवादी त्राति जिंदावाद!”

प्रासाद मे सारे पेत्रोग्राद के बोत्शेविक इकट्ठे हा गय थे। वे वहा से न छुद जाते थे, न लेनिन को ही जाने देते थे।

सिफ सुत्रह पाच बजे ही नादेज्दा कोस्तातीनोव्ना के साथ व्लादीमिर इल्याच थके हुए मगर खुशी की उमग से भरपूर घर पहुच पाये। आखिरकार वे फिर अपने वतन मे थे। इस बीच क्या कुछ नहीं भोगा था! आखिरकार रूस के जीवन मे महान मोड आ ही गया

उत्तेजना और विकलता के कारण व्लादीमिर इल्याच को नीद भी ठीक से नहीं आयी। कुल मिलाकर यही कोई एक घटा सो पाये होंगे। हल्की सी थपकी आती थी कि आखे फिर खुल जाती थी। घर म हर तरफ खामोशी थी।

व्लादीमिर इल्याच उठे और गलियारे मे टहलन लगे। उह लगा कि यह घर समुद्र मे तरते जहाज जसा है। लवा और सकरा सा गलियारा, उसके दोना तरफ कविना जसे कमरे। गलियारे के अत मे खाने का तिक्वोना

कमरा और तिकोनी वाल्कनी। जैसे कि जहाज का अग्रता हिस्सा है। खान के कमरे में पियानो रखा था। उल्यानाव परिवार जहाँ भी रहा, पियानो हमेशा साथ रहा।

व्लादीमिर इल्यीच न स्वरलिपिया उठायी। ये मा की स्वरलिपिया थी। इस घड़ी को देखने के लिए वह सात महीने और जिंदा न रह सका। और नाया की मा भी नहीं।

व्लादीमिर इल्यीच ने शाकाकुल नज़रा से जहाज के अगले हिस्से की तरह के कमरे का देखा। इस झूलती कुर्सी पर मा शाल में लिपटी हुई, किताब हाथ में लिए बैठा करती थी। वह बूढ़ी, कमजोर हो गया था और हर समय अपने बच्चों की याद में धुलती रहती थी। कोई निर्वासन में था तो कोई जेल में। बेचारी मा! अपने बच्चा से मिलने के लिए उन्होंने किस किस जेल का 'दशन' नहीं किया। पीटसबर्ग की जेल, मास्का की जेल, सरातोव की जेल, कीयेव की जेल भाग्य ने उनसे किस किस शहर की खाक नहीं छनवायी।

व्लादीमिर इल्यीच न स्वरलिपिया को वापस पियानो पर रख दिया और पिता कोई आहट किए अपने कमरे में लौट आये। पहले इस कमरे में मा रहा करती थी। मा का आखिरी निवास। मा की कुर्सी। गहरे लाल रंग के फूलावाले इसके कवर को उठाने ही बाढ़ा था मा! काश एक क्षण के लिए तुम्हें फिर देख पाता, तुम्हारे कोमल हाथों को एक बार फिर चूम पाता!

शीघ्र ही घर में सभी जग गये। लेकिन आज की सुबह कल जैसी नहीं थी। कल सभी खुश थे, उमंग से भरपूर थे। आज हर कोई दबी आवाज़ में बात कर रहा था।

सारे रास्ते भर व्लादीमिर इल्यीच खामाश रहे।

लिगोव्का से वोल्कावो क्रिस्तान तक रस्तानाया सड़क से हात हुए जाना पड़ता था। यह मातमी सड़क थी, आखिरी मज़िल थी। उसके बाद विदाई। हमेशा, हमेशा के लिए विदाई।

क्रिस्तान में वफ़ अभी गली नहीं थी। कब्रों के बीच उसके सफ़ेद ढेर चमक रहे थे। चीड़ की एक शाख मा की कब्र पर रखी हुई थी। पास ही में एक और कब्र थी। छाटी। ओल्या की कब्र। उस पर एम्प की नगी शाखें चुकी हुई थी।

व्लादीमिर इल्यीच ने टोपी उतारी और सिर नीचे झुकाये देर तक खड़े रहे। आखा के आगे बचपन के दृश्य तिर गये। मिम्बीस्क का घर। खाने के कमरे में बत्ती का मद उजाला है। बच्चे खाने की मेज के गिद बठे ह। मा किताब खोलती है। बच्चे कोई दिलचस्प, असामान्य कहानी सुनने के लिए उत्कण्ठित हैं। मा की आवाज कितनी अच्छी, मीठी और कोमल है।

फिर एक बिल्कुल ही दूसरा दृश्य याद आया।

जेल में कोठरी का दरवाजा भारी आवाज करते हुए खुलता है

“कैदी उल्यानोव, तुम्हारी मा मिलने आयी है।”

वह जेल के गलियारों में भागता है, डरता है कि मा से मिलने का समय कम न हो जाये। नीची छतवाला अंधेरा सा कमरा। बीच में दोहरी जाली है। मा का प्यारा चेहरा जाली से चिपका हुआ है। आखा से स्नट फूट रहा है। “बोलोद्या, राजी-खुशी तो हो? तुम्हारे लिए दूध और खाने की चीजें लायी हूँ। और जो किताबें मांगी थी, उह भी ”

मा, मेरी प्यारी मा! तुम हमारा नया जीवन नहीं देख पायी। कितना दुख है, कितना अफसोस है! मा, प्यारी मा, हम तुम्हारा विवेक, तुम्हारे उपकार कभी नहीं भूल पायेंगे।

सत्ता सोवियतों को

लेनिन मा की कब्र के सामने झुके और फिर वहाँ से सीधे बोल्शेविकों की सभा में भाषण देने के लिए चल पड़े। यह ४ अप्रैल, १९१७ की बात है, इसलिए इतिहास में इस भाषण को “अप्रैल घोसिसा” के नाम से जाना जाता है। उसे उहोंने स्वदेश लौटते हुए रान्ते में रेलगाड़ी में लिया था। उसमें उहान इसकी सुनिश्चित योजना पेश की थी कि जार का तख्ता उलटने के बाद बोल्शेविकों और जनता को कैसे काम करना है।

सत्ता अस्थायी सरकार के हाथ में आ गयी थी। मगर इस सरकार के सदस्य कौन थे? जमींदार और पूँजीपति। क्या ये धनवान लोग गरीब मजदूरों और किसानों की चिन्ता करना चाहेंगे? बिल्कुल नहीं। उह अपनी संपत्ति की ही चिन्ता है। तो बोल्शेविक अस्थायी सरकार का समर्थन क्या करें? नहीं, बोल्शेविक अस्थायी सरकार का नहीं बल्कि सोवियतों का समर्थन करेंगे।

मजदूरों और किसानों की प्रतिनिधियों की सोवियतों तब तक स्थापित नहीं की थी, पर अभी वे कोई खास शक्तिशाली नहीं थीं। उनमें बहुत से मेशेविकों और ऐसे दूसरे तत्वों का जमा लिया था, जो बोल्शेविकों से सहमत नहीं थे।

‘सोवियतों का अधिक शक्तिशाली बनाना है।’ लेनिन ने कहा।

इसका क्या मतलब था? इसका मतलब था कि उन्हें बोल्शेविकों का पक्षधर बनाना है। अगर तब सोवियतों की सहायता से जमींदारों से जमान और पूँजीपतियों से कारखाने छीनने हैं। जमीन और कारखानों जनता को संपत्ति हाँस जायेंगे। इसके अलावा युद्ध का अंत करना है।

लेनिन इन्हीं के लिए बोल्शेविकों और मजदूरों का आह्वान कर रहे थे।

लेनिन अपनी योजना पर दृढ़ थे। उनके सामने एक महान सत्य था और वह इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वृत्तसंकल्प थे।

मजदूर जानते थे कि उनका रास्ता बोल्शेविकों के साथ है। मगर यह बात सभी मजदूर नहीं समझते थे और सभी किसान भी नहीं। मेशेविकों और बूजुआ तत्वों के लोग मजदूरों और किसानों को हर तरह से बरगलान की कोशिशें करते थे। वे अपने अखबारों में बोल्शेविकों के बारे में तरह-तरह की उलूल जलूल बातें लिखते, युद्ध का प्रचार करते, बूजुआ सत्ता के पक्ष में लोगों को उभारते। मगर बोल्शेविकों के पास भी अपना अखबार था, जिसका नाम था ‘प्राव्दा’ यानी सत्य। उसका कार्यालय मोस्का नगरी के किनारे एक बड़ी सी इमारत के तीन छोटे से कमरे में था और वह सचमुच सत्य से लोगों का साक्षात्कार करवाता था।

मीटिंग से व्लादीमिर इल्यीच ‘प्राव्दा’ के कार्यालय में आये। उसने लिए एक लेख लिखा। फिर दूसरे दिन भी। हर रोज वह बोल्शेविक अखबार के लिए एक दो लेख लिखते थे। कभी कभी तो तीन भी। इसके अलावा वह पेत्रोग्राद के विभिन्न कल कारखानों में मजदूरों के सामने भाषण देते थे। वह मेहनतकशों के हितों के लिए बोल्शेविकों के जन सचप को इतनी अच्छी तरह समझाते थे कि धीरे धीरे सभी मजदूर और किसान उनकी तरफ चुकते गये।

लेनिन को इस लीटो तीन ही महीने हुए थे। इस बीच स्थिति में बहुत परिवर्तन आ गया। लेनिन अकेले नहीं थे। उनके बहुत से साथी थे और सभी मिलकर नयी व्यवस्था के लिए सचप कर रहे थे। सैनिक लड़ना नहीं

चाहते थे। मजदूर पूजीपतिया के लिए काम करने से इकार करने लगे थे। किसान जमीन माग रहे थे।

एक दिन पेत्रोग्राद के मजदूर और सैनिक खुद ही सडको पर निकल आये। उनकी स्थिति असह्य बन गयी थी। बोल्शेविको न उनका सडको पर निकलने के लिए आह्वान ता नही किया था मगर जब इतने विशाल पमाने पर आंदोलन शुरू हो ही गया ता उन्होंने प्रदशना का नेतत्व किया और भरसक काशिश की कि आंदोलन शांतिपूर्ण रह। प्रदशनकारी नार लगा रहे थे "सारी सत्ता सावियता को।" पूजीवादी सरकार मुर्दाबाद।", "रोटी दो, शांति दो आजादी दो।"

प्रदशनकारिया का जलूस अनुशासनबद्ध था, आत्मविश्वास से भरपूर था और इससे जन आंदोलन की जबदस्त शक्ति का पता चलता था।

अस्थायी सरकार के मंत्री डर गये। हालाकि वे अपने को आतिकारी सरकार कहत थे, फिर भी उहाने वैसे ही नीचता का परिचय दिया, जसी कि १९०५ मे जार ने दिखायी थी। उहाने सशस्त्र फौज को निहत्थे लोगो पर गोलिया चलान का हुक्म दिया।

यह ४ जुलाई, १९१७ की बात है।

दूसरे दिन सुबह व्लादीमिर इल्यीच यह देखन कि अखबार कैसे निकल रहा है और साविया को सलाह देने के लिए मोइका नदी के तट पर स्थित "प्राब्दा" कार्यालय म गये।

'प्राब्दा' की इमारत के सामने झटके के साथ ब्रेक लगाती हुई एक सैनिक गाडी आकर रकी। फौजी बूटा की ठाप-ठाप सुनायी दी। भडाके से दरवाजा खुला और सगीनें ताने हुए कुछ यकेर (फौजी स्कूल के विद्यार्थी) "प्राब्दा" कार्यालय मे दाखिल हुए।

"लेनिन कहा है?"

सौभाग्यवश लेनिन उस समय वहा नही थे। वह पहले ही सकुशल घर लौट चुके थे। नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना और बहन दरवाजे के पास बान लगाये खडी, निस्तब्ध और पीली पडी हुई उनका इतजार कर रही थी।

"बोलोद्या! अस्थायी सरकार ने तुम्हे वैधानिक सुरक्षा से वचित व्यक्ति घोषित कर दिया है।'

तभी घटी वजी। सभी सहम गय।

‘तुम्हारे लिए तो नहीं आये हैं?’ नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोवना ने फुसफुमाने हुए पूछा।

व्लादीमिर इल्यीच बिना कोई ग्राहट किये अपने कमरे की ओर भागे। सभी पतों और दस्तावेजों को शीघ्रातिशीघ्र नष्ट करना जरूरी था, ताकि कहीं पुलिस वं हाथ न पड़ जायें।

‘खोलिय,’ दरवाजे के पीछे से किसी ने दबो आवाज म कहा।

अरे यह तो स्वेदलोव है!’ आना इल्यीनिच्ना पहचान गयी।

सभी खुश थे कि घटी वजानेवाना पुलिस का आदमी नहीं था।

‘याकोव मिखाइलोविच! आइय! आइये!’ कमानीरहित ऐनक पहने दुबले और काली आखावाले आदमी के लिए दरवाजा खोलते हुए बहन और नादेज्दा कान्स्तान्तीनोवना ने एक साथ कहा।

स्वेदलोव की उम्र अभी कोई ज्यादा नहीं हुई थी। विशाराबस्या स ही उन्होंने अपना सारा जीवन पार्टी को अर्पित कर दिया था। ज़ारशाही सरकार ने नातिकारी स्वेदलोव को निर्वासन की सजा देकर दूर नराम्स्की इलाके म भेजा। चार बार उन्होंने वहा से भागने की असफल कोशिशें की और आखिर म सफल हो भी गये। पर आजाद जिंदगी ज्यादा दिन न चली। पुलिस ने फिर पकड़ लिया और इस बार उहे तुख्तास्व प्लाक मे निर्वासित किया गया, जहा से बहुत कम लोग ही लौट पाते थे।

सिफ् क्रांति के बाद ही स्वेदलोव को इस मौतगाह से छुटकारा मिला। वह बुद्धिमान थे, प्रतिभाशाली थे और लेनिन के सबसे जोशीले साथिया मे से थे।

‘व्लादीमिर इल्यीच, युकेरा ने प्राव्ना’ कार्यालय को तहस-नहस कर दिया है। मारे शहर म तलाशियो और गिरफ्तारिया का दौर चल रहा है। युकेर किसी भी क्षण यहा भी आ सकते हैं। अच्छा हो कि आप अभी यह जगह छोड दें।’

व्लादीमिर इल्यीच कुछ साचते हुए खडे रहे। तो क्या नातिकारिया पर अत्याचार फिर शुरू हा गये हैं? क्या फिर छिपना पडेगा?

व्लादीमिर इल्यीच कुछ क्षण के लिए तय नहीं कर पाय। भगर खतरा बहुत गभीर था। वधानिक सुरक्षा से वचित आदमी को अदानत की इजाजत के बधर कार्र भी मार सकता था। अस्थायी नातिकारी सरकार न लेनिन को खत्म करन का फैसला कर लिया था।

संघर्ष के बाद ही वहाँ पर चले जायेंगे। वे लोग तो हम
को हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे
अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से
निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे।

हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे
अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से
निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे।

हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे
अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से
निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे।

वन्दना

हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे
अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से
निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे।

हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे
अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से
निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे।

“नाथो येमेल्मानोव, यह काम आपकी सीमा गया है।

हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे
अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से
निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे। हमारे अन्दर से निकालेंगे।

नाथ फिर तुरत ही याद आ गया कि यहाँ सिपाया भारतीय है।
मनराम पडोसी हैं। गली मुहल्ले के घने पत्तों भी भुशीरे में जाकर पाव
सकत हैं। फिर उमरे भी घना सात घण्टे है। गली, बोर्ड दगरी जगह
दूनी होगी।

मुवह तहने ही येमेल्मानोव ने व्वादीमिर इलीच को जगामा। घने
भुशीरे नहीं हुआ था। शीत हले, पाया बुलामे में उनी हुई थी। पत्त

मकान के ठीक पीछे ही थी। येमेल्यानोव ने नाव खोली और बिना कोई शोर किये बम्पू चलान लगा। आसपास के घरा म लोग अभी सोये हुए थे। हर तरफ खामोशी थी। विशाल चीत का पानी भार न हल्क गुलाबी उजाले म झिलमिला रहा था।

येमेल्यानोव लेनिन को जल्दी से जल्दी रजलीव के दूसरे बिनार पट्टा देना चाहता था। रास्ता कोई चार वस्ट था। वह धबडा रहा था कि क्या कोई पडोसी इतन तडके उस एक अनजान आदमी को नाव म ल गते न देख ले। यह तो सभी अखबारो मे छप चुका था कि सरकार लेनिन को खोज रही है। और फिर लोग भी तरह-तरह के होते है इसीलिए येमेल्यानोव जल्दी कर रहा था।

व्लादीमिर इल्यीच खामोशी से पतवार धामे हुए थे। सुबह की हवा का शोका आया और शील के ऊपर छाया भूरा कुहासा छट गया। बिनारे साफ साफ दिखायी देने लगे। दूर क्षितिज के ऊपर आसमान म लाल छान लगी।

इस नीरवता म व्लादीमिर इल्यीच को बहुत पहले गुजरे हुए वप और उन दिना के साथी याद हो आये। उहे पीटसबग का मजदूर इवान वाबुशिकन याद आया। वाबुशिकन के साथ मिलकर ही व्लादीमिर इल्यीच ने 'सघप लीग' का पहला परचा लिखा था। पीटसबग का सवहारा इवान वाबुशिकन जोशीला नातिकारी और कट्टर बोल्शेविक बन गया था। १९०६ मे सरकार ने बिना किसी मुकदमे के उहे फासी चढा दिया।

व्लादीमिर इल्यीच को "पोत्योम्बिन" का जहाजी अफानासी मात्यूशेवो याद आया, जो उहे अपन जहाज पर हुई बगावत के बारे मे बताने जेनेवा आया था। स्वदेश लौटन पर उस भी फासी दे दी गयी।

याद आनेवाले साथियो मे ऊफा का नौजवान मजदूर इवान याकूतोव भी था। १९०५ की त्राति के दौरान याकूतोव न ऊफा मे मजदूर गणतंत्र की स्थापना की घोषणा की थी। किन्तु त्राति दबा दी गयी और उसक साथ ही इवान याकूतोव को फासी के तख्ते पर चढा दिया गया। त्राति के दौरान हजारो मजदूर योद्धा शहीद हुए। उनकी याद कभी नही भुलायी जायगी।

व्लादीमिर इल्यीच को इसका भी खयान आया कि सस्त्रोरेत्क व मजदूर यमेल्यानोव न उहे बूजुधा सरकार स छिगारन अपन लिए बहुत बन्

। ही लिया
। गया। व

ग और ता
। दिन गत

। 'नहीं',
स था।

गना पडा
गात्र भी ता
। 'मिर्' एकीच
नग्न, बिनाय
त वरत। इन
। नुव छिपकर
गनाह, निरेश

ह मवहाग वा
वाग्नेम न तेनित

गये हुए आगे बढ़
है।' पार्टी वाग्नेम

गत करती थी। वह
। हम और दत्ता के
प्रा सरकार न अपन

से खाली नहीं था।
थी।

नहीं करनी है। आप माना फिनलण्ड के हैं और इसलिए रूसी विलुप्त नष्ट समझते। याद रखिय, एक शब्द भी नहीं।'

'पर मैं क्या फिनिश मजदूर जैसा लगता हूँ?' व्लादीमिर इत्योच न पूछा।

येमेत्यानोव ने व्लादीमिर इत्योच को एक बार फिर सिर स पर तब देखा। व्लादीमिर इत्योच ने दाढ़ी बना ली थी और मूँछे छाटी कर दाँध और मिरज़इ जैसे गलेवाली कमीज़ और पुराने, जजर कोट में विलुप्त मजदूर जैसे लग रहे थे।

हा, हा, आप विल्कुल फिनिश मजदूर की तरह लगते हैं," येमेत्यानोव ने जवाब दिया और फिर कहा "आपके लिए खाने पीने का सामान सुबह या शाम को ला दिया करेंगे।"

'और अखवार? अखवार बहुत जरूरी है। सभी। और एक बात और। आपके मजदूर को लिखने का बहुत काम करना है। इसके लिए सबसे उचित जगह कान सी होगी?'

इधर देखिय " येमेत्यानोव ने चापड़ी के पास की घनी झाड़ियाँ को हाथ स हटाते हुए कहा।

व्लादीमिर इत्योच ने देखा कि वहाँ उनके बीच में थोड़ी सी जगह साफ कर दी गयी है और इसमें दो ठूठ रखे हुए हैं, एक कुछ ऊँचा और दूसरा कुछ नीचा। छोटा बैठने के लिए और बड़ा मेज का काम करने के लिए।

'आपका जगल में काम करने का कक्ष " येमेत्यानोव ने कहा। "हर तरफ स छिपा हुआ और पूरी तरह शांत।"

चापड़ी में व्लादीमिर इत्योच के रहने की पूरी व्यवस्था करके कुछ समय बाद येमेत्यानोव चला गया। व्लादीमिर इत्योच भी झील तब उसने माथ गये और जब तक नाव रजतीव के नीले विस्तार में नज़रों से ओझल न हो गयी, वही पर खड़े रहे। फिर अदृश्य नाव का हाथ हिलाकर किताबी और लेज कन्मा में लौट पड़े। अपने 'कक्ष' में पहुँचकर उन्होंने नीली चापी खोली। उन दिनों वह इस बारे में किताब लिख रहे थे कि मजदूरों की सबहारा की तानाशाही के लिए, अपने राज्य के निर्माण के लिए सघन काम करना है।

इजन न० २६३ का फायरमैन

केन्द्रीय समिति ने लेनिन का छिपान का फैसला करके ठीक ही किया था। उनके घर छोड़ने के दूसरे ही दिन मुक़ेर तनाशी लेने पहुच गया। वे लेनिन को ढूढ रहे थे।

मगर लेनिन रजलीव के किनारे झापडी मे रह रहे थे। यहा और तो मव ठीक था, पर मच्छरा ने नाक म दम किया हुआ था। वे दिन रात काले बादला की तरह मडराते रहत।

“अस्थायी सरकार से ता बच गया, पर मच्छरा मे कोई मुक्ति नही,” व्लादीमिर इल्यीच कहते। मच्छरा ने उह बुरी तरह काट लिया था।

कभी-कभी बारिश भी होने लगती। तब झापडी म ही बैठे रहना पडता था। आग जलाना भी मुमकिन नही था। चाय बनान की साच भी तो कस? कुल मिलाकर वहा रहना आमान नही था। मगर व्लादीमिर इरयीच हताश नही हुए। काम उनके पास बेइतहा था। वह लख लिखते, किताब की रूपरेखा तैयार करत, वाल्शेविका की काग्रेम का निर्देशन करते। इन टिना पेत्रोग्राद म बोल्शेविक पार्टी की छठी काग्रेम हा रही थी। तुक छिपकर आनवाले साधिया के जरिये व्लादीमिर इल्यीच उसे अपनी मलाह, निर्देश भेजत।

वह कहते थे हम मशस्त्र क्राति की तैयारी करनी ह, मवहारा का किसाना के साथ मिलकर सत्ता अपन हाथा म लेनी है। काग्रेम न लेनिन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

“इस लडाई मे हमारी पार्टी अपना झंडा ऊचा उठाये हुए आगे बढ रही है पुरानी दुनिया का अत नजदीक आ गया है।” पार्टी काग्रेम न अपने आह्वान म कहा।

बूजुआ अस्थायी सरकार लेनिन से डरती थी, नफरत करती थी। वह जानती थी कि लेनिन ही बोल्शेविक पार्टी का इतन साहम आर दत्ता के साथ नेतत्व कर रहे ह। लेनिन को पकडन के लिए बूर्जुआ सरकार न अपन सकडा भेदिय लगा रखे थे।

व्लादीमिर इल्यीच का झापडी म रहना अत्र खतर स खाली नही था। पतयड का मौसम भी करीब आ गया था। राता म ठड बढ गयी थी। बारिश प्राय होन लगी थी। बुरी तरह भीगा हुआ जगल मनहूस और उदास लगने लगा था।

पार्टी की केंद्रीय समिति ने तय किया कि लेनिन को और कहा, अधिक सुरक्षित जगह भेज दिया जाये।

एक दिन येमेल्यानोव मुह अघेरे ही अपन कारखाने म पहुच गया। वहाना था कि मैनेजर से मिलना है। पर इतनी सुबह कौन मैनेजर काम पर आता है? यही येमेल्यानोव चाहता भी था। जान पहचान क चौकीदार ने उसे मैनेजर के कमरे म जाने की इजाजत दे दी। येमेल्यानोव अतन मे फिनलैण्ड की सीमा पार करने के लिए अनुमति पत्र हासिल करना चाहता था। कारखाने के कुछ मजदूर फिनलैण्ड के इलाके म रहते थे और मनजर उह सीमा पार आन जान के लिए अनुमति पत्र देता था। मैनेजर का मज पर अनुमति पत्र या ही बिखरे पडे थे। येमेल्यानोव ने उनम स एक उठाकर चुपके से जेब मे रख लिया और सीधे लेनिन से मिलन चल पया। व्लादीमिर इल्योच अब कोन्स्तान्तीन पत्राविच इवानोव बन गये। दाग मूछे अच्छी तरह मुडवा ली और भाँहा को भी दूसरे ढग से बना लिया। सिर पर नकली बाल लगा लिये। माथे पर पिन्की टापी के नीचे स घुघुरान वाली का गुच्छा दिखायी देने लगा। लेनिन की शकन मूरत इतनी बल गयी कि नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना भी एकदम न पहचान पाता।

शाम को उन्होंने झोपडी छोड दी और जगल से होते हुए रेलव स्टेशन की ओर चल दिये। व्लादीमिर इल्योच के साथ येमेल्यानोव और दो फिनलैण्ड साथी थे। पहले तो ठीक-ठीक जा रहे थे। सिर्फ जैसा कि पतझड के मौसम मे होता है, अघेरा बहुत हो गया था। पगडडी पर चतत हुए पेडा का टहनिया बारबार उनके चेहरा से टकरा जाती थी। अबाक दलदल शुरू हो गया पगडडी गायब हो गयी और पेड भी कम हो गय। ज्या ज्या आगे बढ़ते गय, झाडियो के बीच स गुजरना मशकल होता गया। मगर यह क्या? आगे धूआ छाया हुआ था। किमी ने अलाव जला रखा है या कहीं आग लगी हुई है? हर कदम के साथ घआ गाढा और असह्य बनता जा रहा था। साम लेना और रास्ता देख पाना भी मुशकल हा गया।

‘यहा से मुड चल,’ येमेल्यानोव न कहा। “दलदल मे पीट जल रहा है।’

पीट की आग म बढ़कर भयानक और खतरनाक और कुछ नहीं रहना। जमीन क नीचे आग सुनगती है, तज होती है और आगे फैलन लगती है।

अचानक उसकी लपटे जमान फाड़कर ऊपर उठनी ह और आसपास सब कुछ जला डालती है।

“व्लादीमिर इल्यीच, मेरे पीछे पीछे आइय।”

चारों तरफ से धूए से घिरे हुए वे अधा की तरह रास्ता टटोलते हुए, गिरते उठते हुए किसी तरह वहा से बाहर निकले।

धूआ अब पीछे छूट गया था। परो के नीचे अब दलदल नहीं था।

बुरी तरह थके हुए वे सुस्तान के लिए जमीन पर बैठ गय। पर कमजोरी के मारे काप रहे थे।

अगले दिन रात के एक बजकर पंद्रह मिनट पर पेत्रोग्राद से पिन-लण्ड जानवाली गाडी उदेलनाया स्टेशन पर आकर खडी हुई। उसका ड्राइवर एक फिनिश था, जिसका नाम था गूगो यालावा। वह बोलशेविक था और पेत्रोग्राद मे रहता था। उस अपने ऊपर को उठी वाली चिमनी और गोल, गरम बगलोवाले इजन मे, जिसका नंबर २६३ था, बहुत प्रेम था। उसने बाहर झाककर देखा। सब ठीक था। कासिंग के पाम, जहा इजन रका था, एक आदमी खडा सिगरेट पी रहा था और निकट ही दूसरा बत्ती के उजाले मे अखबार पढ रहा था। तय यही हुआ था कि छोडने आया एक आदमी सिगरेट पी रहा होगा और दूसरा अखबार पढ रहा होगा। “भगर लेनिन कहा है?” गूगो यालावा को चिंता हुई।

उसी क्षण तेज कदमों से चलता हुआ एक नाटा सा और गठीला मजदूर इजन की तरफ बढ़ा। वह टोपी पहने हुए था, जिसके नीचे से चस्टनट के रंग के बाल बाहर झाक रहे थे। रेलिंग पकडकर वह इजन के कविन मे चढा।

“नमस्ते। मैं इवानोव हू। आपका फायरमन।”

‘नमस्ते, साथी फायरमन,’ गूगो यालावा ने जवाब दिया।

व्लादीमिर इल्यीच ने—फायरमैन वही थे—कोट उतारा और पशेवर फायरमन की तरह भट्टी के पास लकडिया का ढेर नगान नगे। इजन न हल्की सी सीटी दी और चल पडा।

बेलोग्रोस्त्रोव स्टेशन तक तो बिना किसी डरचिन्ता के पहुच गय। यह रूसी सीमा का आखिरी स्टेशन था। वहा युवरा और पुलिम का जमघट

लगा हुआ था। गाडी के ग्वत ही व दस्तावजा की जाच व निए सीटिया वजात हुए डिब्बा की तरफ लपक।

वही यहा भी न आ जायें," आशकित स्वर मे गूगो मालावा न कहा। 'हालाकि अनुमति पत्र तो है, फिर भी उनसे दूर रहने में ही खरियत है।'

और नीचे कूदकर इजन का गाडी से अलग किया और पानी भरत के बहान पृगी रफतार स इजन का वरे की आर ले गया।

पहली घटी बजी। पुलिस अभी भी डिब्बा का छान रही था। स्पट था कि किसी को खोज रही थी। सार स्टेशन म उत्तेजना फली हुई थी।

तभी दूसरी घटी बजी। गाडी के रवाना होने के समय स एक मिनट पहले ही गूगो मालावा ने अपन इजन न० २६३ को डिब्बा से जाडा। फिर तीसरी घटी भी बज गयी। इजन ने नटखटपन सा दिखाते हुए सीटी दी। 'खाली हाथ रह गये, प्यारो।' ड्राइवर गूगो मालावा न पुलिस और युकेरा को बिढाया।

और गाडी आगे चल पडी। रात का समय था। अगस्त महीने के आसमान मे तार छिटके हुए थे। क्लादीमिर इल्यीच ने इजन के कैबिन से बाहर झाका। चेहरे पर ताजी हवा का धपेडा लगा।

शीघ्र ही वे फिनलैण्ड मे थे।

पुलिस दारोगा के यहा शरण

हेल्सिगफास म पुलिस का दरोगा गुस्ताव सेम्योनोविच रोवियो नाम का एक नौजवान था। एक दिन रोवियो को गवनर जनरल के यहा से बुलावा आया। गवनर-जनरल रुसी था, क्योकि उन दिना फिनलैण्ड रुसी साम्राज्य का अग था।

अकडवर खडे गवनर-जनरल ने डरावनी आवाज म धीरे धीरे कहा 'पेत्रोगाद से एक गुप्त आदेश मिला है।'

'जी।'

'लेनिन का नाम सुना है?'

रोवियो ने सोचने की सी मुद्रा मे ठोडी पर हाथ फेरते हुए कुछ ठहरकर जवाब दिया कि हा, जानता हू। मभी अखबारो मे छपा है कि

अस्थायी सरकार लेनिन को गिरफ्तार करना चाहती है पर किसी तरह
उह डूब नहीं पा रही है।

“ऐसा शक है,” गवर्नर ने आगे कहना जारी रखा, “कि लेनिन
यहा हेल्सिंगफोर्स में छिपा हो सकता है।”

रोवियो चुप रहा और इस आशा में कि गवर्नर आगे क्या कहता है,
उसे बड़े ध्यान से देखता रहा।

“आपको लेनिन को खोजने के लिए तत्काल कदम उठान हैं।”

“जी।”

“अगर आप लेनिन को पकड़ सके

“म भरसक कोशिश करूंगा।”

“और याद रखिये, सरकार ने लेनिन का पकड़ने के लिए बहुत
बड़े इनाम की घोषणा की है, गवर्नर जनरल न अनग्रह सा दिखाते हुए
पुलिस अधिकारी को उत्साहित किया।

गुस्ताव रोवियो न सल्यूट किया और गवर्नर के कमरे से निक्ल आया।
उनकी वनपटी पर पसीने की बूंदे झलक आयी थी। बड़े चारखानेदार
रूमाल से उसने पसीना पोछा।

गवर्नर के यहा से वह अपने दफ्तर न जाकर रेलवे स्टेशन की ओर
गया। हेल्सिंगफोर्स-पेत्रोग्राद मेल को रवाना होने में अभी देर थी, पर
वह तयार खड़ी थी। प्लेटफॉर्म पर गाड़ी का डाक अधिकारी गुस्ताव रोवियो
की प्रतीक्षा कर रहा था। उसका चेहरा उनीचा और निरपक्षता का भाव
लिये हुए था। लगता था कि दुनिया में उसे किसी चीज में कोई सरोकार
नहीं। व बिना कोई जल्दबाजी दिखाय प्लेटफॉर्म पर चलने लगे। मौका
देखकर रोवियो ने जेब से एक पकेट निकालकर डाक अधिकारी को दिया,
जिस उमने तुरत अदर की जेब में छिपा लिया।

‘उस आदमी से है और पहले के ही पत्त पर दना है,’ रोवियो न
ममचाया।

“ठीक है,” डाक अधिकारी न जवाब दिया और बदल में गुस्ताव
रोवियो का एक पकेट थमाया, जिसे उसने उसी तरह तुरत जेब में रख
लिया। फिर दोनों अलग हो गये। और अब भी दारोगा अपने दफ्तर नहीं
गया।

रास्ते में एक दुकान में उसने कुछ अंडे, मक्खन और “टोटी गरीदी।

अब घर जाना है " उसन मन ही मन कहा। वह केन्द्रीय सड़को म बचकर लडा चकार नगात हुए गलिया स होता हुआ जा रहा था। वैसे अगर ध्यान स उसका पीछा किया जाता, ता उसकी बहुत सी हरकतें अजीब लग सकती थी। मगर पुलिस क दारोगा का पीछा कौन करता? यह देखना तो उसीका काम था कि शहर मे व्यवस्था बनी रहे।

"गुप्त आदेश मिला है।" हागनस्म स्ववायर के बड़े घर की पाचवी मजिल पर चढते हुए उसे गवनर जनरल के साथ हुई बातचात याद हो आयी। यहा पाचवी मजिल पर उसका एक कमर का फनट था, जिसमे इस समय—कही अगर गवनर को यह मालूम होता!—व्लादीमिर इल्यीच बठे "राज्य और शाति" किताब लिख रहे थे। ज्यूरिख मे नोट की गयी टिप्पणियोवाली नीली कापी भी रजलीब की आपडी से अब यहा आ गयी थी।

रोवियो सावधान सा कराते हुए खासा। व्लादीमिर इल्यीच उछलकर खडे हो गये।

"डाक है?"

"डाक तो है। पर, व्लादीमिर इल्यीच, पहले कुछ खाना खा लीजिये।"

"नही, पहले डाक। कहिये कहा है?"

जब तब रोवियो अपनी पोशाक के अदर की जेब से पकेट निकालता, व्लादीमिर इल्यीच बेसब्री के मारे हाथ मलते रहे।

'आपके पकेट के बदले म मिला है, व्लादीमिर इल्यीच।"

पकेट म कई पत्र थे। व्लादीमिर इल्यीच ने एक पर सरसरी निगाह डाली। फिर दूसरा लिया। यह रसायन से लिखा हुआ था। लप जताकर उसे गरमाया और पक्षियों के बीच अक्षर उभरने लगे। व्लादीमिर इल्यीच पढते हुए बोलते भी जा रहे थे

अच्छा। अच्छा। अच्छा। दिलचस्प खबरे ह।"

खबर यह था कि पेत्रोग्राद और मास्को मे सोवियतो म बोल्शेविका का असर बढ़ता जा रहा है, सोवियते बोल्शेविक बन गयी ह, बूजुभा सरकार पर से जनता का विश्वास उठ गया है, जनता बोल्शेविका पर ज्यादा विश्वास करन लगी है, आदि आदि।

पुलिस दारोगा ने गवर्नर के यहां जाने की पोशाक उतारी, कमीज की बाहे चढायी और रसोई में अडा तयार करन लगा।

अजीब बात थी कि यह पुलिस दारोगा गवर्नर जनरल के साथ न होकर लेनिन के साथ क्यों था ?

इसलिये कि उसका जन्म एक मजदूर परिवार में हुआ था। वह खुद भी बढ़ई रहा था और १८ साल की उम्र से क्रांतिकारी आंदोलन में हिस्सा लेने लगा था। जार की सत्ता उलटने के बाद ही मजदूरों ने उसे पुलिस दारोगा चुना था।

अडा तैयार करके रोवियो ने व्लादीमिर इल्यीच का खाने के लिये बुलाया।

पेत्रोग्राद से मिली खबरा से व्लादीमिर इल्यीच बहुत खुश थे। अब जल्दी ही वह भी रूस लौट जायेंगे। बोल्शेविक पार्टी मजदूर वर्ग को शक्ति के लिये ललकारेगी। मजदूर अस्थायी सरकार का तख्ता उलट देंगे। मजदूरों की सरकार बनेगी। इन्हीं सब बातों के बारे में लेनिन ने गणन रूप से पेत्रोग्राद भेजे गये लेखों में भी लिखा था और अब अपनी किताब में भी लिख रहे थे।

रोवियो खाता जा रहा था और गवर्नर जनरल के साथ हुई बातचीत के बारे में बताता जा रहा था। जब लेनिन ने सारी बात का सुन लिया, तो चालाकी से आखों का सिक्को डबते हुए कहा

“जीवन में कभी-कभी कितनी बेतुकी बातें हाती हैं पुलिस दारोगा दूसरा के बारे में तो गवर्नर जनरल को रिपोर्ट करता है और खुद घर में कैसे बिठाये हुए है ?”

‘कैसे कैसे ? परम आदरणीय पादरी को !’

पुलिस दारोगा गुस्ताव रोवियो ने जिस भावशून्यता के साथ जवाब दिया, उससे व्लादीमिर इल्यीच पहले तो दंग रह गये और फिर ठहाका लगाकर हस पड़े। सचमुच वह हेल्सिंगफोस पादरी के भेस में ही आये थे। इससे पहले वह जिस छोटे से गांव में कुछ समय के लिये ठहरे थे, वहां फिनिश साधियों ने कुछ शौकिया अभिनयों का भेजा था। ये लोग मजदूर और सामाजिक-जनवादी थे। उन्होंने कितनी चतुराई से उनका भेस बदल डाला था। वे शहर से पादरी का लबा चोगा और ऊंचा टाप ले आये थे। व्लादीमिर इल्यीच के लंबी-लंबी भीड़ विपत्तियों में भी

पर नक्ली बाल लगाये गये थे और ऐसे सजा दिया गया था कि बम बाहू तो अभी किसी गिरजे में बाइबिल का पाठ शुरू कर सकते थे। अब जन्मे ही नये भेस की चिन्ता करनी होगी।

एक दिन गुस्ताव रोवियो व्लादीमिर इत्येच को एक हेयर ड्रमर के पास ले गये। उसका जन्म पीट्सबर्ग में हुआ था और वहाँ वह कई थियेटरों में हेयर ड्रेसर रह चुका था। वह राजधानी के बहुत से बाग़्या और अमीरों का भी जानता था और उन्हें नौजवान दिखाने में मग्न करता था।

आप नक्ली बालों के बिना भी काफी जवान लगते हैं," हेयर ड्रेसर ने तसल्ली सी देते हुए व्लादीमिर इत्येच से कहा।

मैं बूढ़ा दीखना चाहता हूँ ' व्लादीमिर इत्येच ने जवाब दिया।

"बूढ़ा? क्यों?" हेयर ड्रेसर को आश्चर्य हुआ।

"नहीं मेरा मतलब है कि कुछ रोकीला सा," व्लादीमिर इत्येच ने हसते हुए कहा। 'सफेद बालोंवाला साठ एक साल के बूढ़े जसा।'

साठ एक साल का बूढ़ा? सफेद बालोंवाला? नहीं, कभी नहीं! आप चाहते हैं कि मैं जवान आदमी के समय से पहले बूढ़ा बना दूँ? बिल्कुल नहीं!' हेयर ड्रेसर चिल्लाया। 'मेरा काम लोगों को जवाना लौटाना है, न कि बूढ़ा बनाना।'

'यह तो ठीक है, पर मेरे लिये अपवाद के तौर पर कर दीजिये,' व्लादीमिर इत्येच ने मुस्कराते हुए आग्रह किया।

हेयर ड्रेसर काफी आनाकानी के बाद अन्ततः सहमत हो ही गया। गुस्ताव रोवियो सोच रहा था

'व्लादीमिर इत्येच अभी और कब तक या भेस बदलते रहेंगे? उन्हें अभी और कितना भटकना होगा?'

एक गुप्तवास और

बीबीग की पुरानी सड़को पर शरद की ठंडी हवा चल रही थी।

ऐसे ही एक ठंडे दिन एडना राहिया पेत्रोग्राद से बीबीग आया। वह ऊबे कद का, खूशमिजाज और तेजदिमाग नौजवान था। गरमिया के अंत में व्लादीमिर इत्येच को रजलीव शील से उदेलनाया स्टेशन पहुंचानेवालों

म पेत्रोग्राद का यह फिनिश मजदूर भी था। पार्टी की केन्द्रीय समिति ने उस लेनिन के सपकदूत का काम सौंपा था।

इस वार राहिया लेनिन को लेने के लिये वीबोग आया था। लेनिन हेल्सिंगफोस से यहा, रूस के और नजदीक आ गये थे। वह रूस पहुंचने के लिये उतावले थे। और अब वह घड़ी आ गयी थी।

व्लादीमिर इल्यीच घबरा रहे थे। पर राहिया को कोई डर नहीं था।

“व्लादीमिर इल्यीच, स्टेशन चलना है उसने कहा और लंबे लंबे डग भरता हुआ चल पडा।

पर नहीं, राहिया भी घबरा रहा था। सिर्फ उसने इसे छिपा रखा था। व्लादीमिर इल्यीच भी अपनी घबराहट को छिपाये हुए थे।

वे गाडी म बठे और बिना कोई बात किय एक फिनिश स्टेशन तक पहुंचे। डिब्बे मे सब मुसाफिर फिनिश थे। व्लादीमिर इल्यीच फिनिश भाषा नहीं जानते थे, इसलिये मुसाफिरा का ध्यान अपनी आर न खीचन के लिये वह खामोश ही बैठे रहे।

समय-समय पर व्लादीमिर इल्यीच चुपके से जेब म रखी चाभी को टटोल लेते थे। यह पेत्रोग्राद के छोर के मजदूर मुहल्ले के एक गुप्त फ्लट की चाभी थी।

गाडी स्टेशन के करीब पहुंचने को हुई, तो राहिया तेजी स खडा हुआ और डिब्बे से बाहर निकला। व्लादीमिर इल्यीच भी उसके पीछे पीछे। स्टेशन आने पर वे उतर गये। एकाएक व्लादीमिर इल्यीच चौक पडे। सामने पटरिया पर पेत्रोग्राद के उपनगरो को जानेवाली गाडी खडी थी और उसके इजन का नम्बर था २६३। “अहा, हमारा पुराना साथी! एक बार पहले मदद की थी, अब फिर करेगा।”

इजन के कबिन से ड्राइवर गूगो यासावा गभीर मुद्रा बनाये हुए बाहर झाक रहा था। पर राहिया और परिचित फायरमैन को देखते ही वह मुस्करा पडा “हमारा फायरमैन कुछ बूढा सा हो गया है।”

सक्षेप मे, व्लादीमिर इल्यीच उसी इजन पर मवार होवर फिनलैण्ड स उदेलाया स्टेशन लौट रहे थे।

उदेलाया से जिस जगह उन्हें जाना था वह बोर्ड पाच बस्ट की दूरी पर थी। अक्टूबर की उस ठडी शाम को सडके मुनमान थी। बेचल हवा ही सनसना रही थी।

मगर पहने से नियत जगह पर नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोना उनका इतजार कर रही थी। वह किसी माटे कपडे का हाफकोट और फेल्ट का गोल टोपी पहने हुई थी। व्लादीमिर इत्यीच ने उनका ठंड स ब्रकडा हुआ हाथ अपने हाथा मे लिया। वह दस्तान नहीं पहने थी। अपनी फिश करना नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोना ने कभी सीखा ही नहीं था। वम हर समय गति के लिए काम करने की ही लगी रहती थी। पार्टी जहा भेजे, जहा जान को वह, वह हर समय तैयार रहती थी।

सेर्दोबोल्खाया सडक और वाटशाई सप्सोयेव्स्की प्रोस्पेक्ट के चौराहे पर एक बडा सा बदमूरत सा इटा का चौमजिला मकान था। उसका आसपास के शेष सभी मकान मामूली और लकडी के बने हुए थे।

व्लादीमिर इत्यीच दबता के साथ उसके दरवाजे की ओर बढ़े, माना यही के रहनेवाले है। एइना राहिया सप्सोयेव्स्की प्रोस्पेक्ट की ओर भड़ गया। उसका आज का काम पूरा हो चुका था। व्लादीमिर इत्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोना सीढिया चढकर चौथी मजिल पर पहुच। चाभा से दरवाजा खोला। दरवाजे के सामने गलियारा था और उसके अन्त म व्लादीमिर इत्यीच का कमरा। बायी ओर से चौथा। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोना ने बताया था कि घर मे मालकिन के अलावा और कोई नहीं है। मालकिन मागरीता वसीत्येव्ना फोफानोवा उनकी सहेली थी।

लेकिन यह क्या? ये आवाजें कहा मे? व्लादीमिर इत्यीच ने देखा कि एक कमरे मे उजाला है और वहा मेज के गिद कुछ औरते बठी ह, जो देखने से अघ्यापिकाण लगती थी।

‘ हा, तो शिक्षा का उद्देश्य है ’ व्लादीमिर इत्यीच को सुनायी दिया।

विश्वास नहीं होता था कि गुप्त प्लैट मे मीटिंग हो रही है। और वह भी उनके आने के ही दिन। व्लादीमिर इत्यीच ने तेजी से गलियारा पार किया। उन्होंने अपनी कमर कुछ धुका ली थी। भेस के अनुसार बूढ होने का नाटक जो करना था।

हू भगवान! ’ जब वे व्लादीमिर इत्यीच के लिए निर्धारित कमर मे पहुच गये तो नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोना अपने को धिक्कारने लगी। “मने और मागरीता न कितनी बडी बेवकूफी की है।”

“हा, बेवकूफी तो है ही व्लादीमिर इत्यीच न कहा।

उन्होंने नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को ढाढस बंधाने की कार्रवाई कोशिश नहीं की कि चलो, कोई बात नहीं, मय ठीक हो जायगा। ठीक तो शायद हो जायेगा, पर ऐसे सगौन बक्न पर ऐसा खतरा मोल लेना तो बुद्धिमानी नहीं थी।

“आशा है कि यह आखिरी गुप्तवाम है, व्लादीमिर इल्यीच न खिडकी खोलत हुए कहा। नीचे पडा के बीच हवा साय-साय कर रही थी।

“बहुत खतरा है, बहुत ” नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना बड़बड़ा रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच ने देखा कि वह बहुत डरी हुई है। हा, यहा सेर्दोबोल्त्वाया सडक पर रजलीव की थोपडी या हल्सिगफोस से ज्यादा खतरा था। यहा हर नुक्कड पर, हर कदम पर अस्थायी सरकार के भेदिय थे।

यहा इतना अधिक खतरा था कि कोई भी यहा तक कि पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य भी नहीं जानत थे कि फिनलैण्ड से लौटकर व्लादीमिर इल्यीच कहा ठहरे हैं।

यह सिफ नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना और एइना राहिया ही जानत थे।

पूर्वबेला में

कुछ दिन बाद राहिया लेनिन को एक गुप्त मीटिंग मे ले जान के लिए भ्राया। रात हो गयी थी। दूकानें भी बंद हो चुकी थी। घर से कुछ ही दूरी पर सुनहरे विस्कुट के साइनबोर्डवाली नानबाई की दूकान थी। दरवाजे पर ताला लगा हुआ था, खिडकिया भी बंद थी। दूकान के सामन एक लबी सी लाइन लगी हुई थी, जिसमे अधिकतर औरत ही थी। शाल ओढे हुए व ठंड से सिहरती हुई बडे धैय से प्रतीक्षा कर रही थी। ऐसा ही हाल दूसरी दूकानों के सामने भी था। साध्यकालीन पेत्रोग्राद मे कदम-कदम पर ऐसी थकी मादी, गुमसुम लाइनें नजर आती थी। रोटी का राशनिंग बहुत पहले हो गया था। हर आदमी पीछे कभी आधा तो कभी चौथाई पाउण्ड गेटी दी जाती थी। हर कोई जल्दी से जल्दी रोटी खरीद लेना चाहता था। अगर देर हो गयी, तो किसी भी कीमत पर खरीदना भुमकिन नहीं था। औरत रात भर लाइन लगाये नानबाई की दूकाना के सामन खडी रहती। उनके सिर पर मुसीबतों का मानो पहाड आ टूटा था। मद-पनि

और घेरे-मोर्चे पर थे, अकारण मारे जा रहे थे और लडाईं थी किधम ही नहीं हा रही थी।

“और देश के अन्दर भी हालत बार्द अर्च्छी नहीं। मालिक लोग कारखान बंद कर रहे ह। मशीन खडी है। बेरोजगारी बढ रही है,” एइनो राहिया न कहा।

देश सचमुच सकटपूण स्थिति स गुजर रहा था। रेलगाडिया जम तैसे चल रही थी। कल-कारखान कोयते और बच्चे माल के लिए तरस रहे थे और शहर रोटी के लिए।

‘अब इन्तजार किस बात का है?’ राहिया न पूछा।

“बोल्शेविक को जानना चाहिये,” व्लादीमिर इल्यीच न कुछ सन्ती से जवाब दिया। “बोल्शेविक को इन्तजार नहीं, बल्कि सबहारा प्राति करनी चाहिए।’

फरबरी प्राति के शुरू से ही लेनिन इस पर जोर दे रहे थे कि बोल्शेविको को सोवियता पर बर्जा बरना है। तभी मजदूर बग शातिमय तरीके से सत्ता पर अधिकार कर सकता है। किन्तु भे-शेविको ने इसमें बंदम-बंदम पर बाधा डाली।

अब स्थिति पूरी तरह बदल गयी थी। सशस्त्र प्राति की घडी आ गयी थी। अब और देर ठीक नहीं थी।

अक्तूबर की उस शाम की गुप्त मीटिंग म पार्टी की केन्द्रीय समिति के सभी सदस्य उपस्थित हुए। सभी जानते थे कि लेनिन भी आयेंगे। उन्होंने उ-हे बहुत समय से नहीं देखा था, इसलिए सभी अधीरता स उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। बढ के भेस मे लेनिन को पहचानना कठिन था। मगर आवाज, विचार, नारे और सकल्पशक्ति, सब कुछ लेनिन क थे।

हमे सशस्त्र प्राति की तैयारी करनी है। हम फौजी को मजदूरों का हिमायती बनाना है, सबसे तप हुए बोल्शेविको को विभिन्न प्रान्ता और शहरो मे भेजना है, कल-कारखाना मे लाल गाड टुकडियो को हथियारों से और अर्च्छी तरह लस बरना है उनके लिए अनुभवी, समयदार बमाडर नियुक्त करने ह।

हम यह ठीक-ठीक निर्धारित करना है कि प्राति की घडी आने पर कौन सी लाल गाड टुकडी किधर बढेगी।

और प्राति का नेतृत्व सनिक प्रातिकारी समिति करेगी।

यह थी सशस्त्र क्रांति की लेनिन की योजना। केन्द्रीय समिति ने उस पर विचार किया। अच्छी योजना है। सब ठीक है, स्पष्ट है। सभी सदस्य सहमत हो गये।

किन्तु केन्द्रीय समिति में दो सदस्य ऐसे भी थे, जो अपने का कहते तो बोल्शेविक थे, मगर स्वहारा की क्रांति का जोरदार विरोध करते थे। वे पार्टी और लेनिन की योजना से सहमत नहीं थे। ये दो सदस्य थे जिनोव्येव और कामेनेव।

जिनोव्येव और कामेनेव बहस करना जानते थे। दोनों उत्कृष्ट वक्ता थे। मगर जब क्रांति का सवाल उठा तो दोनों डर गये।

“क्या मजदूर वर्ग में राज्य का संचालन करने की योग्यता है?” दोनों ने अविश्वास से पूछा।

इस निर्णायक घड़ी में दोनों ने क्रांति की योजना का विरोध किया। और इतना ही नहीं। उन्होंने एक मेन्शेविक अखबार में इसकी खबर भी छपी और इस तरह अस्थायी सरकार को, पूंजीपतियों को बता दिया कि बोल्शेविक कहा, कब और कैसे क्रांति शुरू करनेवाले ह।

नहीं, वे साथी नहीं, गद्दार थे।

“मुझे यह कहने में कोई शिक्का नहीं कि मैं अब इन दोनों को अपना साथी नहीं मानता” रोपूवक ब्लादीमिर इल्थीच ने लिखा।

“ऐसी कठिन घड़ी में, ऐसे महत्वपूर्ण काम में ऐसा भारी विश्वासघात।”

लेकिन लेनिन विचलित नहीं हुए। क्रांति होकर रहगी। केन्द्रीय समिति जो जान से क्रांति की तैयारी में जुट गयी।

स्मोल्नी में

नेवा के किनारे पर, जहाँ वह एकाएक मुड़कर लादोगा ब्रील की ओर बहने लगती है, वहाँ पहले जमाने में तारपीन की फाटरी हुआ करती थी। यहाँ बड़े-बड़े बड़ाहों में “स्मोला” यानी तारपीन तैयार किया जाता था।

बाद में फँवटरी की जगह पर एक मठ बनाया गया और उसके बाद प्रभिजातवर्गीय बालिवाघ्रा का विद्यालय। तारपीन फाटरी की जगह पर बना होने के कारण ही विद्यालय का नाम स्मोल्नी पड़ा।

१९१७ म जार का तख्ता पलटन के बाद विद्यालय का बंद कर दिया गया। स्मोल्नी मजदूरों और सिपाहियों के प्रतिनिधियों की पत्राचार सचिवालय का कार्यालय बना गया। सैनिक प्रातिकारी समिति का मुख्यालय भी यहाँ था।

सैनिक प्रातिकारी समिति सभी कारखानों से संपर्क बनाए रखना थी और उनमें लाल गाड़ टुकड़ियाँ संगठित करती थी। पत्राचार के बावजूद मजदूर हथियारों से लस थे और प्राति की शुभ्रान्त के आह्वान का इन्तजार ही कर रहे थे। सैनिक प्रातिकारी समिति ने बूजुभा सरकार और उनके प्रति बफादार अफसरों के विरुद्ध बाल्टिक बेटे के जहाजिया का उभारन के लिए बोलशेविक कमिसार भेजे। जहाजी सघष के लिए तैयार हो गये। सिपाहियों की भी अमर्य टुकड़ियाँ बोलशेविकों और सैनिक प्रातिकारी समिति के पक्ष में हो गयीं।

जहाँ तक अस्थायी सरकार का सवाल है, तो वह बोलशेविकों और मजदूरों से डरती थी।

उसने आदेश जारी किया

'मजदूरों के हथियार रखन पर पाबंदी लगायी जाती है। समिति के सभी सदस्यों को गिरफ्तार किया जाये। लेनिन को पकड़कर कमरे में बंद कर दिया जाये।'

निश्चय ही अस्थायी सरकार हाथ पर हाथ धर नहीं बठी थी। वह बोलशेविकों और मजदूरों के विरुद्ध अपनी सारी ताकत समेट रही थी, फौजों को वापस बुला कर पेत्रोग्राद की घेराबंदी करने की कोशिश कर रही थी, ताकि प्रातिकारी बाहर की दुनिया से कट जायें।

लेनिन ने केन्द्रीय समिति के सदस्यों को लिखा कि अब प्राति को और स्थगित करना ठीक न होगा। निर्णायक घडी आ गयी है।

चौबीस अक्टूबर को ब्लादीमिर इल्यीच ने केन्द्रीय समिति के नाम एक सदेश फिर भेजा। फोफानोवा उसका जवाब लायी। लेनिन को अभी गुप्तवास से निकलने की इजाजत नहीं दी गयी थी। सड़क पर अगरे किसी अफसर ने उन्हें देख लिया, तो वह गोली चला सकता है।

ब्लादीमिर इल्यीच के नेतृत्व में केन्द्रीय समिति निर्णायक लडाई की अंतिम तैयारियाँ कर रही थी। लेनिन प्राति का ठीक समय अभी तय नहीं किया गया था।

अगले दिन, २५ अक्टूबर को स्मोल्नी में सोवियतों की दूसरी कांग्रेस शुरू होनेवाली थी। उसमें भाग लेने के लिए सभी नगरों से प्रतिनिधि आये थे।

“क्रांति को आज ही, सोवियतों की कांग्रेस के उद्घाटन से पहले ही शुरू करना जरूरी है,” व्लादीमिर इल्यीच सोच रहे थे। “आज अस्थायी सरकार को अपदस्थ कर केवल सारी सत्ता सोवियतों का सौंप दी जाय।

किन्तु समय तो बीत रहा था। उन्होंने केन्द्रीय समिति को एक नोट और भेजा। उह चैन नहीं थी। सेर्दोबोल्स्काया सड़क के इम उजले फ्लैट में और ठहरना इस समय उह भारी लग रहा था। यहाँ तक कि खुलकर चहलकदमी भी नहीं कर सकते थे। वही कोई सुन न ल और पूछ न बैठे कि वहाँ, फोफानोवा के यहाँ कौन है?

शाम को फोफानोवा काम से लौटी। व्लादीमिर इल्यीच ने उसे दम भी नहीं लेने दिया कि वहाँ

“शुभ्या, एक पत्र और पहुँचा दीजिये। अभी इसी क्षण। नहीं नहीं, कोट मत उतारिये। मैं अभी ”

और तेजी से कमरे में जाकर केन्द्रीय समिति के सदस्यों को लिखने लगे “साथियो!”

मैंने ये पत्तियाँ २४ तारीख की शाम का लिख रहा हूँ। स्थिति परम नाजुक है। पूरी तरह स्पष्ट है कि अब सचमुच ही क्रांति को और टालना मौत की बुलावा देना है।”

आगे उन्होंने लिखा कि आज ही क्रांति शुरू करना, अस्थायी सरकार को अपदस्थ कर सत्ता अपने हाथों में लेना अत्यावश्यक है। अगर आज हम फसला नहीं कर पाये, तो इतिहास इस चूक के लिए हमें सभी माफ नहीं करेगा। केवल एक देर हो सकती है। अंतिम और निर्णायक घड़ी आज है।

‘इस पत्र को तुरंत पहुँचा दीजिये,’ लेनिन ने अधीरता के साथ फोफानोवा से अनुरोध किया।

और फिर वह फ्लैट में अकेले रह गया। उनकी व्याकुलता की सीमा नहीं थी! वह बैठ गया, मानो कुछ सुन रहे थे, किसी चीज का इन्तज़ार कर रहे हैं।

कुछ समय बाद सचमुच दरवाजे की घटी बजी। एडना रात्रियाँ न भ्रम प्रवेश किया।

व्लादीमिर इल्यीच, सचमुच है कि शहर में क्या हो रहा है?

श्रीग फिर खुद ही उत्तान नगा

बाहर मोगम पगता है कि घर में बाहर निकलता भी मुश्किल है। नवा की तरफ से ठंडी हवा के तज झांके चल रहे हैं। मडके बाहरे से दबा हैं। गीली वफ गिर रही है। बीच में वभी-वभी वारिष की थिरथिरी भी शुरू हो जाती है। मगर लाग फिर भी जहा-तहा फाटका व नाच शुरू हो रहे हैं। मडका पर सिपाहिया और सशस्त्र मजदूरों से भरा तारिया गुजर रही है। वभी-वभी वही से गालिया चलन की आवाजे आ जाती हैं। फिर सब शांत हो जाता है। वातावरण अत्यधिक तनावपूर्ण बना हुआ है।

पुला के पाम अलाव जले हुए हैं। साल गाड़ें पुला पर पहरा दे रहे हैं। दिन में अस्थायी सरकार ने नेवा व सभी पुला का खोलन का आदेश दिया था। युकेरा ने पुला से राहगीरा को खदेड़कर ट्रिफिक राकन की कोशिश की। मगर वे निकोनायव्स्की पुल ही खोल पाय थे कि हमारे लोग आ गय। उहान युकेरा को खदेड़ दिया।

अगर युकेर सभी पुला को खाल देते ता आपन हो जाती। सभी इलाके एक दूसरे से बट जाते और तब युकेर एक एक करके सभी प्रातिनारी मजदूरों को दवा देते।

व्लादीमिर इत्योच खामाशी से राहिया को सुनते रहे। फिर बटके से कुर्सी से खडे हुए और बिना कुछ कह अलमारी से अपन नक्ली बाल निकाले। यह क्या कर रहे हैं?' राहिया को चिन्ता हुई। पार्टी ने उम, एइनो राहिया का लेनिन की सुरक्षा का काम सीपा था।

'व्लादीमिर इत्योच, आप कहा?'

मुझे अभी इसी क्षण स्मोल्नी जाना है।' व्लादीमिर इत्योच ने दडता के साथ जवाब दिया।

'युकेर आपको मार डालगे।'

व्लादीमिर इत्योच ने कोई जवाब नहीं दिया और चुपचाप आइने के सामने खडे होकर नक्ली बाल पहनने लगे। फिर पुराना सा कोट और ओवरकोट भी पहना। राहिया समझ गया कि उनसे बहस करना बेकार है, इसलिए खुद भी चलन की तैयारी करने लगा।

फिर यह भी तय हुआ कि व्लादीमिर इत्योच दात दुखने का बहाना कर गाल पर पट्टी बांध ले। तब कोई भी उन्हें पहचान नहीं पायेगा। वे घर से निकले। व्लादीमिर इत्योच स्मोल्नी जा रहे थे।

क्रांति की शुरुआत

सेर्दोवाल्स्काया सड़क से स्मोल्नी काई दस वस्त दूर था। ट्राम वहीं नहीं दिखायी दे रही थी। लोग घरा में छिपे हुए थे। अघेरग ऐसा कि हाथ का हाथ न सूझे। पाव रह-रहकर कीचड़ में जा पड़ते थे। हवा चेहर पर थपड़े मार रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच हवा के सामने छाती ताने और भिग का थोड़ा सा बुकाये हुए चल रहे थे।

“ठहरिये, ठहरिये!” एइनो राहिया पूरी आवाज से चिल्लाया। सामने से ट्राम आ रही थी। वहीं पास ही में उसका स्टाप था।

ट्राम रकी, तो वे उछलकर उसमें चढ़ गये। वह लगभग खाली थी और डिपो वापस लौट रही थी। ठीक ही हुआ। कम से कम आधा रास्ता तो पदल नहीं चलना पड़ेगा।

व्लादीमिर इल्यीच बड़े ध्यान से अघेर में शरद की नीग्व रात में दब रहे थे। सशस्त्र मिपाहिया से भरी एक लारी ट्राम के बराबर आयी और आगे निकल गयी। फिर दूसरी लारी भी।

“आज पूजीपतिया को मजा आ जायगा” किसी ने कहा।

“ट्राम डिपो जा रही है। सब उतर जायें, कण्डक्टर की आवाज सुनायी दी।

व्लादीमिर इल्यीच और एइनो राहिया फिर सुनसान, अघेरी सड़क पर चल पड़े। वस वहीं युकेर रास्ते में न मिल जायें।

तभी खडजा पर घोडों की टापे सुनायी दी। सामने से दो घुडमवार युकेर आ रहे थे।

एक न जोर से लगाम खींची। घोडा हिनहिनाते हुए पिछने परा पर खड़ा हो गया।

‘तुम्हारा अनुमति पत्र।’ युकेर ने राहिया से पूछा।

राहिया के साथी बूढ़े की तरफ युकेर ने कोई ध्यान नहीं दिया। बूढ़े में भला क्या खतरा! वह हाथ से पट्टी-रधे गाल का थामे छाटे छाटे डग भरता हुआ बगल से गुजर गया।

‘क्या अनुमति पत्र?’ नाममची का बहाना करते हुए एइनो राहिया ने जवाब में पूछा। वह इधर उधर की बात पर रोनिन का गिम्क जा

का मौका देना चाहता था। "मैं जानता भी नहीं कि अनुमति पत्र कहा मिलता है। और फिर चाहिये भी किमलिए? उमर बगैर भी नहा टांगता कि मैं मजदूर आदमी हूँ।"

एक युवक ने गाली देते हुए चाबुक उठाया।

अरे, रहने भी दो उसे," दूसरे ने उमर रात दिया।

दोनों धुडसवार अपना रास्ता चल दिये। राहिया भी उस तरफ दौड़ पड़ा, जिधर लेनिन गये थे।

'धर्मवाद,' राहिया के पहुंचन पर व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

स्मोल्नी के सामने का विशाल मैदान, जिसके बीचों-बीच से एक सड़क गुजरती थी और जिसमें कहीं कहीं पर पड़ और चाडिया उगी हुई थी, लोगा की भीड़ से गुजार था। जगह-जगह पर अलाव जल रहे थे, चिगारिया छाड़ रहे थे। सिपाही उनके इदगिद खड़े आग ताप रहे थे। एक के बाद एक लारी स्मोल्नी पहुंच रही थी। उनसे हथियारबंद जहाजी और मजदूर उतर रहे थे, स्मोल्नी में इकट्ठे हो रहे थे।

मैदान से सैनिकों को कतारों में खड़े होने के लिए आदेश मुनामी दे रहे थे।

हर तरफ भीड़ का कोलाहल था। स्मोल्नी के पास तोपें खड़ी थीं। प्रवेशद्वारों के सामने सन्तरी खड़े थे। स्मोल्नी की लंबी इमारत की तीनों मजिलों की खिड़कियां उजाले में नहा रही थीं। तेज प्रकाश से जगमगाते स्मोल्नी और उत्तेजना से दहकती आखोंवाले लोगा का यह दृश्य बहुत ही शानदार था।

व्लादीमिर इल्यीच का दिल बुरी तरह धड़क रहा था। आखिरकार वह दिन वह घड़ी आ ही गयी, जिसके लिए वह अब तक सघप करते रहे थे।

व्लादीमिर इल्यीच और एइनो राहिया को स्मोल्नी में जाने दिया गया। व्लादीमिर इल्यीच के ओवरकोट के बटन खुले हुए थे, हाथ जेबा में थे और नकली बालों को वह भूल ही चुके थे। तेज बंदमो से चलते हुए उद्दाम लोगा और अम्मुनिशन के बक्सों से भरा गलियारा पार किया और सीधे तीसरी मजिल पर सनिक आतंकी समिति के कमरे की ओर लपके।

समिति के सभी सदस्य वहां पहले से ही मौजूद थे। पिछले बारह घंटे

से समिति की मीटिंग चल रही थी, जिसमें त्राति को कायमप दने के सवाल पर विचार हो रहा था।

बीच-बीच में बार-बार लाल गाड़, सैनिक टुकडिया और बल कारखाना के हरकार दौड़े चले आते थे।

लेनिन कमरे में दाखिल हुए। उहान टोपी उतारी और उमने साथ-साथ हमेशा के लिए नकली बाल भी उतार दिये, जिनकी अब कोई जरूरत नहीं रह गयी थी।

सैनिक त्रातिकारी समिति के दुबले पतले और उनीचेपन के कारण सूजी हुई आखावाले अध्यक्ष निकालाई इत्येच पादवाइस्की लेनिन की ओर लपके

“ब्लादीमिर इत्येच।”

लेनिन के आने से उह कितनी खुशी हुई थी। मानो लेनिन के साथ साथ जोश और साहस भी आ गये ह। पादवाइस्की अधीरता व साथ प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह क्या कहगे।

“देरी का मतलब होगा मौत।” ब्लादीमिर इत्येच न जल्दी जल्दी और दृढ़ता के साथ कहा। “हमें तारघर और टेलीफोन एकमचेज रेलवे स्टेशना और पुलो पर कब्जा कर लेना है। अभी ओर इसी रात।”

हरकारे दौड़े दौड़े उस कमरे में आये, जहा सैनिक त्रातिकारी समिति का, त्राति का मुख्यालय था और जहा अभी अभी लेनिन आय थे।

“लेनिन आ गय है।” सारे स्मोल्नी में बिजली की तरह खबर फैल गयी।

हरकारा को आदेश दे दिये गये। सैनिक त्रातिकारी समिति का आदेश था तारघर टेलीफोन एकमचेज, रेलवे स्टेशना और पुलो पर सभी सरकारी कार्यालया पर कब्जा कर लिया जाये।

“लाल गाड़, कतारबंद।” स्मोल्नी के मामन का मैदान सूज गया।

अलाव जल रहे थे। सशस्त्र मजदूरो से भरी लारिया अक्टूबर की रात के अंधेरे में जाकर खो रही थी। मिपाटिया और जहाजिया की टुकडिया भी सैनिक त्रातिकारी समिति का आदेश पूरा करने जा रही थी।

२४ अक्टूबर (वर्तमान तिथिन्म के अनुसार ६ नवंबर) की रात को सशस्त्र मजदूरो और त्रातिकारी सैनिक टुकडिया ने रूम की राजधानी पत्रोप्रद को अपने कब्जे में ले लिया।

महान अक्तूबर समाजवादी त्राति सपन हो गयी।

शीत प्रासाद पर कब्जा

अस्थायी सरकार अपने हिमायतियों के साथ शीत प्रासाद में डेरा डाल हुई थी। शीत प्रासाद का एक अग्रभाग नवा नदी की ओर था और दूसरा विशाल प्रासाद स्क्वायर की ओर। वह सफेद स्तम्भ और मूर्तियों से सजा हुआ था। कानिसें पर बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ और कलश बने हुए थे। शिखर पर पत्थर फैलाये हुए बहुत बड़ी सुनहरी चील बनी हुई थी। पहले इस प्रासाद में जार रहता था।

लेनिन सैनिक आतिकारी समिति के अध्यक्ष पोद्वोइस्की से बाल 'सारा पत्रोग्रद हमारे अधिकार में है, पर शीत प्रासाद पर अभी कब्जा नहीं हो पाया है। उस पर भी यथाशीघ्र कब्जा कर अस्थायी सरकार को गिरफ्तार करना है।

२५ अक्टूबर को, अक्टूबर क्रांति की पहली सुबह को लागा ने लेनिन की 'रूस के लागा के नाम' अपील पढ़ी।

उसमें लेनिन ने लिखा था कि अस्थायी सरकार को अपदस्त कर सोवियतता में सत्ता अपने हाथों में ले ली है। क्रांति विजयी रही है।

बात सचमुच ऐसी ही थी। अस्थायी सरकार के हाथों में सत्ता नहीं रह गयी थी। मगर उसके मंत्रियों ने अपने को शीत प्रासाद में बंद कर लिया था।

'यह क्या बात है?' लेनिन ने कठोरता के साथ पोद्वोइस्का से पूछा।

'धबराइये नहीं। शीत प्रासाद आज हमारा हो जायगा,' सैनिक आतिकारी समिति के अध्यक्ष ने जवाब दिया।

ताल गाड़ टुकड़ियों और आतिकारी दस्ता को शीत प्रासाद घेरने का आदेश दे दिया गया।

मजदूरों और सैनिकों ने शीत प्रासाद के आसपास की सड़क और पहुँच मार्गों पर अधिकार कर लिया। शीत प्रासाद चारों ओर से घिर गया। खान खास जगहा पर तोपें लगा दी गयीं। तारपीटों नौबान्ना न घोर घीरे नेवा में प्रवेश कर शीत प्रासाद के सामने लगर डाल दिया।

नवा में ही खड़े तीन चिमनियांवाले युद्धपोत 'अन्नोरा' की ताँपें भी शीत प्रासाद की ओर तन गयीं। नावेवदी पूरी हो गयी। यह २५ नवंबर, १९१७ की रात की बात है।

लोगों को १९०५ का खूनी रविवार याद था। तब यहाँ, इसी प्रासाद के सामने के विशाल, भव्य प्रागण में पीटसबग के बल-कारखानों के हजारों मजदूर शांतिपूर्ण ढंग से और देव प्रतिमाएँ लिये हुए इकट्ठे हुए थे। वे "पितातुल्य" जार से सहायता की प्रार्थना करने, रोटी की भीख मागने आये थे। मगर बदले में उन्हें मिली गोलियाँ। उस रविवार का शीत प्रासाद के सामने स्क्वायर में हजारों निहत्थे, निरीह मजदूरों का खून बहा।

इसलिये इस वार, अक्टूबर, १९१७ में, मजदूर यहाँ देव प्रतिमाओं के साथ नहीं आये।

शीत प्रासाद, अब के देखना हमारी ताकत।

कमिसार और सैनिक त्रानिकारी ममिति के सदस्य कारा और घोड़ों पर मोर्चाबंदियों का निरीक्षण कर रहे थे।

"साथियों, धीरे-धीरे घेरिये। थोड़ी सी ताकत और बढ़ा लें। साथी लेनिन क्रांति का नेतृत्व कर रहे हैं।"

"लेनिन!" मजदूरों और सैनिकों की मोर्चाबंदियाँ गूँज गयीं।

स्मोल्नी में लेनिन को लगातार रिपोर्टें मिल रही थी कि शीत प्रासाद के घेराव का काम कैसे चल रहा है। वह पेंसिल हाथ में लिये हुए नशों पर चुके हुए थे। इन सड़कों पर अमुक-अमुक टुकड़ियाँ तनात हैं, अमुक टुकड़ी यहाँ है यहाँ आदमियों की सख्या बढ़ानी होगी। क्रांतिशासक से जहाजी आ गये हैं। युद्धपोत "अन्नोरा" तैयार खड़ा है।

"साथियों, समय हो गया है। हमला शुरू कर दीजिये।" लेनिन ने आदेश दिया।

शहर में ठंडी साँव उतर आयी थी। हवा चल रही थी। घरा के दरवाजे बंद हो चुके थे। प्रकाशरहित खिड़कियाँ अपरिचित सी लग रही थी। सड़कों पर जगह-जगह पर अज्ञात जले हुए थे। हवा में कड़ुआ धूँआँ मिला हुआ था।

शीत प्रासाद का घेरा बसता जा रहा था।

उधर प्रासाद में भी लोग हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठे थे। वे भी लड़ाई की तैयारी कर रहे थे। मुक्केश और अफगरा ने सड़कियाँ के बैरिबेड खड़े कर प्रासाद के सभी गस्त बंद कर दिये। बैरिबेडों के बीच मशीनगनों तनात थीं।

शीत प्रासाद के इदगिर्द अशुभ नीरवता छायी हुई थी।

स्मोल्नी से सैनिक-त्रातिकारी समिति को पुन लेनिन का सदेश मिना 'देर करना अब ठीक नहीं। शीत प्रासाद पर हमला तुरत शुरू करिये।' और रात के अंधेरे में, खामोशी में नेवा के ऊपर का आसमान ताप की गडगडाहट से गूज उठा, हवा घर्षा गयी।

'अबरोर' की तोपा ने हमला शुरू करने का संकेत दिया था।

समुद्र की विकराल लहरों की तरह ताल गाड और सैनिक शीत प्रासाद की ओर बढ़ चले। पास की सड़कों से तोपें गोले बरसाने लगीं। मशीनगन से गोलिया की बौछार शुरू हो गयी। शीत प्रासाद के गिद खड़े लकड़ों के बैरिक्डेड पर आग बरसाती हुईं बल्लरबंद गाडी घडघडाती हुईं प्रासाद स्वयायर की ओर बढ़ीं। युकेर हथियार फेंक प्रासाद के अंदर भागे।

हुरा! मजदूर त्राति जिंदाबाद!" युकेरा और अफमरा का पाछा करते हुए लाल गाड और सैनिक चिल्लाये।

लाल सनिकों की टुकडिया प्रासाद में दाखिल हुईं। पहली बार उन अंदर से देखकर आखे चकाचौध हो गयीं सैकडा कमरे और हॉल, बिलौर के फानूस मखमल, रेशम, तमबीरे मूर्तिया, कीमती फर्नीचर, बड-बड दपण

किसी लाल गाड ने मुनहरे फ्रेम से मडे दपण पर सगीन से चाट की और झनपनाकर काच के टुकडे जमीन पर बिखर गये।

'पागल हो गय हो क्या?' साथिया ने उसे डाटा। 'आज से यह जार की नहीं, हमारी, जनता की संपत्ति है।

बदूब तान हुए लाल गाड और सनिक आगे, और आगे बढ़त गये। उनका नतत्व कर रहे थे अन्तानोद आख्ययका, येरेमयव, पान्वास्ता, आदि। गोटा किनारीवाली नीली बरदिया पट्टन प्रासाद के नौकरा की डर न मार पिग्धी बघ गयी थी। अस्थायी सरकार के सभी मंत्रिया न अंपन को एक हॉल में बंद कर लिया था और युकेर इन हॉल की रक्षा कर रहे थे।

'युकेरा, अफमरा, हथियार डाल दो! और श्रोमान मंत्री लागा, आप गिरफ्तार हें!'

रात बहुत हो चुकी थी, मगर स्मोल्नी की सभी पिडनिया तेज उज्रात से जगमगा रही थी। सीटिया, गत्रियाग और कमरा में लागा की भाड

लगी हुई थी। सभी वेहद उत्तेजित थे। शोर बेचैनी में शीत प्रामाद के समाचारा का इन्तज़ार कर रहे थे।

जोर-जोर में बूट बजाते हुए रतत सैनिक श्रातिवारी समिति के अध्यक्ष पादवाइस्की ने कमरे में प्रवेश किया। श्रवणुत्तर महीन की ठंड और हवा से उनका चेहरा कठोर सा हो गया था।

“साथी लेनिन! शीत प्रामाद पर क़ाज़ा कर दिया गया है” सैनिक दम से सल्यूट करते हुए उतारन बहा।

लेनिन घटके से घटे हुए और पादवाइस्की का कमकर गले लगा लिया।

पहलो श्राज्ञप्ति

सैनिक श्रातिवारी समिति की बठक दो दिन में चल रही थी। इस बीच किसी न मिनट भर भी आराम नहीं किया। बठक में लेनिन के अलावा स्वेदलोव, स्लानिन, दजेर्ज़ोन्स्की, बूवताव, पादवाइस्की अन्तानोव ओमेयको और बहुत से दूसरे बोल्शेविक भाग ले रहे थे। दो रात से व्लादीमिर इल्योच ने आराम नहीं पाया था। नादेज़्दा कोन्स्तातीनोवना ने उनसे खुशी से खिले हुए, मगर बेहद घबरे हुए चेहरा का देखा, तो मुह से आह निकल गयी।

“व्लादीमिर इल्योच को आराम चाहिय, पर हमारे पास अपना घर भा ता नहीं है। रिश्नेदार दूर रहते हैं। समय में नहीं आता क्या करूँ,” वह वाच-श्रूयेविच से अपनी चिन्ता छिपा न पायी।

वाच-श्रूयेविच जेनेवा के दिनों से व्लादीमिर इल्योच के घनिष्ठ साथी और सहायक थे। वह “ईस्का” के लिए लेख लिखते थे, रूसी मज़दूरों का पार्टी माहिल्य भेजने का इतज़ाम करते थे। १९०५ में उन्होंने रूसी मज़दूरों का बहुत बडी मात्रा में हथियार भी भिजवाये थे।

‘मेरा घर किस लिये है?’ उन्होंने जवाब दिया।

और तुरत ही व्लादीमिर इल्योच और नादेज़्दा कोन्स्तातीनोवना को जब-स्तो स्मोल्नी के सामने खडी कार में बिठा दिया।

व्लादीमिर इल्योच पीछे की सीट पर बठे ही थे कि सा गय और जब घर पर पहुँचे तो एकाएक यो जग गये, जैसे कि कुछ हुमा ही न हा।

“पहले कुछ घा ल,” वाच-ब्रूयेविच न बहा।

और धीरे से, ताकि घर में सोय लोग जाग न जायें, उन्टाने घात की चीजें मेज पर सजायी। रोटी, पनीर और दूध।

“बहुत दइया खाना है,” व्लादीमिर इल्यीच न तारीफ की।

खाना खाते हुए वे उन दिना घटी घटनाओं की याद करत रहे। समाजवादी श्रांति हो चुकी थी। अब हमेशा-हमेशा के लिये उम महीन अक्टूबर समाजवादी श्रांति के नाम से पुकारा जायेगा।

फिर चर्चा भावी जीवन की चल पडी। नींद के बारे में वे लगभग भूल ही गये। आखिरकार वाच-ब्रूयेविच से न रहा गया

‘व्लादीमिर इल्यीच, अब कुछ सो लीजिये। नहीं तो या हा तर्फ जायेंगे।’

और वह व्लादीमिर इल्यीच को अपने कमरे में ले गये। कमरे में खिडकी के पास लिखन की मेज भी रखी थी। व्लादीमिर इल्यीच लिखन की मेज और कलम के बगैर नहीं रह सकते थे। नादेज्दा कोस्तान्तीनोव्ना घर की मालकिन के कमरे में सोफे पर सो गयी।

व्लादीमिर इल्यीच ने बत्ती बुझा दी। पर लाख कोशिश करन पर भी सा नहीं पाय। मन में तरह-तरह के विचार आ रहे थे। बल के दिन से नये राज्य का, दुनिया में मजदूरों किसानों के पहले राज्य का निर्माण करना है।

व्लादीमिर इल्यीच ने कान लगाकर सुना। सारे घर में खामोशी थी। वैसे कभी न थकनवाले वाच-ब्रूयेविच भी शायद शांति से सा गये थे। व्लादीमिर इल्यीच ने लम्प जलाया और मेज के पास बठ गये। बाहर अघेरी रात थी। कोई एक मिनट व्लादीमिर इल्यीच सिर का थोड़ा सा झुकामे हुए बिना हिले-डुले बैठे रहे, मानो अपने विचारों को सुन रहे हों। इस सुनसान, अघेरी रात को वह बहुत गभीर और विचारमग्न थे।

फिर उन्होंने कलम उठायी और लिखने लगे।

लेनिन ने लिखा कि आज से सभी जमींदारों, रईसों, मठों और गिरजाघरों की जमीन किसानों को मुफ्त दे दी जाती है। जो खुद काशत नहीं करता, वह जमीन का मालिक नहीं बन सकता। जो काशत करता है, वही मालिक भी होगा।

लेनिन उमग में भरकर जनता के सदियों पुराने सपने और आशा के

वारे में लिख रहे थे। सोवियत राज्य का जीवन इस सपने को, इस आशा को साकार करने से शरू हो रहा था।

उस क्षण व्लादीमिर इल्यीच मन ही मन कितना हल्का, कितना प्रमुदित महसूस कर रहे थे। अशांति, बमों के धमाका और हमला के बाद पेत्रोग्राद शांत हो गया था। अघेरी सड़क पर सिर्फ एक ही खिडकी में उजाला था। ऐसा ही शूशेन्स्कोये में भी होता था। सारी बस्ती सोयी हुई होती थी और केवल निर्वासित उल्यानोव के घर में ही हंग लैम्प जल रहा होता था।

व्लादीमिर इल्यीच ने लिखना बंद कर दिया। बाहर आसमान में उजाला होने लगा था। सुबह करीब आ गयी थी।

“अब दो एक घंटे सो सकता हूँ,” व्लादीमिर इल्यीच न सोचा और लेट गये। सिर तकिये पर रखा ही था कि एक दम गहरी नींद में खो गये।

मेज पर लिखा हुआ कागज पड़ा हुआ था।

बाहर सुबह का उजाला बढ़ता जा रहा था। शीघ्र ही आसमान में घुघ्रले बादलों के पीछे से भूरज भी ऊपर चढ़ आया और किरणें उस कमरे में खेलने लगी, जहाँ व्लादीमिर इल्यीच सोये हुए थे। वे उस कागज पर भी पड़ी, जिस पर सबसे ऊपर बड़े बड़े अक्षरों में लिखा था “भूमि सबधी प्राप्ति।”

खभोवाला सफेद हॉल

पहले यहाँ उत्सव मनाये जाते थे। संगीत गूजता था। नृत्य होते थे। लकड़ी के पालिशदार फर्श पर स्मोल्नी विद्यालय की लड़कियों की रेशमी जूतियाँ फिसला करती थीं।

ओरलोव इलाके से आये गरीब सैनिक ने सपने में भी नहीं सोचा था कि कभी वह भी इस खभोवाले सफेद हॉल में पैर रखेगा। तब उसे स्मोल्नी के नज़दीक भी नहीं फटकने दिया जाता।

और अब अब वह इस हॉल में हो रही सोवियतों की दूसरी कांग्रेस में भाग ले रहा था।

स्मोल्नी का सफेद हॉल लोगों से खचाखच भरा हुआ था। उनमें कांग्रेस में भाग लेनेवाले भी थे और दशक तथा दूसरे लोग भी, जैसे धारीदार

कमोजें और नीली जैकेट पहने और कमर पर हथगोले लटकाए जटायु, कल शीत प्रासाद पर कन्ना करनेवाले हथियारबंद लाल गाड़, दूर-दूर व गावा से सोवियत के प्रतिनिधिया व तौर पर आय हुए दण्डिय किमान और कल-कारखाना व मजदूर।

कुसिया और बेंचा के अलावा बहुत से लोग फश और खिडकिया पर भी बैठे हुए थे। बहुत से बैठने की जगह न मिलने की वजह से खड था। सभी की छातिया पर लाल फीतिया लगी हुई थी। सारा हाल तबानू व धूए और शोरोगुल से भरा हुआ था।

‘हम जीत गए ह। वूजुआ वग मुर्दावाद! सारी सत्ता सोवियत को!’

अोरलाव इलाके से आया सैनिक उत्सुकता भरी आखा से सब कुछ देख रहा था। विशाल हॉल की ऊंची छता का भी, सगमरमर के खभा का भी और सामन की दीवार पर टंगे मुनहरे, आदमकद फ्रेम का भा। उसमे से जार का चित्र हटा दिया गया था। इसलिए अब वह खाली था।

मगर वह बड़ी व्याकुलता के साथ लेनिन के आन का वन्तजार भाकर रहा था।

तभी आसपास लाग चिल्लाए

“लेनिन! लेनिन!”

बहुत से जह अच्छी तरह देखन के लिए अपनी जगह से खड हो गये।

अध्यक्षमण्डल के सदस्यो ने हॉल मे प्रवेश किया और मच पर रखी मेज के पीछे कुसिया पर बैठ गये। उनमे से एक काले चमड का जैकेट और कमानीरहित चश्मा पहने था। देखनवाला उसे सैनिक भा कह सकता था और नहीं भी। पर वह लगता बडा दडनिश्चयी था।

‘स्वेदलोव है’ किसी ने सैनिक को बताया।

आर फिर उसे ऊचे वद क और दुबले पतले जुझारू बोल्शेविक फेलिक्स एदमुदोविच द्जेर्जोन्स्की और चौकनी तथा भेदती हुई निगाहोवाले सैनिक नातिकारी समिति के अध्यक्ष निकालाइ इल्यीच पादवोइस्की भी दिखाये गये।

अध्यक्ष ने कांग्रेस का उदघाटन किया और साथी लेनिन का भाषण के लिए आमंत्रित किया।

सैनिक पजो के बल खडा हो गया, ताकि अच्छी तरह देख सके कि

लेनिन नाम का यह आदमी बैसा है। उमन पाया कि वह गठीने बदन और मसोले बदन के हैं। भाह बीच म एवाएक उठती हुई बनपटिया का छू रही ह। और आखें ऐसी कि माना सीधे आपन दिन म थाक रही हा।

लेनिन तेजी से मच पर चढ़े। हाल म बठे सभी लाग खडे हो गय। टापिया हवा म उछलने लगी।

“लेनिन जिदावान्।”

मच पर खडे होकर सबसे पहले लेनिन न सार हाल पर दृष्टिपात किया। उनके सामने खुशी से जगमगात चेहरा साद और गरीबी के सूचक कपडे पहने लागा, आम लोग का सागर था। यहा फाक कोट और सफेद कमीजें पहने सभ्रात पुरष और फैशनबुल पोशाकावाली भद्र महिलाएं नही थी। यहा थे मजदूर, किमाना और सनिका के प्रति निधि, यानी सिफ मेहनतकश लाग। लेनिन न अनुभव किया कि वह इन लोग के मुख और भाग्य के लिए उत्तरदायी ह।

लेनिन ने हाथ ऊपर उठाया। वह भाषण शुरू करन की इजाजत माग रहे थे। शन शन सारे हॉल म खामोशी छा गयी। लेकिन लोग बठे नही। वे खडे-खडे ही लेनिन का भाषण सुनत रहे।

लेनिन ने शांति की चर्चा की। उहान कहा कि मजदूर और किमान युद्ध नही चाहते। सोवियत सरकार भी युद्ध नही चाहती। युद्ध का अंत करना चाहिये। आम लोग शांति स रहना चाहते ह। और तब उहान अपनी शांति सबधी आज्ञा पढकर सुनायी। यह आज्ञा उहाने उसी सुवह वाच-ब्यूविच के घर से स्मोल्नी लौटने पर लिखी थी।

काग्रेस मे उपस्थित लोग न लेनिन को बडे ध्यान से सुना। जमनो के साथ लडाई चार साल से चल रही थी। लोग उससे तग आ गये थे।

‘तो यह है हमारी सोवियत सरकार, जाता के हित की सोचनेवाली न्यायप्रिय सरकार।’ ओरलोव इलाके से आये सनिक ने साचा।

सारा हॉल “हुर्रा।” के उदघोष से गूज गया। श्वेत हाल के मरमरी खभा ने “हुर्रा।” का ऐसा गगनभेदी उदघोष पहले कभी नही सुना था। शन शत कण्ठ एकस्वर मे गा रहे थे।

उठ अब, जजीरो मे जकडे
भूखो, दासो के ससार।

वाद में लेनिन ने भूमि सबधी आज्ञप्ति को पढा, जिसे उन्होंने कल रात लिखा था। और प्रतिनिधिया ने, विशेषतः किमान प्रतिनिधिया ने पुन लेनिन की आज्ञप्ति का जोशीले स्वरा में समथन किया।

२५ और २६ अक्तूबर, १९१७ को स्माल्नी के हॉल में हुई सोवियत की दूसरी कांग्रेस एक महान, ऐतिहासिक घटना थी। उस कांग्रेस में लेनिन ने सोवियत सत्ता की स्थापना की घोषणा की थी।

इसी कांग्रेस में उहान शांति और भूमि सबधी आज्ञप्तिया भी पकर सुनायी और कांग्रेस ने एकस्वर से उनका समथन किया।

कांग्रेस ने जन कमिसारा की परिषद निर्वाचित की और व्लादीमिर इल्यीच लेनिन को उसका अध्यक्ष नियुक्त किया।

इस तरह पहली सोवियत सरकार बनी।

कांग्रेस खत्म हुई, तो लेनिन ने उसमें भाग लेने के लिए आये मजदूरों, किसानों और सैनिकों से कहा

“साथियों, अब आपको शीघ्रातिशीघ्र घर लौटना है, लोगों को हमारी विजय के बारे में बताना है। मजदूर जाति जीत गयी है। अब हमारी अपनी सोवियत सरकार है। जाइये, सार रूस में सोवियत सत्ता को मजबूत बनाइये।”

वे ऐसे रहते थे

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना स्मोल्नी के लगे, चौड़े गलियारे में जा रहा थी। शाम हो गयी थी। वह घर लौट रही थी। दिन भर काम बहत रहा था। अध्यापकों, मजदूरों से मुलाकाते करनी पडी थी। स्कूल, पुस्तकालय, बालभवन, मजदूर क्लब, आदि खोलने थे, शिक्षा की मेहनतकशा के लिए नये ढंग से गठित करना था।

वह थक गयी थी और अब खुशी-खुशी घर लौट रही थी।

उन्का घर स्मोल्नी में था। घर क्या था, बस एक ऊंची छतवाला लबा सा कमरा था, जिसकी खिडकी अहाते में खुलती थी। कमरे के एक हिस्से को सोने के कमरे में बदल दिया गया था जिसके एक आर फौजी कबलों से ढकी लोहे की दो चारपाइया थी। वही पास ही में अगीठी भी थी।

कमरे में गुसलखाने से होते हुए जाना पड़ना था। गुसलखान में बीन-एक बाबेनिन रहे होंगे। इन्हें पहले स्मोलनी विद्यालय की छात्राएँ इन्माल करती थीं। “अब सभी हमारे लिए हैं नादज़ा कान्स्तान्तीनोव्ना मज़ाक करती थी। कमरे में फर्नीचर बहुत साधारण था। वन एक आलमारी एक बटन रखने की आलमारी, एक लिखने की छाटी भी मज़, एक साफ़ दा ब्रुशिया और एक छाटी भी गोल मज़। गाल मज़ खान के काम भी आती थी और मेहमानों के साथ बठकर महत्वपूर्ण राजकीय मनला पर बातचीत करने के भी।

नादज़ा कान्स्तान्तीनोव्ना न फर का काट उतारा और अतीथी के पान खगे हो गयीं। व्लादीमिर इत्योच अभी नहीं लींटे थे। वह स्माल्नी में रहन के लिए इर्मीलिए तैयार हुए थे कि काम की जगह पान में ही थी। जन कनिमारा की परिपद के अर्घ्यभ के कथ में नय मनावादी जीवन के निना से सबधित मसले हल होने थे। यहीं से वे आनपिया भी जारी हुईं, उनके अनुमार रूस में जमींदारों और नेऊन्नाटूकारों का मदानेदा के लिए खाल्ना किया गया था, रेलवे, जहाज़रानी बेंडे, बैंका और कल-कारखाना का राजकीय संपत्ति बनाकर मज़दूर वर्ग को उनका संचालन सौंपा गया।

अब हर चीज़ नयी थी, अभूतपूर्व थी। हर चीज़ का पहली बार आर मित्र हमारे देश में निर्माण हो रहा था।

व्लादीमिर इत्योच के कथ में सुबह से शाम तक मज़दूर किमाना सनिका और जहाज़िया का जमघट लगा रहता था। वे मलाह लन धान थे कि इन नये मज़दूर किमाना के जीवन का निर्माण बन करना है।

‘जगता है कि खाने के लिए भी समय नहीं निकाल पायेंगे, नादज़ा कान्स्तान्तीनोव्ना ने व्लादीमिर इत्योच के वार में साचा।

माँ तभी किमी के कदमों की आहट सुनायी दी। वही ता नहीं है? हा, लाता है कि वही है। बैसे ही तेज़, उनके कदम। गुनगुनान का आवाज़ खुला और व्लादीमिर इत्योच कमरे में दाखिल हुए।

‘साचा कुठ मुय्ना लू’, व्लादीमिर इत्योच की आवाज़ में आह नाद का पत्र था। “खिडकी से बाहर साचा ता पाया कि सरदिया झुंड़ हो चुकी है। क्या, क्या कहती हो याडा सा घूम आयें?”

“मैं ता कहती हूँ कि नी बजे बँत भी काम का दिन खान हाता है।’ नादज़ा कान्स्तान्तीनोव्ना ने जवाब दिया।

“देखो तो इह!” मल्कोव ने उह ऊपर से नीचे तक दखत हुए कहा। “अक्टूबर के दिनो मे कहा ये?”

‘शीत प्रासाद पर हमला करनेवातो के साथ। और कहा?’

पन्द्रह मिनट बाद तीना जन कमिसारो की परिपद के स्वागत कमर म खडे थे। कमरा काफी बडा था, पर फर्नीचर बहुत साधारण था। बस बीच मे लकडी की दो बेंचें और उनके दोना ओर एक एक मेज और कुछ कुसिया।

मजदूरो ने कमर पर निगाह दौडायी। “बिल्कुल हमारे घरा जैसा है।

तभी सेक्रेटरी ने दरवाजा खोला

आइये, साथी लेनिन आपका इन्तजार कर रहे है।”

लेनिन ने खुद खडे होकर उनका स्वागत किया। मजदूरो न गौर किया कि लेनिन छोटे कद के तथा पुर्तलि है और उनकी सजीब आवा म एक अदभुत चमक ह।

‘नमस्ते साथियो। बठिये।’

उह बिठाकर लेनिन खुद भी बैठ गये। मेज के उस तरफ नही, बल्कि उही की बगल मे। उनके हाथ मे पेसिल थी, जिसे हिलाते हुए वह जल्दी जल्दी पूछ रहे थे

“किस कारखान से आये ह? क्या पेशा है? कारखाने का कामकाज कैसा चल रहा है? कच्चा माल है? मजदूर नियंत्रण काम कर रहा है? यहा किस काम से आय है? देखिय, शिज्जक मत दिखाइये।”

और फिर मुस्करा पडे।

लेनिन की मुस्कराहट से रोमान की हिम्मत बधी और वह जिना किमी लाग-लपट क बताने लगा कि व यहा किस काम से आये है। रोमान और उमके साथी लेनिन का कारखान के बारे म बताना चाहते, पर वे अन्न वहा काम नही करते थे। उह जन कमिसारियत म काम करने भेज दिया गया था। जारशाही के जमान क कमचारी सोवियत सरकार क साथ काम नही करना चाहते थ, इसलिए नौररी छोडकर भाग गय थ। और जा नही भागे थे, वे बेगार टाल या भेजा गया

* जन कमिसारियत - मंत्रालय

“क्या सोवियत सरकार की सहायता के लिए?” व्लादीमिर इल्यीच न बीच में टोना। “हां, और क्या?”

व्लादीमिर इल्यीच ने आँखों को कुछ सिन्नोडा और गार से रामान को देखत रहे। रोमान सबोच के मारे अपने हल्के भूरे बाला में हाथ फेरन लगा।

“लेकिन हमसे निभ नहीं पा रहा है, व्लादीमिर इल्यीच। उनसे हम वापस भेजने के लिए कह दीजिये। कारखाने में हम कुछ काम भी करत थे, जबकि यहां जन कमिसारियत में हमारी स्थिति अधा जैसी है।

“आप सोचते हैं कि मेरे लिए राज्य का संचालन करना आसान है? जबाब के बदले व्लादीमिर इल्यीच ने सवाल किया। आप समझते हैं कि मुझे इसका कोई अनुभव है? मैं भी तो पहले कभी जन कमिसारा की परिपद का अध्यक्ष नहीं था और हमारे दूसरे जन कमिसार भी पहले कभी जन कमिसार नहीं थे।”

एक मजदूर ने मागो फिर भी सहमत न होते हुए सिर हिलाया

“हमारे लिए सब कुछ अपरिचित है, नया है।”

“मगर पुराने को तो हमने और आपने जड़ से उखर दिया है। ऐसे मैं आप ही बताइये, नये का निमाण कौन करेगा?”

लेनिन मजदूरों के और पास खिसक आय और समझाने लगे कि यह सही है कि मजदूरों को जानकारी, अनुभव के बगर जन कमिसारियत में कठिनाई हो रही है। मगर सबहारा के पास एक तरह की जमजात मजदूर है। जन कमिसारियत में हमारी अपनी, पार्टी की, सावियता का नीति पर अमल करवाने की जरूरत है। यह काम अगर मजदूर नहीं करेंगे, तो और कौन करेगा? सब जगह मजदूरों के नेतृत्व, मजदूरों के नियंत्रण की जरूरत है।

“और अगर गलती हो गयी तो?”

“गलती होगी, तो सुधारेंगे। नहीं जानते तो सीखेंगे। इस तरह साधिया, ‘घड़े होते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने दडतापूवक कहा, “पार्टी में आपको भेजा है, तो अपना कर्तव्य निभाइये।” और फिर अपनी उल्हास-वधव मुस्कान के साथ दोहराया, ‘नहीं जानते तो सीखेंगे।’

लेनिन के साथ ऐसी बातचीत के बाद मजदूरों का सारा सबोच जाता रहा। अब जब तक वे सारा काम नहीं साध जाते, सुबह से शाम तक वे जन कमिसारियत में डटे रहेंगे।

“साथी लेनिन, हम बायदा करत है कि अपना वक्तव्य पूरा तरह निभायेंगे, मजदूरों को बता।

जन कमिसारों की परिषद के अध्यक्ष के कमरे से निकलते हुए वे आपस में कह रहे थे कि व्लादीमिर इल्योच ने ठीक ही कहा कि मजदूर विमानों की सरकार हमारी सरकार है और हम ही उनका सारा काम उठाना है।

कडुआ सचक

युद्ध ने देश को तबाह कर दिया था। पेत्रोग्राद में भुखमरी बढ़ती जा रही थी। राशन में सिर्फ चौथाई पाउण्ड रोटी मिलती थी, जो नाम के लिए भी पूरी नहीं पड़ती थी। दिन में नमकीन मछली का सूप खाकर सतोप करना पड़ता था। ऐसी हालत में मजदूर परिवारों की ही नहीं जन कमिसारों की परिषद के सदस्यों की भी थी। व्लादीमिर इल्योच भी ऐसे ही रहते थे और इतना ही राशन पाते थे।

लेनिन रोजाना परिषद की मीटिंग बुलाते थे। काम बहुत था और किसी को भी टाला नहीं जा सकता था। सबसे फौरी समस्या थी भुखमरी से कैसे लड़ा जाये। अकाल से पेत्रोग्राद ही नहीं, सभी शहर पीड़ित थे। ऐसी बात नहीं कि रूस में अनाज नहीं था। साइबेरिया और वोल्गा प्रदेश में पर्याप्त अनाज था। जरूरत थी गावा में जाकर उसे इकट्ठा करके और अकालपीड़ित शहरों को भेजना की। मगर यह काम आसान नहीं था। रेलवे यातायात अस्तव्यस्त पड़ा था। इसका मतलब था कि पहले उस ठीक करना था। शहरों में घरा के गरमाने के लिए लकड़ियाँ और कोयले का भारी अभाव था। इसके लिए भी रैनमार्गों का बहाल करना जरूरी था। पर असली दिक्कत यह थी कि हर जगह ताइफोड और चारबाजारी करनेवाला की भरमार थी। चोरबाजारी करनेवाले जनता की विपत्ति का फायदा उठाने पर तुले हुए थे और तोड़फोड़ करनेवाले क्रांति की जड़ काटने पर। वूजुआ वग उनके साथ था। उस सोवियत सत्ता फूटी आखों नहीं मुहाती थी। उसे आशा थी कि जमन आकर सोवियत सरकार को उलट देंगे और तब उसकी पी चारह होगी। वूजुआ वग के लोग जमनों की जीत के ही सपने देख रहे थे।



मराया अलेवसाद्रोव्ना उल्यानोवा । १९१४ ।



ब्ला० इ० लनिन मक्सिम गार्की के साथ वाप्री (इटली) म। अप्रैल,
१९०८।



व्या० इ० लेनिन जाकापान (पोलैण्ड) के बाहर सैर करत हुए। ग्रोप्स
१९१४।



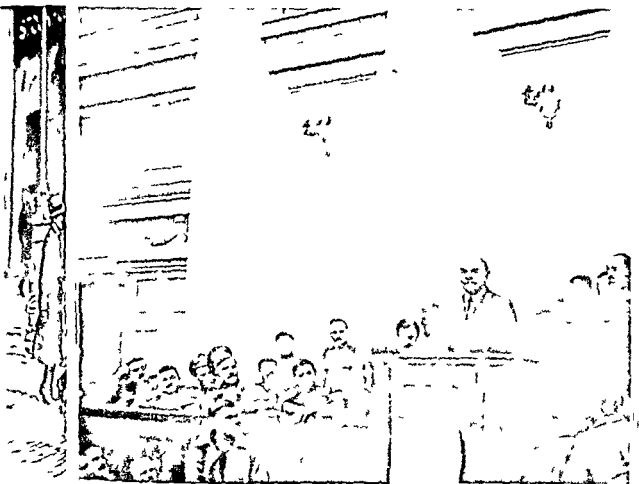
व्ला० इ० लेनिन मक्सिम गार्की के साथ काप्री (इटली) में। अप्रैल,
१९०८।



प्ला० इ० लेनिन जाकोपान (पोलण्ड) के बाहर सर बरते हुए। ग्रीष्म, १९१४।



स्विटजरलण्ड म रुम जानवाल रुसी प्रवागिया क दल क साथ
व्या० इ० लनिन स्टानहाम म। स्वीडन ३१ मार्च, १९१७।



व्वा० इ० लेनिन तन्त्रीचेस्की प्रासाद म भाषण करते हुए। पेत्रोग्राद, अप्रैल,
१९१७।



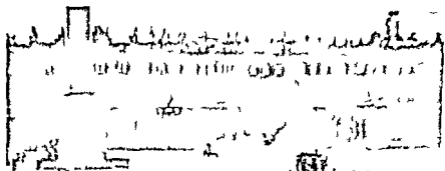
याकोव मिखाइलोविच स्वेदलोव । १९१८ ।

व्ला० इ० लेनिन भेस
बदले हुए। रज़लाव
स्टेशन, अगस्त १९१७।



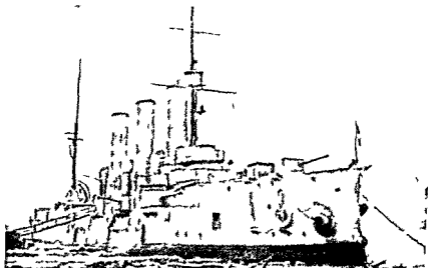
रज़लाव स्टेशन। जलाई, १९१७ की घटनाआ के बाद व्ला० इ० लनिन
इम वापडी मे छिप थे।

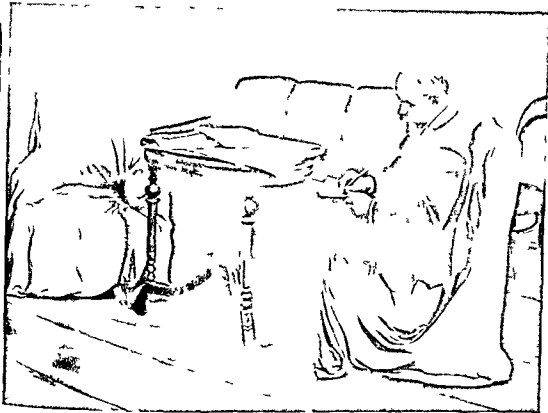




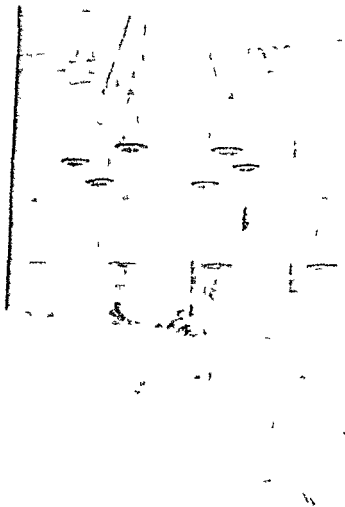
शीत प्रासाद पर धावा । मिनचित ।

अत्रोरा यद्वपात ।





लेनिन स्माली न। चित्रकार-इ० ब्रादस्की।





ला० इ० लेनिन सोवियत की दूसरी अखिल रुसी कांग्रेस में भाषण करते हुए। चित्रकार-व० सरोव।



डॉ० इ० लनिन अपने प्रेमलिन वक्ष म वितावा की आलमारी के पास।
मास्को, १६ अक्टूबर, १९१८।



शान्ति सपन हो गयी । चित्रकार-स० लूविन ।



गाव की खबर । चित्रकार-व० सेरोव ।



व्ला० इ० लेनिन महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति की पहली वर्षगांठ पर लाल मैदान में भाषण करते हुए। मास्को, ७ नवंबर, १९१८।



व्ला० इ० लेनिन या० मि० स्वेदलोव की अत्येष्टि के अवसर पर भाषण करते हुए। मास्को, १८ मार्च, १९१६।

स्पष्ट है कि ऐसे म लेनिन ने मामने चित्ताग्रा का पहाड छडा था। जमना की सेना अभी भी बापी तातवर थी जब कि रूसी पुरानी बारशाही सेना बुरी तरह तहग नहग हा गयी थी। अफसर सेना का छाडकर भाग गय थ। सिपाही घर लौटन का आतुर थे। मातभूमि क ऊपर गभीर छतरा मडरा रहा था।

“क्या किया जाये?” लेनिन माचा करते थ। व वार-याग जन कमि मारा की परिषद की मीटिंगें बुलात। उम म पर विचार करते कि आगे क्या किया जाये।

“भाषियो, हमन शांति सत्रधी आज्ञप्ति जारी की है। इसका मतलब है कि जमना के साथ लडाई खतम करनी चाहिये,” लेनिन न कहा।

जन कमिसारा की परिषद ने जमन कमान के सामन शांति का प्रस्ताव रखा। जमन सहमत हा गय, मगर इस शत पर कि जिन इनावा पर उनका अधिकार है, वे उह छाडेंगे नहीं।

“क्या किया जाय, मानना ही पडेगा। दूमरा तो बोई चारा ह नहा, लेनिन न कहा।

दूमरा चारा सचमुच नहीं था। जनता युद्ध से, बरजादी स बुरी तरह तग आ चुकी थी और शांति स रहना और मेहनत करना चाहती थी।

पार्टी की केन्द्रीय समिति की बठवा म भी जमनी के साथ शांति क प्रश्न पर बहुत बार विचार हुआ। लेनिन का बहना था कि युद्ध की समाप्ति बहुत जरूरी है और इसमें देरी करना ठीक नहीं। सोवियत जनतंत्र को बचाने के लिए हमे किसी भी तरह की बलि देन, किसी भी तरह की शर्तें मानन के लिए तयार रहना चाहिये। हम किसी भी कीमन पर सोवियत सत्ता को मजबूत बनाना है, मजदूर किसाना की नयी सेना गठित करनी है, अथव्यवस्था को बहाल करना है।

काश, सभी लोगो ने ब्लादीमिर इल्यीच का समर्थन किया होता। मगर नहीं। केन्द्रीय समिति के सदस्यो के बीच गभीर मतभेद पैदा हा गया। कमजोर और दुलमुल लागो ने लेनिन के शांति प्रस्ताव का विरोध किया और कहा “यह बब्जावरा, लुटेर्रा के आगे घुटना टेकना है। हम ऐसी लुटेरू शांति के लिए कभी सहमत नहीं हाने।” वे नहीं समझते थे कि सोवियत रूस कौसी भयकर विपत्ति का शिकार होन जा रहा था। अगर शांति समझौते पर हस्ताक्षर नहीं हुए, तो ऐसा सक्क अनिवाय था।

सैनिक शासन या तो को समझने से घोर इग्नोरेंस बट्टा गिन्ता थे।
 'गांधिया' हम उर्यानी प्राग भुग्रमग र शिवजा म पम हूए ह।
 हमम तागत भी बाणी गरी रर गयी है। गांधिया जात्रा की रगा कर्णिए
 जरूरी है कि हम साग सा का यक्य पायें।"

अन्तत घ्नादीमिग इत्योत गांधिया स अगनी बाग भनगात म मफ्त
 हो ही गये।

गांधियत सरकार न जमन जागता क पाग पुा एा प्रतिनिधिमण्डल
 भेजा। उगक ताता दात्स्वी थ।

विन्नु घोन्त्री र सैनिक के निदशा का उल्लंघन किया। कन्द्रीय समिति
 और सांधियत सरकार न जमन वमान के साथ शांति दस्तावज पर हस्ताक्षर
 करन का पगता किया था। यह तय हुआ था कि तिगी भी कीमत पर
 शांति स्थापित की जानी चाहिय।

पर दात्स्वी न किया क्या? उन्होने शांति दस्तावज पर ता हस्ताक्षर
 किय नहीं और हमारी तरफ स मुद्रबन्ने की धापणा कर दी। हमार मिपाही
 मार्च छोड छाडकर घरा की और लपकन लगे। मार्च नहीं रह गया।

जमन फीजें निर्वाध रूस के अदर, और अदर घुसन लगी। व
 राजधानी के बहुत नजदीक आ गयी। पत्राघ्राद के लिए यतरा पैग हो
 गया। वही जमन जनरल राजधानी पर भी ता कब्जा नहीं करना चाहत?
 वही यह शांति का अन्त ता नहीं है?

बूर्जुआ वग के लाग, चारवाचारी करनवाले और व्यापारी इसी की
 प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके पास उन लोगो की सूचिया तैयार थी, जिनका
 वाद म खात्मा करना है। और इनम लगभग सभी बोलशेविक और मजदूर थे।

तोत्स्वी जमन साम्राज्यवादिया और बूर्जुआ वग के बडे काम आय।

तोत्स्वी न पहले भी कई बार रूस में कम्युनिस्टा की जुमारू पार्टी
 के निर्माण म स्काबटें डाली थी, लनिन और लेनिनवादिया के खिलाफ
 तरह-तरह के गुट बनाय थे।

कन्द्रीय समिति और जन कमिसारो की परिपद की बठके फिर हान
 लगी। स्मोल्नी म लकडी नहीं थी। हॉल बहुत ठडा था। कन्द्रीय समिति
 और परिपद के सदस्य ओवरकोट और पर के कोट पहनकर बठको म
 भाग लेते, कालरा को ऊपर उठाय रहते। बाहर फरवरी के महीने के
 बर्फाले तूफान सनसनात रहते।

“यह बहुत बड़ुआ और अपमानजनक सबक है।” लेनिन ने कहा।

“समाजवादी मातभूमि ग़रर म है। जन कमिसारा की परिपद न महनतकश जनता का ललकारा। मज़दूरा, किसाना और साधिया। मातभूमि की रक्षा के लिए खडे हो जाओ।”

शहरो, गावा और मज़दूर बस्तिया मे हजारा स्वयसबक जन कमिसारा की परिपद और लेनिन की अपील पर आगे आय। एव नयी मेना गठिन हुई।

यह लाल सेना थी। यह सोवियत सेना थी। वह जमन बन्जावरो से लोहा लेने लगी। उनका आगे बढना रोक दिया गया।

यह फरवरी, १९१८ की बात है। तब से हर माल २३ फरवरी को हम सोवियत सेना की स्थापना का दिवस मनाते है। उसन अनेक बार शत्रुआ से हमारी रक्षा की है और आगे भी हमेशा करती रहेगी।

लाल सेना से करारा जवाब पाकर जमन जनरल शाति के लिए सहमत हो गये। लेकिन अब यह समझौता और भी लुटेराना था। जमन हमारी और भी भूमि पर कब्जा कर चुके थे। ऊपर से वे हरजान की माग भी करले लगे।

सोवियत सरकार को मज़दूर हाकर इन मागा को स्वीकार करना पडा।

पार्टी की सातवी कांग्रेस ने युद्ध और शाति के बारे म जन कमिसारो की परिपद के अध्यक्ष लेनिन की रिपोट सुनी और उसका अनुमोदन किया।

कुछ महीने बाद जमनी म भी नाति हो गयी और लुटेराना समझौता रद्द हो गया।

“हमारे इल्पीच बडे दूरदर्शी है।” मज़दूरा ने मकनकण्ठ से लेनिन की प्रशसा की।

मास्को, मास्को

माच के महीन की शाम थी। पेत्रोग्राद के बाहरी छोर पर निकोलायेव्स्की लाइन के त्स्वेतोव्नाया प्लोश्चादका नामक छोटे से स्टेशन पर गाडी खडी हुई थी। प्लेटफाम पर सैनिक गाड पहरा दे रहे थे। गाडी के साथ साथ लाटवियाई बटातियन के सैनिक खडे थे। इजन के टैंडर पर लगी मशीनगन गत के अघेरे को भेद रही थी।

एक डिब्बे के पास एक मझोले कद का, कमानीरहित चश्मा और चमड़े की जूतेवाला आदमी लवा फौजी ओवरकोट पहन आदमी से बात कर रहा था।

“आपको विश्वास है कि प्रतिक्रातिकारी इस गाडी के बारे में नही जानते ?” स्वेदलोव दजेर्जीन्स्की से पूछ रहे थे।

‘हो सकता है कि जानते ह। पर खाना कहा से होगी, यह नही जानते।”

“अच्छी चाताकी बरती है कि गाडी को मुख्य स्टेशन से नही, बल्कि इम छोटे से शात स्टेशन से खाना कर रहे है,” स्वेदलोव ने कहा।

“प्रतिक्रातिकारिया ने विस्फोट की तैयारिया की हुई थी। तोडफोड की साजिशो हर रोज प्रकाश में आती है,” दजेर्जीन्स्की ने जवाब दिया।

स्वेदलोव की तरह दजेर्जीन्स्की को भी जारशाही के जमाने में अनेक बार जेल, निर्वासन और कालेपानी की सजाए भुगतनी पडी थी।

अक्टूबर, १९१७ में उन्होंने लेनिन और पार्टी की केन्द्रीय समिति के अन्य सदस्या के साथ अक्टूबर क्रान्ति का नेतृत्व किया था। क्रान्ति के बाद व्लादीमिर इल्यीच के सुचाव पर उन्हें प्रतिक्रातिकारियों के विरुद्ध सघन के लिए गठित अखिल रूसी असाधारण आयोग (चेका) का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

दजेर्जीन्स्की की नरमदिली को सभी जानते थे। मगर वे यह भी जानते थे कि क्रान्ति के दुश्मनो के प्रति वे अत्यन्त निमम है। दजेर्जीन्स्की को बच्चो से विशेष प्यार था। उनका अटल विश्वास था कि सोवियत सत्ता आम जनता के लिए सुखी जीवन का निर्माण करेगी। क्रान्ति के लिए, पार्टी के लिए, जनता के लिए वह एक क्षण भी विश्राम किये बिना दिन रात काम में लगे रहते थे।

तभी प्लेटफाम पर कुछ लोग आते दिखायी दिये। व्लादीमिर इल्यीच तेज कदमो से आगेआगे चल रहे थे और उनके पीछे नादेज्जा कोन्स्तान्तीनोव्ना भी आ रही थी। वह हाथ पर एक चारखानेदार पट्टू डाले हुए थी।

सभी डिब्बे में सवार हुए। इजन ने सीटी दी। लाटवियाई बटालियन के सिपाही उछलकर डिब्बो के पायदाना पर खडे हो गये।

गाडी बुझी हुई बत्तिया के साथ चल पडी।

शिवकी के उदनीर गिण्टना म्ब के एग बैठकर आदीमिर इन्वीन न बग म कुल राखर तिनान घोर अभी कुल 71 ममर पहा निय हूए नय का आगता रहे। उगम उहान निय का ति एम भवनी भाति का ममर घोर म्म का मसिगाती घोर म्मूद बाबरर रगमे।

म्म म्मूमा मे पिरा हूमा था। प्रतिनारितारिगे उजर गिण्टना पण्य कर रह थ। मार तति का पूरा गिण्टना था ति एम भवता ममाजवानी मानभमि का म्मन बनाबर रगमे। प्रतिनारिगे मसिगा कगी जा रही ह घोर बिजवी हागी।

गागी म मव मान हूए थ। बजर भाबर हा वगन की रा के अघेरे म दयना हूमा मारधाती स इजा का भागे बडाव जा रहा था। बवल सादबियार्द बटानियन क मतिर ही पावता पर छड पहरा द रह थे। घोर बेजर व्नादीमिर इन्वीन ही मामरगी त धुधा उजाव म बल के अग्रबार के लिए नेग्र निय म थे।

उने गामने नीर की बथ पर तादज्जा वान्तान्तीनोन्ना हथली पर गाल टिबाव चुपचाप गोयी हुई था। व्नादीमिर इन्वीन त म्महिस्ता से उहें चारशोदार पट्टू भाड दिया। यह पट्टू मा न जब यह मयाशा के साथ म्मरहोम भापी थी, तब उह भेंट किया था। यह मा की माददास्त था

११ मान, १९१८ की शाम को र्पेशन गाडी सोवियत सरकार क सदस्या का लेजर सकुशल मास्ता पहुच गयी। प्रतिनारितारिया को साडफोड का कार्द मीठा नही मिला। लेनिन, अघिल रूसी केन्द्रीय वायवारिणा और जन कमिगारा की परिषद ने पत्रोपाद छोड दिया। अथ म मास्वा मावियत दश की राजधानी का गया।

शुरू मे व्नादीमिर इन्वीन, तादज्जा वास्तातीनोन्ना और मरीया इन्वीनिच्चा त्रेमलिन के सामन होटल "तशाल" म ठहरे। शीघ्र ही सारी जन कमिगारा की परिषद त्रेमलिन म रहा और काम करने लगेगी। पेत्राप्रद से अान के दूसरे दिन व्नादीमिर इन्वीन और तादज्जा वान्तान्तीनोन्ना मास्को की सैर बगन और त्रेमलिना देग्रो के लिए तिरले। साथ म उनके पुरान मित्र वाच-त्रूयेविच भी थे। यह जा कमितारा की परिषद क प्रथम सज्धी मामला के प्रभारी अधिगारी थे, इसतिए परिषद के त्रेमलिन म काम करने और रहने का इतजाम करवा उही के शिम था।

अक्तूबर के दिना मे क्रैमलिन पर यवेरा ने अधिकार कर लिया था। यहा से वे तोपा से गोले बरसाते थे। घमामान लडाई छिड गयी थी, पर क्रातिकारी टुकडिया ने सफेद गाडों और जारशाही के चाकरा को प्राचीन क्रैमलिन स बाहर फेंक ही दिया।

वसत, १९१८ म लडाइया के बाद से क्रैमलिन उजाड पडा हुआ था। बहुत सी इमारते गोला की मार और आग से खडहर हो गयी थी। जगह बेजगह टूटी हुई ईटा और काचो के ढेर लगे हुए थ, कूडा-करकट बिखरा हुआ था

व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोस्तान्तीनोव्ना ने मैदान पार किया। सामने शाही घटा पहाड की तरह खडा था। इस खूबसूरत, ताबे के घट को पुराने जमाने के कुशल मजदूर हाथो ने ढाला था। शाही ताप, क्रैमलिन की प्राचीन दीवारे और खूबसूरत मीनारे भी उनकी कुशल कारीगरी की गवाही दे रही थी। क्रैमलिन की हर चीज परोक्थाओ की याद दिलाती थी, हर चीज प्राचीनता और इतिहास की साक्षी थी।

व्लादीमिर इल्यीच ने कुछ सोचते हुए से दूर दष्टिपात किया। क्रैमलिन के टीले से मास्को का विहंगम दृश्य दिखायी दे रहा था।

और फिर वह मुस्करा पडे

“शत शत अभिवादन है तुम्हारा, मास्को!”

क्राति के कदम

बोल्शेविक पार्टी की मातवी कांग्रेस न जमनी के साथ युद्ध खत्म करने का फसला किया था। उसी कांग्रेस मे लेनिन ने एक सवाल और भी उठाया था। यह था बोल्शेविक पार्टी को कम्युनिस्ट पार्टी का नाम दन का सवाल।

तब उन्होंने कहा था “हमारा लक्ष्य कम्युनिज्म का निर्माण करना है। इसका मतलब है कि हम अपनी पार्टी को कम्युनिस्ट पार्टी नाम दना चाहिय।’

मजदूरों के साथ अपनी बहुसंख्य मुलाकातो म और अपन क्रैमलिन काम म काम करते हुए लेनिन हर समय नये समाज के निर्माण के बारे म सोचा करते थे। पहले, सबसे पहले कदम सबसे कठिन, सबसे महत्वपूर्ण होने

है। लेनिन उनके धारे में सोचते धवते नहीं थे। उनके धारे में वह जन कमिसारों की परिपद के मदम्या से परामश भी करते।

याकाव मिग्यादलात्रिच स्वेदलोन के साथ उनकी प्राय मुलाकात होती थी। स्वेदलोन सोवियतों की अखिर रूसी वन्द्रीय कायकारिणी के अध्यक्ष थे। दोनों साथ-साथ राजकीय मामला को हल करते।

लेनिन चाहते थे कि जब तक सोवियत सत्ता को युद्ध से फुरसत मिली हुई है, तब तक नये जीवन की मजदूर नीव डाल दी जाये।

इसके लिए हमने पहले उन्होंने मजदूर वगैरे का दरवाजा खटपटाया। "हम सबहारा को लोट बाहिनिया व नप-नुले बदमा की जरूरत है," उन्होंने "सोवियत सत्ता व तात्कालिक कायभार शीपक अपन विख्यात लेख में लिखा। पार्टी ने लेनिन की याजनाग्रा का समयन किया। यह लेख "प्रादा" और 'इन्वेस्तिया' में छपा। उमम जनता का विराट लक्ष्य से साक्षात्कार कराया गया था। कम्युनिस्ट, मजदूर और किसान लेनिन के पीछे थे और लेनिन में आस्था रखते थे।

त्रेमलिन में लेनिन के वक्ष में लिखने की मेज के पास ही बुनी हुई सीट और पीठवाली एव धाराम बुर्सी पडी हुई थी। व्लादीमिर इल्यीच को वह बहुत पसंद थी। शायद इसलिए कि बचपन में सिम्बीस्क वाले घर में भी ऐसी बुनी हुई कुसिया थी। उसे देखने ही उन्हें खाने के कमरे में वितायी हुई बचपन के दिना की सरदिया की शाम याद आ जाती। और जा बढ़िया-बढ़िया कितने उन दिना पडी थी, वे भी। वे दिन कितने सुखद थे।

लेनिन चाहते थे कि सोवियत देश में सभी मजदूरों और किसानों के बच्चों का बचपन वसा ही सुखी और आह्लादपूर्ण हो।

जार के जमाने में मजदूरों और किसानों के बच्चा के लिए शिक्षा पाना बेहद कठिन था। ऐसा कोई विरला ही होता था, जो स्कूल खत्म कर पाता हो। उच्च शिक्षा तो रही दूर की बात। अब मेहनतकशों के बच्चा के लिए शिक्षा के सभी दरवाजे खुले थे। जितना चाहो, जहा तक चाहो पढो! स्कूल, बालेज पुस्तकालय सब तुम्हारे लिए हैं।

युद्ध ने रुम को तबाह कर डाला था। लोग भुखमरी और ठंड से तस्त थे। मगर सबसे अच्छा राशन, सबसे अच्छा खाना बच्चों के लिए था।

उससे पहले कभी किसी राज्य में, उनत से उनत बूजुआ राज्या में भी, मेहनतकशों के बच्चा का, मेहनत करनेवाले लोग का इतना ध्यान नहीं किया गया था।

जारशाही के दिना में मजदूर बारह बारह घंटे—और कभी-कभी ता पंद्रह घंटे भी—काम करते थे। मगर जब सोवियत सत्ता आयी, तो लेनिन ने आदेश दिया सभी के लिए काम का दिन आठ घंटे से अधिक न हो।

पहले सबसे अच्छी जमीन जमींदारों और धनी किसानों के पास थी। मगर अब वह सारी जनता की संपत्ति बन गयी। कल कारखाने, रेलवेमार्ग, खानें, तेल उद्योग, बैंक, आदि भी राज्य के हाथों में आ गये। जमींदारों और पूंजीपतियों से कह दिया गया चाहते हैं तो काम करें। जो काम नहीं करेगा उस खान को नहीं मिलेगा।

य थे वे अभूतपूर्व परिवर्तन, जो हमारे देश में आये। क्रांति दुबला के साथ आगे बढ़ रही थी। और इस नये समाज, नयी व्यवस्था ने अगुआ थे व्लादीमिर इल्यीच और कम्युनिस्ट पार्टी।

गावो-देहातो में

क्रांति से बहुत पहले जब व्लादीमिर इल्यीच अथ साथियों के साथ जेनेवा में रहते थे, एक दिन रूस से एक युवती क्रांतिकारी आयी। उसका नाम था लीदिया अलेक्सांद्रोवना फोतियेवा। वह शीघ्र ही लेनिन की जोशीली सहायक बन गयी। वह तन मा से क्रांति के ध्येय को अपित थी। क्रांति के अगावा एकमात्र चीज जिसमें उनकी गहरी रुचि थी, वह था संगीत। कभी-कभी जब शामे खाली होती, बोल्शेविक लोग लेपेशीन्स्की के भोजनालय में एकत्र होते जो उनके लिए क्लब जैसा था, और लीदिया अलेक्सांद्रोवना पियानो पर ब्रीथोवन का "पैथेटिक सोनाटा" बजाता। व्लादीमिर इल्यीच की यह रचना बहुत पसंद थी। उसे सुनते हुए वह बित्तने भावविभोर, कितने विचारमग्न हो उठते थे।

क्रांति के बाद लीदिया फोतियेवा जन कमिसारा की परिषद की सचिव नियुक्त हुईं। वह हर समय काम में व्यस्त रहती। उनका निवास भी श्रेमलिन में ही था, ताकि परिषद के कामकाज में आसानी हो। उन्हें

इसकी पूरी जानकारी रहती कि लेनिन को कब किससे मिलना है, कब कहा जाना है और काम के लिए किम चीज की आवश्यकता है।

जन कमिसारा की परिपद के अध्यक्ष से मिलन के लिए बड़ी सच्चा में लोग आते थे।

“व्लादीमिर इल्यीच, किसी दूर गाव से कुछ किसान आये हैं और आप से मिलना चाहते हैं, एक दिन फोटियवा ने कहा।

“बुलाइये, बुलाइये।” व्लादीमिर इल्यीच ने जवाब दिया।

धूप और हवा से झुलसे चेहरोवाले दडियल किसान हरे मेजपोश म ढकी लबी मेज के पास बैठ गये। पहले वे कुछ झिझक रहे थे, मगर लेनिन की सादगी को देखकर हिम्मत बघ गयी।

लेनिन की सादगी से मानो उनकी बुद्धि भी प्रखर हा गयी। और लेनिन को यही चाहिये था। उनके लिए यह महत्वपूर्ण था कि वे अपनी हर बात को साफ-भाफ और दो टूक शब्दा में कहे।

“साथी व्लादीमिर इल्यीच, तुम हमसे बहुत बड़े हा,” दूर गाव से आये किसान बोले। “ज्ञान तुम्ह इतना है कि ”

“अरे, मैं जानता ही क्या हूँ,” व्लादीमिर इल्यीच ने आपत्ति की। “यही लीजिये, देहात के बारे में मैं कितना जानता हूँ? लगभग कुछ भी नहीं।”

“देहात के बारे में जो कुछ है हम तुम्हें बता सकते हैं।”

“बताइये, बताइये।”

“सबसे पहले तो यह कि किसानों को सोवियत सरकार बहुत पसंद आयी है, क्योंकि उसने जमींदारों को निकाल बाहर किया है, सीने तक पत्नी दाढ़ीवाले सबसे बूढ़े किसान ने बताना शुरू किया।

“हा, हा। आगे?”

“मगर सवाल कुलका का है। वे नयी जिंदगी का गला घाट देंगे, उसे चलने नहीं देंगे। व्लादीमिर इल्यीच, तुम्हें गरीब किसानों पर भरोसा करना है। कुलक सोवियत सरकार के साथी नहीं, दुश्मन हैं।”

लेनिन यह सब जानते थे। फिर भी उन्होंने गरीब किसानों को ध्या स सुना, अपनी जानकारी को परचा, आवश्यक नतीजे निकाले और कुछ समय बाद, १९१८ की गरमिया में एक नयी आज्ञापति, नया सोवियत कानून जारी किया।

यह आनक्ति गावों में गरीब किसानों की समितियाँ बनाने के बारे में थी, जिन्हें आगे चलकर "कामवेद" कहा जाने लगा। कुलका के विरुद्ध सघन में ये समितियाँ ही सोवियत मत्ता का मुख्य सहारा सिद्ध हुईं।

मगर कुलक कौन थे? आज सोवियत देश में उनका नामोनिशान भी बाकी नहीं रह गया है।

कुलक भी किसान थे। मगर खाते-पीते और कभी-कभी बहुत समृद्ध भी। वे वृषि उपज की चोरबाजारी करते थे, दूसरों की मेहनत के भरोसे रहते थे। जब और पैसा हो जाता था, तो और जमान खरीद लेते थे और भूमिहीन गरीब देहातियों से उमपर काम करवाते थे। गरीबों का अनाज वसन्त तक भी नहीं चल पाता था। तब वे कुलका से अनाज उधार लेते और इसके बदले में उनकी जमीन जोतते और शरद आने पर, जब फसल पकती, तो जितना अनाज उधार लिया था, उसका दोगुना वापस देते। और बाँई चारा था भी नहीं। गरीब किसान गुलामी करन के लिए मजबूर था। वह भूखा रहता, दाने-दाने के लिए तरसता, मगर कुलक के घर में अनाज के अवार लगे रहते। कुलक बस इसी का इन्तज़ार करता कि अनाज महंगा हो, और महंगा हो अपने मुनाफे के लिए वह पड़ोसी का गला काटने के लिये भी तैयार रहता था।

शहरों में भुखमरी निरन्तर बढ़ती जा रही थी। क्या किया जाय? मजदूरों, नौकरिपेशा लोगों, बच्चा, लाल सेना के सिपाहियों को क्या खिलाया जाये? अनाज कैसे प्राप्त किया जाये?

ऐसी बात नहीं थी कि देहातों में अनाज नहीं था। अनाज था। सिर्फ कुलक उसे देना नहीं चाहते थे। उन्होंने उसे छिपा दिया था।

यह सरासर अत्याय था। एक तरफ तो शहरों में लोग रोटी के टुकड़े टुकड़े के लिए तरस रहे थे और दूसरी ओर कुलकों के गोदाम अनाज से भरे पड़े थे। उसे गरीब किसानों ने उगाया था। वह कुलकों का नहीं, आम जनता का था।

इसी सब बातों को सोचते हुए एक दिन लेनिन ने मजदूरों का बुलाया।

"साथी मजदूरों," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा, "कारखानों और फ़ैक्टरियों में अनाज इकट्ठा करनेवाली टुकड़ियाँ बनाइये और गावों में जाइये। वहाँ गरीब किसानों की समितियाँ हैं। वे हमारे साथ हैं। और

मज़दूरे किसान भी हमारी तरफ हो जायेंगे। आप उन्हें बताइये कि गावा में सोवियत सत्ता को मज़दूर कैसे करना है और वे आपको बतायेंगे कि कुलकी ने अनाज बहा छिपा रखा है।

इसके साथ ही लेनिन ने एक आज्ञापत्र तयार की कि देश का सारा अतिरिक्त अनाज गरीब किसानों की समितियाँ और मज़दूर टुकड़ियों को दे दिया जाये।

जन बमिसारा की परिषद ने उसका अनुमोदन किया। इस तरह क्रांति के पहले सालों में लेनिन और सोवियत सरकार ने मज़दूर जनता को भुखमरी से बचाया।

हमला

ध्रुव वृत्त के पार बैरट सागर के तट पर १९१४ में मूर्मान्स्क नाम का एक नया शहर बसाया गया था। यह उत्तर में हमारे देश का एक छोटा सा, मगर महत्वपूर्ण बंदरगाह था।

१९१८ के बसंत में एक दिन सुबह सुबह, जब अभी समुद्र के ऊपर से कुहासा छटा भी नहीं था, कुहासे के बीच से एक सैनिक जहाज की बाली रूपरेखा प्रकट हुई। उसकी तोपें निशाना साधे हुई थीं। यह युद्धपोत था, जो मूर्मान्स्क बंदरगाह में घुस आया था।

शीघ्र ही, उतने ही अप्रत्याशित ढंग से एक और युद्धपोत उसकी बगल में आकर खड़ा हो गया। यह फ्रांसीसी युद्धपोत था। उसके पीछे पीछे अमरीकी युद्धपोत ने भी बंदरगाह में प्रवेश किया।

सोवियत रूस की धरती पर विदेशी फौजे उतर आयीं।

उन्हें एटेंट ने भेजा था। उस समय ब्रिटेन, फ्रांस और संयुक्त राज्य अमरीका के सैनिक गठबंधन को एटेंट कहते थे। यह पूँजीपतियों का, बूर्जुआ सरकारों का गठबंधन था।

एटेंट रूस में सोवियत शासन का उलटना चाहता था। उसे डर था कि वही दूसरे देशों के मज़दूर भी रूसियों की देखादेखी अपने यहाँ क्रांति न कर दें।

गरमियों के मध्य में एटेंट ने युद्धपोतों ने श्वेत सागर में प्रवेश किया।

यहाँ श्वेत सागर में प्रचण्ड उत्तरी दिना नदी आकर गिरती थी। मुहाने से कोई पचास वस्तु की दूरी पर, बँडा और जहाज़ों से खचाखच

भरों इस चट्टजला नदी के साथ-साथ लकड़ी के फुटपाथों, गोठियां, लकड़ी के गोदामों और मिलों वाला एक सवरा भा शहर बसा हुआ था। दूसरी तरफ से असीम टुण्ड्रा शहर को छूता था। यह हमारा सैनिक और व्यापारिक बदरगाह अखांगेल्स्क था।

एटेंट न अखांगेल्स्क पर बग्जा कर लिया। बूजुआ वग ने एटेंट के हमले पर बेहद खुशिया मनायीं। दोनों का एक ही सपना था सोवियत सत्ता को अपदस्थ करना। अखांगेल्स्क में प्रतिनातिवारी विद्रोह शुरू हो गया। असमान तडाईं में सैकड़ों मजदूर, लाल सैनिक और सोवियत जहाजी वीरगति को प्राप्त हुए।

अब तक खामोश बैठे व्यापारी और बूजुआ फिर सक्रिय हो गये। जारशाही अफसरो ने अपनी बरदिया फिर पहन ली। गिरजाघरों के घंटों जोर-जोर से बजाये जाने लगे। धन्यवाद प्रदर्शन अनुष्ठान शुरू हो गये।

उत्तर में प्रतिनाति ने हमला शुरू कर दिया था।

प्रतिनाति की आग सुदूर पूर्व में भी फैली हुई थी। साइबेरिया और उराल से होते हुए वह वाल्गा प्रदेश तक पहुंच गयी थी। शत्रुओं के युद्धपोतों ने ब्लादीवोस्तोक के बदरगाह में अपना सैनिक उतार दिये थे।

साइबेरिया के गावों में कुलकों की बगावत शुरू हो गयी थी। गरीब किसानों की समितियां और कम्युनिस्ट उनके निम्न हमलों का शिकार बन रहे थे।

दोन और कुवान प्रदेशों के शहरों और देहातों में खून बह रहा था। सफेद गाड़ों के जनरलों ने दोन और कुवान पर बग्जा कर लिया था। उक्राइना पर जर्मनों का बग्जा था।

सोवियत रूस के चारों ओर शत्रु का घेरा बसता जा रहा था।

सुबह का समय था। सूरज अभी नहीं उगा था। सिर्फ क्षितिज पर हल्का-हल्का उजाला होने लगा था।

ब्लादीमिर इत्योच अेमलिन के अपना फ्लट से निकले। जन कमिसारों की परिषद के अध्यक्ष का काय कक्ष थोड़े ही कदमों की दूरी पर था।

गलियारे के आखिर में, बक्ष के दरवाजों पर सतरी खड़ा था।

“नमस्ते,” ब्लादीमिर इत्योच ने सतरी का अभिवादन किया।

ही सबता है कि यह नियमसगत नहीं था, पर व्लादीमिर इत्योच हमेशा सन्नरिया को 'मस्ते' करत थे। मतरी लनिन का देखते ही तनकर खडा हो गया और आश्चय से सोचन लगा "ये भला साते कर है?"

कुछ ही समय पहले, लगभग भार होने पर ही, जन कमिसारा की परिपद के अध्यक्ष घर लौटे थे। और अब सूरज अभी निबला भी नहीं कि पुन काम पर आ गये।

लेनिन के यथा मे गिडविया व वीन दीवार पर खडा सा नक्शा टगा हुआ था। व्लादीमिर इत्योच हाथ पीठ के पीछे बिये हुए देर तक उसमे मोर्चे की साइना को देखन रहे। वह उन सभी शहरा और जगहा को जानते थे, जहा लडाई चल रही थी। वह सभी कमाडरो और कमिसारा को भी जानते थे और उनक चरित्र, स्वभाव और योग्यता को जानन की कोशिशें करते थे।

जब शत्रुघना ने सोवियत घरनी पर आक्रमण किया तो जनता म से बहुत से प्रतिभाशाली कमाडर पदा हो गये थे।

मिसाल के लिए वमीली इवानोविच चपायेव को ही लीजिये। वह असली जन नायक थे। उनके शौर्य और सैनिक सूत्रबूझ के बारे म कहानिया तक गडी जा चुकी थी। और क्लेम बोरोशीलाव का नाम तो देश के बच्चे बच्चे की जवान पर था।

लेनिन ने फ्रूजे के बारे मे भी बडे आदर और भरोस के साथ सोचा। निसवर, १९०५ मे बोल्शेविच मिखाईल वसीत्येविच फ्रूजे ने मास्को म प्रेस्न्या के विद्रोही मजदूरो की सहायता के लिए इवानोवो बोरोसेन्स्क से आय मजदूरा की टुकडी का नेतृत्व किया था और अब एक सबसे कठिन मोर्चे के कमाडर थे।

व्लादीमिर इत्योच ने मन ही मन सभी मोर्चों का चक्कर लगाया। बोरोशीलोव, बुधोनी, लाजो, कोतोव्स्की, श्चोस, तुखाचव्स्की, ब्ल्यूखेर उत्तरी मोर्चा, दक्षिणी मोर्चा, पूर्वी मोर्चा
पूव मे साइबेरिया, उराल और वोल्गा। पूव मे ही अनाज का मुख्य स्रोत भी है

एटेंट की महायता से सफेद गाडी और कुलका ने पूव के अनाज उत्पादक इलाका पर कब्जा कर लिया था। इस तरह एटेंट मजदूरो और किसाना के राज्य का भूखा मार डालना चाहता था।

“लाल सेना का मुख्य प्रहार पूर्वी मोर्चे पर ही होना चाहिये,” व्लादीमिर इल्यीच ने सोचा। “वोल्गा इलाके और साइबेरिया से सप्त गाडों का भगाना और कुलका को कुचलना अत्यावश्यक है।”

व्लादीमिर इल्यीच ने बैठकर मोर्चों से आयी रिपोर्टों को एक बार फिर पढा। वन वह दुजेर्जीन्स्की, स्वेत्लोव, चिचेरिन और दूसरे सहयोगियों के साथ देर तक मार्चों की स्थिति के बारे में विचारविमर्श करते रहे थे। फैमले ले लिये गये थे। अब कमांडरों को जवाब लिखना और आवश्यक आदेश देना ही बाकी रह गया था। व्लादीमिर इल्यीच तब तक काम करते रहे, जब तक सुबह का हल्का पीला उजाला सारे आकाश पर नहीं फल गया और छतों के पीछे से गरमियों का सूरज ऊपर नहीं झाकने लगा और लीदिया अलेक्सान्द्रोव्ना आकर यह न कह गयी कि बाहर लोग उनसे मिलने के लिए बठे हैं। व्लादीमिर इल्यीच ने घडी देखी। हा, मिलनवाले नियत समय पर ही आय हैं।

“साफ लगता है कि सैनिक हैं,” उन्होंने मन ही मन सोचा।

फिह कागजा को फाइल में रखकर फोटियेवा को देते हुए कहा

“इह तुरत भोजना है।”

और चेहरे पर हाथ फेरा। मानो सभी चिन्ताओं और झुरिया का साफ कर रहे हो, ताकि दूसरे न देख सके कि वह कितने चिन्तित हैं, कितने आशंकित हैं।

सैनिकों ने वृक्ष में प्रवेश किया। ये लाल सेना के कमांडर थे। लेनिन उन्हें अच्छी तरह जानते थे। उनमें एक भूतपूर्व जारशाही सेना का जनरल भी था।

“हा, तो वताइय, हमारी हमले की योजना क्या है?” लेनिन ने भूतपूर्व जनरल का संबोधित करते हुए पूछा।

क्या हैरानी की बात नहीं थी कि व्लादीमिर इल्यीच जारशाही जनरल से सैनिक मामला में परामर्श कर रहे थे? आखिरकार यह आदेश उन्होंने ही तो दिया था कि लाल सेना में सेवा करना बड़े सम्मान की बात है और यह सम्मान अब से सभी गरीबों, मजदूरों, मेहातकशा और उनी सन्तानों का दिया जाता है, कि लाल सेना में अभिजात वर्ग और कुलका के लड़कों का न लिया जाय, कि कम्युनिस्टों का ही लाल सेना में कमांडर नियुक्त किया जाय।

और अब अचानक यह ज़ारशाही के ज़माने का जनरल। यह कैसे हो सकता है? लेकिन यह जनरल लेनिन के ध्येय में, लेनिन के काम में आस्था रखता था। अतः आश्चर्य नहीं कि लेनिन ने ऐसा ज्ञानकार और ईमानदार सैनिक विशेषज्ञा को भी लाल मत्ता की मदद के लिए बुलाया था।

जनरल ने लवी छड़ी से नक्शे पर दिखाते हुए व्लादीमिर इल्यीच का हमरे की योजना बताया।

व्लादीमिर इल्यीच ने जनरल की योजना का समर्थन किया, क्योंकि कल, परसो और आज सुबह फिर उहाने अकेले में और साथिया के साथ भी विल्कुल ऐसी ही योजना तैयार की थी और इस समय वह अपने विचारों, निष्पत्ती की सत्यता को जांच रहे थे।

“हमारा यह आपरेशन शानदार साबित होना चाहिये,” छड़ी नीचे रखते हुए जनरल ने सतोप के साथ अपनी बात खत्म की।

“शानदार साबित हो या न हो, इसका कोई महत्त्व नहीं,” व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। “असल महत्त्व है विजय का क्या, आप लोग क्या सोचते हैं?” इस बार उहाने लाल सेना के कमांडरों से पूछा।

वे देर तक और विस्तार से योजना की सभी बारीकियाँ के बारे में अपने विचार प्रकट करते रहे।

निष्पत्ती सब का एक था और अटल था।

“साथियों, स्थिति बहुत गंभीर है,” व्लादीमिर इल्यीच उह विदा देते हुए कहा। “मगर लाल सेना को अवश्य जीतना है।”

नीचताभरा हमला

व्लादीमिर इल्यीच, नादेज़्दा कोन्स्तातीनोव्ना और मरीया इल्यीनिच्चा रसोई में नाश्ता कर रहे थे। ऐसी बात नहीं कि उनके क्रेमलिन वाले फ्लॉट में खाने का कमरा नहीं था। पर वहाँ वे सभी इक्लू होते थे, जब कोई मेहमान आया होता था और साथ बैठकर चाय पीते हुए कामकाज की बातें करनी होती थी।

शुक्रवार का दिन था। मास्को में यह नियम था कि शुक्रवार को केन्द्रीय समिति के सदस्य और जन कमिन्गार मजदूरों की मीटिंग में भाग

दिया करते थे। मास्को की पार्टी समिति ने व्लादीमिर इल्यीच को पहले से ही बता दिया था कि इस शुक्रवार को उन्हें किस मीटिंग में भाषण देना है।

अचानक पेत्रोग्राद से तार मिला। जन कमिसारो की परिषद का कार्यालय का तारघर रात दिन काम करता था। इसलिए तार व्लादीमिर इल्यीच का तुरंत पहुंचा दिया गया।

उसमें लिखा हुआ था कि पेत्रोग्राद चेका के अध्यक्ष साथी उरीत्स्की को हत्या हो गयी है। थोड़े ही समय बाद मास्को की पार्टी समिति से टेलीफोन आया

“साथी व्लादीमिर इल्यीच, मास्को समिति की राय है कि आप आज का भाषण स्थगित कर दें। खतरा है। प्रतिभ्रातिकारी गुस्ताखी पर उतर आये हैं।”

‘अरे, आप समझते हैं कि भेडियो के डर से क्या जंगल में जाना छोड़ दूँ?’ व्लादीमिर इल्यीच ने जवाब दिया और तंजी से अपने त्रैमलिन कक्ष की ओर चल दिये।

उरीत्स्की की हत्या हो गयी है। उनसे पहले एक अन्य प्रमुख बोल्शेविक बोलोदास्की को भी मार डाला गया था।

प्रतिभ्रातिकारी तत्व केन्द्रीय समिति और सरकार के सदस्यों को एक एक करके खत्म करने पर तुले हुए थे।

लेकिन यह कैसे हो सकता था कि व्लादीमिर इल्यीच मज़दूरों की सभा में न जायें। वे इन्तजार कर रहे होंगे।

कार आ गयी। हमेशा की तरह ड्राइवर स्तेफान काज़ीमीराविच गील कार में बठा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। आज व्लादीमिर इल्यीच को दो अलग अलग इलाकों में मज़दूर सभाओं में भाषण करना था। शाम को जन कमिसारो की परिषद की बैठक थी।

“साचता हूँ कि भाषणा के बाद परिषद की बैठक के लिए ठीक समय पर पहुंच सकूंगा, व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

‘आपमें इतनी सारी ताकत कहाँ से आ जाती है, व्लादीमिर इल्यीच?’

उसने लेनिन का संपूजाब्धायी सबक पर स्थित भूतपूर्व मिगेलमन कारगाने में पहुंचा दिया। व्लादीमिर इल्यीच यहाँ पहल भी आ चुक थे।

मज़दूर हाल ही में बनायी गयी लकड़ी की एक बड़ी सी इमारत—

तोपो के गोले बनानेवाले वकशाप—मे इकट्टे हो रखे थे। कोई बठा हुआ था, तो कोई लेथ के पास या गलियारे में खड़ा हुआ था। सबके चहरा पर गभीरता और एकाग्रता का भाव था।

लेनिन ने अपने भाषण में गृहयुद्ध और सफेद गाड़ों के गिरोहों के विरुद्ध सघष की चर्चा की।

इस वकशाप के मजदूर सफेद गाड़ों के विरुद्ध लड़ने के लिए ही गोले तैयार करते थे। ज़रूरत पड़ने पर वे मोर्चे पर जाने के लिए भी तैयार थे।

लेनिन ने अनुभव किया कि मजदूर किसी भी कीमत पर अपना कारखाना, अपनी सत्ता पूजीपतियों का वापस देना तैयार नहीं है।

तो यह है, साथी गील, हमारी शक्ति का स्रोत। मजदूर बग ही वह बटरी है, जो हममें इतनी ताकत भरती है।

मीटिंग खत्म हो गयी। मजदूरों से घिरे हुए लेनिन वकशाप से निकले। गील ने पलक चपकते ही कार स्टार्ट कर दी। वह सतक था। लोग की इतनी अधिक भीड़ और ऊपर से ऐसा अशांतिपूर्ण समय। ड्राइवर गील को उरीत्स्की की हत्या के बारे में मालूम था। अगुआ हो, व्लादीमिर इल्यीच जल्दी से जल्दी कार में बैठ जायें मगर लोग उन्हें छोड़ नहीं रहे थे। चारों तरफ से सवाल पर सवाल पूछे जा रहे थे। व्लादीमिर इल्यीच की जवानी मानो लौट आयी थी। वह बड़े उत्साह से उनके जवाब दे रहे थे। अचानक वही से धाय धाय की आवाज़ हुई। यह क्या? गोली चली है? व्लादीमिर इल्यीच एकाएक कुछ समय न पाय। वायें हाथ में कोई चीज़ लगी थी। वह लड़खड़ाये। तभी फिर गोली चली। गरदन में एक ज़बदस्त टीस उठ गयी। व्लादीमिर इल्यीच गिरने लगे। तीसरी गोली पीठ पर ओवरकोट को रगड़ती निकल गयी।

“लेनिन को मार डाला।” भीड़ हताश स्वर में चिल्लायी।

पतले लंबे चेहरे और काली आधावाली एक औरत पिस्तौल जमीन पर फेंककर फाटक की ओर भागी। लोग हत्यारी प्रतिनानिवारिणी को पकड़ने के लिए दौड़े।

“व्लादीमिर इल्यीच! साथी लेनिन!” गील ने पुकारा।

“पर चलो,” सफेद पड़े हाठा से व्लादीमिर इल्यीच बुदबुगाय

मजदूरों ने उठकर वार में बैठने में मदद दी। भीड़ में मौत का सा सनाटा छा गया। लगा कि लेनिन की रथ रथकर चलती साम सभों सुनायी दे रही थी।

वार पूरी रफ्तार से क्रेमलिन के लिए चल पड़ी।

‘व्लादीमिर इल्यीच, हम आपको उठाकर ले चलते हैं,’ घर पहुँचने पर गोल ने कहा।

मगर व्लादीमिर इल्यीच राजी नहीं हुए। दृढ़ बेहद बढ़ गया था। कमीज खून से तर हो गयी थी। फिर भी वह गोल और मजदूरों का सहारा लेकर खुद ही सीढियाँ चढ़ने लगे। धीरे-धीरे और खामोशी से तासरी मजिल तक। उफ, ये सीढियाँ भी कितनी लंबी, कितनी ऊँची और मुश्किल हैं!

भयस्तब्ध मरीया इल्यीनिच्चा उनकी तरफ दौड़ी।

‘बोलोद्या! बोलोद्या!’ वह चिल्लायी।

“कोई बात नहीं। थोड़ा सा धायल हो गया है ठीक हो जायेगा,” व्लादीमिर इल्यीच ने बड़ी मुश्किल से कहा। “मयाशा, धबराओ नहीं। नाचा को डराना नहीं।”

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना घर पर नहीं थी। वह काम पर गयी हुई थी।

उधर बैठक के लिए सभी जन कमिसार इकट्ठे हो गये थे। व्लादीमिर इल्यीच ने ही नौ बजे का समय तय किया था और सभी जानते थे कि किसी का दर से आना उन्हें पसंद नहीं था। पहली बार और अनेकी बार जन कमिसारों के परिपद के अध्यक्ष का खुद दर हो गयी

चारखानेदार पट्टू से ढके बिस्तर पर सावधानी से व्लादीमिर इल्यीच को लिटा दिया गया। वह कमजोर हो गये थे। चेहरा सफेद पड़ गया था।

फ्लट के दरवाजे खुले हुए थे। भय से किकत्तव्यविमूढ़ साथियों की भीड़ जमा हो गयी थी, डाक्टर भी आ गये थे।

“डाक्टर, व्लादीमिर इल्यीच की जान को तो कोई खतरा नहीं है न?” साथी आशा भरे स्वर में पूछ रहे थे।

खतरा? खतरा बहुत है

एक एक मिनट एक एक युग की तरह बीत रहा था। तभी नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना भी काम से लौट आयी। दरवाजे खुले हुए क्यों हैं? घर में इतने लोग क्या हैं?

किसी ने सहानुभूति के साथ उनका तथा सहलाया। वह समन गयी और बस इतना ही पूछा

“जिंदा हैं?”

लेनिन के कमरे से बराहन की आवाज आयी। वह तनवर घड़ी हुई और सूखी आँखों से कमरे की ओर बढ़ी। व्लादीमिर इल्यीच ने उन्हें देखा और सायास मुस्कराया

“धराम्रो नहीं, नाया। आतिवारिया के साथ ऐसा कभी भी हो सकता है। मामूली सा धाव है। जल्दी ही ठीक हो जायेगा ”

और आँखें बंद कर लीं। उनकी नाडी मंद पड़ रही थी। हासत लगातार बिगड़ती जा रही थी।

सकट के साल

जन कमिसारो की परिपद के गलियारे में तार मशीनें लगातार छटखटा रही थी टा टा, टा टा, टा-टा फौजी ओवरकोट पहने एर आपरेटर ने मशीन से निक्लते फीते का उठाया एर घास तरह की जल्दवाजी से पढा और गलियारे के आधिर मे लेनिन के पत्र में पहुँचाने के लिए दौड़ा।

दरवाजा नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना ने खोला।

“जाइये, तुरत व्लादीमिर इल्यीच का दे दीजिये,” उन्होंने कहा। स्वयं जाकर तार देने के आदेश से उत्तेजित आपरेटर ने छोटे तगरे में प्रवेश किया।

वहाँ चारखानेदार पट्टू से ढकी एक चारपाई थी। उसी वसत में खिडकी के पास एक लिखन का मेज थी। व्लादीमिर इल्यीच मेज के पास बठे पढ़ रहे थे। बाया हाथ पट्टी में लटका हुआ था। वह बिल्कुल पहले जैसे ही दीख रहे थे। पहले जसी ही पनी आँखें और पहले जैसी ही फुर्तीली हरकते। हा, कमजोर और दुबले अवश्य हो गये थे।

तार लाल सेना के योद्धाम्रा ने भेजा था।

“प्रिय व्लादीमिर इल्यीच, आपके जन्मनगर पर वज्जा आपरा एर धाव का जवाब है और दूसरे धाव का जवाब समारा पर वज्जा होगा।’
‘शाबाश! लेनिन अपनी प्रसन्नता को न छिपा पाय। “मृत मनु

शुक्रिया।" श्रीर तार को एक बार फिर बुलद आवाज में पढ़ा 'आपने जमिनगर पर कब्जा ' गुना, गांधी आपण्टर, हमारी फौज न सिम्बीस्व पर कब्जा कर लिया। नाझा, मुन रही हा, बितनी शानदार सफलता है?"

व्लादीमिर इत्योच ने तुरत जवाबी तार लिख दिया। उमम उहान तार मँनिवा को बधाई दी थी और लिखा था कि सिम्बीस्व पर कब्जा उाये घाव के लिए सबसे अच्छा मरहम है।

"इस समाचार से बढकर मरहम मरे लिए और कुछ नही है। अब चया हात डेर नही लगेगी।"

श्रीर सचमुच कुछ दिन बाद "प्राञ्ज" में डाक्टरों बुलेटिन छपी कि व्लादीमिर इत्योच स्वस्थ हो गये हैं।

डाक्टरा ने लेनिन को काम पर लौटने की इजाजत दे दी।

देश के ऊपर छापी हुई विपत्ति और गभीर होती जा रही थी। एटेंट ममय गया था कि लाल सेना के साथ लडना मजबूक नही है, इसलिए उसन और फौजे बुला नी थी। चौदह राष्ट्रों ने मिलकर सोवियत धरती पर हमला शुरू किया। सोवियतों का देश चारों तरफ से घिरा हुआ बिला बन गया।

'घेरे में पडे किले में हर चीज युद्धकाल के अनुसार होनी चाहिये,' व्लादीमिर इत्योच ने कहा और प्रस्ताव रखा कि सभी नागरिका के लिए काम करना अनिवार्य बना दिया जाये। अब से सभी सोवियत कामा को बल काग्यानों, दफ्तरो, खता और रेलवे में काम करना होगा। दशका सियो, लाल सेना की मदद करो।

लाल सेना को हथियारों की जरूरत है। मजदूर साधिया, क्याण हथियार तैयार करो।

लाल सेना को जूना-कपडे की जरूरत है। मजदूर साधियो, ज्यादा से ज्यादा जूते, बरदिया, बोट तैयार करो।

जितने कपडा की जरूरत थी, फक्टरिया नही सी पाती थी। जूतों के लिए चमडा पूरा नही पडता था। कपडे की कमी थी। क्या किया जाये? जनता और लाल सेना की जरूरत कैसे पूरी की जाये?

सरकार और पार्टी ने लोगो से गरम कपडे इकट्ठे करने की अपील की। लोग सग्रह-केन्द्रा में फर के बोट, स्वीटर, ऊनी मफलर, मोजे लाने लगे। मगर बूर्जुआ बग अपनी चीजें नही देना चाहता था।

“वज्रुप्राप्ता न गभी भ्रतिरिक्वा गरम वपडे जज वरता जहरी है।
 उनका पाम बोट से भी चल सकता है लिन ने दजेर्जोन्की स कहा।
 “मेहनतवश अपना मज कुछ ने रह है। घमीर लाग भी दें।”

दजेर्जोन्की चेवा ने अध्वदा थे। उहाने चेवा के वमचारिया का घमीरा
 रदमा के घरा मे भेजा, भ्रतिरिक्त वपडा और जूना का इवट्टा विया।
 बाद न इनमे से कुछ चीजें तगे पटेपान मजदूरा के बीच मुफ्त बाटी गयी
 और कुछ मोर्चे पर लट रहे लाल मीनिका रो भेजी गयी।

लेकिन मवमे भयकर चीज तो भुघमरी थी। शहरा म राशन की
 व्यवस्था कभी से लागू थी। पर घनाज, घान की चांजे फिर भी पूरी नहीं
 पडती थी।

मावियत सरकार न एव नया, बटार वानूा पाम विया, जिसवे
 अनुमार विगाना के लिए माग भ्रतिरिक्त घनाज और घान की चीजें
 सरकार के हाथ बेचना अनिवाय हा गया। घाटा, सूजी माग, मवघन,
 घालू, मज कुछ नाल मेना, मजदूरा और दफ्तरी वमचारिया का दिया
 जान लगा। विगाना का इमन दिवमत ता हूर, पर और वाई उपाय था
 भी ता नहीं।

ऐसी व्यवस्था को, जब सोवियत देश म भ्रतिरिक्त खाद्य सामग्री
 राज्य का बेचन और अनिवाय थम का वानून लगा था जय शारी जनता
 मोर्चे के लिए धाम करती थी, जब घान का राशन और वपडा का विशेष
 आदेश पत्रा के अनुमार बाटने की व्यवस्था थी, क्याकि खाने-वपडे की
 बडी भारी कमी थी, और जब आधी तवाह हुई पडी परिवहन व्यवस्था
 मोर्चे के लिए शस्त्रास्त्र और सनिक् ढोने मे व्यस्त थी और रेलगाडिया म
 विशेष पासो मे ही यात्रा की जा सकती थी, ऐसी व्यवस्था का लेनिन ने
 युद्धकारीन कम्पुनिश्म का नाम दिया। कितन भयकर माल थे वे।

सोभाग्य से हा भयकर साला मे सोवियत सत्ता की वागडाग लिन के
 हाया न थी।

सोकोलिनकी की वारदात

व्लादीमिर इल्यीच की बीमारी के समय, जब वे कुछ दिना तब मौन
 के वगार पर खडे थे, नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना अपने भय और व्याकुलता
 को छिपाये रही थी। लोग उनकी अविचलता को देखकर दग रह जाते थे।

मगर बाद में जब व्लादीमिर इल्यीच चगे हुए, तो खुद बीमार पड़ गयी। और वह भी बहुत गभीर। डाक्टरों ने कहा कि केवल स्वच्छ, ताजी हवा ही मदद कर सकती है।

उन दिनों सेनेटोरियम तो थे नहीं। मगर दुबल वच्चों के लिए मास्को के बाहर सोकोलिनकी में पाक से घिरा हुआ एक स्कूल था। यहाँ ताजी हवा की कमी नहीं थी।

काफी अनुनय विनय के बाद नादेज्दा कान्स्तातीनोना को इस स्कूल में रहने के लिए राजी कर लिया गया।

लेनिन बहुत व्यस्त रहते थे। हर रोज रात तक वह सरकार कामकाज में लगे रहते। देश में हर चीज का नये सिरे से निमाण हो रहा था और लेनिन देश के कणधार थे।

फिर भी शाम को एक-आध घंटे का समय निकालकर वह गील से कहते “चले, नादेज्दा कान्स्तान्तीनोव्ना को दफ आर्यें।”

सरदिया आ गयी थी। मास्को बर्फ से ढक गया था। छक्केवाले दिन-रात काम करने पर भी शहर से पूरी बर्फ नहीं हटा पाते थे, इसलिए सड़कों पर दो-दो मजिल ऊंचे ढेर लगे हुए थे।

जनवरी, १९१९ के ऐसे ही एक बर्फीले दिन सोकोलिनकी के स्कूल में नववर्ष का समारोह मनाया जाना था। व्लादीमिर इल्यीच ने उसमें उपस्थित होने का वायदा किया था। शाम को वह मरीया इल्यीनिच्ना के साथ तैयार हुए और नादेज्दा कान्स्तान्तीनोव्ना के लिए एक बरतन में दूध लेकर सोकोलिनकी के लिए चल पड़े।

हमेशा की तरह कार में ड्राइवर की सीट पर गील बठा था। राय में सुरक्षा विभाग से चेवानोव नाम का एक आदमी और था।

रविवार का दिन था। सड़कों पर लोग बहुत थे। दोनों ओर बर्फ के ढेर लगे होने की वजह से सड़क घाट्या की तरह तंग हो गयी थी। कुछ-कुछ जगहा पर तो उनसे गुजर पाना भी कठिन था। फिर भी गील बड़े सधे हुए ढंग से लोग और बर्फ के ढेरों के बीच में कार को बढ़ाये जा रहा था। कार बिना रुके जा रही थी।

1. [अचानक मोनालिनी के निकट रनवे पुन व पाग एन गुनगान जगट पर तीन आदमिया उ रास्ता रोक लिया।

“रुना। नहीं तो गाली चला देंगे!”

गोल आगे निरल जाना चाहता था। पर व्लादीमिर इल्यीच न रक्ने का आदेश दिया। व्लादीमिर इल्यीच ने सोचा कि ये मिलीशिया के आदमी हैं। लडाई का जमाना है, इसलिए यह चेक करना मिलीशिया का काम है कि बार मे गहर से बाहर कौन जा रहा है। और अगर वे लोग वरदी नहीं पहने थे, तो उस समय मिलीशिया की कोई विशेष वरदी थी भी नहीं।

बार रुक गयी। तीन हट्टे-बट्टे आदमिया न उसे घेर लिया। फिर दरवाजे धोलकर पिस्तौल दिखाते हुए कहा

“बाहर निकलो।”

“म लेनिन हू,” व्लादीमिर इल्यीच न कहा।

वह अभी भी सोच रहे थे कि ये मिलीशियावाले हैं। लेकिन यह क्या? उनमे से दो आदमिया ने व्लादीमिर इल्यीच की कनपटियो पर पिस्तौल तानी हुई थी। उन्होंने उनने ठडे फौलाद को महसूस किया। तीसरे न जो भेड की घान की कावेशियाई टापी पहन था और जिमका चेहरा पीला और उहण्ड था, जल्दी-जल्दी उनकी जेबें टटोली और क्रेमलिन का पाम और छोटी सी पिस्तौल निकान ली।

इसके बाद तीना गुण्डे बार म बठे और रफूचक्कर हो गये। बार नजरा म ओझल हो गयी। यह सारा काण्ड इतनी जल्दी हुआ कि कोई भी एकदम आगे मे न आ सका।

कुछ क्षण तक व्लादीमिर इल्यीच गुस्से मे बीखलाए हुए चुप रहे। फिर धिक्कारते हुए बोले

“शम की बात है। हम इतने लोग ह, फिर भी उह बार समत भागने दिया।”

‘व्लादीमिर इल्यीच, मैं उनपर गोली इसलिए नहीं चलायी कि कही वे आपको मार न दें,” गोल भी बेहद उत्तेजित था।

“हा, ठीक ही किया। झगना बेकार था। वे हमसे इक्कीस ही पडते थे,” व्लादीमिर इल्यीच ने सहमति जतायी।

फिर साथी चेवानोव पर नजर जो डाली, ता ठहाका लगाकर हस पडे। इस तरह का ठहाका केवल वही लगा सकते थे। मरीया इल्यीनिच्ना और गोल भी एकाएक हमने लग गये। केवल चेवानोव ही नहीं हसा, उसके हाथ म दूध का बतन था।

“एकमात्र चीज, जो उन गुण्डा ने नहीं लूटी,” हसते-हसते ब्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

और चेका के सदस्य चेवानोव से दिल्लगी करते हुए, जो हक्का-बक्का सा होकर एक हाथ से जेब में रिवाल्वर को टटाल रहा था और दूसरे से कमबख्त बतन को पकड़े था, सब पास ही में स्थित सोकोलिनकी का इलाकाई सोवियत के दफ्तर की ओर चल पड़े। वहाँ से उन्होंने दूसरी कार ली और उसमें स्कूल के लिए रवाना हुए। साथ ही उस वाग्दात के बारे में दजेर्जीन्स्की को सूचित भी कर दिया गया। शीघ्र ही चेका के लोगो ने उन डाकुआ को पकड़ लिया।

इधर नादेज्दा कोस्तातीनोव्ना का चिन्ता हान लगी कि ब्लादीमिर इल्यीच अभी तक क्या नहीं पहुँचे। वह बार-बार खिडकी से बाहर झाँकती और जब वहाँ से भी कुछ न दिखायी पड़ता, तो दूसरी खिडकी के सामने जा खड़ी होती। बाहर सारा पाक बर्फ से ढका हुआ था।

उनकी परेशानी बच्चों से छिपी न रही। शीघ्र ही सारा स्कूल भी चिन्तित हो उठा। घड़ी की सूई धीरे-धीरे आगे बढ़ती जा रही थी।

आखिरकार किसी का ख़ुशी से भरा स्वर सारे स्कूल में गूँज हा गया

“आ गये!”

ब्लादीमिर इल्यीच तेजी से कमर में दाखिल हुए। ओवरकोट के बटन खुले हुए थे, दाढ़ी और भीहों पर बर्फ के कण जमे हुए थे और गाल ठंड से गुलाबी हो रखे थे।

“जाड़े बाबा! जाड़े बाबा!” चिल्लाते हुए बच्चे उनसे लिपट गये।

उनसे किसी तरह छूटकर ब्लादीमिर इल्यीच नादेज्दा कोस्तान्तीनोव्ना के पास पहुँचे। वह पहले तो गुण्डा के हमले के बारे में नहीं बताना चाहते थे, पर नादेज्दा कोस्तातीनोव्ना उन्हें इतनी चिन्ता भरी दृष्टि से देख रही थी कि मानो महसूस कर रही हो कि कुछ न कुछ अवश्य हुआ है।

“कोई घास बात नहीं है, नाघूशा। सचमुच, कोई घास बात नहीं है।”

गुण्डो के हमले के बारे में सुनकर नादेज्दा कोस्तातीनोव्ना के चेहरे का रंग उड़ गया। वह बस इतना ही कह सकी

“लाख लाख धन्यवाद कि तुम्हें कुछ नहीं हुआ।”

और फिर सब हसी खुशी मनाने लग गये। स्कूल के हाल में छत तक ऊंचा नववय वक्ष पड़ा था। छुद ही बनायी हुई चडिया, सुनहरतारो और खिलौना से सजा हुआ। उसकी पत्तिया स मनमाहव विरोजई महव आ रही थी। बच्चे गोला बनाकर वक्ष के इदगिद नाचन लगे। व्लादीमिर इल्यीच भी उनके साथ शामिल हो गये। बच्च गा रह थे व्लादीमिर इल्यीच भी गा रहे थे। बच्चे खेलने लगे, ता व्लादीमिर इल्यीच फिर उनके साथ हो लिए। सभी जो भरकर नाचे-पेले। अगर त्यौहार का मौका था तो क्या न त्यौहार की तरह हसा-खेना जाय ?

नादेज्दा काम्स्तान्तीनोव्ना, जिह अकेली का ही यह भालूम था कि दो घटे पहले व्लादीमिर इल्यीच मीत से बाल-बाल बचे थे, अलग खडी हुई उह प्रशमा भरी नजरों से देख रही थी और गव की भावना के साथ सोच रही थी "तुम निर्भीक आदमी हो। इसीलिए इतन आमोद प्रमादप्रिय भी हो।"

मित्र-विछोह

माच, १९१६। रेलगाडी फिर पेत्रोग्राद से मास्को जा रही थी। एक डिब्बे में व्लादीमिर इल्यीच और बहन आना इल्यीनिच्ना बैठे थे। रात का समय था। मिट्टी के तेल का लैम्प मदमद उजाला फेंक रहा था। डिब्बा हिचकोले छा रहा था। पहियो की लगातार एक मी आवाज उक्ताहट पदा कर रही थी।

आना इल्यीनिच्ना कोने में बंधे झुकाये हुए बैठी थी। व्लादीमिर इल्यीच और वह पेत्रोग्राद माक तिमोफेयेविच - आना इल्यीनिच्ना के पति - को दफनाने गये थे।

सोवियत देश पर एक और विपत्ति आ पडी थी। टाइफस का प्रकोप शहर और गावा में, रेलगाडिया में हजारों लोगों की जान ले रहा था। अस्पतालों का अभाव था, डाक्टरों का अभाव था, दवाइया का अभाव था।

माक तिमोफेयेविच येलीज़ाराव सरकारी काम से पेत्रोग्राद आय थे। मगर यहा टाइफस न दबोच लिया और कुछ ही दिना में वह उस दुनिया से उठ गया। वोल्गाव कज़िस्तान में भाज के सपेद पड व नीचे प्रियजना की दो बन्नों की बगल में एक कब्र और खडी हो गयी।

व्लादीमिर इत्योव न जोना के मुग्र-मुग्र भर विनन गाल भाव व गाय जुड़े हुए थे। जवानी म माव साशा या साथी था। साशा को फासी हुई, ता माव उत्पानोव परिवार का भ्रग ही बन गया। कितना वद्विमान, सहृदय और आत्मीय था व्।

रेलगाड़ी रात व अंधेरे की चीरती हुई दौड़ी जा रही थी। लाइन व किनारे किनार पत्ता माच के महीने का पत्ता से रहित जगन कानी बाड जैसा लग रहा था। रास्ते म पूस की छता के धराताल गाय घान और पीछे छूट जात। बल-कारगाना की चिमनिया स धूभा नहीं निकल रहा था। बल-कारगाने बंद होने जा रहे थे। कच्चे माल की कमी थी। ईंधन नहा था। सारी अथव्यवस्था छिनमिन हो गयी थी।

मास्का म एव और दुषद समाचार प्रतीक्षा कर रहा था। अग्रिन रनी के द्रीय कायकारिणी के अध्यक्ष याकाव स्वेदलान का स्पेनी पनू हा गया था। यह भयवर बीमारी न जाने कहा मे, शायद स्पेन म, तूफान की तरह फल गयी थी। हजारों लोग मर रहे थे, पनू से, टाडफम से, भुखमरी से, गृहयुद्ध स। विपत्ति पर विपत्ति। विदशी अग्रवारा न घुञ्ज होने हुए वदनीयती स लिखा सोवियत सत्ता का अन्त अब दूर नहीं।

व्लादीमिर इत्योच न माथा पकड लिया। वह समझ नहीं पा रहे थे कि क्या कर।

काश, स्वेदलान रोग से मुक्ति पा जायें। वे दोनों कितने हेलमेल से काम करते थे।

“याकोव मिखाइलोविच, हम ” व्लादीमिर इत्योच किसी काम के बारे मे बटना शुरू करते कि याकाव मिखाइलोविच छून्ते ही जवाब देते

“कर दिया है।’

‘क्या कहा, कर दिया है?’

“हा, हा, व्लादीमिर इत्योच, कर दिया है।’

‘कब, याकोव मिखाइलाविच? हमन इस बारे मे अभी पूरी तरह बात भी नहीं की थी।’

“पूरी तरह ” स्वदलाव हसन लगते।

वह लेनिन की बात आधे मे ही समझ जाते थे। लेनिन स्वेदलोव की कायकुशलता, कातिकारिता और राजनीतिमत्ता के कायल थे।

डाक्टरों ने व्लादीमिर इत्यीच को मरीज़ के पास जाने की इजाजत नहीं दी। स्पेनी फ्लू सत्रामक बीमारी थी।

मगर लेनिन उनकी यात अनसुनी कर साथी से मिलने आये और भौंचक्के रह गये।

क्या ये स्वेदलोव ही हैं? याकाव मिखाइलोविच तवियो का सहारा लिए हुए निश्चल पड़े हुए थे। वह बेहद कमजोर हो गये थे। नाक पहले से कुछ नुकीली लग रही थी। दाढ़ी बढ़ गयी थी। आँखें ढलकी हुई थी। चहरा बूढ़ा और अनजान गा लग रहा था।

व्लादीमिर इत्यीच शय्या के पास बठ गये। "मेरे प्यारे, विश्वासनीय, प्रतिभाशाली साथी, हमें छाडकर मत जा।" वह सोच रहे थे।

याकाव मिखाइलोविच का स्वस्थ, यौवन की आभा से भरपूर, सतत सक्रिय, जिंदादिल और साहसी रूप—उम समय स्वेदलोव की आयु सिफ ततीस बष ही थी—लेनिन का अच्छी तरह याद था। वह कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि स्वेदलोव कभी विरगो भयंकर से भयंकर खतरे से डरे हगें। और लोगो से बातें करने, उह प्रातिगारी कायों के लिए प्रेरित करने में वह कितने कुशल थे।

पलकों में हरकत हुई। स्वेदलोव ने आँखें खोली। वही दूर से, अघचेतना की हालत में उहने लेनिन को देखा और जब पहचान गये, तो हाठा पर एक विपाद और ध्यया से भरपूर मुस्कान तिर गयी। व्लादीमिर इत्यीच ने उनका दफती जैसा चपटा हाथ अपने हाथ में ले लिया। गला रध गया।

भिर झुकाये हुए लेनिन बाहर निकल आये।

कुछ मिनट बाद स्वेदलोव के प्राणपखेरू उड गय। मृत्यु से पहले एक क्षण के लिए चेतना मानो इसीलिए लौटी थी कि लेनिन को देख सके। आखा ने अलविदा कहा और हमेशा-हमेशा के लिए मुद गयी।

सावियत समाज के जीवन और निर्माण के सबने पहले और कठिन दिना के अपने इस अथव सहयोगी को व्लादीमिर इत्यीच आजीवन नहीं भुला पाये।

जीवन यथावत जारी था। सावियत समाज की रक्षा करने, उसे मजबूत बनाने की जरूरत थी।

लेनिन ने स्वेदलोग के म्याग पर मिग्राईल इवानोविच वालीनिन को अग्रिम रंगी केन्द्रीय कायकारिणी या अध्यक्ष नियुक्त करन का प्रस्ताव रखा।

वालीनिन का जन्म त्वेर प्रदेश के एक विमान परिवार में हुआ था। वह पीटसवग में मजदूर रह चुके थे। लेनिन जानते थे कि सबसे उपयुक्त व्यक्ति कौन है। मिग्राईल वालीनिन अच्छे कम्युनिस्ट, ईमानदार और बुद्धिमान थे। लोग भी उन्हें बहुत चाहते थे।

“मैं, मेहनतकश जनता का बेटा”

सर्वोत्तम हथियारा से लैस दस लाख से अधिक ग्रेनेड गैज और विदेशी हस्तक्षेपकारी हथियारों के हृदय मास्को की ओर बढ़ रहे थे। शत्रु के छह माचों ने सोवियत मातृभूमि को अपने लोह घेरे में बस लिया था।

मई महीने की बात है। एक दिन सारा मास्को अमूल्य हस्तक्षेपकारी बंदूक बन गया। आशक्ति औरत सुबह से ही कारखाना और फ़ैक्टरियों के फाटकों पर इकट्ठा हो रही थी, किसी चीज का इन्तज़ार कर रही थी। छूटे छूटे, बाग़ज जैसे सफ़ेद चेहरा और भूख से चमकती आँखों वाले बच्चे, मास्को की मजदूर बस्तियाँ के बच्चे माँ के पल्ले पकड़े उनसे बिपटे खड़े थे।

कारखाना के फाटक खुले। उनसे मजदूर बाहर निकले। कोई फौजी कोट पहन था, तो कोई रूई भरी जैकेट। बिट और बट्टों सबके कंधों पर थी।

“कतारबंद!” फौजी आदेश सुनायी दिया।

लाल सैनिक कतार बाध कर खड़े हो गये। उन्होंने कुछ ही समय पहले अल्पकालिक सैनिक प्रशिक्षण पाया था। सीधी कतार बाधना तो उन्हें खास नहीं आता था, पर बंदूक चलाना सब जानते थे।

“लाल मैदान की तरफ़ निक्क़ माच।”

मास्को के सभी इलाक़ों से, सभी कारखाना से मजदूर-सैनिकों को कतारा पर कतार त्रेमलिन की दीवारों की ओर बढ़ रही थी।

बगल में साथ साथ सिंग पर सफ़ेद और लाल रुमाल बाधे औरते भी चल रही थी। वे ठोकर खाकर गिरते-गिरते बचती, फिर दौड़ने लगती, सैनिकों के चेहरों को देखती और उन्हें गठरियाँ पकड़ाती।

एक बुढ़िया मा, जिम्का नेहरा बेटे स त्रिछडने क दुख न मनिन पड गया था, तिनायी

“बाघ्रा-स्या, मर बेटे ! ह प्रभु, मरे वास्या का बूजुआओ की गाली स वचाना ”

नगे पर लडके सैनिक टुपडिया के बीच इधर-उधर भाग रहे थे और एक दूसरे क सामन शेरिया उधार रहे थ

‘मर बापू के पाम जानते हो कितनी बढिया बढूव है?’

‘जा, जा, बडा आया बढूव वाला। मरे बापू के पास मशीनगन है। उससे गोलिया दागेंगे, ता सब बूजुआ डेर ही हो जायेगे।’

“और मरे बाप के पाम दखने हा कितन हयगोल ह ? सारी बमर ढकी हुई है। देपना, हमार कारखान के मजदूर बदमाश सपेद गाडों की कसी खबर लेते हैं ”

“म, मेहनतरश जनता का बेटा, सोवियत जनतंत्र का नागरिक, अपने को आज स मजदूर और किसाना की सेना का सैनिक घोषित करता हू

कितने अभिमान भरे, कितन उदात्त शब्द थ ! उह सुनकर दिल और जोर से धडकने लगता था। साल भर पहले जब लेनिन ने खुद सोवियत राज्य की निष्ठापूर्वक सेवा करन की शपथ ली थी, तो उनका हृदय भी ऐस ही जोर-जोर से धडका था। यह मिखेल्सन कारखान की बात है। वहा युवा मजदूर और लाल सेना के सनिको के साथ लेनिन ने शपथ ग्रहण की थी “मै मजदूर और किसाना की सरकार की पहली पुकार पर ही सोवियत जनतंत्र की रक्षा के लिए उठ खडे होन की शपथ खाता हू।”

सोच म खोये हुए व्लादीमिर इल्यीच साथियो के साथ लाल मैदान म पहुचे।

लाल मदान म लोग का सागर उमडा हुआ था। भीड का शोर सयत और दवा-दवा था। व्लादीमिर इल्यीच न ऊपर उठी हुई सगीना का जगल देखा। इम्पात धूप म कठोर और चक्काचौंध करती हुई चमक फँक रहा था। औरत अपन पतिया और बेटा से अलग नही हो रही थी। व्लादीमिर इल्यीच ने देखा कि बहुत से लाल सनिक अपनी पतियो को गले लगाकर विदा ले रहे थे, बच्चा को चूम रहे थे।

लाल मदान म लाल सेना की और अनिवाय सैनिक मेरा के लिए भरती हुए सैनिका की टुकडिया एक्ल थी।

पिछले साल लेनिन न भ्राज्जति जारी की थी कि सभी मजदूरों और महनतवशा के लिए सैनिक प्रशिक्षण अनिवाय है। मातृभूमि घतरे म है। मजदूरों, दश न सभी नागरिका, बद्रूप चलाना सीखो, सोवियत मातृभूमि की रक्षा के लिए तैयार रहो।

लाल मदान म कोई विशेष रुच नहीं बनाया गया था। बस एक काचढ से सना हुआ पुराना टुक खडा हुआ था। उसकी एक बगल पर लाल बपडा डाल दिया गया था और एक तम्ना खडाकर उसपर बडे-बडे अक्षरा म लिखा हुआ था "जमींदारों और पूजीपतिया के बमीने गिराह को तहस नहस करव ही दम लेगे।"

लाल सेना के बमाडरो के साथ ब्लादीमिर इल्यीच न सभी टुकडिया वा मुआयना किया और टुक पर घडे हुए।

आपों के सामने हजारों मजदूर बद्रूप हाथ म लिये खडे थे।

उनमे स हर एक का अपना दुख था, सुख था, प्रेम था, सपन थे। फिर भी हर कोई मजदूरों और किसानों की सरकार की पहली पुकार पर सब कुछ त्यागकर सफेद गार्डों के विरुद्ध लडने के लिए उद्यत था।

ब्लादीमिर इल्यीच ने बोलना शुरू किया।

सारे मैदान मे खामोशी छा गयी।

लेनिन कह रहे थे कि पहले सिपाही का जार और बूर्जुआ बग की रक्षा करना सिखाया जाता था। और अब लाल सैनिक खुद अपनी, अपने घर, अपने बच्चा की रक्षा कर रहे ह। जमींदारों और बूर्जुआओं से अपने राज्य की रक्षा कर रहे हैं। लेनिन की बाते दिल को छूनेवाली और सीधी सादी थी। वह बही बाते कह रहे थे, जिनके बारे मे त्रैमलिन की दीवार के सामने खडे हजारों लाल सैनिक खुद भी सोच रहे थे, उनकी पत्निया भी सोच रही थी। पत्निया नहीं रो रही थी। हा, चेहरे उनके पीले अवश्य पड गये थे।

मीटिंग के बाद लाल सेना की टुकडिया लाल मैदान से सीधे मोर्चों के लिए खाना हो गयी।

सरकारी सपत्ति

जन कमिसारों की परिषद में कमचारी घाड़े हो थे, हालांकि काम बहुत था। मगर हर कोई अपने काम को पसंद करता था। सभी खुशी-खुशी काम करते थे। ब्लादीमिर इल्यीच कमचारियों के इस छोटे से समुदाय का आदर करते थे। जन कमिसारों की परिषद की मीटिंग के लिए लेनिन पांच मिनट पहले ही आ गये। वह हमेशा पहले आ जाता करता था। वह अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठ गये। सामने तरह-तरह की सूचनाओं और तारों का ढेर लगा हुआ था। जब तक परिषद के अर्थ सदस्य आते, लेनिन कागज़ों को पढ़ते लग गये। कुछ को पढ़कर उठाने अलग रखा, कुछ पर हस्ताक्षर किये और कुछ को वापस सेक्रेटरी को भेज दिया।

सभी जन कमिसार ठीक समय पर पहुँच गये। कोई नहीं चाहता था कि उसका नाम कारवाई रिपोर्ट में देर से आनेवालों में दर्ज हो या जा इससे भी बदतर था, उसे चेतावनी मिले। लेनिन दर से आनेवालों को माफ़ नहीं करते थे।

“तो मीटिंग की कारवाई शुरू होती है,” ब्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

एक साथी खड़ा हाकर खाद्य स्थिति पर रिपोर्ट पेश करने लगा। वह खाद्य आयोग का सदस्य था। खाद्य आयोग के पास सभी उपलब्ध खाद्य पदार्थों का एक एक पाउण्ड तक का हिसाब था। साथी ने बताया कि इस महीने भेदनतकशा को कितना अनाज, नमक और मक्खन दिया जा सकता है।

हर आदमी के हिसाब में आनेवाली मात्रा बहुत कम थी। बेशक बच्चा के लिए कुछ अधिक की व्यवस्था थी, पर वह भी अपर्याप्त थी।

‘और बेसहारा बूढ़ों को न भूलियेगा,’ ब्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

रिपोर्ट पेश करनेवाले साथी ने जन कमिसारों की परिषद के अध्यक्ष के सुझाव का कोई जवाब नहीं दिया। लगता था कि खाद्य स्थिति सचमुच ही बहुत सख्तपूर्ण थी।

‘बेसहारा बूढ़ों को भुलाना ठीक नहीं,’ ब्लादीमिर इल्यीच ने दबनापूवक पुन दोहराया। ‘अगर सोवियत सत्ता उनकी चिंता नहीं करेगी, तो और कौन करेगा? नहीं, कोई न कोई रास्ता ढूँढना ही होगा।’

ब्लादीमिर इल्यीच ने खाद्य विभाग के जन कमिसार अलेक्सांद्र द्मीत्रियेविच की ओर प्रश्न भरी निगाहा से देखा। अलेक्सांद्र द्मीत्रियेविच

त्सुरुपा को लेनिन बहुत पहने से, जत्र यह निर्वासन स लीट्टे थे तत्रम जानत थ। व्लादीमिर इल्यीच का वह एक्कम पसद आ गये थ। खुशमिजात्र, नीली आग्रेँ, उनझे उलझे, धुपरात, हल्के मुनहरे बाल।

लेनिन मबाल बाहरी शकल-भूरत का नहीं था। अलेक्साद्र दमीत्रियेविच बहुत अच्छे आतिवारी थे और अपने इसी गुण के कारण सनिन को पसंद आये थे। वह जगनशीन वायवर्त्ता और अत्यन्त कुशल जन कमिसार थ।

लेनिन उह यह क्या हा गया है? सनिन न उह गौर स दखा। बितन दुबल पड गय है। चेहरा बितना पीला-पीला है।

भरपट घाना न घान की बजह से।" व्लादीमिर इल्यीच समझ गये।

उहान नाटबुक से एक बागज फाडा, रिपोट पेश करनेवाल को सुनते रहे और बागज पर त्सुरुपा के लिए एक सख्त नोट लिखा कि सरकार सपत्ति की ऐसी उपेक्षा ठीक नहीं। उसे सभालकर रचना चाहिये।

त्सुरुपा न नोट पडा और मुस्करा दिये। व्लादीमिर इल्यीच स्वाम्य को, विशेषत राज्ज के लिए बहुत काम करनेवाले लोग के स्वास्थ्य को सरकारी सपत्ति बहा करते थे। त्सुरुपा की इच्छा हुई कि वह व्लादीमिर इल्यीच का जवाब दें कि वह धकेले ही भूखे नहीं रहते, भूखे दूसरे भी है, और किसी न किसी तरह अच्छे दिना तक खीच ही लगे।

लेकिन इस बीच खाद्य आयोग के सदस्य न अपना भाषण समाप्त कर दिया था और त्सुरुपा ने व्लादीमिर इल्यीच को जवाबी नोट न लिखकर हाथ उठाकर बोलने की अनुमति मागी। विचाराधीन प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण था। खाद्य विभाग के जन कमिसार का इस प्रश्न पर बालना अनिवाय था। वह खडे हुए। मगर एकाएक लडखडाकर गिर गये और बेहोश हो गये। लेनिन उछलकर खडे हुए और उनकी तरफ दौडे

"अलेक्साद्र दमीत्रियेविच, क्या हो गया है आपको?"

त्सुरुपा मुर्दे की तरह पीले पडे हुए जमीन पर पडे थे। लोग ने उह घेर लिया। कोई डाक्टर को टेलीफोन करन दौडा। कोई उनके चेहरे पर पानी छिडकने लगा। बदन मे कुठ हरकत हुई। गहरी सास के साथ सीना ऊपर उठा। वह होश मे आ रहे थे। लोग ने उहे उठाकर कुर्सी पर बिठाया। उहाने कमाल से चेहरा पोछा। उनके चेहरे से ऐसा लग रहा था कि वह मानो अपन को अपराधी महसूस कर रहे हा।



ब्ला० इ० लेनिन महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति की दूसरी वषगाठ पर
लाल मदान में। मास्को, ७ नवंबर, १९१६।

ТЫ

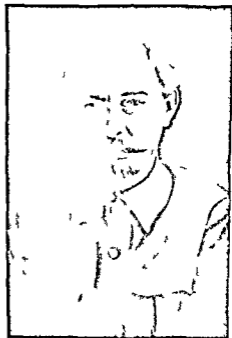


**ЗАПИСАЛСЯ
ДОБРОВОЛЬЦЕМ?**



फेलिक्स एदमुदोविच
दजेर्जी स्की । १९१६ ।

“तुमने स्वयंसेवको मे नाम लिखाया ?” चित्तकार -- द० भोसोर ।



मिखाईल वसीलियेविच
फजे । १९१६ ।



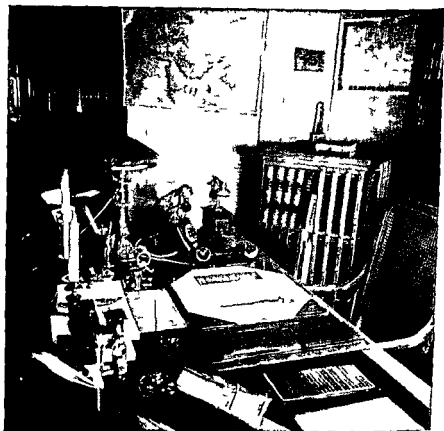
॥ १

ला० इ० लेनिन क्रेमलिन म थमदान क समय। १ मई, १९२०। चित्रकार-
म० सोकोलोव।

व्ला० इ० लेनिन। मास्को १ मई, १९२०।



नेमलिन म व्ला० इ० लेनिन वा वक्ष ।





व्ला० इ० लेनिन ग्रपन त्रेमलिन वक्ष मे। मास्को, ४ अक्टूबर, १९२२।





ला० इ० लेनिन विजलीकरण की याजना के बारे में रिपोट पेश करते हुए। चित्रकार—ल० श्मात्की।



ब्ला० इ० लेनिन कोमिण्टन की दूसरी कांग्रेस में एक आयोग की बैठक में।
मास्का, जुलाई-अगस्त, १९२०।



स्वा० ०० अति धनं दमति तत्र म
प्रथेन तत्रा एत० ज्ञ० वज्र व माय
वा तत्र एत० माता प्रवृत्त १६००।





व्ला० इ० लेनिन नेमलिन म जन कमिगारा की परिषद की बठक मे।
३ अक्टूबर, १९२२।



क्रेमलिन के फ्लैट में व्ला० इ० लेनिन अपने परिवार के साथ। निचली
 पंक्ति व्ला० इ० लेनिन, ना० की० नूस्काया, ग्रा० इ० यलीज़ारोवा।
 ऊपरी पंक्ति म० इ० उल्यानोवा, द० इ० उल्यानोव, ग० या० लोजगाचेव।
 मास्को, शरद, १९२०।



व्ला० इ० लेनिन गोर्की में सैर करते हुए। अगस्त १९२२ का प्रारम्भ।



पृष्ठ ६० मॉडल पौर गा० ५।० प्रस्तावना अथवा भाषिणी वास्तव उद्योगाथ
पौर एव स्थानीय मजदूर वा बंदी यग व माथ। गोर्दी, अगस्त, १९२२
वा प्रारंभ।



व्ला० इ० लेनिन । चित्रकार-न० आर्द्रेयव ।

“ओह, मैं भी ये क्या तमाशा कर बैठा! मीटिंग में विघ्न डाल लिया।”

“खाद्य विभाग में जन कमिसार अपयान्त भाजन में वारण बहाण हा गये,” व्लादीमिर इत्योच सिर हिलाते हुए कह रहे थे। जीवन कितना कठिन हो गया है! पर, फिर भी सरकारी सपत्ति की रक्षा करना जरूरी है,” उन्होंने त्मरुपा से कहा। ‘साविया यह सरकारी सपत्ति बहुत गंभीर हालत में है। मैं ममज्ञता हूँ कि इस तुरन्त पूर्ण मरम्मत के लिए भेजा जाना चाहिये।”

“आया खुशी का दिवस मई का ”

अभी सुबह भी नहीं हुई थी कि व्लादीमिर इत्योच उठ गये। वही नादेज़्जा कोस्तान्तोनोव्ना और मरीया इत्योचिन्ना का नाद उठ खोल जाये, वह बिना कोई आहट किये, रसाई में गये। आज वह एक पुराना सूट और पुराने जूते पहन हुए थे। टाई नहीं बांधी थी।

रसाई में बेतली में पानी खील रहा था। पतीली में उबला हुआ आलू गरम-गरम भाप छोड़ रहा था। जेमेलिन में उल्यानावा के घर का कामकाज साया के जिम्मे था। वह इवान वसील्यविच बाबुशिकन की, जिन्हें जार की पुलिस ने १९०६ में मार डाला था, चबूरी वहन थी।

“व्लादीमिर इत्योच, आप सचमुच तयार हो गये? साया ने आश्चय से पूछा।

“यह क्या?” व्लादीमिर इत्योच ने, जिनकी आंखा में एक तरह की चालाकी भरी चमक थी, बेतली और पतीली की ओर इशारा करते हुए पूछा। “यह क्या? भरे लिए नाश्ता किसने तयार किया है? शुक्रिया, साया। आइये, साथ-साथ नाश्ता कर।”

और नाश्ता करने बैठ गये। गिलास में बड़ी चाय उडेलने हुए साया अभी भी अपना आश्चय छिपा नहीं पा रही थी

“यह आपका काम नहीं है, व्लादीमिर इत्योच। आपका दिमागी काम करना चाहिये।”

“और अगर सोवियत राज्य को जल्द ही कि हम कम से कम एक दिन हाथा से भी काम करे, तो?” व्लादीमिर इत्योच मुस्कराये।

जल्दी-जल्दी नाशता खत्म कर वह घर से निकल गये। सुबह सुहावनी, ताजगी भरी थी। हवा के मदमद चाके पडा क चमकीले, हर पत्ता को डुला रहे थे। नीले आसमान म सफेद बादल उड रहे थे।

श्रेमलिन मे आज असाधारण चहल पहल थी। मदान मे सनिक स्कूल के विद्यार्थियों की बतार खडी थी। व श्रेमलिन म ही रहते और शिक्षा पाते थे। पास ही म जन कमिसारा की परिषद और अखिल रूसी के द्रीय कायकारिणी के कमचारी भी खडे थे।

यह पहली मई का दिन था।

पार्टी ने आज अतीमविक प्रदशना के वदले "सुव्बोत्निक" यानी शनिवासरिय अमदान मे भाग लेन की अपील की थी।

साल भर पहले, एक शनिवार को मास्का क एक रेलव डिपो के मजदूरग न दिन के काम के बाद घर न जाकर अपन वकशापा म चार इजना और सोलह डिब्बा की मुफ्त मरम्मत की थी। लेनिन ने तब मजदूरग ने इस पहले अमदान के वार म शानदार शुम्भ्रात 'शीपक' से एक लेख लिखा था। उन्हाने स्वच्छा से विय गये टस मुफ्त अम को कम्युनिस्ट अम की सजा दी थी।

इस वार पार्टी ने पहली मई, १९२० के पव का अखित रूसी अमदान का दिन घोषित किया। हमार विशाल देश के सभी भागो मे लोग सामूहिक अम म भाग लेने के लिए सडका पर निकले। बल-कारखाना के मजदूरग ने अपन अपने वकशापा मे काम किया। प्रत्यक नागरिक ने देश के हित के लिए कोई न कोई महत्त्वपूण काम किया।

श्रेमलिन सैनिक स्कूल के विद्यार्थी अपनी बरका से थोडी दूरी पर शाही तोप के पास खडे थे। तोप लोहे के अरावे पर खडी थी। पास ही लाह के गोले रखे हुए थे। शाही तोप को इस्तमाल कभी नहीं किया गया था। प्राचीन काल के कारीगरगे ने उसे ऐसा बनाया था कि देखनेवाल चकित हो और दुश्मन भय से वाप जाये। वह हमेशा से श्रेमलिन म ही खडी थी।

कमांडर ने विद्यार्थियों को बताया कि क्या करना है। श्रेमलिन के अहाते म पडे शहतीरगे, तस्वो और कवाड को हटाना है, सफाई करनी है।

तब तक ब्लादीमिर इत्येच भी आ गये। एक पुराना सा कोट और टोपी पहने हुए, गभीर और अज्ञात उमग से भरपूर और आख खुशी से चमकती हुई।

“मैं हाजिर हूँ,” सैनिकों की भाँति तनकर खड़े होते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने कमांडर से कहा। ‘मुझे भी श्रमदान में भाग देना दीजिये।’

“दायी वगल में खड़े हो जाइये, कमांडर ने कहा।

नेमलिन के घटाघर में अपनी सुगंधुर आवाज से श्रमदान का समय शुरू होने की सूचना दी। आर्क्स्टा बजना लगा।

सभी लोग काम में जुट गये। संगीत बज रहा था। धूप खिली हुई थी। सैनिक विद्यार्थी इससे बहुत खुश थे कि वेना उनके साथ काम कर रहे हैं।

शहतीर काफी भारी थे। एक का छह-छह आदमी उठा रहे थे। शीघ्र ही विद्यार्थिया ने गौर किया कि व्लादीमिर इल्यीच हट्ट बार शहतीर का पाटे हिस्सा की तरफ से उठाने की कोशिश कर रहे हैं।

“साथी लेनिन,” उन्में से एक वाला, यह ठीक नहीं कि आप ऐसा भारी बोझ उठावें।”

“आप भी तो उठा रहे हैं। तो मैं ही क्या न उठाऊँ।” व्लादीमिर इल्यीच ने आपत्ति की।

“नहीं, व्लादीमिर इल्यीच, बेहतर होगा कि आप घर चले जावें। हम आपके बगैर सब काम कर लेंगे।” दूसरे विद्यार्थी बोलें।

“नहीं, नहीं। मैं नहीं जाऊँगा।”

‘जरा अपनी उम्र का तो ख्याल कीजिये, व्लादीमिर इल्यीच। पचास साल की उम्र में ऐसी मेहनत ठीक नहीं।’ एक विद्यार्थी कहने को कह गया, पर फिर खुद ही झेंप भी गया। लेनिन से कैसे बाने कर रहा है, माना वह जन कमिसारों की परिषद के अध्यक्ष न होकर अपने ही मजदूर भाई हैं।

व्लादीमिर इल्यीच ने मुडकर पीछे देखा और तजरी से धमकाने हुए हसकर कहा

‘नौजवान, अगर मैं तुम से बड़ा हूँ, तो अच्छा होगा कि मुझ से बहस न करे।’

व्लादीमिर इल्यीच को एक दूसरा मई दिवस याद आ गया, जब वह नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के साथ शूशेन्स्काय में निर्वासन की सजा पाट रहे थे। पुलिनवाला स छिपकर उन्हां गाव से दूर घाम के मदान में लाल पडा फहराया था और पहली मई का पत्र मनाया था। सभी न मिलकर गाया था

आया खुशी का दिवस मई का,
 दुखा की छाया दूर हटे !
 गीत हमाग जग-जग गूजे,
 हडताला का दौर चल !

और वहा, निर्वासन म, सुधी, उज्ज्वल भविष्य के सपने देखे थ
 यही था वह भविष्य। अब जनता आजाद थी, खुद अपन लिए
 मेहनत करती थी। मोर्चों पर लाल सना ने प्रत्याग्रमण शुरू कर दिया था।
 शीघ्र ही हस्तक्षेपकारिया और प्रतिप्रातिकारिया को धूल चटा देगे और
 हमेशा के लिए सोवियत धरती से बाहर फेंक देंगे।

व्लादीमिर इल्यीच श्रमदान से लौटे, तो कमीज पसीने से तर थी।
 एक जूते का तलवा निकल गया था।

'तुम्हारे लिए म बार-बार जूते कहा से लाऊ?" नादेज्दा
 कोन्स्तातीनोव्ना बोली।

और व्लादीमिर इल्यीच के लिए साफ, धुले कपडे लेन चली गया।
 और वह, थकावट से चूर, मन ही मन सतुण्ट, रसोई मे नल पर,
 पानी के छपाके दे देकर, हाथ मुह धोने लगे।

बाद मे नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना न व्लादीमिर इल्यीच के कोट पर
 एक लाल रिबन बाधा और वह थियटर स्ववायर मे काल माक्स के स्मारक
 का शिलायास करने को चल दिये। उहाने जोशीला भापण दिया। उसी
 दिन 'मुक्त श्रम' के स्मारक की नीव भी रखी जानी थी। व्लादीमिर
 इल्यीच ने उस मौके पर भी भापण दिया।

शाम को वह तीन इलाकाई मीटिंगा मे बोले। फिर एक मजदूर प्रासाद
 के उदघाटन समारोह म भाग लिया।

व्लादीमिर इल्यीच आज के देशव्यापी श्रमदान, नये स्मारक के
 शिलायास और सस्कृति प्रासाद के उदघाटन से बहुत खुश थे।

थकावट के मारे वह हाथ पर नहीं उठा पा रहे थे। पर मन मे एक
 अद्भुत शांति थी, सतोष था, उल्लास था।

कोम्सोमोल

सभी जानते हैं कि कोम्सामाल-लनिनादी युवा कम्युनिस्ट लीग - क सदस्य, जिन्हें युवा कम्युनिस्ट भी कहते हैं, सबसे साहसी और अग्रगामी नौजवान हैं। पार्टी का जाना कि हिन क तिन निर्भीक लागे का निर्भीक घतरनाक मिशन पर भेजा है, ता सबसे आगे आगे कौन जायेंगे? निस्संदेह, कोम्सामाल के सदस्य।

अब तक दुगम समये जानेमाने क्षेत्रों में रास्ता बनाते हैं। पहली पुकार पर आगे कौन जायेंगे? काम्सामाल के सदस्य। लड़ाई छिड़ गयी है। युवा कम्युनिस्ट पुनः सबसे आगे आगे रहेंगे।

गृहयुद्ध के दिनों में कोम्सोमोल के सदस्यों ने असह्य शायपूर्ण कारनाम दिखाये। साइबेरिया और उन्नतना, श्रीमिया और वोल्गा प्रदेश, कूस्क और पेत्रोग्राद में युवा कम्युनिस्टों की, काम्सामाल वीरा की घास और फूला से ढकी हजारा बरें हैं।

व्लादीमिर इल्यीच ने पेंसिल अलग रख दी। गामन मज पर पतली और लंबी लिखावट में लिखा हुआ कागज पड़ा था। यह लेनिन के भाषण की स्फुरेया थी।

आज वह कोम्सामोल भगठन की तीसरी कांग्रेस में भाषण देंगे। कोम्सामाल का स्थापित हुए अभी दो ही साल हुए थे। लेनिन को काम्सोमोल के सदस्यों के बारे में साचना बड़ा प्रिय लगता था। कितने जोशीले और लगनशील हैं ये मजदूर और गरीब किसानों के बच्चे! हमने, हमारी पीढ़ी ने क्रांति तो की है, व्लादीमिर इल्यीच ने सोचा, मगर कम्युनिस्ट समाज का निर्माण पूरा शायद ही कर पायेंगे। यह काम नयी, नौजवान पीढ़ी करेगी। और आप, युवा कम्युनिस्टों, सबसे पहले!

इस बीच कोम्सामोल के प्रतिनिधि कांग्रेस के लिए इकट्ठे हो गये थे। सभी सीधे श्रमदान से आये थे। सारी सुबह के रेलवे स्टेशनों पर माल उतारते, गोदामों में लकड़ी के ढेर लगाते और मड़के साफ करते रहे थे। मास्को का रूप निखर गया था।

२ अक्टूबर, १९२० का दिन था। ठंडी हवा चल रही थी। आसमान में बादल छाये हुए थे। हवा के झांके शरदकालीन पेड़ों से पीले पत्ते उड़ रहे थे।

ताजगी भरी सुबह, पत्ता की सरगराहट और सामूहिक काय स, जिसके कारण उनकी हथेलिया लाल पड़ गयी थी, युवा कम्युनिस्टा में प्रभु उल्लास छाया हुआ था। अभी अत्यन्त उत्तेजित थे कि आज कांग्रेस में लेनिन भाषण करेंगे।

स्वाभाविक ही था कि काम्सामाल के प्रतिनिधि नियत समय पर मालाया दमीत्रोव्वा सड़क के ६ नंबर भवन में पहुँचने के लिए उत्सुक थे। अब इस भवन में लेनिनवादी कोम्सोमोल नामक क्वियटर स्थित है। तब क्वियटर नहीं था। कोई मंच भी नहीं था। अन्दर से तटता से एक कामबलाऊ मंच बना दिया गया था। उस पर एक लकी सी मञ्ज और व्याख्यान मंच रखा हुआ था। पीछे दीवार पर लाल कपडा पर लिखे नार और पास्टर टगे हुए थे।

एक पोस्टर पर बुधोनी की फौज के सनिका की नुकीली कनटोपी पहने हुए एक लाल सैनिक बना हुआ था, जो अधिवारपूर्वक अगुली से दिखाते हुए पूछ रहा था "तुमने स्वयंसेवका में नाम लिखाया है?"

कांग्रेस में उपस्थित बहुत से युवा कम्युनिस्ट प्रतिनिधि मोर्चों से ही आए थे। वे स्कूली विद्यार्थी नहीं थे। उनमें बहुत से ऐसे भी थे, जिन्होंने जीवन में एक बार भी कित्ता हाथ में नहीं ली थी, क्योंकि शिक्षा पाने का अभी कोई अवसर ही नहीं पाया था। मगर सभी ने प्रतिश्रुतिकारी गिरोहा को छठी का दूध याद दिलाया था, अद्भुत निर्भीकता का परिचय देते हुए कुलको से छिपा हुआ अनाज छीना था और सोवियत सत्ता की रक्षा के लिए सबस्व योद्धावर करने के लिए उद्यत थे।

कोम्सोमोल सदस्य बड़ी आतुरता के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे कि अभी लेनिन आयेगे, कि अभी लेनिन को सुनेंगे।

लेनिन की प्रतीक्षा में वे सब, कोई फौजी ओवरकोट पहने हुए तो कोई चमड़े की जकेट, एक दूसरे से सटे हुए बेचा पर बैठे थे। तीसरे दशक के युवा कम्युनिस्टों को स्वेदलोव जैसी चमड़े की काली जैकेट विशेष रूप से पसंद थी। और फौजी ओवरकोट—पसीने और बारूद की गंध से महकता फौजी ओवरकोट भी खराब पोशाक नहीं था। उस जमाने के कोम्सोमोल सदस्यों की पोशाक का एक अनन्य अंग थी चौड़ी बाकेशियाई टोपी या लाल सितारेवाली नुकीली कनटोपी।

"लेनिन क्या कहेंगे? प्रतिनिधि अनुमान लगा रहे थे। वे सोच रहे थे कि लेनिन लडाई के बारे में कहेंगे, सघप, वीरता और कारनामों के

निए प्रेरित करगे। साल सेना गफे गार्डों ता भगा रही थी। पर गृहयुद्ध अभी चत्म नहीं हुआ था।

आगे चन्त जायग हम

एक वोन म कुछ नोजवाना त गाता शुरू किया। शीघ्र ही सारा हान गूज रहा था

सायियन गत्ता गी ग्वा म।

और मग्गे एव ता हम

इग्गे हनु नटार्ड म।

फिर सभी खामाश हा गय। जम वि सभी भीटगा म हाता है, अध्यक्षमंडल वा चुताव शुरू हुआ। अध्यक्षमंडल गी भज ताल कपड स ढकी हुई थी। सभी साथी अपनी जगहा पर बठ गय। दीवार पर माक्स और एंगेल्स क चित्र टगे हुए थ।

अचानक दरवाजे क पाम बठे हुए नोजवान चुशी म चिल्लाये
“लेनिन!”

मारा हॉल घडा हानर तालिया बजाने गगा। कोम्सोमोल के नोजवान लेनिन को अत्यधिक चाहते थ। लेनिन म उनकी अटूट निगठा थी।

लेनिन न काले मखमली कालर वाले ओवरकाट का उतारा और समालकर कुर्सी पर रख दिया। फिर मच पर बैठे साथिया से हाथ मिलाया। उनकी सभी हरकत, उनकी मुस्कान और सब कुछ जो उहाने किया और जैसे किया, कोम्सामाल नोजवानों का इतना पसंद आया वह उह इतन अच्छे प्रिय और सहृदय लगे कि भावावेग और एक असामाय से सौभाग्य की अनुभूति से बहुतों की आँखों म आसू आ गय।

मच के बिनारे पर आकर लेनिन ने वास्केट की जेब से जजीरदार बिना ढक्कन की घड़ी निकाली और उसे यो दिखाया मानो वह रू हो कि वम हो गया, तालिया काफी बजा ली, अब कारवाई शुरू की जाय।

कोम्सोमोल युवाओं की नजरा म उनका आकषण और बट गया।

उस समय अगर वह कहत कि आप म से हर किसी को अभी मोचें पर जाना है, तो सबके सब मार्चें पर चले जाते।

लेनिन लेनिन न कुछ और ही रहा। प्रतिनिधि पहले असमजस म पढ गय। वे आश्चयचकित थे। वे पहले गमथ नही पाय।

लेनिन बालत जा रहे थे और मच पर चहलकदमी करते जा रहथ। जगह कम थी। अध्यक्षमंडल म जो बडे थे, वे मज के पीछे बडे हुए थे और जो छोटे थे, वे किसी भी बात का लिहाज किय बिना सीधे पश पर ही बँडे थे। लेनिन सावधानी स उनकी बगल से गुजरते हुए बोल रहे थे।

वह वह रहे थे कि इस समय काम्सोमाल-सदस्या का सवस बडा कतव्य है पढना।

सभी नोजवान आश्चयचकित थे। लेनिन उनक एकाग्र, युवा चेहरा पर आश्चय और सभ्रम की छाया देख रहे थे और अपन विचारा का ज्यादा से ज्यादा बोधगम्य ढग से व्यक्त करन की कोशिश कर रहे थे। शीघ्र ही गहयुद्ध एत्म हो जायेगा। दुश्मन को खदेड दिया जायेगा। मगर आगे? आगे क्या हागा? हम निर्माण शुरू करना है। बल-बारखाने बनाने हैं। टक्टर, हवाई जहाज, मशीनें बनानी है। देश का विजलीकरण करना है। विजलीकरण क्या है, आप जानते हैं?

नही जानते तो जानना चाहिये। और भी बहुत कुछ जानना चाहिय।

ब्लादीमिर इल्यीच ने सरल और समथ मे आन योग्य ढग से युवा कम्युनिस्टा को बताया कि ज्ञान के बिना कम्युनिस्ट समाज का निर्माण करना असभव है।

और मेहनत करना भी जरूरी है। 'बेवल मजदूरो और किसाना के साथ मिलकर थम करन से ही असली कम्युनिस्ट बना जा सकता है।' ब्लादीमिर इल्यीच न बताया कि कम्युनिज्म की शिक्षा पाने का मतलब है जीवन को पूण रूप से पुरानी व्यवस्था के विरुद्ध सबहारा के सघप स जोडना और नय कम्युनिस्ट समाज का निर्माण करना।

सपने, जो सिर्फ सपने ही नहीं थे

ब्लादीमिर इल्यीच के कल मे प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक एच० जी० वेल्स बडे थे। अब ऐसा शायद ही कोई स्कूली विद्यार्थी होगा, जिसन वेल्स के "विश्वो का सघप," 'टाइम मशीन' और 'अदृश्य मानव' नामक

किताबें न पढ़ी हो। कल्पना की आश्चर्यजनक उड़ान से भरपूर उनकी किताबें भारी दुनिया में मशहूर हैं।

वेल्स पूजावादी समाज की समिया की आलाचना करते थे और विज्ञान और तकनीक में रचि रखते थे। एनाप्लिमिर इत्येच का उनमें मिलकर बड़ी खुशी हुई। वह भारी भरकम शरीर चौड़े कंधा, भली भांति सवार हुए वाला और धारीक छटी हुई मूछावाले इस अंग्रेज जेण्टलमैन को हसौहा नजरों से देख रहे थे। वेल्स बढिया किस्म का सूट पहने हुए थे। मफेल् चिट्ठी बमीज का बसकर बंद किया हुआ कालर उनकी गोल, अच्छी तरह शैव की हुई ठोड़ी को और उभार रहा था। साफ देख रहा था कि इस मशहूर लेखक ने अभाव कभी नहीं जाना है।

और सोवियत लोग अभावा से दुरी तरह तस्त थे। बमीजे खरीदते भी तो कहा खरीदते? दूकान खाली थी।

वेल्स ने प्लादीमिर इत्येच को अपने अनुभव बताये। वह दो हफ्ते पहले इंग्लंड से आये थे और तब से पत्ताग्राद और मास्का की गली गली छान चुके थे। वह कारखाना में गये थे। आधे से ज्यादा कारखाने बंद पड़े थे। उन्होंने स्कूल भी देखे थे। विद्यार्थियों को नाश्ते में रोटी का छोटा सा टुकड़ा मिलता था। किताबों की बमी थी। एक किताब से तीन-तीन, चार चार विद्यार्थी काम चलाते थे।

वल्स ने जो कुछ देखा, सुना, उसमें उह झकझोर डाला था। सोवियत देश की हालत अकल्पनीय रूप से सकटपूर्ण थी। चारों तरफ तबाही थी, भुखमरी थी, इधन नहीं था, बिजली नहीं थी। देश अंधकार में डूबा हुआ था।

अपने यही सब अनुभव वेल्स ने लेनिन का बताये।

शनै शनै लेनिन के चेहरे से मुस्कान गायब हो गयी। नहीं, वह किग्यात अंग्रेज लेखक से नाराज नहीं हुए थे। लेनिन को स्पष्टवादिता पसंद थी। और वेल्स सच कह रहे थे रूस पूरा तबाही के बगार पर खड़ा है। वेल्स का कहना ठीक ही था कि इस तबाही का कारण बोल्शेविक नहीं, बल्कि जार सरकार, रूसी और विदेशी पूजीपति हैं। उन्होंने ही रूस को युद्ध में घसीटा था। लेकिन साथ ही वेल्स को विश्वास नहीं था कि बोल्शेविक रूस को गरीबी और युद्ध से उबार सकते हैं, अपने परा पर खड़ा कर सकते हैं।

लेनिन मेज़ के दूसरी तरफ घँटे वेलम की घोर झुके घोर क्वचित व्यग्य भरी दृष्टि से उह देखत हुए पूछा

“घोर आप जानत है कि वाल्थोविक रस के उद्धार के लिए क्या कर रह है? जानना चाहमे?”

वेलस कल्पनाजीवी आर वनानिक, दाना थे। इमीलिए लेनिन ने उह अपनी योजना के बारे म बताने का निणय किया। याजना बहुत बडी थी।

जवानी के दिना से ही व्लादीमिर इल्यीच के एक घनिष्ठ साथी थे ग्लेव मक्सीमीलियानोविच त्रजीजानोव्स्की। वह कम्युनिस्ट थे, योग्य इजीनियर थे और कवि भी थे। जारशाही व जमान मे उन्हाने कुछ पालिश आतिकाारी गीता का रूसी अनुवाद किया था। उह लोग पहले भी गाते थ और अब तो सारा देश गाता था

मगर हम उठायेंगे
गव से और साहस से
बडा सघप का
मजदूरो के सुप का

लेनिन ने इजीनियर रुजीजानोव्स्की के साथ कई शाम बठकर अपनी योजना पर विचार किया था। बाद म उसे अतिम रूप देने के लिए दो सौ सबसे बडे और अनुभववी वैनानिको की सहायता ली गयी।

इस समय लेनिन वेलम को इसी याजना के बारे म बता रहे थे। वेलस रूसी नही जानते थे। लेकिन लेनिन धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलते थे। वेलस अंग्रेजी भाषा पर उनके ऐसे अधिकार से बहुत प्रभावित हुए। जहा तक विचारा का सवाल था तो वे बिजली की भाति सुस्पष्ट और सबसे साहसिक कल्पना से भी अधिक साहसिक थे। लेनिन की योजना को सुनकर वेलस हक्के बक्के रह गय। रूस का विजलीकरण! क्या उसी रूस का, जिसमे असीम मैदान और जंगल है, जिसके गावो मे आज भी लकडी की छिपटिया जलाकर उजाला किया जाता हे, जिसके शहरा म घोर अग्र्यवस्था छायी है, जिसके कारखाने बंद पडे है जिसका व्यापार ठप्प है, जिसकी रेलवे लाइने तहम नहस हो चुकी है?

“ऐसी भयकर परिस्थितियो मे आप इतने विशाल देश के विजलीकरण का सपना देख रहे है?”

“हा। हम बिजलीघर बनायेंगे। राग्घाता को बिजली देंगे। बिजली की रेन चलायेंगे।”

“भारतचयजनक ध्यतिन है। तनि न मुना हुए बल्स सोर रहे थ। 'मिल्लुल म्यनद्रष्टा ह।' रभ्याप्रधा उपयासा ने लयन का लेनिन की याजना कभी सच न िडि तभनाती कटानी नी।

दा महीन वाट माग्घा ने वाल्गा^र थियटर मे सावि्यता की आठनी धयिल र्मी काग्घेग प्रारभ हइ। यह दिात्र १६२० की वात है।

मग्घमली कुगिया पर कामावारात्ता कमीज और फोजी पागाव पुगा वाट और नमद क जत पहन गभीर और गर्वीने चेहरावाल लाग ाडे थ। य सावि्यन मत्ता के प्रतिनिधि थे। य महा नय कानूना और भावी जीवत की याजनाप्रा का पाम करन के लिए एवत्र हुए थे।

मच पर दन के बिजलीकरण की याजना का वहत बडा नक्शा बना हुआ था। वनादीमिर इल्यीच न इम नक्शे को तयार करने के लिए अनर वार ऋजीजानोव्स्की का फोन किया था, नक्शानरीम और कारीगरा को उस समय पर पूरा करन के लिए आदेश पर आदेश दिय थे। वह चाहते थे कि सोवियता के प्रतिनिधि आखा स देय सके कि हमारी बिजलीकरण की याजना क्या है और हम हम का कँसा कायाकल्प करगे। मिस्टर वेल्म, दस साल बाद फिर आइयगा और दखियेगा कि

मज्ञोने कद और काली आघावाले इजीनियर ऋजीजानोव्स्की मच पर खडे थे। वसे वह बहुत सक्रिय और उत्तेजनापूण थे। मगर इस समय बहुत धामोश थे। शायद धबडा रहे थे।

कल यहा, इसी मच पर लेनिन ने कहा था “सोवियत सत्ता और समूचे देश के बिजलीकरण का ही दूसरा नाम कम्युनिज्म है।’ आज इजीनियर ऋजीजानाव्स्की को बताना था कि बिजलीकरण की इम योजना का कायरूप कैसे दिया जायेगा। वह धबरा रह थे। उनक हाथ म प्वाइटर हल्के-हल्के काप रहा था। वह प्वाइटर स नक्शे पर दिखाने लगे। हाल म राशनी बुझ गयी। प्वाइटर क नक्शे को छूत ही उसपर एक बत्ती जल उठी। फिर दूसरी, तीसरी ऋजीजानाव्स्की ने बताया कि हम बिजलीघर कहा बनायेगे और कसे बनायेंगे और कस हमार उद्योग और

घेती शीघ्र ही फलने फूलने लगेंगे। नक्शे पर जली हुई वस्तिया भावा विजलीघरा के निर्माण-स्थला का सूचित कर रही थी। नक्शा जादुई लग रहा था। प्रजीजानोस्की की दृढ़ और गणकन आवाज मार हाल म गूज रही थी।

ब्लादीमिर इत्यीच न अग्रम मित्र के उत्तेजित बहरे, हाल म बटलाया की एकाग्रता और भविष्य के प्रभात की सूचक नक्शे की वस्तिया का देखा। वह जानते थे कि यह योजना, जिमने लिए उन्हाने इतनी काशिश की है, सभी प्रतिनिधिया का, सारी जनता का सपना और लक्ष्य बन जायगा। वह अचेते नहीं थे। उनके माथ सारी सोवियत जनता थी, सभी साथी थे।

१९२१ का भयानक साल

अतत दिसबर, १९२० मे 'प्राव्दा समाचारपत्र म सनिक शान्तिकारी समिति की आखिरी बुलेटिन छपी कि मोर्चों पर शांति स्थापित हा गयी है, लाल सेना ने हस्तक्षेपकारिया को खदेड दिया है और सफ़ेद गाडों का तहस-नहस कर दिया है। केवल सुदूर पूव म ही अभी सोवियत सत्ता स्थापित नहीं हो पायी थी।

लगभग सारे दश म युद्ध खत्म हा गया था। युद्धकालीन कम्युनिज्म की अब और जरूरत नहीं थी। लनिन ने शांतिकाल की जरूरत के अनुकूल एक नयी नीति सोची।

लेकिन सोवियत देश एक और भयकर विपत्ति का शिकार बननवाला था।

सरदियो म बर्फ नहीं गिरी थी। पाले ने नगी धरती को जमा दिया था। बसन्त मे अकुर जो फूटे, तो उनका विकास र्का हुआ था। वे बडी आवुरता से बारिश की प्रतीक्षा कर रहे थे, पर वह भी व्यथ सिद्ध हुई। सारे बसन्त और सारी गरमियो म बादलो से रहित दमघोटू आसमान से सूरज आग बरसाता रहा। गरम हवा ने जैसे-तैसे उगी फसल से अंतिम रस भी सोख लिया। जमीन सूखकर पत्थर बन गयी। वोल्गा प्रदेश मे सारी फसल बरबाद हो गयी। कीमिया और दक्षिणी उराल भी सूखे की मार से नहीं बच पाये।

मौन करोडो लोगों की राह ताक रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच जन कमिन्सारा की परिषद के कार्यालय में पहुँचे। माटिंग नियत समय पर शुरू हो गयी। उस में अकालपीडिता की सहायता का प्रश्न पर विचार किया जाना था। युद्धमाल की तरह इस बार भी व्लादीमिर इल्यीच ने आदेश दिया, नतृत्व किया तात्कालिक और निर्णायक कदम उठाने की मांग की।

सोवियत सरकार ने जनता के नाम अपील जारी की। सभी प्रदेशों और शहरों को टेलीफोन संदेश भेजे गये "साधिया जहाँ तक हाँ सबता है, अकालप्रस्त इलाकों की सहायता कीजिय।"

चेका के अध्यक्ष द्जेर्ज़िन्स्की बोल्गा प्रदेश के लिए अनाज इकट्ठा करने के लिए साइबेरिया गये।

उक्रेना में फसल अच्छी हुई थी। व्लादीमिर इल्यीच ने उक्रेनावासियों को पत्र लिखा।

"तत्काल सहायता की और प्रचुर सहायता की जरूरत है," व्लादीमिर इल्यीच ने लिखा।

सहायता की अपील विदेशी मजदूरों से भी की गयी।

सोवियत सरकार ने अकालपीडित सहायता आयोग स्थापित किया, जिसका अध्यक्ष कालीनिन को बनाया गया। लेनिन मिखाईल इवानोविच कालीनिन पर, उनकी किसान बुद्धि और सबहारा सृज्जबूच पर बड़ा भरोसा करने थे।

"अक्टूबर तान्ति" नामक एक विशेष ट्रेन से मिखाईल इवानोविच बोल्गा प्रदेश के लिए रवाना हुए।

"पहली चिन्ता बच्चा की करनी है," व्लादीमिर इल्यीच ने उन्हे कहा और फिर अपनी बात पर जोर सा देते हुए बोले 'भूलियेगा नहीं, बच्चा की विशेष चिन्ता करनी है।'

मिखाईल इवानोविच ने लेनिन की आज्ञा में छिपे दूध को अनुभव किया। अपनी उद्विग्नता को छिपाते हुए वह खासे और दाढी पर हाथ फेरते हुए जवाब दिया

'भरसक बोशिश बरगा।'

'भरमक नहीं, उमसे भी ज्यादा, व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।'

रात हो गयी थी। जन कमिसारों की परिपद के अध्यक्ष के कमरे में वृत्ती जल रही थी। व्लादीमिर इत्येच ने हस्ताक्षर किये हुए और निबटाये हुए कागजों का ढेर उठाकर अलग रख दिया।

वह बेहद थक गये थे। सिर दब से फटा जा रहा था। वह जानते थे कि वह बीमार पड़ने का समय नहीं है। मगर चूँकि इन समय कोई नहीं देख रहा था वह माये को हथेली पर टिकाकर झुककर बैठ गये। लाप चाहन पर भी वह अकाल की तरफ स अपना दिमाग हटा नहीं पा रहे थे।

“भरसक नहीं, उससे भी ज्यादा।” वह साच रहे थे।

सोवियत सरकार ने अपने सामर्थ्य से भी ज्यादा प्रयत्न किया। सोवियत वकील म सोना बहुत कम था। लेकिन लेनिन न बीज खरीदने के लिए १ करोड़ २० लाख स्वण रूबल मजूर किये।

मजदूरों ने जन कमिसारों की परिपद को लिखा

साथी लेनिन, हमारे रूस में हजारों गिरजाघर हैं। उन में सोन के क्रास और अय कीमती चीजें हैं। बेहतर है कि भूखों को रोटी का इन्तजाम करने के लिए उन्हें ज्वस्त कर लिया जाये।”

शाबाश, मजदूरों! लेनिन को उनका प्रस्ताव बहुत पसंद आया।

तभी टेलीफोन की घटी बजी। वोल्गा प्रदेश से कालीनिन बोल रहे थे। लेनिन ने डरते-डरते रिसीवर उठाया।

“क्या, कौसी स्थिति है, मिघाईल इवानोविच?”

“बहुत खराब है, व्लादीमिर इत्येच।”

खेत मुर्दा पड़े थे। गाव मरीचिवाग्रा की तरह उजाड़ थे। गाया का रभाना नहीं सुनायी देता था। मवेशियों को या तो मारकर खा लिया गया था, या चारे के अभाव में वे खुद मर गये थे। इन कमवस्त गरमिया में जगली फल और खुभिया भी नहीं हुई थी। लोग घास पत्ते खाने को मजदूर थे। कमजोरी के मारे खड़े भी नहीं हो पाते थे। पूरे के पूरे परिवार बालकबलित हो रहे थे, मानो प्लग फँसी हो।

कालीनिन से बातचीत के बाद व्लादीमिर इत्येच देर तक कुर्सी पर निश्चल बैठे रहे। ऐसा उनका साथ आम तौर पर होता नहीं था।

अकालपीडित सहायता आयोग ने मुखमरी स ग्रस्त प्रदेशों से बच्चों को दूमरी जगहों पर भेजने का इन्तजाम करके ठीक ही किया। इन भूखे,

मरियल, वाहन में भी धनमय बच्चा स भरे बगना का देखकर दित करता
उठता था।

धनान्ध्रमन प्रदशा न बच्चा का जानवाणी तात्प्रा त्रिभिन शहरा म
पहुचन लगी। मास्को न चुवाश बच्चा का परण थी। भूतपूर्व म्भार उमराभा
और ब्रजुभाषा की गोठिया में ता अनाथ चुवाशा व लिए जात गला
पाल गय।

रात काफी हा चुगी थी। व्यापामिर ए्याच रिना गर्टि ग्राहट विप
पर म घुम। नभी साथ हुए थे। कवन मगया ए्यानिन्ना ही नया साथी थी।
वह व्यादीमिर इल्यीच की प्रतीगा कर रही था। रान न उह ग्साई म
बुताकर बहा

'भया, तुम अपनी तनिक भी चिन्ता नहीं करते। घैठा, कम से कम
चाय तो पी लो। तादा काम म दानी चुगी तरह यकी हुई तोटा नि श्रात
हा एकदम सा गयी।'

व्यापामिर इल्यीच की नजर मेज पर पड़े पावन प पडी। उस ताम्बान
प्रश्न व विमाना न भेजा था। उहात लिया था व्यादीमिर इल्यीच,
हम आपका अपने दहात का घाना भेज रहे ह। इस घानर अपनी ताकत
बढान्य।'

'बालाघा, तुम कभी किसी में कोई चीज स्वीकार नहीं करते हो
मगीया इल्यीनिन्ना वाली, "और म और नाचा भी इन बारे म तुमने
सहमन ह। मगर जरा दया तो तुम रिनन थके हुए हा, क्या शकन बन
गयी है "

व्यापामिर इल्यीच बहन की आर देखकर मुस्करा दिय। मेरा प्यागी
मयाशा। वह बहन को बहुत चाहत थे। १८८७ म जब माशा को फासी
हुइ थी, वह छाटी ही थी। सारे शहर ने उल्यानाव परिवार की ओर
म मुह मोड लिया था। मिफ चुवाश इवान याकोलेविच याकोव्लेव न ही,
जो पिता क गहर मित्र थे, उह नहीं छोडा। और चवाश ओखोत्निकोव
ने भी विपत्ति म उनकी तरफ से मुह नहीं मोडा था। उल्यानोव परिवार
उनका वित्तना आभारी था।

"जानतो हो, हम इस पासल का क्या करेगे?" व्यादीमिर इल्यीच
पासल का थपथपाते हुए बोले। 'मास्को म चुवाश बच्चे पहुचाये गये ह।
उनके लिए भेज देंगे। ठीक है न, मयाशा?'

मरीया इल्योनिच्ना टक्कती लगाये भाई को देख रही थी। बेचारे! कितने थक गये ह! उनका गला भर आया।

“हम कहेंगे कि इसे सबसे कमजोर बच्चा को दिया जाये,” व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

मरीया इल्योनिच्ना ने सिर हिलाकर सहमति जतायी।

व्लादीमिर इल्यीच का मिर अभी भी दुख रहा था। लेकिन वह हसी मजाक करते रहे। ताम्बोव से आया हुआ पासल ऊट के मुह में जीरा जसा था। मगर फिर भी यह सोचकर उह खुशी का अनुभव हुआ कि बल कुछ नह, सबसे कमजोर बच्चो को कुछ तो पौष्टिक खाना मिलेगा!

नयी आर्थिक नीति

व्लादीमिर इल्यीच के यहा मजदूरो, लाल सेना के कमाडरो और वैज्ञानिका का ताता लगा रहता था। मजदूर अपने काम के बारे में बताते थे, कमाडर सैनिक स्थिति के बारे में चर्चा करते थे, वैज्ञानिक शिक्षा, सस्कृति, विज्ञान और उद्योग से संबंधित सवाला पर परामश लेन आते थे। व्लादीमिर इल्यीच हर किसी को ध्यान से सुनते थे, आवश्यक सलाह देते।

बाद में इन सब बातों पर जन कमिसारा की परिषद में विचार हाता और सरकार आवश्यक निणय लेती, कानून पाम करती।

लेनिन से मिलन आनवालो में किसान भी होते थे। पहले महीनो में किसानों के सामने मुख्य समस्या जमींदारों और कुलको की जमीन की थी। उसे गरीब और मझोले किसानों के बीच कैसे बाटा जाय, उसका बेहतर उपयोग कैसे किया जाये?

बाद में गृहयुद्ध शुरू हो गया।

सोवियत सरकार ने कानून बनाया कि किसानों को सारा अतिरिक्त उत्पादन सरकारी गोदामों में जमा करना होगा। इसका मतलब यह था कि वे सिर्फ अपने खाने और बीजों के लिए आवश्यक गल्ला ही अपने पास रख सकते थे। बाकी सरकार को देना अनिवार्य था। नहीं तो लाल सेना और मजदूरों का वहा से खिलाया जाता?

किसानों के लिये ये बहुत कठिन दिन थे। पर और कोई उपाय था भी तो नहीं। बठिनाइया सभी का उठानी पड रही थी।

मगर अब गृहयुद्ध भी घटता ही गया। उन कमिश्नरों की परिषद के अध्यक्ष के कार्यालय में विमानों की भाँटो लगी। दफ्तरों में जीवन का समझनवाले, धनुभवों विमानों। नीति का पता था। वह उनमें पूछते प्रविष्ट के बारे में आप क्या मानते हैं ?

विमान बहुत अनिश्चित उत्पत्ति की अनिश्चित उगाहो देती जायें। इसकी जगह पर टैक्स की व्यवस्था की जायें।

इसका क्या मतलब था ? इसका मतलब था कि मानी उगाहो न छोटा जायें। जो ज्यादा जायें, उनमें पास ज्यादा अनाज दिया जायें। किसानों की रूचि इसी में है। तब वह ज्यादा से ज्यादा अनाज चाहिए महीने भर अच्छी करेगा। उसे सरकार का टैक्स का रूप में जितना अनाज देता है, उतना दे देगा और बाकी उमर पाम हा रहेगा, जिस बाजार में वेबकर वह अपनी जम्मान की चीजें—मासुन, कपड़ा, मिट्टी का तेल, खेती का औजार, आदि खरीदें मवगा। और क्याकि न चीजें खरीदा म नही उगाती ता इसका मतलब है कि शहरों में बन-बाराबाना का विकास किया जाये, ताकि किसानों की कमी न रहे।

क्या महानवश जनता अपने ही हाथों से गरीबीरहित जीवन का निर्माण नही कर पायेंगी ? पूजीपतिता का, मफेन गाडों का आखिरकार इसीलिए ना खदेडा है कि हम अपने भाग्य का निर्माण आप करें।

विमानों की ऐसी बातों में, माथिया की सलाहों से और खुद अपने साधनों से लेनिन के मन में एक नयी योजना ने जन्म लिया। इसे उन्होंने नयी आर्थिक नीति का नाम दिया।

सावियत सरकार ने निजी व्यापार की अनुमति दे दी। लेकिन बहुत सीमित पैमाने पर। इससे सोवियत सत्ता को कोई खतरा नहीं था। आखिरकार शासन तो मजदूरों और किसानों के हाथों में था। मजदूर विमान सत्ता इस बात का पूरा पूरा ख्याल रखने लगी कि उद्योग, रेलवे, जहाजखानी, बगरूह की बहाली और विकास हा। अब यह सब कुछ मारी जनता की, राज्य की संपत्ति था।

लेनिन जो कुछ करते थे, सब जनता के लाभ, भलाई और सुख के लिए था। अब युद्ध के बाद वह अर्थव्यवस्था, व्यापार, उद्योग, बिजलीकरण, मशीन निर्माण और गाँवों तथा शहरों के बीच सुदृढ मंत्री के विकास पर ध्यान दे रहे थे।

नयी आर्थिक नीति की जरूरत इसी के लिए थी। पार्टी की दसवां कांग्रेस ने लेनिन की योजना का अनुमोदन कर दिया।

नये ढंग के जीवन के निर्माण में लेनिन को कम कठिनाइयां का सामना नहीं करना पड़ा। रास्ते में बाधाएं पड़ीं। तरह-तरह के मतभेद पैदा हुए। नयी आर्थिक नीति पर हमले हुए। मिसाल के लिए, त्रोत्स्की ने हमेशा की तरह इस बार फिर लेनिन की नीति का विरोध किया, जो बहुत गलत और हानिकारक था। उन्होंने ब्रेस्त समझौते का भी विरोध किया था। सोवियत जनता का उहाने बहुत अनिष्ट किया।

त्रोत्स्की ने लेनिन और पार्टी के विरुद्ध काम करते हुए ढुलमुल सन्ध्या को इकट्ठा कर पार्टी के अंदर गुटबंदी शुरू की। लेनिन के बहुत से अन्य विरोधी भी थे।

जरूरत थी मेलजाल से, परस्पर महमति से शांतिपूर्ण जीवन का निर्माण करने की। लेनिन इसी का सपना देखते थे। वह चाहते थे कि पार्टी हमेशा एकबद्ध होकर आगे बढ़े।

लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे, जो नय जीवन के निर्माण में रोड़े पटकते थे।

लेनिन ने निममतापूर्वक उनके विरुद्ध सघष किया।

अधिकांश कम्युनिस्ट लेनिन के साथ थे। विजय उनकी ही हुई। वे पार्टी और सोवियत जनता को कम्युनिज्म की दिशा में आगे बढ़ाते रहे।

बर्फ का संगीत

“चलेगे!” नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना बोली।

“जरूर चलेगे, वोलोद्या!” मरीया इल्योनिच्चा ने भी उनका साथ दिया। वह मन ही मन डर रही थी कि ब्लादीमिर इल्योच सहमत नहीं होंगे।

लेकिन वह सहमत हो गया, हालांकि एक तरफ से यह इच्छा भी हो रही थी अकेले में, विशेषकर रविवार के एकान्त में बैठकर लेख का धर्म कर डाले। फिर कुछ महत्वपूर्ण पत्र भी लिखने थे।

पर अक्टूबर की मुहावनी सुबह धुली हवा में घूमने का निमंत्रण दे रही थी। ऐसी लुभावनी दिन शहर में बाहर सरकने के लिए जान और कामकाज को बल तक के लिए भुला देने में कितना मजा था! रविवार का दिन था

हा। व मच इग्नैण्ड म बनी हुई बनी वाली 'राल्म रायस म बैठ और गार्की के लिए चल पड़े। तमशा की तरह ड्राइवर की सीट पर गील बठा था।

मास्को स बाहर निकलत ही व्लादीमिर इल्यीच जी भग्यर खुता ताजी हवा का आनंद लेन लगे। गुलाबी गुब्बट कितनी मनभावनी थी। हल्के नीले आवाण का अपनी शांत विरणा स आनाकित करता हआ सूज्य धीरे धीरे ऊपर उठ रहा था। रात म मर्यर प पात्र नम गया था जिमकी वजह स वह ऊपड-प्यावड और विमनतागर हा गया थी। गील तार को धीम और सतकता मे चला रहा था।

'मायी गील, आप ता मा ड्राइव कर रह ह, जैसे हर म्गी का सलाम कर रह हा," व्लादीमिर इल्यीच न बग।

व्लादीमिर इल्यीच के मजाब गीन को तमशा अच्छे नगत थ। पर फर भी उमन रफ्तार तेज नही की। नही, गाव क पाम स गुजरन हुए मुगिया का सलाम करना" ऊपड-प्यावड रास्त पर व्लादीमिर इल्यीच ना पत्रभारन म बेहतर है।

गार्की म एव पुगनी बाठी थी। उसव चारा तरफ एव शातदार पाक था, विशान लिण्डन वशा और शाहबलूता स ढकी छायादार पगडडिया थी और लवे चीडे घास के मदान थ। वहा कुछ ऐसी जगह भी थी, जहा स दूर-दूर तक, यहा तक कि पादाल्क भी दिखायी दता था।

व्लादीमिर इल्यीच को शितिज तक फँली हरियाली देखना और वहा जगला और कलकल बहती पछा नदी के बहुत आगे शहर की कल्पना करना अच्छा लगता था। १९०० म वह निर्वासन से लौटने के बाद पादाल्क आय थे। उन दिना मरीया अलक्माद्रोव्ना मास्को स निर्वासित भीत्या के साथ वहा रहती थी। और जब व्लादीमिर इल्यीच स्विट्जरलैण्ड जाने से पहले वहा आये थे, तो बहनें भी वही थी। उन दिना वह विदेश म मजदूरा के श्रातिवारी अखवार "ईस्त्रा" का निकानने की तयारी कर रहे थ।

बार सरपट भागती हुई बोठी की उत्तरी इमारत के सामन आकर रक गयी। व्लादीमिर इल्यीच को बोठी की मुख्य इमारत कोई धाम पसद नही थी। इसलिए वह हमेशा उत्तरी इमारत म आकर ही रुका करते थ। यहा कमरे छोटे थे, छते नीची थी और खिडकिया कोई बहुत बडी नही थी। पहल शायद इसम नौकर रहते थ। अक्तूबर श्राति के बाद मालिक विदेश

भाग गया। सरकार ने यहाँ गार्की में विश्रामगृह खोलने का फैसला किया। घायल होने के बाद जब व्लादीमिर इत्येच का डाक्टरा न ताजी हवा में रहने की सख्त हिदायत दी, तो उनके लिये यहाँ रहने की व्यवस्था कर दी गयी।

सचमुच व्लादीमिर इत्येच बैठका के घुटन भरे वातावरण और मास्को के कोलाहल से ज्या ही यहाँ गार्की पहुँचते थे, उनका सिरदर्द लगभग जाता रहता था।

“बोलाचा, देखा तो गाव की ताजी हवा लगते ही तुम्हारे गाल कैसे गुलाबी हो गये हैं,” नादेज्दा कान्स्तान्तीनोव्ना ने अपनी खुशी प्रकट की।

“देवी जी, अभी तो हम और आगे जाना है,” व्लादीमिर इत्येच ने ऐलान किया।

मौसम सूखा और ठंडा था। पैरा के नीचे जमीन पत्थर की तरह बज रही थी। पड़ा स पत्ते झड़ चुके थे। सार पाक के आर-पार देखा जा सकता था। बंबल बकायन की झाडियाँ ही मटमले हरे पत्ता का आवरण आड़े माना उदास सी खड़ी थी। कहीं-कहीं लाल फला से लदी टहनियोवाले रोबनवक्ष भी दिखायी दे जाते थे।

झाडियाँ में पीली छातीवाली चिडिया फुदक रही थी।

“ऐ कुर्तीवालिया!” व्लादीमिर इत्येच उन्हें देखकर ज़ार से बाले।

“ये कुर्तीवालिया कौन है?” नादेज्दा कान्स्तान्तीनोव्ना नहीं समझी।

‘देखो, इन फुदकियाँ ने मानो पीली कुतिया पहन रखी ह,’

व्लादीमिर इत्येच ने कहा।

विदेश प्रवास के दिनों में वे खाली समय में पहाड़ों पर चढ़ा करते थे या साइकिल पर सैर करने के लिए निकल जाते थे। जगल जितना घना होता था, पगडंडी जितनी सपिल और सुनसान होती थी, व्लादीमिर इत्येच को उतना ही अधिक मजा आता था।

‘नाद्यूशा, चलो वहाँ, झील के किनारे खड़ी चट्टान पर चढ़’

स्विट्जरलैण्ड के पहाड़, झीले अत्यन्त भव्य और मनोरम थे। पर रूस

को शांत प्रकृति अधिक प्रिय और आत्मीय थी।

‘देखो, वह छोटी झील है!’ व्लादीमिर इत्येच बोले।

“सचमुच कितनी खूबसूरत जगह है,” मरीया इत्येचिन्ना भी खुशी से चिल्लायी।

झील जम गयी थी। बर्फ की परत हल्के नीले रंग की और पारदर्शी थी। माना बर्फ की चादर है। और उमम पडा के तना, नगी शाखा और झाडिया की परछाए पड रही थी। बर्फ की परत के नीचे से पानी में उगी हुई पाग भी दिखायी दे रही थी।

अचानक झील में किसी चीज के गनगन की मधुर आवाज तिर गयी। माना किसी अज्ञात वाद्ययंत्र का तार छूट गया था। आवाज बहुत कोमल थी और दर तब गूजती रहा।

किसी ने बर्फ फेंका था और फिमना हुआ बट लट से चीन के बाबाबीच आकर गिर गया था। बर्फ की परत झनझना गयी थी।

“चमत्कार है।” अनादीमिर इत्योच ने हल्के में आश्चर्य प्रकट किया। तभी उन्हें झाडी के पास एक लडका और एक लडकी दिखायी दिया। दाना की उम्र बार्डे दस-एक साल रही होगी। बर्फ उम लडके ने ही बर्फ पर बकर फेंका था।

“घटा कम गाती है। मारो झील गूज गयी, लडकी ने कहा।

“दिन ऐसा छाटना चाहिये जब बर्फ की परत अभी अभी बनी हो,” लडके ने जवाब दिया। नहा ता बाद में माटी पडन पर वह गायगी नहीं।’

“एक बार और फेंका,” लडकी ने अनुरोध किया।

झील पर बर्फ फिर फिमना और आवाज एक विनार से दूसरे विनार तक गूज गयी।

‘अर!’ लडकी ने एवाएव कहा।

बच्चा की नजर बडा पर पड़ी। लडके ने टापी उतार ली

“नमस्ते।”

“नमस्ते,” अनादीमिर इत्योच ने पाम आकर जवाब दिया। “तुम लाग कहा रहते हो?”

“यही पाम ही में रहते हैं,” लडके ने हाथ से गोर्की गाव की ओर इशारा किया, जो नीले से दिखायी दे रहा था। “और आप क्या मास्को से आये हैं?”

“ठीक ही अदाजा लगाया तुमने,” अनादीमिर इत्योच हस पडे।

“तुम्हारे यहां बर्फ बहुत अच्छा गाती है।”

“और क्या। बस ठीक समय जानना चाहिये। और फिर हर कोई ऐसा नहीं कर सकता,” लडके ने शेखी बंधारते हुए जवाब दिया। ‘आप क्या कोई बड़े अफसर हैं?’

'हमारे यहा इल्यीच की बत्तिया' जलती हैं," लडकी वाली।

"विजली है। मास्का से कम नहीं है। शाम होत ही सारा गाव जगमगाने लग जाता है," लडके न फिर डींग हाकी।

"तो क्या लाग खुश है?" व्लादीमिर इल्यीच ने थाडा मजाक में और थोडा गभीरता से पूछा।

"और क्या? वाद म तो और भी अच्छा होगा।"

लडके न टापी उतारी, नमस्ते कहा और दोना घर की आर दौड पडे। या हो सकता है कि शरदवालीन जगल क चमत्कारा आर आश्चर्यों को पुन देखने लग गये हा।

और व्लादीमिर इल्यीच, नादज्दा कोन्तातीनोव्ना और मरीया इल्यीनिच्चा पाक मे और आगे बढ चल क्याकि छोटी झील घर स काई बहुत दूर नहीं थी और व्लादीमिर इल्यीच आज दूर, बहुत दूर तक घूमना चाहते थे।

प्रकाशस्तम्भ

उठ अब खजोरा मे जकडे
भूखा, दासो के ससार।
खून खोलता है नस-नस मे
मर मिटने को हम तैयार।

बडे नेमलिन प्रासाद के हाल म इण्टरनेशनल" गूज रहा था।

ईश्वर, राजा, याद्वानायक
मुक्ति नहीं हमका देंगे
अपने ही बल-बूते पर
हम अपनी आजादी लेगे।

नेमलिन के हॉल मे खडे कई सी आदमी विश्व की पचास भाषाओ मे इस गीत को गा रहे थे। फ्रासीसी, जमन, इतालवी, तुर्की, जापानी, अंग्रेजी, नार्वेजियाई, फिनिश, एस्तोनियाई, लाटवियाई और, निस्सदेह, रूसी मे।

... का ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...

...
 ...
 ...
 ...

प्रथम के ...
 ...
 ...

जनन ...
 ...
 ...
 ...

अब जब ...
 ...
 ...

कम्युनिस्ट ...
 ...
 ...

व्यग्र थी। वह सोचा लगे “इन विदेशी कम्युनिस्टा के समक्ष किम वार म बावू? हा सबता है कि सावियत गमाज व जीवन, नय जीवन व वार म बताऊ?”

और वह बताने लगे कि हमार यहा, सावियत म्म म अथव्यवस्था किस तरह चल रही है, इन पाच वर्षों म हमन क्या हासिल किया और क्या नहीं। हमन लडाई म विजय पायी। भयमरी पर काबू पाया। अब विनष्ट अथव्यवस्था को बहाल कर रह ह। विमाना और मजदूरा का जीवन बेहतर हो गया है। हम व्यापार भी सीख रहे हैं। अभी जा मशीनें बनाने हैं, वे कम तो हैं ही, पर घटिया भी हैं। हम मशीना की बहुत जम्मत है। उनके बिना कम्युनिज्म का निर्माण नहीं किया जा सकता। और हमारा लक्ष्य है कम्युनिज्म। और, विदेशी साधिया, आपका लक्ष्य है श्रान्ति।

व्लादीमिर इल्यीच जमन म बोल रहे थे। उम समय विदेशा म रुमी बहुत कम लोग जानते थे। मगर जमन काफी व्यापक तौर पर समझी जाती थी।

“कितनी अच्छी जमन बोलते ह।” जमन साधिया न मन ही मन लेनिन की दाद दी।

भाषण खत्म हो गया।

कम्युनिस्टो की विशाल वाहिगी खडी हो गयी।

“हुर्रा, लेनिन! लेनिन जिन्दावाद।”

हाल उदघोषा और तालिया की गडगडाहट से बडी देर तक गूता रहा।

स्नेह की इम अभूतपूर्व अभिव्यक्ति ने व्लादीमिर इल्यीच के दिल को छू लिया। मगर साथ ही उन्हें कुछ सकोच भी हुआ। वह जल्दी से जल्दी हाल से निकल जाना चाहते थे। पर निकले कैसे? भीड़ रास्ता रोके खडी थी। हर कोई कुछ न कुछ कहना चाहता था, कुछ न कुछ पूछना चाहता था। या और कुछ नहीं तो एक वार हाथ ही मिला लेना चाहता था।

‘नमस्ते, साथी लेनिन।’ किसी तरह निकट पहुचकर एक घुघराले वालावाला आदमी फ्रासीसी मे जोर से चिल्लाया। उसकी काली आँख, सारा चेहरा खुशी से दमक रहा था और वह लगातार सौहादपूर्ण स्वर मे चिल्लाता जा रहा था “नमस्ते, साथी लेनिन! कामरेड, कामरेड ”

लेनिन उसे देखकर मस्कराये

“मायी, आप फ्रांस के किम इनाके के रहनेवाले हैं ?

“म इतालवी हू। पर आप तो इतालवी भाषा नहीं जानते

“थाडी बहुत जानता हू,” इतालवी म बोलते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने आपत्ति की।

“अहा, साथी लेनिन सब कुछ जानते हूँ।” घघराले धावावाणे इतालवी के आश्चर्य का कोई अंत न था।

हर तरफ से इतालवी, फ्रांसीसी, जर्मन, अंग्रेजी म लाग चिलना रहे थे

“लेनिन हमारे मित्र हूँ। लेनिन कम्युनिस्ट पार्टीया के नेता हूँ। लेनिन हमारे शिक्षक हैं।”

और बफ सी सफेद कमीज पहने हुए एक विदेशी घान मजदूर, जिम्बे चेहरे के त्वचारधरा मे कौयले की घल के निशान अभी भी दखे जा सकते थे, दोना हथेलियों को मुह के पास लाया और जोर म चिरलाया

“सोवियत देश हमारा प्रकाशस्तभ है। हम इस प्रकाशस्तभ की ओर बढ़ेंगे।”

नये साल से पहली शाम

व्लादीमिर इल्यीच बीमार पड गया। इतन बीमार कि जीवन घतरे म था।

कुछ लोग माचते थे कि बीमारी एकाएक पैदा हुई है। पर नहीं। उसके लिए जमीन बहुत पहले से तैयार हा रही थी। लेनिन को अनिद्रा का रोग था। कभी कभी वह सुबह तक आखे नहा झपक पाने थे। कभी घतम न हानेवाली रात को काटना अत्यंत तकलीफदेह हो जाता था। फिर मिर भी लगभग हर समय दुखता रहता था। और जब मव कुछ चरम पर पहुच गया, तो व्लादीमिर इल्यीच भयंकर रूप मे बीमार पड गये।

वह क्रैमलिन के पलैट म अपने छोटे-से कमर म लेटे हुए थे।

“व्लादीमिर इल्यीच ने अपन को बेहद थका दिया ह। भना टनना अधिक काम आदमी के बस की बात है?” डाक्टरा ने कहा। अत्र आवश्यकता है कि वह पूरी तरह आराम कर।”

लेकिन व्लादीमिर इल्यीच काम के बगर नहा रः सकते थे। कम नहा। बीमारी खतरनाक थी। साथिया को समय रहते अपने सभी जरूरी विचारा से अवगत कराना भी आवश्यक था।

व्यग्र थी। वह सोचने लगे “इन विदेशी कम्युनिस्टा के समग्र किम वार म वानू? हा सकता है कि साप्तिगत ममाज के जीवन, नय जीवन क वार म बताऊ?”

और वह बताने लगे कि हमारे यहा, साप्तिगत मम म अथव्यवस्था किस तरह चल रही है, इन पाच वर्षों मे हमन क्या हासिल किया और क्या नहीं। हमने लडाइ मे विजय पायी। भखमरी पर काबू पाया। अर दिनष्ट अथव्यवस्था का प्रहाल कर रहे ह। किमाना और मजदूरा का जीवन बेहतर हो गया है। हम व्यापार भी सीख रहे हैं। अभी जा मशीनों बनाते हैं वे कम तो ह ही, पर घटिया भी हैं। हम मशीना की बहुत जरूरत है। उनके बिना कम्युनिज्म का निर्माण नहीं किया जा सकता। और हमारा लक्ष्य है कम्युनिज्म। और, विदेशी साधिया, आपका लक्ष्य है त्राति।

व्लादीमिर इल्यीच जमन मे बोल रहे थे। उस समय विदेशा म रूसी बहुत कम लोग जानते थे। मगर जमन काफी व्यापक तौर पर समझी जाती थी।

‘कितनी अच्छी जमन बोलते हैं।’ जमन साधिया न मन ही मन लेनिन की दाद दी।

भापण खत्म हो गया।

कम्युनिस्टा की विशाल बाहिनी खडी हो गयी।

“हुर्रा, लेनिन! लेनिन जिंदाबाद।”

हाँल उदघोषा और तालिया की गडगडाहट से बडी दर तक गूजता रहा।

स्नेह की इस अभूतपूर्व अभिव्यक्ति न व्लादीमिर इल्यीच के दिल को छू लिया। मगर साथ ही उन्हें कुछ सकोच भी हुआ। वह जल्दी से जल्दी हाल से निकल जाना चाहते थे। पर निकले कैसे? भीड रास्ता रोक खडी थी। हर कोई कुछ न कुछ कहना चाहता था, कुछ न कुछ पूछना चाहता था। या और कुछ नहीं, तो एक वार हाथ ही मिला लेना चाहता था।

‘नमस्ते, साथी लेनिन!’ किसी तरह निकट पहुचकर एक घुघराले वालोवाला आदमी फ्रासीसी मे जार से चिल्लाया। उसकी वाली आख, सारा चेहरा खुशी से दमक रहा था और वह लगातार सौहादपूर्ण स्वर मे चिल्लाता जा रहा था “नमस्ते, साथी लेनिन! कामरेड, कामरेड
लेनिन उसे देखकर मस्कराये

“माथी, आप फ्रांस के किस इलाके के रहनेवाले हैं?”

“मैं इतालवी हूँ। पर आप तो इतालवी भाषा नहीं जानते

“थोड़ी बहुत जानता हूँ,” इतालवी म बोलते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने आपत्ति की।

“अहा, साथी लेनिन सब कुछ जानते हैं! घघराले बालावाले इतालवी के आश्चर्य का कोई अंत न था।

हर तरफ से इतालवी, फ्रांसीसी, जर्मन, अंग्रेजी म लोग चिल्ला रहे थे
“लेनिन हमारे मित्र ह! लेनिन कम्युनिस्ट पार्टी के नेता हैं! लेनिन हमारे शिक्षक ह!”

और वफ सी सफेद कमीज पहन हुए एक विदेशी खान मजदूर जिसके चेहरे के त्वचारध्वा म कोयले की धल के निशान अभी भी देखे जा सकते थे, दोनों हथेलिया को मुह के पास लाया और जोर से चिल्लाया

“सोवियत देश हमारा प्रकाशस्तभ है! हम इस प्रकाशस्तभ की ओर बढ़ेंगे!”

नये साल से पहली शाम

व्लादीमिर इल्यीच बीमार पड गये। इतन बीमार कि जीवन खतरे मे था।

कुछ लोग सोचते थे कि बीमारी एकाएक पैदा हुई है। पर नहीं। उमके लिए जमीन बहुत पहले से तैयार हा रही थी। लेनिन को अनिद्रा का रोग था। कभी-कभी वह सुबह तक आँखें नहीं चपक पाते थे। कभी खत्म न होनेवाली रात को बाटना अत्यंत तकलीफदेह हो जाता था। फिर मिर भी लगभग हर समय दुखता रहता था। और जब सब कुछ चरम पर पहुच गया, तो व्लादीमिर इल्यीच भयंकर रूप से बीमार पड गय।

वह फ्रेमलिन के फ्लैट मे अपने छोटे-से कमरे म लटे हुए थे।

व्लादीमिर इल्यीच ने अपने को बेहद थका दिया है। भला टनना अधिक काम आदमी के बस की बात है? डाक्टरा ने कहा। ‘अब आवश्यकता है कि वह पूरी तरह आराम कर।”

लेकिन व्लादीमिर इल्यीच काम के बगर नहीं रह सकते थे। बस नहीं। बीमारी खतरनाक थी। साथियों को समय रहते अपने सभी जरूरी विचारा से अवगत कराना भी आवश्यक था।

व्लादीमिर इल्यीच अपने लकवाग्रस्त दायें हाथ को कवल के ऊपर रखे हुए निश्चल पड़े थे। तपते माथे पर ठंडी पट्टी रखी हुई थी।

शाम का समय था। मेज पर हल्के प्रकाशवाला लैम्प जल रहा था। व्लादीमिर इल्यीच को भोजन के बाद आराम करने को कहा गया था। मगर वह किसी तरह सो नहीं पा रहे थे।

कल मास्को में सोवियत समाजवादी जनतंत्र सघ की सोवियतता की पहली कांग्रेस शुरू हुई थी। कल ३० दिसंबर, १९२२ को कांग्रेस ने सोवियत समाजवादी जनतंत्र सघ की स्थापना से संबंधित संधि की पुष्टि की थी।

व्लादीमिर इल्यीच इस ऐतिहासिक दिन को बहुत समय से तयारी करते रहे थे।

सभी लोग एकदम नहीं समझ पाए कि सोवियत सघ की स्थापना इतनी महत्वपूर्ण क्यों है, व्लादीमिर इल्यीच इसके लिये इतने जोश और दबता के साथ प्रयत्न क्यों कर रहे हैं।

लेनिन चाहते थे कि सोवियत समाजवादी जनतंत्र सघ एक सबया नवीन राज्य, जारशाही रूम से एक सबया भिन्न राज्य हो। जारशाही के काल में क्या था? एकमात्र रूस था। उर्फइना और बेलोरूस का मानो अस्तित्व ही नहीं था। और आर्मीनिया, आजरबजान तथा जाजिया को रूम का अंग मात्र ही माना जाता था। गर्फसी जातिया का किसी भी तरह की आजादी नहीं थी। स्कूलों में इनके बच्चे अपनी मातृभाषा में शिक्षा नहीं पा सकते थे। बहुत सी जातियां का अपना साहित्य और यहां तक कि अपना लिखित भाषा भी नहीं थी। छोटी जातियां का विकास का कोई मौका नहीं दिया जाता था। उन्हें निवृष्ट माना जाता था। लेनिन को यह प्रकार की अनमानता से घोर नफरत थी।

वह विचारों में गहरा खा गया था। नाट्यपूर्ण रोन्तातीनाव्ना दरवाजे पर आयी और वान लगाकर मुनन लगी "मा गय है?"

"म मा नहीं रहा हू, नाटूशा। राम को तैयारी कर रहा हू।"

वह बिना कोई झंझट किए कमरे में दाखिल हुईं। हल्के उजालवाली बत्ती बुझाकर उन्होंने दूसरी बत्ती जला दी। भाग कमरा प्रकाश में नहीं उठा। तबिये पर टिका व्लादीमिर इल्यीच का पीला चेहरा भी धारादिग हो गया।

खाने के कमरे में दीवार घड़ी न छह का घटा बजाया। ठीक उसी समय व्लादीमिर इत्येच की स्टेना मरीया अकीमोव्ना वोलोदिचेवा न कमरे में प्रवेश किया। वह दुबली पतली, कोई तीस एक वष की, बुद्धिमत्ती और समझदार युवती थी। वह कागज़-पैसिल लेकर चारपाइ के करीब रखी मेज के पास बैठ गयी।

“हा, तो,” व्लादीमिर इत्येच बोले।

ग्राज डाक्टरा न उहे चालीस मिनट तक डिक्टेसन दन की अनुमति दे दी थी। चालीस मिनट! बहुत काफी है। इसलिए भी कि नख उनके मस्तिष्क में लगभग पूरी तरह तयार ह।

अगर व्लादीमिर इत्येच कांग्रेस में उपस्थित हात, ता वही कहते, जा इस समय लिखा रहे थे। यह साविया के लिए उनका निर्देश था। साथी उह मुनेगे, उनका निर्देश मानेगे और उसक अनुसार सोवियत सघ का निर्माण करेगे। लेनिन का एक सख्त निर्देश यह था कि छाटी जातिया को किसी भी अधिकार से वचित न किया जाये। जातिया की उपक्षा, अवमानना ठीक नहीं! सभी सोवियत जनतवा का समान होना चाहिये। हलमेल से रहना चाहिये। और तब सोवियत सघ एक शक्तिशाली और यायपूर्ण राज्य बन जायेगा। और सारे विश्व में साम्राज्यवाद के जूए तले दबे हुए राष्ट्रों में चेतना का सचार हा जायेगा

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना पास के कमरे में बठी हुई उनकी परिचित, प्रिय आवाज को सुन रही थी। वह एक दूसर में फसी हुई अगुलिया पर ठोड़ी टिकाये बैठी थी। उनका दुबल चेहरा चिन्तामिश्रित प्रेम की आभा से चमक रहा था।

डिक्टेसन खत्म होने पर वोलादिचेवा चली गयी, तो नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना उसकी जगह पर रोगी की शय्या के पास आकर बठ गयी। उनके चेहरे पर मुस्कान खेल रही थी। व्लादीमिर इत्येच को उनकी आखा में दुख या भय की कोई छाया नहीं दीखी। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना की शान्त-सौम्य मुद्रा ने व्लादीमिर इत्येच के मन की हलचल को भी शांत कर दिया।

“नाद्या, जानती हो, मुझे क्या याद आ रहा है?” विचारमग्न मुद्रा में व्लादीमिर इत्येच बोले। “मुझे याद आ रहा है कि पिताजी सिम्बीस्क

प्रान्त म चुवाशा, मादविना आर तातारा के लिए स्कूल खुलवान के लिए कौंस दिन रात कोशिश करते रहते थे। उनसे पहले सिम्बीस्क प्रान्त म ऐसा एक भी स्कूल नही था।”

“वह असाधारण आदमी थे,” नादेज्दा कान्स्तान्तीनोव्ना न जवाब दिया। ‘उह सचमुच बहुत कठिनाइया उठानी पडी। मगर अब क्रांति न असीमित सभावनाआ के द्वार खोल दिये हैं।”

उहान गौर किया कि व्लादीमिर इल्यीच आज के काम से सतुष्ट ह। यहा तक कि आखें भी पहले की तरह चमकन लगी हैं। माथे पर रखी ठडी पट्टी अगर हटा दी हे, तो इसका मतलब है कि बुखार उतर गया है। हा सकता हे कि शीघ्र ही चगे हो जायेगे।

हो सकता है? ’ नादेज्दा कोन्स्तातीनाव्ना भय स सिहर गयी। “हा सकता है नही, बल्कि अवश्यमेव! छह महीन पहले भी ऐसा ही हुआ था। वीमारी क वाद चगे हा गये थे। इस बार भी ऐसा ही हागा।”

उहाने सभलकर व्लादीमिर इल्यीच के कवल को ठीक कर दिया। ‘बोलोद्या जानत [हा, आज पुराने साल की अंतिम शाम है,” वह वाली। ‘तुम्हारी तबीयत यो ही नही मुधरी है।” और चुक्कर उन्हान व्लादीमिर इल्यीच को चूम लिया। “नया साल मुबारक हो, बोलाद्या।’

हमेशा सघर्ष में

डाक्टरा को भय था कि डिक्टेसन दन की अनुमति स कही व्लादीमिर इल्यीच की हालत विगड न जाय। व्लादीमिर इल्यीच, मस्तिष्क का आराम करन दीजिये! सरकारी कामकाज, लेखा को कुछ समय के लिए भूल जाइये।

किसी भी कीमत पर नही!

मगर डाक्टरा के साथ बहस करना आसान नही था। तब व्लादीमिर इल्यीच न चालाकी का सहारा लिया।

“मैं लेख नही, टायरी डिक्टेट करवाया कम्गा।

डाक्टर ज्ञास म आ ही गय, हालाकि व शायद यह जानते थ कि टायरी मौसम के हालचाल के बार म ता हागी नही। मगर क्या लिनन का अपन ही हाथा स बनाये गये राज्य क बार म माचन स राका जा

मरना था? जब उह डिक्लेशन दन की अनुमति नही मिलती थी, व्लादीमिर इल्यीच रिडचिडा जाने थ, रिक्लुन मो नही पाने थ। अनिए अपटग का अनुमति दनी ही पडी। मगर दिन म तीम चानीम मिनट क वास्तु ही। ज्यादा रिक्लुन नही।

नियत समय पर स्टेना आ जाती। दिन म वह त्भा एक पच्छ लिखती ता त्भा दा या तीन। इन पच्छा म हमार समाज क भावा निमाण की योजना मूल रूप म पत्र की हुई हानी। व्लादीमिर इल्यीच कमिया की घालाचना करते। सलाह देने कि राजकीय मशीनरी का बहनग बंम बनाया जाये। कम्युनिस्ट पार्टी की एवता का सुरक्षित बस रखा जाय। त्रेनिन का मवस अधिक् डर इसी बात का था कि पार्टी म कही फूट न पड जाय।

विस्तर म लेटे हुए व्लादीमिर इल्यीच घटा अपने लेखा के हर हिस्से को, हर शब्द का सोचते रहने।

लेनिन के लेख "प्राव्दा" म छपन थ। मजदूर नाम उह पत्र और आपम मे कहत

'हमारे जीवन के वारे म इल्यीच की समझ बिक्लुल सही ह। जिस चीज का हम नही देख पात, उसे भी देख लेते ह।

और व खुश होते

"लगता है कि हमारे इत्यीच का स्वास्थ्य सुधर रहा है।'

मगर अचानक माच का दिन था। बसतकालीन धूप खिली हुई थी। बुलवारो, पार्को, हर कही चिडिया चहचहा रही थी। मडका के किनारा पर पानी की फेनिल धार बह रही थी। प्रकृति की हर चीज जीवन और खुशी का सदेश दे रही थी। लेकिन १४ माच की इस मुबह को अखवार खोलते ही लोग का सारा हृष, सारा उत्साह जाता रहा। लोग मडका पर अखवारा के स्टैण्डा के पास इकट्ठे हा रहे थे। हर कही "मरकारी बुलेटिन" टगी हुई थी।

अगर मरकारी है, तो इसका मतलब है कि काई गभीर मामला है। कही बोई अशुभ समाचार तो नही है?

"व्लादीमिर इल्यीच के स्वास्थ्य के वारे म बुलेटिन।

पिछले कुछ दिनों से व्लादीमिर इल्यीच की हालत म काफी गिरावट आयी है "

काले अक्षर चिल्ला रहे थे अशुभ घटना घटी है “व्लादीमिर इल्यीच की हालत में काफी गिरावट आयी है।” लोगो से पढा नहीं जा रहा था। सबके चेहरे लटक गये थे।

वकशापा म दिन भर उदासी छापी रही।

“आह, हमारे इल्यीच।” कोई बूढा मजदूर गहरी सास लेते हुए कहता।

नौजवान मजदूरो को यकीन नहीं हो पा रहा था कि कोई भयानक घटना होनवाली है।

“नहीं, ये बुलेटिने यो ही नहीं निकाली गयी ह, ” बूढे मजदूर कहते।
“आह, इल्यीच।”

व्लादीमिर इल्यीच की हालत सचमुच गभीर हो गयी थी। बीमारी लगातार बढती जा रही थी। उनकी जवान को लकवा मार गया था। इससे भयकर और क्या हो सकता था। लेनिन की वाक्शक्ति जाती रही थी। उनकी सजीव, थोडी थोडी तुतलाती, तेज वाणी मूक हो गयी थी।

दिन रात डाक्टर व्लादीमिर इल्यीच की शय्या के पास रहते। चिकित्सक का सारा विज्ञान, प्रतिभा और कौशल उनके भव्य जीवन के लिए सघप करने लगा। सारा देश आशा की छोटी से छोटी किरण पाने के लिए आतुर था। हर सुबह लोग अखवार के लिए दौडते, लेनिन के स्वास्थ्य की बुलेटिन पढते।

शाम होती। जन कमिसारो की परिपद की इमारत पर हवा लाल झडे से खेलती होती। मगर वहा, क्रेमलिन के फ्लट में क्या हालत है?

शाम होती। लोग दिन भर की मेहनत, दौडधूप के बाद घर लौटते। मगर दिल पुन पुकार उठते वहा क्रेमलिन के फ्लैट में स्थिति क्या है?

व्लादीमिर इल्यीच के कमरे में खामाशी थी। ऐसी खामोशी कि खान के कमरे की दीवार घडी के पण्डुलम की आवाज भी सुनायी दे जाये। वहा ड्यूटी नस बैठी थी। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना शय्या के पास बठी थी।

व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी भारी पलके उठाया “नाचा, तुम यहाँ हो?” नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना सब समझ गयी कि वह क्या कहना या पूछना चाहत है। वह उनस या बोली, मानो उत्तर सुनती जा रही हा।

‘आज तुम कुछ बेहतर दिखायी देत हो,’ उहोन विस्वास के साथ कहा।

और व्लादीमिर इल्यीच का लगा कि सचमुच वह पहले से बेहतर है। उनकी आखा न जवाब दिया है।'

"तुम ठीक हो जाओगे। डाक्टर कहते हैं कि तुम्हें अपनी सारी शक्ति समेटनी है। समझे, बोलोचा, सारी शक्ति समेटनी है।

"ठीक है, समेटूंगा," व्लादीमिर इल्यीच ने आखा से जवाब दिया।

"तुमने जीवन भर लोगों के लिए सघप किया। अब जरा अपन लिए भी करो। यह भी लागे के लिए, शक्ति के लिए होगा। पूरी ताकत से सघप करो, बोलोचा।"

व्लादीमिर इल्यीच ने पुन आखा की भाषा में, जिसे नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना समझती थी, जवाब दिया 'हां।'

अचानक नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना मन ही मन रोने लगी। उनका गला रुध गया। क्षण भर के लिए वह शक्ति शून्य हो गयी। मगर फिर अपने पर काबू पाया। अपने दुख को अदर ही अदर दबाकर वह स्नेह में बोली

"और अब सोने का समय हो गया है। कुछ सो लो, ताकि ताकत लौट आये। सब ठीक हो जायगा। सो जाओ। मैं वहीं जाऊंगी नहीं। यहीं पास ही बैठी रहूंगी।"

१९२३ की शरद

अप्रैल में रूसी कम्युनिस्ट पार्टी की बारहवीं कांग्रेस शुरू हुई। कांग्रेस में व्लादीमिर इल्यीच को एक अभिनन्दन सदेश भेजा।

"पार्टी, सबहारा और सभी महनतकशो की ओर से कांग्रेस अपने नेता को, सबहारा विचारधारा और शक्तिकारी कार्यों की सरक्षक विभूति को अभिनन्दन और अगाध प्रेम का सदेश भेजती है

पार्टी सबहारा और इतिहास के समक्ष अपने उत्तरदायित्व का आज पहले से कहीं अधिक अनुभव करती है। वह अपने ध्वज और अपने नाना के पहले से भी कहीं अधिक योग्य बनना चाहती है और बनगी "

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने अभिनन्दन सदेश पढ़कर सुनाया। गहरी, बहुत गहरी और भावा से भरी हुई दृष्टि से व्लादीमिर इल्यीच ने उमंग जवाब दिया।

व्लादीमिर इल्यीच ने बीमारी के सामने घुटन नहीं टेके। मर्द के मध्य

म उह गोर्की म, बडी इमारत म स्थानात्तरित कर दिया गया। जन कमिमारा की परिपद के अध्यक्ष ने अपन लिए सबसे छाटा, बाने का और ऊची-ऊची छिडकियावाला कमरा चुना। छिडकिया म बाग दिखायी देता था। हरियाली म डूबा हुआ बाग चिडिया की चहचहाहट स भरपूर था। हर टहनी स उनका खुशी भरा संगीत सुनायी देता था।

और रात मे बलबुले गाती थी। सितारे छिडकिया म थाकत थे।

ताजी हवा म रहने से व्लादीमिर इल्यीच की तबीयत म कुछ सुधार आया। उह नीद आने लगी। दहात की हवा म भूख भी लगन लगी। घायी शक्ति पुन लौटने लगी।

स्वास्थ्य धीरे धीरे सुधार रहा था। व्लादीमिर इल्यीच बायें हाथ से छडी का सहारा लेकर चलने फिरने लगे। उहाने बायें हाथ से लिखन और वाक्शक्ति को लौटान का अभ्यास भी शुरू कर दिया।

उनकी शिक्षिका नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना थी। पढाई के समय कमरे का दरवाजा बंद कर दिया जाता। वे दोनों अकेले हाने। कोई नही सुन पाता कि नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना कैसे पढा रही है।

घर म खुशी का वातावरण थोडा बहुत लौट आया। जब व्लादीमिर इल्यीच हसत, तो सभी बेहद हसित हाते। सभी जानते थे कि वह बहुत हसोड और खुशमिजाज आदमी है। मगर इधर जबसे उनके स्वास्थ्य म कुछ सुधार आया था, तब से वह हर मजाक और बुद्धिमत्तापूर्ण बात पर, मास्को से मित्रा के आने और नयी किताब पाने पर, शरदवालीन बाग के पीले पत्ता को देखने पर खुशी से हसने लगे थे। १९२३ की शरद शुरू हो गयी थी।

अक्तूबर म एक दिन छडी का सहारा लिए हुए व्लादीमिर इल्यीच गोर्की के छोटे से भरेज म पहुचे और इशारे से बताया कि मास्को जाना चाहते ह। बार निकालिय, अभी चलते ह। नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना और मरीया इल्यीनिच्ना बेहद घबरा गयी

वोलोद्या, तुम भी क्या बात करते हो! जानते हो, इसका क्या नतीजा हो सकता है?

डाक्टर भी उनके मास्को जाने के विरुद्ध थे।

लेकिन व्लादीमिर इल्यीच अडियल थे। एक बार फमला कर लिमा, तो उससे हटना असभव था।

काली "रात्स-रायस" बाग के नारंगी पत्ता पर फिसलती हुई मास्को के लिए चल पड़ी। धीरे धीरे और उतार चढ़ाव से बचते हुए। दूर से मास्को दिखायी दिया। सुनहरे गुब्बद, सफेद पत्थरा की दीवारे, धूम्रा उगलती हुई फैंक्टरियो की चिमनिया। मास्को को देखते ही व्लादीमिर इत्योच ने टोपी उतार ली और ऊपर उठाकर हिलान लगे। मास्का! तुरत क्रेमलिन को!

जन कमिसारो की परिपद के बैठक हाल की दहली पार करते ही दिल जोर से धड़कने लगा। यहाँ की हर चीज व्लादीमिर इत्योच को प्रिय थी। हरे कपड़े से ढकी लबी मेज। उसके ऊपरी सिरे पर रखी बुनी हुई कुर्सी। इस हॉल में बिताया हर क्षण अविस्मरणीय था।

अचानक उनकी नजर कोने में अग्रीठी पर पड़ी और वह हम दिया। उह याद आया कि कैसे सिगरेट पीनेवाले उनके पीछे छिपकर सिगरेट पीते थे और धूम्रा चिमनी में छोड़ते थे। व्लादीमिर इत्योच बैठका के समय सिगरेट पीने के घोर विरोधी थे। ज्याही किसी जन कमिसार से और न रहा जाता, वह चुपके से उठकर अग्रीठी के पीछे चला जाता और तब तक धूम्रा उगलता रहता, जब तक अध्यक्ष मेज पर पेंसिल ठक्ठाकर चेतावनी न देते।

व्लादीमिर इत्योच के मन में कठोरता और कोमलता, दाना का भाव एकसाथ आ गया। वह अपने साथिया को बहुत चाहते थे।

व्लादीमिर इत्योच वहाँ खड़े कुछ देर पुरानी बात याद करते रहे और फिर अपने कमरे में चले गये। उहाने सारे कमरे पर एक नजर दौड़ायी। भौगोलिक नक्शे, माक्स के चित्र मेज पर रखे टेलीफोन और किताबों की आलमारिया को देखते ही यादों का मिलमिला फिर शुरू हो गया।

लेकिन उन्होंने अपने कमरे से विदा नहीं ली। नहीं। वह जीना और यहाँ लौटना चाहते थे।

कमरे में खड़े हुए वह कुछ देर विभिन्न चीजों का देखते रह। फिर खिडकी के पास गमले में उगे बड़े से छायादार ताड़ के पास आये। उनकी टहनिया छतरी की तरह फैली थी। व्लादीमिर इत्योच के अनुराध पर उसकी लगातार देखभाल की जाती थी।

वचपन में, उनके गिम्बोम्ब वाले घर में बहुत पून थे और गान ब

कमरे में ऐसा ही बड़ा सा ताड़ छड़ा था। विलकुल ऐसा, ऐसे ही बाहरा मास हरे पत्तावाला।

वाद में ब्लादीमिर इल्यीच ने मास्को की सर की, कृषि और हस्तउद्योग प्रदर्शनी देखी।

यह पहली सोवियत प्रदर्शनी थी और ब्लादीमिर इल्यीच उसे अवश्य देखना चाहते थे।

प्रदर्शनी मास्को नदी के तट पर नेस्कूची उद्यान में आयोजित की गयी थी। पहले वहाँ मलया फेंकने की जगह थी। मलवे को हटा दिया गया था, उसकी जगह पर फूलों की बगियाँ, मण्डप, आदि बना दिये गये थे। भूतपूर्व मलयागाह की जगह पर लकड़ी का वना, परीक्याओ जैसा एक छोटा सा शानदार शहर बस गया था।

लोगों को लड़ाई, भयमरी और ठंड अभी बहुत याद थी। शायद इसीलिए तरह-तरह के अलकरणों से सजे लकड़ी के मण्डप परीक्याओ जैसे थे।

यह तो परीक्याओ जसा इसलिए भी था कि मण्डपों में सुनहरी गेहूँ, राई के ढेर, माटी मोटी पत्तागोभिया के पिरामिड और गुलाबी, जल्दी पकनेवाले आलू, तरबूजों और सरदों के पहाड़ लगे थे। यह सब रूस के खेतों और बागों की उपज थी।

साफ दिखायी दे रहा था कि गावें फिर फलने फूलने लगे हैं।

फैक्टरियाँ और कारखाना ने भी प्रदर्शनी में अपने उत्पादन भेजे थे। वे इसका प्रमाण थे कि शहर गरीबी और तबाही से उबरने लगे हैं।

ब्लादीमिर इल्यीच मास्को से थके हुए, लेकिन आंतरिक उल्लास और जीवन से भरपूर लौटे।

उन्हें देखकर नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना को लेनिन का २० नवंबर, १९२२ को बोल्शोई थियेटर में दिया हुआ भाषण एकाएक आर बड़ी प्रखरता के साथ याद आ गया। यह बीमारी से पहले लेनिन का आखिरी भाषण था।

उसमें लेनिन ने कहा था ' नयी आर्थिक नीति के रूस से समाजवादी रूस का उदय होगा। '

जीवन से लगाव

स्लेजगाड़ी सरपट भाग रही थी। घोड़ा के खुरा के नीचे से बफ रेत की तरह उड़ रही थी। फिसलनदार लीवा पर स्लेज की पटरिया घीब रही थी। सूर्य अभी अभी डूबा था। क्षितिज पर लालिमा अभी भी छापी हुई थी। लेकिन धुधलका तेजी से बढ़ रहा था और बफ से ढके खेत नीले पड़ते जा रहे थे। दूर क्षितिज के पास जगल वाली दीवार की तरह खड़े थे। तभी आवाज के व्यापक विस्तार में एक शांत, ऊँचा तांग भी चमकने लगा।

व्लादीमिर इल्यीच शिकार से लौट रहे थे। अभी उनमें इतनी ताकत नहीं थी कि बंदूक थाम सकें। वह सिर्फ दूसरा को शिकार करत देखने रहे लेकिन इससे भी उन्हें अतुलनीय पृथ्वी मिली थी। उन्हें शिकार और शिकार से संबंधित हर चीज पसंद थी जगल में घूमना, बय जीवन को सुनना, देखना, जानबरा का पीछा करना और बंदूक से फायर करना।

लेकिन बहुत से ऐसे मौके भी होते थे, जब कोई दूसरा शिकारी अवश्य फायर करता, मगर व्लादीमिर इल्यीच नहीं। एक बार सरदिया में वह झड्डियों से लोमड़ी के शिकार पर गये थे। शिकारी जगल के काफी हिस्से में लाल थडिया गाड़ देते थे। लोमड़ी उनसे डरकर भागती थी और बाहर निकलने का रास्ता खाजती थी। उस बार भी वैसा ही किया गया था। एक ओर से शिकारी चिल्लाते हुए लोमड़ी को बाहर निकलने के रास्ते की ओर भगा रहे थे। व्लादीमिर इल्यीच बंदूक हाथ में थामे खड़े थे और सोच रहे थे कि काश, अभी फायर करने का मौका मिल जाये। अचानक चमत्कार सा हुआ। उनके सामने देवदार के पेड़ों के पीछे से एक लोमड़ी निकली। व्लादीमिर इल्यीच जहा के तहा जड़ हो गये। वह बेहद खूबसूरत थी। चमकीला लाल रंग, नुकीला मुह और सुंदर रायेदार पूछ। वह सीधे उनकी तरफ आ रही थी। मगर उन्होंने फायर नहीं किया। वह बहुत सुंदर, खूबसूरत थी। और दिन भी आज की तरह बर्फाला धूपखिला और चमकता हुआ था।

व्लादीमिर इल्यीच उस घटना को याद कर मुस्कराये।

स्लेज की पटरिया कितनी सुंदर आवाज कर रही थी। आहिस्ता आहिस्ता शाम निकट आती जा रही थी। धुधलका फैलता जा रहा था और जगल के ऊपर उजला हसिया सा बग रहा था।

घर पर घिड़की से नादेज्दा कोन्तान्तीनोव्ना न भी इस हृमिय का देखा और मरीया इत्योनिन्ना से बहा

आज माना त्यौहार है। दया ता आज चद्रमा कितना खूबसूरत लग रहा है।

‘ऐसा हम इसलिए लग रहा है कि वालिचा की तबीयत सुधर गयी है। जरा सोचो तो, यहा तक कि शिकार पर भी जान लगे ह। कमाल है न?’ मरीया इत्योनिन्ना न उत्तर दिया।

‘और याद है, वह नववप के अवसर पर कैसे हस थे? बिल्कुल पहले की तरह!’

और व कुछ ही दिन पहले मनाय गये नववप के त्यौहार की याद करने लगे, जब नववप बक्ष भी मजाया गया था। उसे गार्की की बडी काठी के हाल म समीपवर्ती राजकीय फाम और कमचारिया व बच्चा व लिये खडा किया गया था। व्लादीमिर इत्योच बच्चा के साथ बहुत हसे खेल थे। उह मरीया इत्योनिन्ना का पियानो बजाना भी याद आया। व्लादीमिर इत्योच संगीत सुनकर अत्यन्त भावविभोर हो गय थे।

इस दिन उह सुखद क्षणा की याद करने की ही इच्छा हो रही थी।

व्लादीमिर इत्योच शीतकालीन वन से बहुत उल्लासपूर्ण मुद्रा मे घर लौटे। उनके गाल बिल्कुल गुलाबी हो गये थे। आखें अद्भुत रूप से चमक रही थी। ठडी हवा, शिकार और स्लेज पर सफर न उनमे ताजगी और फुर्तीतापन भर दिया था। मगर अब आराम करना जरूरी था। डाक्टर व्लादीमिर इत्योच पर हर समय नजर रखते थे। न चाहते हुए भी एक घटे बिस्तर पर लेटना ही पडा।

जब तक व्लादीमिर इत्योच आराम करते रहे, नादेज्दा कोन्तान्तीनोव्ना और मरीया इत्योनिन्ना ने आपस मे कोई बात नही की। सिफ मुह पर अगुती रखकर एक दूसरे को चेताती रही शश व्लादीमिर इत्योच कही जग न जायें।

मन म दोना के एक सकुचाहट और क्षिप्तक भरी मूक सी खुशी थी। व आशापूर्ण नजर से भविष्य की ओर देखती। डाक्टर आशाए बघात। एक न ता हाल ही म बहा था

‘शायद वमत तक पूरी तरह चगे हो जायेंगे।

शाम का नादेज्दा कोन्तान्तीनोव्ना व्लादीमिर इत्योच को कुछ न कुछ

पढ़कर सुनाती थी। जबसे उनकी हालत में सुधार आया है, तबसे वह हर रोज "प्राव्दा" भी पढ़कर सुनाने लगी। और इस समय जब 'गण्डन' की कहानी सुना रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच आराम कुर्सी में बैठे, विचारा में खोये, थोड़ी सी सकुचित आँखों से खिड़की की ओर देख रहे थे। वहाँ पाक था, जिसे बर्फ ने ढक दिया था। भीषण ठंड की वजह से खिड़की के कांच पर पाला जम गया था। सफेद पर्णिका की टहनियाँ अत्यन्त मोहक ढंग से खिड़कियों पर फैली थीं। जैसा कि बचपन में होता था, ये बर्फ के फूल विन्कुल जादुई लगते थे।

नादेज़्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना जो कहानी पढ़कर सुना रही थी उमरा शीपक था "जीवन की चाह"। भूख से तड़पता आदमी रफ व रेगिस्तान से निकलने की कोशिश कर रहा है। वह बेहद थक गया है कमजोर हुआ गया है और आगे नहीं चल सकता। उसके पास ही एक बीमार मरता हुआ भेड़िया भी रोग रहा है। भेड़िया और आदमी के बीच लड़ाई शुरू हो जाती है। कौन जीतेगा? भेड़िया तो नहीं? नहीं। जीत आदमी की हुई। उसकी अक्लपनीय जिजीविषा ने उसे अद्भुत शक्ति दे दी थी। आदमी का एक लक्ष्य था जहाज़, जो बर्फ के रेगिस्तान के छार पर समुद्र तट के पास दिखायी देने लगा था। वहाँ जीवन था। और वह आगे बढ़ता गया, बढ़ता गया।

व्लादीमिर इल्यीच को यह कहानी बहुत पसन्द थी। नादेज़्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना जानती थी कि उमरा उर्फ क्या उत्तेजित करता है। यह था साहस, दृढ़ता, जिजीविषा, हार न मानने का मर्म।

व्लादीमिर इल्यीच ने भी हार नहीं मानी थी। नादेज़्दा वान्स्तान्तीनोव्ना भाव की कहानी से उनके मन में जगने विचारा, भावा का गमगती थी। कुछ भी हो जीवन की आर, श्रम की आर लौटना है।

मगर क्या जनवरी की उस शाम का वह माच भी मरती था कि व्लादीमिर इल्यीच अब बहुत कम समय के ही मरमान है।

बीमारी के नये दौर न एकाएक और अत्यन्त निममतापूरक हमता किया। यह अन्तिम और घातक हमता था।

२१ जनवरी, १९२४ का रात १२ बजे पर पत्राग मिनट पर गार्सो में लेनिन का प्राणपछे उड गया।

खडे हो जाओ, साथियो !

इजन न० "ऊ १२७" ने गृहयुद्ध के दिना मे असह्य लाल सैनिका और छापाभारा का जाना था। सारे युद्धकाल म वह सनिक और हथियार मोर्चे पर पहुचाता रहा था। और मोर्चे से घायला को पिछत्राडे म लाता था। वह दिन रात काम करता रहता था। सफेद गाडों के हथगोला और गोलिया ने उसे जजर कर दिया। लडाईं चत्म होते होते वह मिल्कुल बेकार हो गया।

मगर जब सोवियत जनता न देश की अथव्यवस्था की बहाली शुरू की, तो उसकी याद की गयी। मजदूरों ने उसे रद्दी इजना के ढेर म पडा पाया और फँसला किया कि मरम्मत करके उसे पुन काय याम्य बनाया जाये।

मरम्मत सफल रही। इजन नवर "ऊ १२७" बकशाप से या निवला, जैसे विल्कुल नया हो। मरम्मत करनेवाले मजदूर पार्टी के सदस्य नही थे। फिर भी उन्हुनि अपने नये इजन को, जिसे उहाने आवर टाइम के घटा मे तैयार किया था, कम्युनिस्टा को भेंट किया। और ब्लादीमिर इत्यीच को उसका ऑनरेरी ड्राइवर निर्वाचित किया।

जब लेनिन का निधन हुआ, तो इम इजन को एक अत्यन्त शोकपूण काय सौपा गया। उसे जनाजे की गाडी को गोर्की से मास्को पहुचाना था।

सारी रात, सारे दिन और फिर सारी रात आसपास और दूर दूर के गावों और वस्तिया से किसान अपने प्रिय नेता से अतिम विदा लेने के लिए गोर्की पहुचते रहे।

कडाके की ठड पड रही थी। रह-रहकर तेज, बफीली हवा चल रही थी। गोर्की के पाक मे हवा से हिलती हुई पेडों की शाखें काच की तरह बज उठती थी। बडी इमारत के सफेद खभे काते और लाल कपडा से लिपटे हुए थे। सबको को देवदार की टहनियो से ढक दिया गया था। बफ पर पडे फूल वातावरण को और भी विपादमय बना रहे थे।

मजदूर, किसान, साथी और सरकार के सदस्य अर्थी को अपने कधो पर उठाकर घर से चार बस्ट की दूरी पर स्थित स्टेशन तक ले गये। वहा से इजन नवर "ऊ १२७" को उने मास्को पहुचाना था।

मात्वेई कुजिमच लूचिा इक्कीस साल से ड्राइवरी कर रहे थे। इस धार

“ऊ १२७” को चलान का काम उहे सौपा गया। गाडी बिना रूके जा रही थी। उसे लेनिन की अर्थी को लेकर ठीक एक बजे मास्को पहुंचना था।

गोर्की से मास्को तक सारे रास्ते भर रेलवे लाइन के किनारे किनारे किसान खड़े थे।

इजन नज़दीक पहुंचने पर लंबी, शोकपूर्ण सीटी देता। लाग अपनी जगह से न टलते। वे निश्चल पटरियों पर खड़े रहते। कंधे से कंधा मिलाये हुए और मौन। इजन स्टेशन तक नहीं पहुंच पाता और रक जाता। तब ड्राइवर कैबिन से बाहर निकलकर लोगो से कहता

“साथियो! ब्लादीमिर इल्यीच इस इजन के आनरेरी ड्राइवर थ। मन उहे वचन दिया था कि कभी लेट नहीं होऊंगा। आज मुने ठीक एक बजे मास्को पहुंचने का आदेश मिला है। मुने अपना वचन पूरा करन दीजिय। इल्यीच को दिया हुआ वचन ”

और उसकी आंखो से आसुआ की झड़ी लग जाती। लोग भी रो पडते और गाडी के लिए रास्ता छोड देते।

मास्को। साथियो ने इल्यीच की अर्थी को पुन कंधा पर उठा लिया। मास्को की सडको से होते हुए, हजारा मौन खडे लोगो की भीड के बीच से वह धीरे धीरे उसे ट्रेड यूनियन भवन ले जा रहे थे।

सहसा छतो के ऊपर आसमान घूघाहट की भारी आवाज से भर गया। हवाई जहाज काफी निचाई पर उड रहे थे। और सफेद बबूतरा की तरह परचे इधर-उधर उडने लगे। लोगो ने उहे पकडा। लेनिन के बारे मे पडा।

चौराहो पर लकडी के स्टैण्डो पर लेनिन की जीवनी के बारे म पोस्टर टगे हुए थे। लेनिन अत्यन्त विनम्र व्यक्ति थे। अपने बारे मे वह किसी का नही लिखन देते थे। मगर अब चूकि वह नही रहे थे, लोग उत्कण्ठापूर्वक लेनिन के महान जीवन की सक्षिप्त कहानिया पढ रहे थे।

ठड बहुत थी। मास्को की सडका पर जगह-जगह पर अलाव जल रहे थे। दिन रात लोगो की अन्तहीन भीड ट्रेड यूनियन भवन की आर वढ रही थी। लोग थोडी देर रुक कर अलावो के सामने अपन को गरमात और फिर चल पडते। या फिर एक ही जगह पर खडे पैर पटकते रहते, ताकि ठड से जम न जायें। भीड बहुत धीरे धीरे वढ रही थी।

भीड मे मान्कावासी भी थे और देश के अय भागा से आये लोग भी।

रुगी, उन्नतनी, धार्मीकियार्द, जाजियार्द, बेलाग्गी, बजाग गमी।
बहुत से विदेशी कम्युनिस्ट और मजदूर भी सेना के अन्तिम प्दान के लिए
म्राय थे।

ट्रेड यूनियन भवन में सैनिकों का शत्रु पूना के गागर में डूबा हुआ
था। शत्रु मर्गीत बज रहा था। साग ग्रामागी न शत्रु भी बगल में गुजर
रहे थे।

रविवार, २७ जनवरी को भारता गमय के अनुगार पाठ बज
व्यापीमिर इत्योय का दफनाया गया।

साल मैदान में समाधि बना दी गयी थी। तीन दिन तक भीषण ठंड
में काम करते हुए उम तयार किया गया था। उम गमय उम सत्रगी न
बनाया गया था। बाल में उमकी जगह पर प्रेनाइट और गगमरमर का
मान्यार समाधि का निमाण किया गया।

२७ जनवरी की सुबह बच-बारागाना, गावियत जनतता के विभिन्न
शहरों और विदेशी कम्युनिस्ट पार्टियों के अनगिनत प्रतिनिधिमंडल साल
मैदान में श्रद्धाजलि अर्पित करने आए। वहाँ सुबह से ही जनवरी के
हिमशीत आकाश तले एक ऊंचे मंच पर साल बपडे से दगा लेनिन का
शत्रु रखा हुआ था।

सलामी देनेवान मैनिक् निश्चल छडे हो गय। सारा साल म्यान
निश्चल गडा हो गया। विश्व में पहली समाजवादी शक्ति के नना के भव
की बगल से घुडमवार टुकडी मलामी देती हुई गुजरी। उसके पीछे पीछे
घाटिलरी सना की टुकडिया भी लेनिन को अन्तिम सनिक सलामी देने के
लिए आयी।

और फिर मजदूरों की बतार गुजरने लगी। मंच के पाग पहुचने पर
वे अपना शत्रुमूचक ध्वजा का नीचे झुका लेती।

ठीक चार बजे शहरों और गावा में रेडियो पर सुनायी दिया

“छडे हो जाओ, साथिया! इत्योच के शत्रु को समाधि में रखा जा
रहा है।”

कारग्राना में मशीनें रक गयीं। सडका पर यातायात रक गया। मिर
झुकावर लोग छडे हो गय। विदेशों में मजदूरों ने काम रोक दिया। पाच
मिनट तक सभी मौन रहे। और कल-कारखाना के भापू बजते रहे।
रेलगाडिया भी ठहर गयी। सागरों में हमारे जहाज रक गय। खेता, गावा,

बल-वारखाना, शहरा, और हमारी ममूची मातभूमि के आकाश में शाव
का मात्नहीन स्वर देर तक गूजता रहा।

लाल मैदान में वर्षीली हवा चल रही थी, मातम के सूचक तान
झडा को फड़फडा रही थी। चेहरा पर आसू जम गया था।

तोषा की गरज के साथ लेनिन का अन्तिम विदा दी गई।

लेनिन के शव को हमेशा-हमेशा के लिए ममाधि में रख दिया गया।

मध्या का वक्त हो गया था। मगर लागा की कतार तान भंगान में
लेनिन की ममाधि की बगल में गुजरती जा रही थी गुजरती जा रही थी

चेरी फूलने लगी

वमन्त शुरू हो गया। गोर्की के पाक में एक पक्षी वापस आ गया और
अपने उल्लाम भरे कोलाहल से आमपाम के इनाका का गुजात हुए नय
पासले बनान या पुरान घामला को ठीक करने लगे। भरहिया भी लौट
आया। आममान का ऊचा, अथाह नीला विस्तार ऊपर अभी तक मरनवान
बलरव से भर गया। छोटी झील के ऊपर पारदर्शी पग्रावान निउर मूज
की विरणा में मडरान लगे।

नादेज्दा कोस्तान्तीनोना झील के तट पर कुछ दूर के लिए रुक गई।
वह गोर्की के पाक में व्यादीमिर इन्वोच की सभी प्रिय जगहों और पग्राविया
का जानती थी।

लेकिन एक जगह ऐसी भी थी, जिन व्यादीमिर इन्वोच नहीं दख
पाय थे। पर नादेज्दा कोस्तान्तीनोना का वह बहुत पसंद थी। इस समय
वह पुन यहा आयी। वह वहा पडी एक बेंच पर बठ गया और अपने
धुरीदार, फूनी हुई नगावाले हाथों को घुटना पर रख विचारा में आ गया।

यहा चेरी फूल रही थी। पड अभी बिल्कुल जवान थे। उनका शाखें
सखोनी, पतली और गहरे, चमकीले लाल रंग की था।

य पहली बार फूल रहे थे। व्यादीमिर इन्वोच उनका पसंद हुआ
नहीं रख पाये थे।

पिछली गरम में मूग्रावा फव्वरी के मजदूर व्यादीमिर इन्वोच में
मिन्नन गोर्की आय थे। चिट्टी के अलावा ये व्यादीमिर इन्वोच के लिए
भेंट के तौर पर अपने फव्वरी के बाग में उन फरी के पोषा का भा पाय थे।

व्लादीमिर इल्यीच मज़दूरों से मिलकर बित्तन हथित हुए थे। उनका आये उत्साह से चमकने लगी थी।

व्लादीमिर इल्यीच से विदा लेते हुए एक बृद्ध मज़दूर ने कहा था
व्लादीमिर इल्यीच, मैं लुहार हूँ। हम हर चीज़ का वैसा ही गढ़
देगे, जसा तुमन साक्षा है।”

श्रीर उसने लेनिन का कसकर बाहुपाश में ले लिया था। वे देर तक उस हालत में खड़े रहे थे। इस बृद्ध लुहार के माध्यम से व्लादीमिर इल्यीच मानो सारे मज़दूर वर्ग को अपना हादिक अभिवादन भेज रहे थे। श्रीर मज़दूर ने लेनिन को वचन दिया था।

“हम वचन देते हैं, इल्यीच, हमारे प्यारे इल्यीच।” नादज्दा फोन्स्तान्तीनाव्ना ने मज़दूर की शपथ को दोहराया।

चेरी के पेड़ों के ऊपर मधुमक्खियाँ मडरा रही थीं

तबसे बहुत से वसन्त, बहुत साल बीत गये हैं।

गोर्की के पाक के चेरी के पेड़ बहुत बड़े हो गये हैं।

लेनिन द्वारा स्थापित राज्य भी बढ़कर शक्तिशाली हो गया है। लेनिन द्वारा स्थापित पार्टी भी काफी प्रौढ़ हो गयी है।

बीच में कठिनाइयाँ, विपत्तियाँ के साल भी आये, पर मातृभूमि ने सब कुछ सहन किया। हमारा सोवियत सघ अधिक मज़बूत, शक्तिशाली और सुदूर होता जा रहा है। आज हमारे देश के दूरदराज इलाकों में भी “इल्यीच की बत्तियाँ” जलती हैं। देश में असह्य विजलीघर, बल कारखाने, सामूहिक और राजकीय फ़ार्म, नये शहर, स्कूल, क्लब, थियेटर, और अंतरिक्ष अड्डे हैं

काश, व्लादीमिर इल्यीच यह सब देख पाते।

और अगर देख पाते, तो शायद कहते

“रुको नहीं। अभी सब कुछ हासिल नहीं किया है। हमारा लक्ष्य कम्युनिज़म है।”

कम्युनिज़म—यह याय और सत्य है। यह सबकी भलाई के लिए सबका श्रम है। यह नये की खोज में आये, निरंतर आगे बढ़ने का निभय रास्ता है। यह सुदूर, उदात्त और सुखी जीवन का हमारा सपना है।

लेनिन ने हम इस सपने को साकार करने का माग दिखाया।

पाठको से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और डिजाइन के बारे में आपके विचार जानकर आपका अनुगृहीत होगा। आपके अर्थ सुझाव प्राप्त करके भी हम बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये

प्रगति प्रकाशन,
२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

